समस्त परिवारी-जनों (स्त्री, पुरुष, बालक और वृद्ध) के समस्त विकारों की चिकित्सा की सरल विधियाँ और वह भी विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों (होम्योपैथिक, बायोकैमिक, आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक तथा प्राकृतिक) में !

प्रत्येक घर में रहने योग्य अत्यन्त उपयोगी और अनुपम ग्रन्थ !!

सरल परिवार चिकित्सा

सरल परिवार चिकित्सा

- होम्योपैथिक
- बायोकेमिक
- आयुर्वेदिक
- एलोपैथिक
- यूनानी
- प्राकृतिक

[केवल पंजीयत-चिकित्सकों के उपयोगार्थ]

सरल परिवार चिकित्सा

(विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों में)

★

लेखक :

डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रवाल

M. Sc. M.D. (Homoeo)

एवं

डॉ० राजेश दीक्षित

(गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड्स रिकार्ड में नामांकित)

★

भाषा भवन, मथुरा

प्रकाशक :

भाषा भवन

हालन गंज, मथुरा

*

लेखक :

डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रवाल

एवं

डॉ० राजेश दीक्षित

*

नवीन संस्करण

2000

*

कृति-स्वाम्य : प्रकाशक

*

मूल्य : रु. ~~21/-~~ 25/-

मुद्रक :

भाषा भवन प्रेस, मथुरा

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
1. रोग और उपचार	5
2. सावधानी	6
3. पथापथ्य	7
4. होम्योपैथिक औषधियाँ	7
5. औषध का चुनाव	7
6. स्वच्छता	7
7. संक्रामक तथा क्लिष्ट रोग	8
8. सामान्य-ज्वर	8
9. सर्दी का ज्वर (जुकाम)	11
10. इन्फ्लुएञ्जा	13
11. पित्त-ज्वर	15
12. विषम-ज्वर (मलेरिया)	18
13. आन्त्रिक-ज्वर (टाइफाइड)	22
14. चेचक	25
15. फुफ्फुस-प्रदाह (न्युमोनियाँ)	29
16. खाँसी (कास)	32
17. रक्त-पित्त	36
18. मन्दाग्नि, कब्ज, अफारा	38
19. उदर-शूल (पेट का दर्द)	42
20. वमन (उल्टी)	44
21. विशूचिका (हैजा)	46
22. अतिसार (दस्त)	51
23. पेचिस (आँव, खून के दस्त)	54
24. संग्रहणी	56
25. कृमि रोग	59
26. यकृत्-वृद्धि (जिगर)	62

विषय	पृष्ठ
27. प्लीहा-वृद्धि (तिल्ली)	64
28. पाण्डु-रोग (पीलिया)	67
29. सिर-दर्द	69
30. शोथ (सूजन)	73
31. सन्धिवात और गठिया	76
32. गृधसी (साइटिका)	80
33. कण्ठमाला (गलगण्ड)	82
34. अनिद्रा	84
35. मूर्च्छा (बेहोशी)	86
36. मिर्गी (अपस्मार)	87
37. प्रमेह (धातु-विकार)	89
38. मधुमेह (डाइबिटीज)	92
39. स्वप्रदोष	93
40. पथरी	95
41. मूत्रकृच्छ (सूजाक)	97
42. उपदंश (गर्मी, आतशक)	100
43. अर्श (बवासीर)	103
44. जहरवाद	106
45. आँख की बीमारियाँ	109
46. नाक की बीमारियाँ	113
47. कान की बीमारियाँ	115
48. गला, जीभ, मुँह तथा दाँतों की बीमारियाँ	119
49. हृदय की बीमारियाँ	126
50. त्वचा की बीमारियाँ	128
51. स्त्रियों के रोग	136
52. बच्चों के रोग	147
53. आकस्मिक बीमारियाँ	155
54. बायोकैमिक चिकित्सा	166 - 205

विभिन्न रोगों की सरल - चिकित्सा

रोग और उपचार

भारत जितनी विपुल जनसंख्या वाला देश है, उतना ही दरिद्र तथा रोगाक्रान्त भी है । यहाँ के अधिकाँश निवासी रोगी हो जाने पर धनाभाव एवं समुचित तथा सामयिक चिकित्सा के अभाव में अकाल में ही काल-कलवित हो जाते हैं । सरकार के पास इतने साधन नहीं हैं कि वह सभी देशवासियों की स्वास्थ्य-रक्षा एवं चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध कर सके तथा सुयोग्य-चिकित्सकों में सेवा-भावना के स्थान पर धनोपार्जन की प्रवृत्ति इतनी अधिक बलवती हो गई है कि वे दरिद्रनारायणों के बीच पहुँचकर उन्हें व्याधि-मुक्त नहीं कर पाते । ऐसी स्थिति में केवल यही साधन शेष रह जाता है कि यहाँ के सभी निवासी विभिन्न रोगों के चिकित्सा-विषयक सामान्यज्ञान को स्वयं अर्जित करें और उससे अपना तथा अपने सम्पर्क के अन्य लोगों का भी कल्याण करें । प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन का भी यही मुख्य उद्देश्य है । इसमें विभिन्न रोगों की चिकित्सा विषयक स्वल्प मूल्य में तैयार हो जाने वाले सरल तथा उपयोगी आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक एवं एलोपैथिक औषध-योगों को सङ्कलित किया गया है । चिकित्सा के अभाव में इन योगों के प्रयोग द्वारा रोगी की प्राण-रक्षा में बहुत कुछ सहायक बनाया जा सकता है । इस दृष्टि से इस पुस्तक का पठन-पाठन प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए उपयोगी एवं आवश्यक है ।

इस पुस्तक में प्रत्येक रोग के संक्षिप्त लक्षणों के साथ ही उसके लिए उपयोगी आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक एवं एलोपैथिक औषधियों के योगों को क्रमशः वर्णन किया गया है । जो महानुभाव जिस चिकित्सा-पद्धति में आस्था रखते हों, वे उसी के योगों द्वारा लाभ उठा सकते हैं तथा वैद्य, हकीम एवं डाक्टरों के चक्कर से बचकर अपनी आर्थिक-हानि को भी रोक सकते हैं। जिन स्थानों पर वैद्य, हकीम अथवा डाक्टरों का अभाव हो, वहाँ के निवासियों के लिए तो यह पुस्तक और भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगी । चिकित्सक के आने तक प्राथमिक उपचार के रूप में भी इसका लाभ उठाया जा सकता है।

इस पुस्तक के आयुर्वेदिक तथा यूनानी योगों में वर्णित अधिकांश वस्तुएं घर में ही मौजूद रहती हैं, शेष जड़ी-बूटी आदि को खेतों तथा जङ्गलों से एवं अन्य वस्तुओं को पंसारियों तथा अत्तारों की दुकानों से सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है । होम्योपैथिक तथा एलोपैथिक औषधियाँ बड़े नगरों में होम्योपैथिक-स्टोर एवं अंग्रेजी दवा बेचने वालों की दुकान से खरीदी जा सकती हैं ।

सावधानी

किसी भी रोग की चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व विश्वासपूर्वक किसी एक पद्धति की औषध का ही सेवन करना चाहिए । जब अधिक समय तक उससे कोई लाभ दिखाई न दे, तभी अन्य चिकित्सा-प्रणाली के योगों को अपनाना चाहिए । विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियों के योगों का एक साथ प्रयोग हानिकारक सिद्ध होगा, अतः इस सम्बन्ध में सतर्क रहने की आवश्यकता है ।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इस पुस्तक में जिन रोगों के योगों का वर्णन किया गया है, वे सभी सामान्य-चिकित्सा से सम्बन्धित हैं । यदि रोगी की स्थिति गम्भीर हो तो किसी अनुभवी-चिकित्सक की सहायता ही लेनी चाहिए। इस सम्बन्ध में प्रमाद करना घातक सिद्ध हो सकता है । यों पुस्तक में सङ्कलित प्रत्येक योग लाभकारी हैं, परन्तु निदान की गलती एवं रोग की संक्रामकता के विषय में सजग रहना आवश्यक है । जब भली-भाँति यह निश्चय हो जाय कि अमुक व्यक्ति को अमुक रोग ही है, तब सम्बन्धित औषधीय-योगों का नियमपूर्वक प्रयोग किया जा सकता है ।

पथ्यापथ्य

चिकित्सा के साथ ही रोगी के पथ्यापथ्य के सम्बन्ध में भी पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए । इससे रोग के शीघ्र-शमन में सहायता मिलेगी । अपथ्य होने पर अच्छी से अच्छी औषध भी प्रभावहीन हो जाती है- यह सामान्य औषध-सेवन-काल में रोगी को दूध, बार्ली, साबूदाना, मूँग की दाल, अनार, बीदाना, मौसमी आदि सुपाच्य-पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए । हींग, मिर्च, प्याज, लहसुन आदि तेज मसाले, खटाई, गुड़, तेल, शराब, भाँग, गाँजा, तम्बाकू आदि भारी, देर से पचने वाली तथा हानिकारक वस्तुओं का सेवन सर्वथा त्याग देना चाहिए । रोगी को लाभ होने पर उसे हल्की रोगी मूँग की दाल, लौकी का साग, भात आदि शीघ्र पच जाने वाली वस्तुएँ खाने के लिए देनी चाहिए। पीने के लिए पानी कुछ गुनगुना हो तो अधिक अच्छा रहता है । वमन (उल्टी)

होने की स्थिति में ठण्डा पानी पीना अथवा बर्फ के टुकड़ों को चूसना उपयोगी है ।

होम्योपैथिक औषधियाँ

औषध की मात्रा तथा उनके सेवन-काल का उल्लेख प्रायः प्रत्येक योग के साथ किया गया है । होम्योपैथिक-औषधियों की पोटेन्सी (शक्ति) के विषय में लिखा गया है । जहाँ किसी होम्योपैथिक-औषध के क्रम (पोटेन्सी) का उल्लेख न हो, वहाँ वयस्क व्यक्ति को सामान्यतः 30 शक्ति की औषध देना उचित रहता है । रोग की न्यूनाधिकता एवं नवीनता-जीर्णता के आधार पर होम्योपैथिक औषध की पोटेन्सी का अलग से निर्णय भी किया जा सकता है। होम्योपैथिक औषधियाँ अलग-अलग क्रमों में तैयार की हुई औषध विक्रेताओं की दुकान पर मिल जाती हैं, अतः जिस क्रम (पोटेन्सी) वाली औषध की आवश्यकता हो, उसी क्रम की औषध को खरीद लेना ही अधिक अच्छा रहता है । यों, होम्योपैथिक औषधियों के विभिन्न क्रम स्वयं भी तैयार किये जा सकते हैं, परन्तु उसके लिए अधिक अनुभवी होना आवश्यक है । जो लोग होम्योपैथिक औषधियों के क्रम स्वयं ही तैयार करना चाहें अथवा इस पद्धति के विषय में अधिक जानने के इच्छुक हों, उन्हें भाषा भवन, मथुरा द्वारा प्रकाशित होम्योपैथिक-चिकित्सा विषयक पुस्तकों का अलग से अध्ययन करना चाहिए ।

औषध का चुनाव

इस पुस्तक में प्रत्येक रोग के लिए उपयोगी विभिन्न-चिकित्सा - पद्धतियों के एक से अधिक योगों का वर्णन किया गया है । उनमें से जो रोग की स्थिति के अनुकूल अधिक उपयोगी प्रतीत हों, उसी का चुनाव करना चाहिए । यदि एक योग अनुकूल न पड़े तो उसके स्थान पर दूसरे योग का चुनाव किया जा सकता है, परन्तु यदि प्रतिकूलता दिखाई न दे तो किसी भी योग का प्रयोग आरम्भ करने के बाद कुछ समय तक उसी का सेवन करते रहना चाहिए तथा लाभ दिखाई देने पर केवल उसी को उपयोग में लाना चाहिए ।

स्वच्छता

रोगी जिस जगह रहता है, उस स्थान का स्वच्छ, हवादार तथा खुला होना आवश्यक है । गन्दे, सीलन अथवा दुर्गन्धयुक्त, जिसमें हवा और धूप का समुचित प्रवेश न हो तथा धूलि अथवा धुएँ वाली जगह में रोगी को नहीं रखना चाहिए । रोगी की आवश्यकता के अनुकूल सर्दी-गर्मी का बचाव रखना भी

आवश्यक है । रोगी के बिस्तर तथा पहनने के वस्त्र एवं उपयोग में आने वाले बर्तन- इन सभी की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है । गन्दगी रोग को घटाने की बजाय बढ़ाती है तथा वह रोग के कीटाणुओं को शरण भी देती है ।

संक्रामक तथा क्लिष्ट रोग

इस पुस्तक में सामान्य-रोगों के सरल चिकित्सा-योगों का वर्णन किया गया है, परन्तु हैजा, निमोनिया, टाइफायड, चेचक आदि व्याधियाँ प्राणघातक तथा संक्रामक भी होती हैं । अतः ऐसा कोई कठिन रोग हो जाने पर किसी अनुभवी चिकित्सक की सहायता प्राप्त करना आवश्यक है । जब कोई चिकित्सक उपलब्ध ही न हो, तब इस पुस्तक में वर्णित योग भी प्रभावकारी सिद्ध होंगे । इसी दृष्टि से कुछ संक्रामक तथा क्लिष्ट रोगों की चिकित्सा भी इसमें सङ्कलित की गई है । सर्पदंश, विष-प्रयोग तथा आकस्मिक व्याधियों के उपचार की चिकित्सा का वर्णन भी इसी उद्देश्य को सामने रखकर किया गया है ।

सामान्य-ज्वर (General Fever)

सर्दी, तेज धूप, वर्षा में भीगना, अधिक परिश्रम, चोट, रात्रि-जागरण, जलवायु के परिवर्तन, अनियमित भोजन, उपवास, मादक वस्तुओं का सेवन आदि कारणों से शरीर में उष्णता की मात्रा बढ़ जाती है, जिसे 'सामान्य-ज्वर' कहते हैं । सामान्य-ज्वर में सिर-दर्द, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, बेचैनी, प्यास पेशाब के रङ्ग में परिवर्तन आदि लक्षण प्रकट होते हैं । सामान्य-ज्वर प्रायः 3 दिन में स्वयं ही ठीक हो जाता है । इसमें शरीर का तापमान 102 डिग्री के लगभग हो जाता है । सामान्य-ज्वर की चिकित्सा के लिए निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) पान का रस, अदरक का रस तथा शहद— इन तीनों को 5-6 माशे की मात्रा में मिलाकर प्रातः-सायं पियें । इससे सामान्य-ज्वर शीघ्र दूर हो जायेगा।

(2) तुलसी के पत्ता 20 नग, कालीमिर्च 20 नग, अदरक 6 माशा, दालचीनी 2 माशा— इन सब वस्तुओं को 1 पाव पानी में डालकर औटायें। फिर आग से नीचे उतार कर छान लें । उसमें $2\frac{1}{2}$ तोला मिश्री मिलाकर पीने से सामान्य-ज्वर ठीक हो जायेगा ।

(1) नीम की छाल 2 छटाँक को कूटकर किसी मिट्टी के बर्तन में डालें, फिर उसमें 8 छटाँक पानी डालकर आग पर चढ़ा दें और खूब उबालें जब पानी दो छटाँक रह जाय, तब उसे उतार कर छान लें तथा उसमें शहद अथवा मिश्री डालकर गुनगुना ही पी जायें ।

काढ़े को पीने के बाद सम्पूर्ण शरीर को कपड़े से ढाँपकर लेट जायें । थोड़ी ही देर में पसीना आकर ज्वर उतर जायगा । यदि आवश्यकता हो तो दूसरे दिन भी यही प्रयोग करें । यह उपाय कुनैन से भी अधिक लाभ करता है तथा हर प्रकार के ज्वर में उपयोगी है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) हरी गिलोय 1 तोला वजनी टुकड़े को रात के समय पानी में भिगोकर रख दें । सुबह उसे मलकर तथा छानकर पी लें । इससे नया तथा पुराना दोनों तरह के बुखार दूर हो जाते हैं ।

(2) देशी अजवायन 1 तोला को सुबह मिट्टी के एक कोरे बर्तन में डेढ़पाव पानी भरकर भिगो दें । दूसरे दिन सुबह उस पानी को छानकर पी लें लगातार 7-8 दिन इसी प्रकार पीते रहने से नया तथा पुराना दोनों तरह के बुखार दूर हो जाते हैं ।

(3) फिटकरी के फूले का सफूफ बनाकर, 1 से 3 माशे तक की मात्रा में दिन में 2 या 3 बार शहद मिलाकर चाटने से मामूली बुखार ठीक हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 30— ठण्ड या सूखी हवा लगने, धूप लगने, ओस में सोने आदि के कारणों से उत्पन्न ज्वर— जिसमें प्यास बेचैनी, सिर-दर्द, अधिक हो, में इसे 2-2 घण्टे बाद दें । पसीना आ जाने पर औषध देना बन्द कर दें।

रसटाक्स 6— बरसात की ठण्डी हवा लग जाने के कारण उत्पन्न ज्वर में विशेष हितकर है ।

इपिकाक 6— तीव्र ज्वर के साथ जी मचलाना अथवा वमन होना आदि लक्षण हों और साथ खाँसी भी हो तो इसे दें ।

पल्सटिला 6— अधिक खाने-पीने या स्नान के बाद आने वाला ज्वर, जिसमें प्यास बिलकुल न हो— उसमें यह औषध लाभ करती है ।

बेलाडोना 6— ठण्ड लग जाने के कारण आने वाला ज्वर, जिसमें रोगी का

मुँह तथा होंठ सूख गये हों, सिर में दर्द, प्यास आँखों में लाली तथा नसों का फड़फड़ाना आदि लक्षण अधिक हों । मोटे शरीर वालों के लिए यह विशेष हितकर है।

ब्रायोनिया 6— सूखी खाँसी, श्वास लेने में कष्ट, सिर, गर्दन, हाथ, पाँव तथा पीठ में दर्द, अधिक प्यास, हिलने डुलने से दर्द का बढ़ना, जीभ का मैली अथवा पीली हो जाना ; मुँह का स्वाद बिगड़ जाना आदि लक्षणों में ।

नक्सवोमिका 6, 30— सर्दी के कारण होने वाला ज्वर, जिसमें नाक बन्द हो तथा कब्ज की शिकायत हो ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) वायनम एण्टीमनी 10 बूँद, लाइकर, अमोनिया, एसीटेटिस $1\frac{1}{2}$ ड्राम, लाइकर मौरफाइनी हाइड्रोक्लोर 5 बूँद तथा एकुआ (पानी) 4 ड्राम यह सब मिलाकर 1 खुराक है । हर 3-3 घण्टे बाद ऐसी 1-1 खुराक देने से सामान्य-ज्वर में लाभ होता है ।

(2) टिंक्चर एकोनाइट, 30 बूँद, एण्डीफेब्रिक 1 ड्राम, रेक्टीफाइट स्पिरिट 1 ड्राम तथा डिस्टिल-वाटर 6 ड्राम ।

पहले एण्टीफेथिन तथा स्पिरिट को मिला लें, बाद में अन्य सब औषधियाँ मिला दें ।

मात्रा $\frac{1}{2}$ से 1 ड्राम तक, हर तीन घण्टे बाद इस औषध-सेवन से एक घण्टे बाद दूध अवश्य पिलाना चाहिए ।

(3) लाइकर अमोनिया एलीटेटिस 2 ड्राम, पुटास साइटस 5 ग्रेन स्पिरिट ईथर नाइट्रोसी 20 बूँद तक एकुआ कैम्फर 1 औंस— यह एक खुराक है । हर 3-3 घण्टे बाद 1-1 खुराक औषध ज्वर की तेजी में दें, यदि कब्ज भी हो तो प्रत्येक मात्रा में 1 ड्राम मैगसल्फ भी मिला दें ।

(4) सोल्यूशन ऑफ एसीटेट 3 ड्राम, स्पिरिट ऑफ नाइट्रास ईथर्स 3 बूँद, पोटाशियम नाइट्रास 10 ग्रेन तथा पानी, कुल मिलाकर 1 औंस । यह भी ज्वर में उपयोगी है ।

(5) मैग सल्फ 1 औंस, लाइकर अमोनिया एसीटाट 1 औंस, पोटास साइट्रास 20 ग्रेन, स्पिरिट ईथर नाइट्रोसी 2 ग्राम, टिंक्चर क्लोरोफार्म, कम्पा, 40 बूँद, टिंक्चर वाटर 8 औंस— इन सबको मिलाकर रखलें । मात्रा 1 औंस, दिन में दो बार दें ।

(6) पेटेण्ट औषधियों में एनासिन, एस्प्रो आदि भी सामान्य-ज्वर को दूर

कर देती है ।

सर्दी का ज्वर या जुकाम (Fathrral Fever)

ठण्डी हवा लगने, पानी में भीगने, ओस में सोने आदि कारणों में विशेषतः गर्मी-सर्दी के असन्तुलन से यह रोग होता है । इसमें शरीर में हल्का बुखार रहता तथा नाक में पानी बहने लगता है । तीन दिन बाद यह रोग अपने आप ठीक हो जाता है । रोग की अवधि में केवल गुनगुने पानी का सेवन करना शीघ्र लाभ पहुँचाता है । अन्य औषधीय योग इस प्रकार हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) नीम गिलोय, लाल चन्दन, खसखस, बड़ी हरड़ तथा नागरमोथा- इन सबको ढाई-ढाई तोला लेकर कूट-पीस लें और सबकी तीन पुड़िया बनाकर रख लें । एक पुड़िया को आधा किलो पानी में उबालें, जब 250 ग्राम पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें । इस औषधीय-क्वाथ को दिन में दो बार प्रयोग में लायें । एक छटाँक काढ़े की मात्रा में आधी छटाँक शहद अथवा मिश्री मिलाकर सेवन करें । इसी प्रकार दो मात्रा दिन में तथा दो मात्रा रात्रि में सेवन करें । अन्य कोई वस्तु न खायें । प्यास लगने पर गुनगुना पानी पियें। इससे दो दिन में ज्वर तथा जुकाम ठीक हो जायगा ।

(2) सोंठ, छोटी पीपल तथा कालीमिर्च को समभाग लेकर पीस लें तथा चौगुना गुड़ मिलाकर बड़ी मटर के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । एक-एक गोली दिन में तीन-बार गरम पानी के साथ सेवन करें ।

(3) अदरख का रस तथा शहद 6-6 माशा मिलाकर दिन में 3-4 बार चाटें ।

(4) काले जीरे का चूर्ण सूँघने से जुकाम ठीक हो जाता है ।

(5) कलौंजी को कपड़े में बाँधकर सूँघने से जुकाम ठीक हो जाता है।

(6) गरम दूध में 10-15 कालीमिर्च तथा मिश्री पीसकर मिला दें और पी जायँ । इससे जुकाम अवश्य ठीक हो जाता है ।

(7) अदरक के स्वरस 6 माशे में शहद 6 माशे मिलाकर चाटने से जुकाम ठीक हो जाता है ।

यूनानी चिकित्सा

(1) उन्नाव 7 अदद, लिसौड़ा 7 अदद, बनफशा, गाजवाँ, मुलेठी, खसखस और सौंफ— ये सभी 6-6 माशा और तुरञ्जबीन 1 तोला— इन सबको ढाई तोला मिश्री के साथ क्वाथ बनाकर आधा सुबह और आधा शाम को पी लें । यह जुकाम में तुरन्त फायदा पहुँचाने वाली दवा है ।

(2) खूबकलाँ 2 तोला को आधा सेर पानी में औंटायें । जब 2 छटाँक पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें तथा मिश्री मिलाकर पियें । इससे जुकाम दूर होगा ।

(3) गेहूँ का चौकर 2 तोला तथा गुनबनफसा 1 तोला— इनका काढ़ा बनाकर पीने से जुकाम ठीक हो जाता है ।

(4) कपूर को एक कपड़े से बाँधकर बार-बार सूँघने से भी जुकाम ठीक हो जाता है ।

(5) लौंग को पीसकर तालु पर लगाने से जुकाम और सर्दी का नजला ठीक हो जाता है ।

(6) कालीमिर्च का चूर्ण, हल्दी का चूर्ण और काले नमक का चूर्ण— इन तीनों का समभाग लेकर पावभर पानी में पकायें, जब आधा पानी रह जाय, तब गरम-गरम पी लें । इससे नया जुकाम, सर्दी और जुकाम के कारण होने वाला सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(7) गुलबनफशा 6 माशा, बतासे 5 माशा, अदरक 4 माशा और कालीमिर्च 4 रत्ती— इन्हें 1 पाव पानी में पकायें । जब आधा पानी रह जाय तब मल-छानकर कुछ ठण्डा (गुनगुना) करके पी लें । जुकाम में बहुत लाभ होता है ।

(8) भुने हुए गरम चनों को सूँघने से जुकाम और सिर-दर्द में आराम होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 6— ज्वर, नाक से पानी बहना, प्यास, बेचैनी, छींकें आना आदि लक्षणों पर ।

इपिकाक 6, 30— ज्वर, छीकें, वमन, मिचली, श्वास-कष्ट, कफ आदि लक्षणों पर ।

एलियम सिपा 3x, 6— ज्वर, आँख-नाक से पानी गिरना, गले में खराश,

हाथ-पाँव तथा शरीर में भड़कन, बार-बार पेशाब आना, शाम के समय तकलीफ का बढ़ जाना आदि लक्षणों पर ।

नक्सवोमिका 30— ज्वर, कब्ज, नासा-छिद्रों का बन्द हो जाना आदि लक्षणों पर ।

पल्सेटिला 6— सिर का भारीपन, तर-खाँसी, सर्दी के कारण ज्वर, कफ का निकलना, किसी वस्तु का स्वाद एवं गन्ध का मालूम न होना आदि लक्षणों पर ।

विशेष— इस रोग के आरम्भ में केवल 1 बूँद 'अर्क-कपूर' दे देने से ही लाभ हो जाता है । बाद में आवश्यकता पड़ने पर उक्त औषधियों को 24 घण्टे में 3-4 बार से अधिक न दें ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) अमोनिया-कार्ब 5 ग्रेन, टिंक्चर कैम्फर कम्पाउण्ड 20 बूँद, स्पिरिट क्लोरोफार्म 20 बूँद, एकुआ मैथा पिप 1 औंस— इन्हें मिलाकर रख लें तथा दिन में 3 बार पिलायें । यह नजला, जुकाम तथा सर्दी के ज्वर में हितकर है।

(2) टिंक्चर बेलाडोना 10 बूँद, लाइकर मार्फिया 10 बूँद, लाइकर अमोनिया, एसीटेट 20 बूँद, स्पिरिट क्लोरोफार्म 30 बूँद तथा एकुआ कैम्फर 1 औंस ।

यह 1 मात्रा है । दिन में 3 मात्रायें देने से सर्दी के ज्वर तथा जुकाम में लाभ होता है ।

(3) पेटेण्ट औषधियों में एम्प्रो, ऐनासिन तथा एल्कोसिन आदि भी जुकाम में लाभ करती हैं ।

(4) बैक्सीन कटारेल तथा वैक्सीन कोराइज के टीके इसमें बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं ।

इन्फ्लुऐञ्जा (Influenza)

यह वातावरण के दूषित हो जाने पर फैलने वाला संक्रामक-रोग है । इसमें सर्वप्रथम गले में कुछ सुरसुहाहट-सी अनुभव होती है, स्वर कुछ भारी हो जाता है तथा नाक पर प्रभाव पड़कर जुकाम हो जाता है । तदुपरान्त मलेरिया की तरह जाड़ा लगकर 104 डिग्री तक ज्वर आता है । प्यास, बेचैनी तथा सिर में दर्द, सूखी खाँसी, भूख न लगना आदि लक्षण प्रकट होते हैं । श्वास-नली के अधिक प्रभावित हो जाने पर न्युमोनिया भी हो सकता है । सामान्यतः ज्वर

तीन दिन में दूर हो जाता है, परन्तु शारीरिक कमजोरी कई दिनों तक बनी रहती है । इसके लिए निम्नलिखित उपचार हितकर हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) तुलसी की पत्ती 10-15 कालीमिर्च 5-6 दालचीनी का टुकड़ा थोड़ा-सा तथा कुटा हुआ अदरक थोड़ा-सा इन सबको चाय की भाँति पानी में उबाल कर पीने से इस रोग में लाभ होता है । जब यह बीमारी संक्रामक रूप में फैल रही हो, तब इस चाय को पीते रहने पर रोग के बचाव होता है ।

(2) जुकाम के लिए जिन औषधियों का उल्लेख किया जा चुका है वे सब इन्फ्लुऐन्ज्ञा में भी लाभ करती हैं ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) तुलसी के पत्ते 1 तोला, लौंग 7 नग तथा नमक 3 माशा—इन सबको एक पाव पानी में उबालें । जब आधा पानी रह जाय, तब छानकर पिलायें ।

(2) अजवायन और दालचीनी—दोनों को 2-2 माशा लेकर पानी में उबालें तथा उस पानी को छानकर पिलायें ।

गुलबनफशा 1 तोला तथा कालीमिर्च 7 दाने को पानी में जोश देकर छान लें तथा थोड़ी-सी चीनी मिलाकर गरम-गरम पिलायें ।

इन्फ्लुऐञ्ज़ा-नाशक दवा देने से पहले अगर रोगी को कब्ज हो तो पहले कोई ऐसी हल्की दवा देनी चाहिए, जिससे एक-दो दस्त साफ आ जायँ और कब्ज दूर हो जाय ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

इन्फ्लुऐञ्जिनम 30, 200— यह इस रोग की मुख्य प्रतिषेधक औषध है । रोग के आरम्भ होते समय एक दिन के अन्तर से इसकी 1-1 मात्रा का सेवन करते रहना चाहिए ।

बैप्टीशिया 1x, 3x— इसे इन्फ्लुऐञ्जिनम के अभाव में दिया जा सकता है । अत्यधिक सुस्ती, आलस्य, सिर तथा आँखों में भारीपन, शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाने जैसा अनुभव आदि लक्षणों में हितकर है ।

रसटाक्स 6— पानी से भीगने अथवा सर्दी लगने के कारण रोग हुआ हो तो इसे दें । इसमें जीभ का अग्रभाग लाल रहता है ।

जेल्सीमियम 30— चेहरे का तमतमाना, आँखों में पानी भरा रहना, सिर

में भारीपन और दर्द, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, सुस्ती, कम्प, ठण्ड लगना, आदि लक्षणों पर ।

आर्सेनिक 3x, 6, 30— अत्यधिक प्यास, भय, बेचैनी, स्वर-भङ्ग थकान, गहरी सुस्ती, कष्टदायक खाँसी, चिकना तथा कड़ा बलगम, छींक तथा अर्द्धरात्रि के बाद रोग के लक्षण बढ़ने पर इसे देना चाहिए ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) लाइकर अमोनिया एसीटेट 3 ड्राम, टिंक्चर एकोनाइट 1 बूँद, स्पिरिट ईथरिस नाइट्रोसि 1 ड्राम, टिंक्चर क्लोरोफार्म 20 बूँद, टिंक्चर नक्स वोमिका 15 बूँद तथा डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस— इन सबको मिला दें । इसे 1 औंस की मात्रा में तीन बार दें, यह इन्फ्लुऐञ्ज़ा में हितकर है ।

(2) ऐस्प्रीन 5 ग्रेन तथा डोबर्स पाउडर 5 ग्रेन— दोनों को मिला लें, इस मिश्रण को 6-6 घण्टे के अन्तर से दें । इसे देने के बाद पसीना के लिए निम्नलिखित मिक्श्चर देना चाहिए ।

लाइकर अमोनिया एसीटेट 120 बूँद, पोटाश एसीटास 20 ग्रेन, स्पिरिट ईथर नाइट्रोसाई 15 बूँद, सिरप एरेशिया 30 बूँद, एकुआ क्लोरोफार्म 1 औंस । इसे 4-4 घण्टे के अन्तर से देना चाहिए ।

पित्त-ज्वर (Continued Fever)

यह ज्वर वर्षाऋतु अथवा उसके अन्त में—(भादों से कार्तिक मास के बीच) आता है । जिस वर्ष वर्षा अधिक होती है, तब इसका प्रकोप अधिक रहता है । वर्षाऋतु में पित्त का सञ्चय होता है और वह शरद ऋतु में कुपित होकर अनेक रोग उत्पन्न कर देता है । अतः वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर जब धूप पड़ती है, तब पित्त दूषित होकर ज्वर उत्पन्न कर देता है । इस ज्वर में शरीर का तापमान 103 से 106 डिग्री तक हो जाता है । सिर का गरम रहना, पसीना अधिक आना, आँखों में लाली, अनिद्रा, मुँह का स्वाद कड़वा हो जाना, पेशाब के रङ्ग में पीलापन, पतले दस्त, बेचैनी आदि लक्षण प्रकट होते हैं, यह ज्वर 7 से 10 दिन के बीच उतर जाता है । कभी-कभी 21 दिन तक भी रहता है । इसके निम्नलिखित उपचार हैं-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) नागरमोथा, खस, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, सुगन्ध-वाला तथा सौंठ— इन छः वस्तुओं को मिलाकर 1 तोला लें तथा 1 सेर पानी में डालकर

औटायें। जब आधा पानी शेष रह जाय तब उतारकर छान लें और उसे किसी मिट्टी के बर्तन में रख दें । रोगी को प्यास लगने पर केवल इसी 'षड़ङ्गजल' का सेवन करायें । शास्त्रों ने कहा है कि इस ज्वर में 7 दिन तक कोई औषध न दी जाय। केवल इसी पानी का सेवन करने से रोगी की बेचैनी, प्यास तथा ज्वर में कमी आ जायेगी । 7 दिन बाद रोगी स्वयं ही घटकर दसवें दिन आरोग्य हो जाता है । यदि इस बीच औषध देना आवश्यक ही जाना पड़े तो केवल अदरक का रस 3 माशा एवं शहद 3 माशा में 1 रत्ती मकरध्वज मिलाकर सेवन कराना चाहिए । मकरध्वज को शहद में मिलाकर, उनमें 1 तोला धनिये का पानी, परवल के पत्तों का रस अथवा अनार का रस मिलाकर देने से भी बहुत लाभ होता है । यदि 7 दिन बीत जाने पर भी ज्वर का वेग कम न हो तो निम्नलिखित काढ़ा देने से तुरन्त लाभ होगा, परन्तु 7 दिन से पहले यह काढ़ा नहीं देना चाहिए।

जवासा, पित्तपापड़ा, चिरायता, कुटकी, अडूसे की जड़ और प्रियंगु के फूल— इन 6 औषधियों को बराबर-बराबर कुल 2 तोला लें तथा आधा सेर पानी में डालकर चतुर्थांश जल शेष रहने तक औटायें । बाद में उतारकर छान लें और उनमें 2 तोला मिश्री डालकर पी जायं, इसके सेवन से पित्त-ज्वर, वमन, तृषा, जलन आदि में लाभ होगा ।

(2) केवल पित्तपापड़े का काढ़ा भी पित्त-ज्वर में हितकर है। यदि पित्तपापड़े के साथ लाल चन्दन, खस और सोंठ— इन तीनों को भी समभाग, मिलाकर काढ़ा बनाया जाय उसे मिश्री मिलाकर पीया जाय तो भी बहुत लाभ होगा ।

(3) ज्वर को कम करने के लिए गुलाबजल अथवा ठण्डे पानी में सफेद कपड़ा भिगोकर रोगी के सिर पर पट्टी रखनी चाहिए ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) शाहतरा (पित्तपापड़ा), लालचन्दन, नेत्रबाला और सोंठ- इन सबको 4-4 माशा लेकर, इनका काढ़ा बनाकर 3-4 दिन तक लेने से पित्त ज्वर (सफराबी तपह) दूर हो जाता है ।

(2) शर्बत बजूरी या शर्बतलोफर को पानी में मिलाकर पिलाने से पित्त-ज्वर में लाभ होता है । शर्बत, बजूरी पित्त-ज्वर की गर्मी को शान्त करने में बहुत मुफीद है । यह अत्तारों की दुकान पर मिलता है ।

(3) खमीरी खस के चाटने से पित्त-ज्वर और प्यास में फायदा होता है। यह भी अत्तारों के यहाँ मिलता है ।

(4) शर्बत बनफशा— दाह, ज्वर तथा खाँसी में लाभ करता है । शर्बत आलूबुखारा- कफ को दूर करता है, प्यास और जलन को मिटाता है, तथा पित्त को निम्न-मार्ग से निकाल देता है । ये शर्बत अत्तारों के यहाँ मिलते हैं ।

(5) गिलोय, शाहतरा, धनियाँ, मुलहठी, खस, काकड़ासिङ्गी— ये सब सवा-चार मासे लेकर, आधा सेर पानी में औटायें । आधापाव पानी शेष रहने पर मलकर व छानकर पिलायें । इसी तरह सुबह-शाम पिलाते रहें । इस जुशांदे के सेवन से गरमी अथवा नये पुराने तरह के पित्तज्वर में लाभ होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

ब्रायोनियाएल्वा 3, 6, 30— हाथ, पाँव, पीठ, सिर, गर्दन, में दर्द, सूखी खाँसी, श्वास लेने में कठिनाई, तीव्र-प्यास, अरुचि, मुँह के स्वाद में तीखापन, चेहरे पर पीलापन एवं किसी वस्तु के खाने पर वमन हो जाना- आदि लक्षणों पर लाभकारी है ।

विरेट्रम-विरिडि 1x— अधिक कम्प, नाड़ी में तीव्रता तथा भारीपन दुर्बलता, जीभ का पीला पड़ जाना, जी मिचलाना आदि लक्षणों पर इसे दें ।

इयुपेटोरियम पर्फ 3— पित्त की वमन, जी मिचलाना, पानी पीने के बाद वमन हो जाना, सिर एवं सम्पूर्ण शरीर में दर्द आदि लक्षणों पर लाभकर है ।

जेल्समियम 1x— प्यास का कम अथवा बिल्कुल न लगना, आँखों से धुन्धला दिखाई पड़ना, नाड़ी की गति धीमी, कमजोरी की अधिकता आदि लक्षणों पर दें ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सोड़ा बाईकार्ब 10 ग्रेन, पोटाश साइट्रास 10 ग्रेन, पोटाश एसिटास 10 ग्रेन, सोडा सेलिसिलास 10 ग्रेन, सिरप सिम्पलैक्स 1 ड्राम, टिंक्चर कार्ड को 10 बूँद (सब मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है । दिन में 3-4 बार देने से ज्वर धीरे-धीरे कम हो जाता है तथा मस्तक एवं शरीर की पीड़ा भी शान्त हो जाती है ।

(2) विटा साइट्रान 1 ड्राम, सिरप सिम्पलैक्स 1 ड्राम, टिंक्चर कार्ड कं० मिलि. एकुआ (सब मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है । दिन में 3-4 बार देने से ज्वर दूर हो जाता है ।

(3) एलिक्सर को, कम्पलैक्स 1 ड्राम, विटामिन सी, 1M मि. ग्रा., सिरप आरेशाई 1 ड्राम, पानी (सब मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है । दिन में 3-4 बार दें । यह मिक्श्चर ज्वर में विटामिन की कमी को दूर करता है तथा रह प्रकार के ज्वर में लाभकारी है ।

विषम-ज्वर या मलेरिया (Malaria Fever)

यह एक संक्रामक बीमारी है । एक विशेष किस्म के मच्छर द्वारा काटे जाने पर शरीर में यह रोग उत्पन्न होता है । वर्षा ऋतु में यह ज्वर अधिक फैलता है । इसमें पहले जाड़ा तथा बाद में कँपकँपी आती है । तीन-चार कम्बल ओढ़ लेने पर भी ठण्ड नहीं जाती । ठण्ड के साथ ही शरीर में दर्द, सिर में धमक, प्यास, बेचैनी आदि लक्षण प्रकट होते हैं । शीतावस्था के बाद उष्णावस्था आती है, जिसमें शीत घटकर शरीर का तापमान 106 डिग्री तक बढ़ जाता है । तीसरी अवस्था में खूब पसीना आकर ज्वर बिल्कुल उतर जाता है । कभी-कभी बिना कम्प के भी वह ज्वर चढ़ता है । मलेरिया का प्रकोप दिन में एक या दो बार तक होता है । एक दिन छोड़कर आने वाले मलेरिया-ज्वर को इकतरा, दो दिन छोड़कर आने वाले को तिजारी' तथा तीन दिन छोड़कर आने वाले को 'चौथैया' कहते हैं । तीव्र-ज्वर के साथ ही सम्पूर्ण शरीर में जलन, सिर में चक्कर आना, जी मिचलाना, जीभ का स्वाद कड़वा हो जाना, प्रायः कब्ज रहना, हाथ-पाँवों को इधर-उधर पटकना तथा कभी-कभी दस्त भी हो जाना आदि इस रोग के मुख्य लक्षण हैं ।

इसमें निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) एक बड़े कागजी नीबू को चार टुकड़ों में काट लें, फिर मिट्टी के बर्तन में 6 छटाँक पानी डालकर, उसमें नीबू के कटे हुए टुकड़े भी डाल दें तत्पश्चात् बर्तन को आग पर चढ़ाकर उबालें । जब पानी एक तिहाई रह जाय, तब बर्तन को नीचे उतार लें । कुछ ठण्डा हो जाने पर नीबुओं को पानी में ही मसलकर, छान लें तथा छना हुआ रोगी को पिलादें । दिन में तीन बार इस प्रयोग को करने से ज्वर बिल्कुल दूर हो जायेगा ।

(2) नीम की छाल, सत-गिलोय, कालीमिर्च, छोटी पीपल और मुनक्का— इन सबको एक-एक तोला लें । मुनक्कों के बीज निकाल दें तथा कालीमिर्च, छोटी पीपल एवं नीम की छाल को कूट-पीस कर कपड़छन करलें । फिर सब वस्तुओं को गुलाबजल में खरल करके छोटी-छोटी टिकिया बनाकर रख लें।

ज्वर आने से 2 घण्टे पूर्व अथवा चढ़े हुए ज्वर में गरम पानी के साथ 1 टिकिया खिलाते रहने से दो-तीन दिन में ही ज्वर दूर हो जाता है ।

(3) कलौंजी 1 तोला को आग में भून लें । फिर उसमें 1 तोला गुड़ मिलाकर सेवन करें । यह विषम ज्वर के लिए अत्युत्तम योग है ।

(4) तुलसी के पत्तों के रस में कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से विषम-ज्वर में लाभ होता है ।

(5) गिलोय, कुटकी, नीम की छाल, धनिया, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, सनाय और बड़ी हरड़—इन सबको 4-4 माशे लेकर कूट लें तथा आधा सेर पानी में पकायें । जब आधा पाव पानी शेष रह जाय, तब उतार कर छान लें। इस काढ़े को निबाया-निबाया 2-2 घण्टे बाद दिन में 5 बार सेवन करते रहने से सब प्रकार के विषम-ज्वर दूर हो जाते हैं ।

(6) आक की जड़ 2 तोला तथा कालीमिर्च 1 तोला—इन्हें बकरी के दूध में पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें । पारी के ज्वर में ज्वर आने से पहले एक गोली खिलादें तो वह दूर हो जायेगा । जाड़े के ज्वर में भी यह बहुत लाभकारी है ।

(7) सिरस के फूल, हल्दी और दारु हल्दी- इनके कल्क में घी मिलाकर नस्य देने से चौथैया-ज्वर दूर होता है ।

(8) सफेद चिरचिटे (अपामार्ग-ओंगा) की जड़ को दूध के साथ पीने से अथवा पान में रखकर खाने से बहुत दिनों पुराना चौथैया-ज्वर भी दूर हो जाता है ।

(9) फिटकरी को भूनकर उसके बराबर मिश्री मिलायें, आधे माशे की मात्रा में इसे खिलाने से तिजारी दूर हो जाता है तथा जिस व्यक्ति को खाँसी हो, उसे यह दवा नहीं देनी चाहिए ।

(10) पुराने बोरे की राख को शहद में मिलाकर चाटने से इकतरा तिजारी, चौथैया तथा दिन में दो बार आने वाले ज्वर भाग जाते हैं ।

(11) खुरासानी अजवायन 3 माशा तथा मुलहठी 9 माशा— इन दोनों का काढ़ा पिलाने से पारी का ज्वर दूर हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) करञ्जवा के पत्ते 1 तोला तथा कालीमिर्च 7 दाने—इन्हें पानी में पीस-छानकर कुछ दिनों तक सुबह-शाम पिलाते रहने से मलेरिया बुखार चला जाता है ।

(2) ढाक के बीजों के ऊपरी लाल छिलके दूर कर लें । फिर उनके वजन के बराबर करञ्जवा के बीज मिलाकर महीन पीस-छानकर पानी में गूँथकर, चने के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । बुखार आने से 4 घण्टे पहले 1-1 गोली 2-2 घण्टे के अन्तर से दें तो पहले ही दिन बुखार नहीं आयेगा । यदि आया भी तो बहुत हल्का आयेगा । दो-तीन दिन तक इस दवा के सेवन से इकतरा, तिजारी, चौथैया या रोज आने वाला हर प्रकार का बुखार दूर हो जाता है ।

(3) मलेरिया के रोगी को अगर कब्ज हो तो उसे पहिले 7 माशा सनाय और 5 माशा सोंफ का काढ़ा बनाकर पिलाना चाहिए, ताकि उसका पेट साफ हो जाय । उसके बाद ही जाड़े के बुखार वाली दवा देनी चाहिए ।

(4) फिटकरी को भूनकर तथा महीन पीसकर रख छोड़ें । मलेरिया ज्वर आने से 4 घण्टे पहले 4-4 रत्ती उक्त फिटकरी के चूर्ण को थोड़ी सी खाँड मिलाकर 2-2 घण्टे के अन्तर से खिलायें तो बुखार नहीं आयेगा ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मलेरिया आफीशिनैलिए 30, 200— मलेरिया फैलने के दिनों में इस औषध की सप्ताह में एक-दो मात्रा ले लेने से मलेरिया-ज्वर से सुरक्षा रहती है।

ब्रायोनिया 6—ठण्ड लगने से पहले ही शरीर का गरम हो जाना, तीव्र प्यास, ज्वर की अपेक्षा ठण्ड अधिक लगना आदि लक्षणों पर ।

इपिकाक 3x, 6, 30— पाकयन्त्र में खराबी के कारण उत्पन्न ज्वर, जिसमें वमन, मितली, कुछ देर जाड़ा एवं अधिक समय तक उष्णता के लक्षण दिखाई दें तथा तापमान बढ़ जाने के बाद अधिक पसीना आना, मुँह का जायका कड़वा हो जाना आदि लक्षणों में क्विनीन तथा आर्सेनिक के अपव्यवहार के कारण पुराने पड़ गये मलेरिया-ज्वर पर ही यह अधिक उपयोगी है । इस औषध के प्रायः एक बार के प्रयोग से ही लाभ हो जाता है या दूसरी औषध के ठीक चुनाव के लिए लक्षण स्पष्ट हो जाता है ।

आर्सेनिक एल्बम 3 से 200 **तक**— पुराने विषम-ज्वर में जिनमें कि प्लीहा अथवा यकृत् बढ़ गया हो अथवा सूजन हो तो- वह विशेष उपयोगी हैं । ज्वर के साथ बेचैनी, दर्द, प्यास जल्दी-जल्दी लगना, परन्तु पानी थोड़ा ही पीना, दिन में दो-तीन बार अथवा एक-दो या तीन दिन छोड़कर आने वाला ज्वर । जाड़ा कभी कम और कभी अधिक लगना आदि लक्षणों में हितकर है ।

नेट्रमम्यूर 200— ज्वर प्रातः 9 से 12 बजे के बीच आकर 4-4 घण्टे

बाद उतर जाता हो, ज्वर के समय वमन अथवा जी मचलाना आदि लक्षणों पर । जब ज्वर कम हो अथवा बिल्कुल न हो तब इसकी एक या तो मात्रायें देनी चाहिए ।

विरेट्रम-एल्ब 3x— प्रातः 6 से 8 बजे के बीच आकर 4-5 घण्टे साथ ज्वर चढ़ना, अधिक देर तक ठण्ड लगना, कब्ज, सिर-दर्द तथा हाथ-पाँव में ऐंठन आदि लक्षणों पर ।

फेरमफॉस— प्रतिदिन 12 से 2 बजे के बीच ठण्ड लगना तथा ज्वर का तेज हो जाना एवं रात के समय ठण्डा पसीना आना- इन लक्षणों पर । ज्वर के न होने पर औषध का 200x अथवा 1M का क्रम देने से ज्वर रुक जाता है ।

पल्सेटिला 6, 12, 30— पाकाशय की खराबी से उत्पन्न ज्वर, प्रातः तीसरे प्रहर अथवा सायंकाल जाड़ा लगना, प्यास न रहना, ताप का कुछ ही समय ठहरना, हाथ-पाँवों में जलन, भोजन के बाद तन्द्रा आदि लक्षणों एवं क्विनीन के अपव्यवहार से उत्पन्न ज्वर में हितकर है ।

थूजा 200— प्रातः 3-4 बजे अथवा सायंकाल 3-4 बजे खूब ठण्ड लगकर ज्वर आना, हवा में भी जाड़ा लगना, जाँघों में अधिक ठण्ड लगना शरीर का जो भाग ढँका हो उसमें ठण्ड लगना आदि लक्षणों पर ।

सैड्रन 30— ज्वर का दिन में 1-2 बजे एकदम ठीक समय पर आना तथा उसी समय ठण्ड लगना शुरू होना, हाथ-पाँवों में दर्द की अधिकता आदि लक्षणों पर।

चिनिनम-आर्स 30— ज्वर का प्रायः तीसरे प्रहर आना, ठण्ड अधिक लगना, अग्नि पर तापने की इच्छा, गरम पानी अच्छा लगना, कमजोरी की अधिकता तथा पसीना आ जाने पर चैन मिलना आदि लक्षणों पर ।

एपिसमेल 30— दिन के 3 बजे सर्दी लगना, प्यास न रहना, गर्मी का बुरा तथा ठण्डी हवा का अच्छा लगना, शरीर में पित्ती उछलना, पेशाब कम तथा गहरे रङ्ग का होना, पसीना अधिक न आना, ठण्ड के समय थोड़ी प्यास तथा ठण्डा पानी पीने की इच्छा आदि लक्षणों पर ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) क्विनीन-सल्फ 16 ग्रेन, हाइड्रोब्रोमिक डिल $1\frac{1}{2}$ ड्राम, लाइकर, आर्सेनिक हाइड्रोक्लोर 8 बूँद, टिंक्चर क्लोरोफार्म 40 बूँद, टिंक्चर नक्सवोमिका 1 ड्राम तथा डिस्टिल वाटर 8 औंस ।

ज्वर आने से पूर्व हर एक घण्टे पर 1-1 औंस की 4 मात्राएं पिलायें यह मलेरिया में हितकर है ।

(2) टिंक्चर चिरायता 1 औंस, क्विनीन, 25 ग्रेन, नक्सवोमिका एक्सट्रैक्ट, 2 ग्रेन तथा लाइकर आर्सेनिक 15 बूँद । सबको मिला लें । 24 खुराक औषध मानकर आधी छटाँक पानी के साथ दिन में 3 बार सेवन करते रहें ।

(3) भुनी फिटकरी (एलम) 2 ड्राम, आर्सेनिक 1 ग्रेन तथा पाउडर कैप्सिकम 6 ग्रेन सबको खरल करके गोंद के पानी में 24 टिकिया बना लें । प्रतिदिन 1-1 टिकिया दिन में 3 बार सेवन करते रहने से पुराना मलेरिया दूर हो जाता है ।

(4) मलेरिया-ज्वर में निम्नलिखित इञ्जेक्शन भी हितकर हैं, इन्हें डाक्टर के परामर्शानुसार प्रयोग करें—

मेरोफ्रेन, क्विनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड, सोडियम कोकाडिलेट पैल्ड्रीन, मैफसीइड मैपोकेन, मेथिनो सल्फेट आदि ।

आन्तरिक-ज्वर या टाइफाइड (Typhoid Fever)

इसे 'मोतीझरा' के नाम से भी पुकारा जाता है । यह रोग प्रायः भोजन की अशुद्धता एवं कुपथ्य से होता है । इसमें छोटी आँत में जख्म हो जाते हैं। इस रोग में ज्वर हर समय बना रहता है । सामान्यतः प्रातः 99 डिग्री एवं सायंकाल 100 डिग्री तापमान बना रहता है । कभी-कभी इससे अधिक भी बढ़ जाता है । इस ज्वर में रोगी प्रायः प्रलाप भी करने लगता है अथवा बेहोश हो जाता है । कभी-कभी खाँसी भी उठती है तथा पेट में हल्का दर्द-सा भी बना रहता है । रोग की अधिकता में छाती, गला, पेट, जाँघ आदि स्थानों पर छोटी-छोटी सफेद रङ्ग की चमकदार फुन्सियाँ भी निकल आती हैं । इसके रोगी के शरीर से एक विशेष प्रकार की गन्ध निकलती है, जिसके कारण चतुर चिकित्सक तुरन्त ही इसकी पहिचान कर लेते हैं । पेशाब का रङ्ग लाल हो जाता है तथा उसकी मात्रा में कमी आ जाती है । जीभ के अग्रभाग पर मैल भी जम्र जाता है । इस रोग के साथ ही न्युमोनिया हो जाना बहुत खराब लक्षण है । सामान्यतः यह रोग दो सप्ताह तक बढ़ता है तीसरे सप्ताह के प्रारम्भ में ज्वर कम होने लगे तो उसे शुभ और यदि बढ़ने लगे तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए । सामान्यतः चौथे सप्ताह में रोग स्वयं ही ठीक हो जाता है।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

न्युमोनिया, दस्त, रक्ताधिक्य आदि की शिकायत हो जाने पर तुरन्त ही किसी अनुभवी चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए । रोग की सामान्य अवस्था में निम्नलिखित उपचार हितकर सिद्ध होते हैं-

(1) रोगी को पूर्ण शान्त रहने दें, कुछ भी न खिलायें, कड़ा उपवास करने दें, रोगी यदि दुर्बल हो तो दाने निकल आने पर धान की खील अथवा गाय या बकरी का उबला हुआ दूध थोड़ी मात्रा में दिया जा सकता है । दो-चार दिन बाद पेट में मल की गाँठें बँध जाती हैं, उन्हें निकलने के लिए मुनक्के का काढ़ा या सुहाते गुनगुने पानी का ऐनीमा दिया जा सकता है । ग्लैसरीन की बत्ती का प्रयोग करना भी ठीक रहता है । 10 लौंग डालकर पानी को गरम करें । जब सेरभर पानी 6 छटाँक रह जाय, तब उसे ठण्डा कर, तीन-तीन घण्टे के अन्तर से थोड़ा-थोड़ा रोगी को पिलाते रहें । इससे प्यास तथा बेचैनी में कमी आयेगी ।

(2) लौंग, ब्राह्मी, वायबिडङ्ग तथा हंसराज प्रत्येक 3-3 माशा तथा मुनक्का 7 नग—इन सबको कूट-पीसकर 4 छटांक पानी में डालकर इतना पकायें कि वह 1 छटाँक रह जाय । यह एक मात्रा हुई । ऐसी तीन मात्रायें दिन भर में तीन बार रोगी को दें । 12 वर्ष से कम आयु वाले बच्चे तथा शिशुओं के लिए इस काढ़े की मात्रा में और भी कमी कर देनी चाहिए, यदि रोगी को दस्त हो रहे हों तो मुनक्के के स्थान पर 3 माशा नागरमोथा लेना चाहिए । इस काढ़े को पिलाते रहने से रोगी को चैन मिलता है ।

(3) बरगद के वृक्ष की कोमल तथा बाजरे का काढ़ा पीने से मोतीझरा में लाभ करती है ।

(4) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलहठी तथा कालीदाख के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से मोतीझरा में लाभ होता है ।

(5) गले में सच्चे मोतियों की माला पहिनने से भी गले तथा छाती पर निकलने वाले दानों में बहुत लाभ होता है ।

(6) गिलोय के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से भी मोतीझरा में लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) उन्नाव 2 दाने, मुनक्का 3 दाने खूबकला 3 माशा और मिश्री 1

तोला— इन सबको आधा पाव पानी में उबाल कर छान लें तथा थोड़ा-थोड़ा करके दिन में 2-3 बार पिलायें। यदि खाँसी हो तो इस नुस्खे में 1 माशा मुलहठी बढ़ा दें। अगर कब्ज अधिक हो तो—1 टुकड़ा अञ्जीर भी मिलाया जा सकता है।

अगर सातवें दिन भी दाने न निकलें या कम निकलें और बुखार तथा बेचैनी रहे तो मुनक्के की गुठली निकाल कर, उसमें आधा रत्ती केसर रखकर गोली-सी बनाकर, रोगी बच्चे को निगलवा दें, अथवा तुलसी के पत्ते 7 नग, केसर 2 रत्ती और कालीमिर्च 7 दाने पीसकर 21 गोलियाँ बनाये। उनमें से 1-1 गोली दूध में घोलकर बच्चे को दें। इसके दाने जल्दी निकल आयेंगे और बुखार उतर जायगा। अगर बड़ी उम्र के मनुष्य को यह रोग हुआ हो तो उसे ये दवाएं कुछ अधिक मात्रा देनी चाहिए।

(2) खूबकला 5 तोला, 5 सेर पानी में उबालें, फिर रोगी को चारपाई पर लिटाकर या कुर्सी पर बैठाकर चादर उढ़ा दें। सिर्फ मुँह खुला रखें, तत्पश्चात् चारपाई या कुर्सी के नीचे काढ़े वाले बर्तन को रख दें। उसकी भाप लगने से मोतीझरा के दाने जल्दी निकल जायेंगे और बुखार भी उतर जायगा दानों के जल्दी निकलने पर भी यह उपाय ठीक रहेगा।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

टायफोयेडियम 200— यह रोग की प्रतिषेधक औषध है। मौसम के दिनों में सप्ताह में इसकी 1 मात्रा लेने से रोग होने का भय नहीं रहता। यह औषध रोग के आरम्भ से अन्त तक लाभ करती है।

ब्रायोनिया 30— यह औषध दानों को निकलने में सहायक है। प्याज की तीव्रता, छाती तथा शरीर में दर्द, भूख न लगना, खाँसते समय छाती में दर्द— जिसके कारण रोगी छाती को पकड़ लेता हो एवं मुँह का स्वाद तीता हो जाना आदि लक्षणों पर हितकर है।

जेल्सीमियम 30—सदैव एक-सा बना रहने वाला ज्वर, शरीर में तीव्र दर्द, चुपचाप पड़े रहना, कमजोरी आदि लक्षणों पर हितकर है। बच्चों के लिए विशेष लाभ करती है।

रसटाक्स 30— अधिक बैचैनी, बार-बार करवट बदलना, जीभ के अग्रभाग का लाल हो जाना, पतले दस्त, पेट में गुड़गुड़ाहट, कमर में अधिक दर्द, छटपटाना, दुर्गन्धित एवं रक्त-मिश्रित दस्त, स्वप्न देखना आदि लक्षणों पर।

आर्सेनिक 3x, 30— छटपटाना, गहरी सुस्ती, तीव्र ज्वर एवं प्यास जीभ

का रङ्ग लाल हो जाना, शरीर में फुन्सियाँ निकलना, धड़ के अतिरिक्त हाथ-पाँवों का हिलना त्वचा का रूखा हो जाना, ठण्डा पसीना, आधी रात के बाद रोग बढ़ना आदि रोग-वृद्धि की अवस्था में हितकर है।

हायोसायमस 30, 200— रोग की अन्तिम अवस्था, जबकि नाड़ी तीव्र हो तथा अङ्गों का भड़कना, चेहरे का गरम हो जाना, प्रलाप, भ्रम, अनजाने में मल-मूत्र का विसर्जन, दाँतों का किटकिटाना, जगने पर ठीक-ठीक उत्तर न देना, कपड़े उतारकर नङ्गा हो जाना आदि लक्षणों में।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) लाइकर एमौन साइट्रेट 2 ड्राम, सोडिआई क्लोरास 5 ग्रेन, सोडिआई सल-ओकार्बोनास 3 ग्रेन, टिंक्चर ओरेन्शिआई फ्लोरिस 10 ग्रेन, एकुआ ओरेन्शिआई (कुल मिलाकर) 1 औंस।

यह एक खुराक हुई। दिन में 3 ऐसी खुराक दें।

(2) ऑयल ऑफ टारपेण्टाइन 1 ड्राम, लाइकर पुटासी 1 ड्राम, न्युसिलेज ऑफ गम ऐकेशिया 2 ड्राम, सिरप ऑफ पॉपीज 4 ड्राम, सिरप ऑफ ओरेञ्ज 4 ड्राम तथा कैम्फर वाटर 5 औंस।

सबको मिलाकर रख लें मात्रा आधा औंस 1 प्रति 2 घण्टे बाद पिलाते रहें।

(3) निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ टाइफाइड में लाभ करती हैं-

क्लोरोमायसेटिन, क्लोरेम्फेनिकल, इण्टेरोमायसेटिन, बायोमायसेटिन, क्लोरेम्फाइसिन तथा अम्ब्रासिन्थ।

निम्नलिखित इञ्जेक्शन टायफाइड में उपयोगी हैं-

क्लोरोमाइसेटिन सक्सिनेट, इण्टेरोमायसेटिन तथा गुइकोमायसेटिन।

पेटेण्ट औषधियों तथा इञ्जेक्शनों का प्रयोग डाक्टर के परमार्शानुसार ही प्रयोग करें।

चेचक (Small Pox)

यह संक्रामक तथा विस्फोटक-ज्वर है। इसमें पहले चार-छः दिन तक तीव्र-ज्वर आता है, फिर चौथे या आठवें दिन शरीर पर छोटे-छोटे सफेद दाने दिखाई देते हैं। इन छोटे दानों को 'खसरा' कहा जाता है, यह रोग प्रायः बच्चों को अधिक होता है। जिसमें बड़े दाने निकलते हैं, उसे शीतला, चेचक अथवा बड़ी माता कहा जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार यह रोग अपने आप अच्छा होने वाला है, अतः इसमें औषध देने की आवश्यकता नहीं होती । आरम्भिक लक्षणों के बाद तीसरे या चौथे दिन रोगी के शरीर पर पहले मस्तक, गर्दन तथा छाती में लाल चिह्न से दिखाई देते हैं । फिर ये चिह्न सम्पूर्ण शरीर में फैल जाते हैं और 48 घण्टों के भीतर दाने उभर कर द्रव पदार्थ भर जाता है । फिर 48 घण्टे में पीव पैदा हो जाता है । यह समय बड़ा भयानक कष्ट का होता है । प्रायः ग्यारहवें दिन दाने सूखने लगते हैं और उन पर खुरण्ड पैदा हो जाते हैं । 3-4 दिन में खुरण्ड झड़ जाते हैं तथा रोगी ठीक हो जाते हैं ।

चेचक के दाने, आँख, जीभ, नाक आदि के भीतर भी निकलते हैं और उनमें खुजली भी मचती है । इन दानों को खुजाने से आँखों के मारे जाने तथा शरीर के कुरूप हो जाने का खतरा रहता है, अतः इन्हें खुजाना नहीं चाहिए। चेचक के दाग प्रायः जीवन भर बने रहते हैं ।

रोगी के विश्वास तथा आराम के लिए इस रोग में निम्नलिखित उपचार करने चाहिए :-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) चेचक के दाने निकलने से पहले ही गधी का दूध पिलाने से या तो चेचक निकलती ही नहीं और यदि निकलती भी है तो बिना किसी उपद्रव के शान्त हो जाती है ।

(2) असली रुद्राक्ष को घिसकर पिलाने से शीतला का प्रभाव दूर हो जाता है ।

(3) शीतला के दाने निकल आने पर रोगी को मुनक्के खिलाने चाहिए तथा केशर मिश्रित दूध पिलाना चाहिए ।

(4) नीम के सूखे पत्तों तथा हल्दी को कपड़छन कर लें । इसी को कण्डों की राख को छानकर मिला लें । इस मिश्रण को रोगी के बिस्तर पर अच्छी तरह बिछा दें । इससे दानों के फूट जाने पर भी रोगी को अधिक कष्ट नहीं होता तथा दाने शीघ्र ही सूख भी जायेंगे ।

(5) पटोल-पत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जबासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तापापड़ा- इन सबको समभाग लेकर, काढ़ा बनाकर पीने से बिना पकी शीतला नष्ट हो जाती है तथा पकी-हुई शीतला शुद्ध हो जाती है । विस्फोट ज्वर (चेचक का बुखार) को शान्त करने के लिए यह सर्वोत्तम औषध है ।

(6) सिरस की छाल, पीपल के वृक्ष की छाल, लिसौड़े के वृक्ष की छाल तथा गूलर के वृक्ष की छाल— इन सबको कूट-पीस छानकर, गाय के घी में मिलाकर चेचक के दानों पर लगाने से उनकी दाह या जलन अवश्य शान्त हो जाती है ।

(7) पाँव के तलवों की फुन्सियों में जलन हो तो चावलों का पानी बनाकर उन पर सींचना चाहिए । आधा पाव चावलों को आधा सेर पानी में रात को भिगो दें । प्रातःकाल उसे छानकर प्रयोग में लें । चावलों को दो-तीन घण्टे तक पानी में भिगोने से भी सींचने योग्य जल तैयार हो जाता है ।

(8) मुलहठी तथा गदहपूर्ना को पीसकर पानी में घोलकर छान लें । इस पानी से प्रतिदिन आँखों को सींचते रहने से, शीतलता के कारण आँखों को किसी प्रकार की हानि पहुँचने का खतरा नहीं रहता ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) उन्नाव 2 दाने, खूबकलाँ 3 माशा और मिश्री या चीनी 6 माशा— इन्हें पानी में उबाल कर रोगी को पीने के लिए दें । अगर कब्ज हो तो नुस्खे में 3 दाने मुनक्का तथा 1 दाना अञ्जीर का और बढ़ा दें । अगर खाँसी हो तो इस नुस्खे में 1 माशा मुलहठी बढ़ा दें ।

(2) खमीरा मरवारीद एक-एक मात्रा चाटने से रोगी को बहुत आराम मिलता है ।

(3) चेचक के दाने निकलने लगें, तब कोई ठण्डी या दस्तावर दवा नहीं देनी चाहिए और न रोगी को ठण्डी हवा ही लगने देनी चाहिए ।

(4) दानों में खुजली हो तो झाऊ के पत्तों तथा भोजपत्र की धूनी शरीर को देनी चाहिए । इससे खुजली कम हो जायगी तथा खुरण्ड जल्दी सूखकर उतर जायेंगे ।

(5) दानों के सूख जाने और खुरण्ड बँध जाने पर उन पर गाय का घी या तिल का तैल लगायें । इससे खुरण्ड जल्द उतर जायेंगे । बाद में भी इस घी या तेल को कुछ दिनों तक लगाते रहें । इससे निशान गहरे और भद्दे नहीं हो सकेंगे ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

वेक्सीनिनम 6x **वि॰**, 30— यह इस रोग की प्रतिषेधक औषध है । जिन दिनों यह बीमारी फैल रही हो, उन दिनों इस औषध की केवल 1 मात्रा

लेने से ही रोग होने का भय नहीं रहता । एक प्रकार से चेचक का टीका लगने जैसा काम हो जाता है । **वैरयोलिनम** 30 अथवा **मलेण्ड्रिनम** 30 को सप्ताह में एक-दो बार सेवन करने रहने से भी यही लाभ होता है ।

इस बीमारी की विभिन्न अवस्थाओं में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं । लक्षणों को भली-भाँति देखकर ही इन औषधियों का प्रयोग करना चाहिए । पोटेन्सी तथा मात्रा आवश्यकतानुसार निश्चित कर लेनी चाहिए ।

(1) ज्वर की प्रारम्भिक अवस्था में—**थूजा, विरेट्रम-विरिडि, बैप्टीशिया, एकोनाइट** ।

(2) दाने निकलने पर—**रसटाक्स, एण्टिम-टार्ट, सैरासिनिया** ।

(3) दानों में मवाद पड़ जाने पर—**एण्टिम-टार्ट, मर्क्यूरियस** ।

(4) दानों के बैठ जाने पर—**सल्फर, थूजा, कैम्फर** ।

(5) गले में सूजन तथा आँखें बन्द होने पर—**बेलाडोना** ।

(6) आँखों में जलन होने पर—**सल्फर, मर्ककोर** ।

(7) प्रलाप अधिक होने पर—**विरेट्रम-विरिडि, स्ट्रैमो** ।

(8) दानों के पकते समय सन्निपात ज्वर के लक्षण प्रकट होने पर—**रसटाक्स** ।

(9) दानों के निकलते समय, दानों के धीरे-धीरे निकलने पर, दानों के काले पड़ जाने पर तथा मितली, वमन, गले में घरघराहट एवं निद्रालुता के लक्षणों पर—एण्टिम-टार्ट ।

(10) नींद न आने तथा बेचैनी पर—**काफिया** ।

(11) दानों में मवाद भर जाने पर 1 भाग बोरिक-एसिड में 20 गुना जैतून का तेल (ऑलिव ऑयल) मिलाकर सम्पूर्ण शरीर पर लेप कर देना चाहिए । इससे खुजली कम होती है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

चेचक न निकले, इसलिए प्रतिषेधक टीके लगाये जाते हैं । परन्तु चेचक के दाने निकल आने के बाद मुख्यतः उनके लिए किसी औषध का प्रयोग नहीं किया जाता । यदि चेचक के साथ ही कोई अन्य विकार भी प्रकट हों अथवा रोग के कारण रोगी को अधिक व्याकुलता हो तो उस समय चिकित्सक की राय के अनुसार उपचार करना चाहिए ।

फुफ्फुस-प्रदाह या न्युमोनिया (Pneumonia)

गर्मी-सर्दी के असन्तुलन, अधिक सर्दी लग जाना, ओस में सोना, आदि कारणों से यह रोग होता है । इसमें पहले जाड़ा लगकर ज्वर आता है तथा शरीर का तापमान 102 से 107 डिग्री तक बढ़ जाता है । सिर में दर्द, वमन तथा खाँसी आदि उपसर्ग प्रकट होते हैं तथा श्वास लेने में कष्ट होता है । इस रोग का मूल कारण एक प्रकार के कीटाणु हैं । यह संक्रामक तथा खतरनाक बीमारी है जो बड़ी तेजी से बढ़ती है । छोटे बच्चों को यह रोग अधिक होता है । इस रोग के लक्षण प्रकट होते ही किसी सुयोग्य चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए । रोग बढ़ जाने पर असाध्य हो जाता है और रोगी की कुछ ही घण्टों में मृत्यु भी हो सकती है । अतः इस रोग को बहुत जटिल समझकर तुरन्त ही समुचित चिकित्सा करनी चाहिए । इस रोग में खाने के साथ मालिश की औषध का भी व्यवहार करना आवश्यक है । जहाँ योग्य-चिकित्सक उपलब्ध न हों, वहाँ निम्नलिखित औषधोपचार करना चाहिए ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) रोगी को अन्धेरी अथवा ठण्डी वाली जगह में न रक्खें । रोगी के कमरे में धुँआ भी नहीं होना चाहिए । रोगी के फेफड़ों को हर आधा घण्टे बाद रुई के फाहे से सेकते रहें, परन्तु हृदय को बचाये रक्खें । पाँवों को गरम पानी की बोतल से सेकें । रोगी को श्वास लेने में कठिनाई हो तो उसकी छाती को कुछ ऊँचा रक्खें, परन्तु उसे पीठ के बल अर्थात् चित्त ही लिटायें । रोही को हल्के तथा गरम कपड़े पहनाने चाहिए । रोगी की छाती तथा पसलियों पर जैतून अथवा तारपीन के तैल मालिश कर, रुई द्वारा सेकें तथा उस स्थान को रुई से दबाकर बाँध दें, रोगी को पूर्ण विश्राम एवं नींद लेने दें ।

(2) तुलसी के पत्ते 22 तथा कालीमिर्च 15 अदद लेकर दोनों को चटनी की भाँति पीस लें । फिर 4 छटाँक पानी को आग पर चढ़ाकर उबालें जब दो छटाँक पानी शेष रह जाय, तब उसे उतार कर छान लें तथा उसमें पूर्वोक्त चटनी मिलाकर रोगी को गुनगुना रहते ही पिला दें दिन में कई बार ऐसा करते रहने से निमोनिया का प्रभाव दूर हो जाता है ।

(3) बारहसिङ्गा का सींग 5 तोला को घीग्वार अर्थात् ग्वारपाठे के लुआव 6 तोला में रखकर ऊपर से कपड़ मिट्टी करके सुखा लें । फिर उसे 10 सेर उपलों के बीच में रखकर फूँक दें । इस प्रकार बारहसिङ्गा की भस्म तैयार हो

जायगी । उस भस्म को 1 से 2 रत्ती तक की मात्रा में शहद के साथ दिन में तीन-चार बार चाटने से पसली का दर्द शीघ्र शान्त हो जाता है । निमोनिया की यह श्रेष्ठ औषध है । 'श्रङ्ग-भस्म' नाम से तैयार भी मिलती है ।

(4) असली सिन्दूर को असली शहद में मिलाकर घोट लें । साथ में थोड़ा कपूर भी डाल लें । फिर जितने स्थान में दर्द हो, उतना ही बड़ा सफेद कपड़ा लेकर, उसके ऊपर उक्त मिश्रण का लेप करें तथा उस कपड़े को दर्द वाले स्थान पर चिपकाकर ऊपर से पट्टी बाँध दें । इससे पसलियों का दर्द दूर हो जायगा ।

(5) सफेद फिटकरी तथा अच्छी कालीमिर्च— दोनों को 1-1 तोले लें और पीसकर कपड़छन करलें । उसे शीशी में भरकर डाट लगाकर रख दें । 1 तोला शहद में 3 माशे इस चूर्ण को मिलाकर रोगी को चटा दें । यदि एक मात्रा से आराम न हो तो 40 मिनट बाद ही दूसरी मात्रा दे दें । इससे पसली के दर्द में तुरन्त आराम होगा ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बारहसिंहा का सींग 1 तोला लेकर, उस पर अजवायन और शोराकलमी 1-1 तोला को थोड़े-से पानी में पीसकर लेप कर दें । फिर उसे 2 सेर कोयलों की आग रक्खें । जब आग ठण्डी हो जाय, तब बारहसिंघे के सींग की डली को निकालकर महीन पीस लें । निमोनिया तथा पसली के दर्द में इस चूर्ण को 2 से 4 रत्ती तक की मात्रा में एक तोला शुद्ध शहद में मिलाकर सुबह-शाम चटायें तथा बारहसिंघे के सींग को पानी में घिसकर, उसमें थोड़ी-सी कालमिर्च पीसकर हल्का गरम करें और उसे दर्द वाली जगह पर लगायें । इससे लाभ होगा ।

(2) तारपीन के तेल की मालिश करने से निमोनिया तथा पसली के दर्द में बहुत फायदा होता है ।

(3) अरण्ड की जड़ 6 माशा तथा सोंठ 3 माशा को पानी में उबाल कर छान लें । फिर उसमें 2 तोला शहद मिलाकर रोगी को पिलायें ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 6— यह औषध रोग की प्रारम्भिक-अवस्था में हितकर है ।

ब्रायोनिया 3, 6, 30— छाती, पार्श्व, सम्पूर्ण शरीर में दर्द, हिलने डुलने से दर्द बढ़ना, तीव्र प्यास, सूखी खाँसी, जीभ पर पीला या मोटा लेप चढ़ जाने की स्थिति में ।

फास्फोरस 6, 30— खाँसते समय दर्द, छाती में तीव्र वेदना, श्वास में आरी चलने जैसी आवाज, श्वास-कष्ट के कारण पानी भी न पी सकना—इन लक्षणों में । बच्चों के न्युमोनियाँ में शीघ्र लाभदायक है ।

एण्टिमटार्ट 3, 12— श्वास-नली में प्रदाह, कफ का अधिक घरघराना परन्तु उसके बाहर निकालने में अत्यधिक कष्ट, वमन, मिचली अत्यधिक-बेचैनी, चेहरे का काला-पीला पड़ जाना, नाड़ी की चाल का बढ़ना, परन्तु शारीरिक-ताप का कम हो जाना आदि लक्षणों पर ।

लाइकोपोडियम 12, 30— रोग की तीसरी अवस्था, टाइफ़ाइड के साथ न्युमोनिया । अधिक बलगम निकलना एवं यकृत् की गड़बड़ी के लक्षणों में । बायीं ओर के न्युमोनिया में विशेष हितकर है ।

बेलाडोना 30— चेहरे तथा आँखों का लाल हो जाना, अनिद्रा, सिर में रक्ताधिक्य, सोते में चौंक पड़ना आदि लक्षणों में ।

सल्फर 30— छाती में कफ का धड़कना, श्वासावरोध जैसी स्थिति, शरीर में दाह, खाँसी सिर का गरम होना आदि लक्षणों में ।

रसटाक्स 6— त्वचा का सूखी एवं गरम होना, तन्द्रा, अत्यन्त बेचैनी कम सुनाई देना, अनजाने में पेशाब निकल जाना आदि लक्षणों पर ।

आर्सेनिक 6— अत्यधिक बेचैनी चेहरे का फीका पड़ जाना, तीव्र प्यास के कारण बार-बार पानी माँगना, परन्तु एक साथ अधिक पानी न पी सकना आदि लक्षणों पर ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सल्फा डायाजिन एक टेबलेट, एम. बी. 693 एक टेबलेट, सोड़ा-बाईकार्ब 5 ग्रेन, कोपिलन आधी टेबलेट, सीलिन 100 मि. ग्रा. वाली एक टेबलेट तथा बेरिक 10 मि. ग्रा. वाली एक टेबलेट ।

इन सबके पीसकर 8 पुड़िया बनालें । हर 3 घण्टे बाद 1-1 पुड़िया देते रहें । चौबीस घण्टे के अन्दर 8 पुड़ियाँ खिलादें ।

(2) एमोन-कार्ब 3 ग्रेन, स्प्रिट अमोनिया, अमोनिया एरोमेटिक 20 बूँद, स्प्रिट केलीपुट 15 बूँद, टिंक्चर मिला 5 बूँद तथा इन्फ्यूसन सिनेगा (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक खुराक है । दिन में कुल 4 खुराक हर 4 घण्टे बाद दें ।

(3) निमोनिया में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं—

टेरामाइसिन, फीनोसिन, एक्रोमाइसिन, ओरासिन, के. सुवामाइसिन तथा टरोथ्रोसिन ।

(4) न्युमोनियाँ में निम्नलिखित इज्जेक्शन लाभकारी हैं—

एनासिन, टेरामाइसिन, सड्रीनेलिन, स्ट्रोफेन्थीन, कोरामीन, डिलेनोन ऐण्टीन्यूमोकोकस, सल्फा पायोराडीन, डियाक्लीन, किनीन, सोडियम सल्फाथियाजोल तथा न्यूमाकोकस बेक्सीन ।

ग्लूकोज, डिजिटेलिस तथा कैम्फर आदि इञ्जेक्शन भी आवश्यकतानुसार दिये जाते हैं ।

(5) निम्नलिखित बैक्सीन न्युमोनिया में हितकर हैं—

बैक्सीन टाइफाइड फायलाकोजन—आरम्भ में इसके 5 इञ्जेक्शन हाइपोडर्मिक प्रणाली से, बाद में इण्ट्रावीनस प्रणाली से लगाये जाते हैं । मात्रा-1 से 5 सी. सी. तक । यह टाइफाइड में भी लाभ करती है ।

बैक्सीन न्युमोनिया फायलाकोजन—इसके इञ्जेक्शन भी पूर्वोक्त वैक्सीन की प्रणाली से लगाये जाते हैं । यह न्युमोनिया की सबसे भयानक अवस्था में लाभ करती है ।

खाँसी या कास (Cough)

कुपथ्य, नाक में धूल अथवा धुँए के प्रवेश आदि कारणों से खाँसी उठती है । यह कोई स्वतन्त्र रोग न होकर, अन्य रोगों का लक्षण मात्र है, परन्तु कुछ दिनों तक स्थायी रहने पर यह अन्य अनेक रोगों को उत्पन्न कर देती है । खाँसी मुख्यतः दो प्रकार की होती है— (1) सूखी तथा (2) तर, अर्थात्—कफ वाली। नयी खाँसी प्रायः सूखी होती है, पुरानी हो जाने पर वह कफ वाली बन जाती है । खाँसी की एक किस्म कुकर-खाँसी भी है, जो प्रायः 2 से 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों की होती है । इस खाँसी के साथ एक लम्बी-सी आवाज आती है तथा मुँह खुल जाता है । यह खाँसी बहुत कठिन होती है । इसमें खाँसते-खाँसते वमन भी हो जाता है तथा बहुत खाँसने पर भी कच्चे झागदार थूक के अतिरिक्त कफ नहीं निकलता ।

खाँसी के रोगी को तेल, खटाई, गुड़, लालमिर्च तथा चिकनाई वाली वस्तुओं का सेवन एवं धूम्रपान नहीं करना चाहिए । इसमें निम्नलिखित उपचार हितकर है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) हल्दी 1 तोला, सज्जीखार 3 माशा तथा पुराना गुड़ 1 तोला—इन सबको मिलाकर बेर के बराबर की गोलियाँ बना लें । इन गोलियों को मुँह में रखकर चूसते रहने से हर प्रकार की, विशेषकर प्रतिवर्ष जाड़े के दिनों में रहने वाली खाँसी में लाभ होता है ।

(2) अदरक का रस, पान का रस तथा शहद—इन तीनों को समभाग मिलाकर, तीन-तीन मासे की मात्रा में दिन 3-4 बार चाटने के सामान्य खाँसी में शीघ्र लाभ होता है ।

(3) मुलहठी और उन्नाव के सत को समभाग लेकर मुँह में डालकर धीरे-धीरे चूसते रहने से खाँसी में लाभ होता है ।

(4) कालीमिर्च, पीपल तथा सोंठ—इन्हें समभाग लेकर चूर्ण बनावें । इस चूर्ण को एक-एक माशे की मात्रा में, दिन में 3-4 बार शहद मिलाकर चाटने से खाँसी में लाभ होता है ।

(5) 1 तोला गुड़ को 2 तोला गाय के घी के साथ मिलाकर खाने से सूखी-खाँसी में लाभ होता है ।

(6) कमलगट्टे की गिरी को पीसकर शहद के साथ चाटने से सूखी - खाँसी में तुरन्त लाभ होता है ।

(7) रीठे के छिल्के को खूब महीन पीसकर पानी अथवा गुलाबजल के संयोग से मूँग के बराबर की गोलियाँ बना लें । दो गोली गुलाब के अर्क के साथ दें । इससे कुकर-खाँसी के कारण होने आले दस्त तथा वमन बन्द हो जाते हैं । जब तक दूषित द्रव्य बाहर न निकल आये, तब तक वमन और दस्त बन्द नहीं करने चाहिए ।

(8) एक मिट्टी की छोटी-सी हाँडी में आक (मदार) के फूल डालकर ऊपर से पिसा हुआ सेंधा नमक छोड़ दें । उसके ऊपर फिर आक के फूल भरकर, पुनः नमक छिड़कें । जब तक हाँडी भर न जाय, तब तक इसी प्रकार नमक की पर्त लगाते हुए आक के फूलों से हाँडी को भरकर आग पर चढ़ा दें । जब वह लाल हो जाय, तब हाँडी को नीचे उतार कर ठण्डा कर लें । फिर उसमें से आक के फूल निकालकर पीस लें तथा शीशी में भरकर रख लें ।

इस चूर्ण को 3 से 4 रत्ती तक की मात्रा में दिन में 3-4 बार शहद के साथ चाटते रहने से कुकर-खाँसी एक सप्ताह में ही समाप्त हो जाती है ।

यूनानी चिकित्सा

(1) तम्बाकू का गुल (जो हुक्का पीने के बाद चिलम में बचा रहता है।) को इकट्ठा करके इतना जलायें कि वह सफेद राख हो जाय इस राख को 1 या 2 रत्ती मात्रा मे पान में रखकर खिलाने से बलगमी-खाँसी और बलगमी-दमा में लाभ होता है ।

(2) हल्दी 1 माशा और सज्जी 3 माशा—इन दोनों को पीसकर तथा पानी में गूँथकर जङ्गली-बेर के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । 1-1 गोली सुबह-शाम खिलाने से बलगमी-खाँसी में लाभ होता है ।

(3) अमलतास का गूदा 5 तोला को पानी में घोलकर छान लें फिर उसमें 1 पाव चीनी मिलाकर आग पर पकायें, जब क्वाम बन जाय, तब उतार लें। दिन में 6-6 माशे की मात्रा में 3-4 बार चटाने से हर तरह की खाँसी दूर होती है तथा कब्ज भी नहीं रहता ।

(4) हालौन 2 तोला को पीसकर शहद 6 तोला में मिला लें । दिन में 4 बार 6-6 माशे की मात्रा में सेवन करने से बलगम निकलकर सीना साफ हो जाता है । यह बलगम खाँसी में बहुत फायदेमन्द है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 3x, 6— नयी सूखी-खाँसी, जो चित्त लेटने पर, विशेषकर रात के समय बढ़ जाती हो । गले के भीतर खरखराहट तथा ठण्डा पानी पीने की इच्छा आदि लक्षणों पर ।

इपिकाक 30— सीने में बलगम जमा होने पर भी खाँसते समय न निकलना, श्वास लेने में कष्ट, दुर्गन्धयुक्त कफ, मिचली, वमन, स्वर-भङ्ग, हाथ-पाँव का अकड़ना आदि लक्षणों पर । बच्चों की काली-खाँसी में विशेष हितकर है ।

एण्टिम टार्ट—छाती में कफ घड़घड़ाना, परन्तु बाहर निकालने की शक्ति न रहना, दम फूलना व तीव्र खाँसी के लक्षणों में ।

कैमोमिला 12—सूखी-खाँसी, रात में सोते समय खाँसी का बढ़ना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाना—इन लक्षणों पर ।

लैकेसिस 30— गले में जख्म, कफ का कष्टपूर्वक निकलना, छाती पर हाथ में दबाने से खाँसी उठना ।

हिपर सल्फर 6— सर्दी लगने से बढ़ने वाली पुरानी-खाँसी, स्वर - भङ्ग

के साथ खाँसी, तरल-खाँसी, दिन में कफ अधिक निकलना तथा रात्रि में न निकलना ।

कैल्केरिया-कार्ब 6— पहली नींद के बाद ही सूखी-खाँसी उठना, दिन में मीठे स्वाद वाला पीव जैसा दुर्गन्धयुक्त पतला बलगम निकलना, छाती में घरघराहट आदि लक्षणों पर ।

मर्कसोल 6— चिकने बलगम वाली तथा रात्रि में बढ़ जाने वाली पुरानी ढ़ीली खाँसी पर ।

कार्बोवेज 6— सामान्य सर्दी लगने से उत्पन्न खाँसी पर ।

ब्रायोनिया 30— गले में सुरसुराहट के साथ सूखी खाँसी का खाना खाने के बाद उठना तथा पीला-नीला, रक्त-मिश्रित कफ निकलना ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) एफेड्रीन $\frac{1}{3}$ ग्रेन, डार्टिनल $\frac{1}{6}$ ग्रेन, कोडीन फॉस $\frac{1}{2}$ ग्रेन, सिरप ग्लूकोज 1 ड्राम तथा एकुआ (सब मिलाकर) 1 औंस । यह सब 1 खुराक है । दिन में 3-4 बार देने से खाँसी दूर होती है ।

(2) बाइ कार्बोनेट ऑफ पोटास 40 ग्रेन, एण्टीमोनियम वाइन $1\frac{1}{2}$ ड्राम, इपिकाकुआना-वाइन 20 बूँद, सिरप ऑफ लेमन $2\frac{1}{2}$ ड्राम, एकुआ $2\frac{1}{2}$ औंस। सबको मिलालें ।

मात्रा 2 ड्राम । हर 3-4 घण्टे बाद दें । इससे कुकर-खाँसी में लाभ होता है ।

(3) एण्टी पाइरिन 1 ग्रेन, क्विनीन, हाइड्रो ब्रोमाइड 7 ग्रेन, टिंक्चर बेलाडोना 16 बूँद, सिरप टालू 3 ड्राम, एकुआ क्लोरोफार्म (सब मिलाकर) 4 औंस ।

यह 12 खुराकें हैं । दिन में 3 बार 1-1 खुराक दें । जब मरीज अच्छा होने लगे, तब शक्ति-बर्द्धक औषध भी दें । यह कुकर-खाँसी की दवा है। । यह रोग प्राय: 7 वर्ष की आयु के बच्चों को अधिक होता है ।

(4) खाँसी की पेटेण्ट औषधियों में पेप्स, कासाकोडीन, ग्लाइकोडिन टर्पवसाका, फेन्सिडिल, बिनैड्रिल ऐक्सपेक्टोरेण्ट आदि हैं ।

(5) कुकर-खाँसी की पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

सिरप सायोजाइड, पर्टयूसाल आदि ।

ट्रिपल बेक्सीन, कुकर-खाँसी की प्रतिषेधक दवा है ।

(6) खाँसी में प्रयुक्त होने वाले इञ्जेक्शन निम्नलिखित हैं—

बेला फोलाइन—यह खाँसी में आने वाली वमन को रोकता है, तथा कुकर-खाँसी में भी लाभ करता है ।

डायोमोर्फीन हाइड्रोक्लोराइड—यह खाँसी, दमा ब्रॉकाइटिस तथा यक्ष्मा आदि में लाभकारी है ।

एसिड-फॉस—पुरानी खाँसी में हितकर हैं ।

रक्त-पित्त (Hemoptysis)

अधिक शोक, रञ्ज, परिश्रम तथा बहुमैथुन करने से एवं तीक्ष्ण, चटपटे, खट्टे, गरम आदि पदार्थों के सेवन से जला हुआ पित्त खून को जलाता है । तब वह मुँह, नाक, कान, नेत्र आदि शरीर के ऊपरी अथवा गुदा, योनि लिङ्ग आदि निम्न मार्गों से निकलने लगता है । विशेषकर मुँह से खून जाने को ही बोलचाल की भाषा में 'रक्त-पित्त' कहते हैं । ज्वर, रक्त-वमन, खाँसी, श्वास, कमजोरी, बेचैनी, भोजन के बाद जलन का अनुभव, दाह, मूर्च्छा, प्यास सिर-दर्द आदि इसके उपसर्ग है ।

निम्नलिखित योग रक्त-पित्त में लाभ पहुँचाते हैं-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) अडूसे के पत्तों का रस, गूलर के फलों का रस तथा लाख का भिगोया हुआ पानी—इन्हें मिलाकर पीने से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(2) एक या सवा मासे फिटकरी के महीन चूर्ण को दूध में मिलाकर पीने से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(3) अडूसे के पत्तों के स्वरस में तालीस-पत्र का चूर्ण तथा शहद मिलाकर पीने से रक्त-पित्त में लाभ होता है ।

(4) हरड़ को अडूसे के पत्तों के रस में 7 दिन तक खरल करके शहद के साथ खाने से रक्त-पित्त नष्ट होता है ।

(5) दाख और प्रियंगु के फूल 1-1 तोला, बकरी का दूध 16 तोला तथा पानी 1 सेर—इन सबको मिलाकर औटायें । जब दूध शेष रह जाय, तब उसे छानकर रोगी को पिला दें । इससे रक्त-पित्त नष्ट होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) पियाबाँसे (अडूसे) के पत्ते एक तोला को पानी में पीस छानकर शहद

मिलाकर पियें । इसे कुछ दिनों तक इस्तेमाल करते रहने पर वायु-नली अथवा फेफड़ों से खून आना बन्द हो जाता है ।

(2) कच्चे गूलर एक पाव लेकर $2\frac{1}{2}$ लीटर पानी में उबालें । जब वे गल जायँ और पानी छठा हिस्सा रह जाय, तब उतारकर गूलरों को मल लें तथा पानी को छान लें । इस पानी में आधा सेर चीनी मिलाकर शर्बत का कवाम बनायें । हर रोज 2-2 तोले इस शर्बत को चाटते रहें । इससे खून गिरना बन्द हो जायगा ।

(3) गेरू और सेलखड़ी एक-एक माशा लेकर महीन पीस लें तथा इस चूर्ण को किसी भी शर्बत में मिलाकर दिन में 2-3 बार चाटें । इससे शरीर के किसी भी अङ्ग से गिरना वाला खून बन्द हो जायगा ।

(4) कीकर की कोंपल, अनार के पत्ते और आँवला—ये सब 4-4 माशे तथा सूखा धनिया 2 माशे—इन सबको रात के समय पानी में भिगो दें । सुबह उसी पानी में सबको पीस छानकर, मिश्री से मीठा कर लें और पी लें । इस प्रयोग द्वारा किसी भी अङ्ग से आने वाला खून रुक जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एकोनाइट 6x— पाकाशय में दर्द, कलेजे का धड़कना, ज्वर तथा घबराहट के लक्षणों में ।

इपिकाक 3x, 6— वमन के साथ चमकीला लाल रक्त निकलना, बार-बार खाँसी उठना, जीभ का तर होना आदि लक्षणों पर ।

हैमामेलिस 1x— बिना कष्ट के रक्तस्राव होना, हल्के काले रङ्ग का खून निकलना, पेट में गड़बड़ी आदि लक्षणों पर ।

आर्सेनिक 6x— साँस लेने में कष्ट, कलेजे का धड़कना, शरीर में दाह तीव्र प्यास आदि लक्षणों पर ।

इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ भी लाभ करती हैं—

नक्सवोमिका 5, **फेरम** 6, **बेलाडोना** 6, **सिकेलि** 2x, **क्रोटन** 2x, **फास्फोरस** 6, **चायना** 3, 30, **आर्निका माण्टेना** 3x, 30, **तथा मिल्लिफोलियम वि.** 1x.

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) इस रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभ करते हैं-

कोगोरेड, कैल्शियम क्लोराइड, कैल्मीनोल, मार्फिया एट्रोपिन, कैल्शियम ग्लूकोनेट, पिट्रयूट्रीन, एर्गोटीन, साइट्रेट तथा इमैटोन हाइड्रोक्लोराइड ।

(2) स्ट्रेप्टोमाइसिन के इञ्जेक्शन भी आवश्यकतानुसार दिये जाते हैं ।

(3) एलोपैथी में इस रोग की चिकित्सा प्रायः क्षय-रोग के समान ही की जाती है ।

मन्दाग्नि, कब्ज, अफारा

(Constipation, Anorexia Dyspepsia. etc)

खान-पान में खराबी, अधिक जागरण आदि अनेक कारणों से पेट की अग्नि मन्द पड़ जाती है, जिसके कारण भूख अधिक लगती है फिर कब्ज (कोष्ठ बद्धता), अरुचि, अजीर्ण, अफारा, भूख अधिक लगना, भस्मक रोग) पेट में भारीपन, जी मिचलाना, खट्टी-मीठी डकारें आना आदि अनेक प्रकार के विकार प्रकट होते हैं । यहाँ मन्दाग्नि तथा उसे सम्बन्धित अन्य विकारों की सामान्य चिकित्सा सम्बन्धी सरल योगों को प्रस्तुत किया जा रहा है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) चिरचिटा (अपामार्ग) के बीजों को दूध में डालकर खीर पकायें । इस खीर को खाने से भस्मक-रोग (अत्यधिक भूख लगना) दूर होता है ।

(2) गूलर की छाल को स्त्री के दूध में घिसकर पीने से भस्मक-रोग नष्ट होता है ।

(3) हरड़, पीपल और सोंठ- तीनों को समभाग लेकर चूर्ण करलें । इसे 3-3 माशे की मात्रा में नित्य दो-तीन बार सेवन करते रहने से अग्नि प्रदीप्त होती है, प्यास दूर होती है तथा मन्दाग्नि (बदहज्मी) नष्ट हो जाती है ।

(4) लौंग, सोंठ, कालीमिर्च और भुना हुआ सुहागा—इन सबको समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बनालें । फिर खरल चिरचिटे अथवा चीते की छाल का रस डालते हुए घोटें तथा अन्त में चने के बराबर की गोलियाँ बना लें । दो-तीन बार 2-2 गोली पानी के साथ सेवन करते रहने से मन्दाग्नि और अजीर्ण-रोग दूर होते हैं ।

(5) अजवायन 4 तोला और सेंधा नमक एक तोला दोनों को कूट-पीसकर रख लें । प्रतिदिन प्रातः-सायं 2 माशे चूर्ण फाँककर ऊपर से थोड़ा-सा सिरका पी लिया करें । इससे मन्दाग्नि तथा बादी के विकार शीघ्र दूर हो जाते हैं ।

(6) पकी हुई मीठी इमली के पने में सेंधा नमक, कालीमिर्च तथा हींग डालकर पीने से मन्दाग्नि तथा अरुचि की शिकायत दूर हो जाती है ।

(7) तारपीन का तेल 6 माशा तथा अरण्डी का तेल 1 तोला दोनों को मिलाकर पेट पर मलें । ऊपर से अरण्डी के पत्ते को गरम करके बाँध दें । इससे पेट का अफारा दूर हो जाता है ।

(8) 1 तोला सनाय और 6 माशे सौंफ—इन्हें पानी में उबाल कर छान लें । फिर उसमें थोड़ी-सी खाँड मिलाकर पियें । इससे दस्त साफ ऊपर कब्ज दूर हो जायगा ।

(9) पीली हरड़ के छिलके को पीसकर छान लें, फिर उसमें थोड़ा-सा पिसा हुआ लाहौरी नमक मिलाकर 6 माशे की मात्रा में फाँककर ऊपर से गुनगुना पानी पी लें । इससे कब्ज दूर हो जायगा ।

(10) असमलतास की गिरी 4 तोला को रात के समय पानी में भिगो दें । सुबह उसे मलकर छान लें । फिर उसमें दो तोला चीनी मिलाकर पियें। इससे कब्ज दूर होगा ।

(11) असली गुलाब के फूलों का गुलकन्द 4 तोला रात के समय खाकर, ऊपर से दूध पीकर सो जायें । प्रातःकाल एक-दो दस्त साफ आयेंगे और कब्ज दूर हो जायेगा ।

(12) अदरक का रस 1 तोला को थोड़े-से शहद में मिलाकर पीने से अपच के कारण आने वाली डकारों आदि की शिकायत दूर हो जाती है ।

(13) पीपल और सौंठ के चूर्ण में गुड़ मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण, आम-शूल तथा सूजन आदि विकार दूर होते हैं ।

(14) नीबू के रस में जायफल घिसकर पिलाने से दस्त साफ होकर, अजीर्ण अफरा तथा पेट का शूल आदि रोग नष्ट होते हैं ।

(15) हरड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल—इन्हें 1-1 तोला लेकर कूट-पीसकर छान लें । इनके 3 माशे चूर्ण को प्रातः-सायं फाँककर ऊपर से ताजा पानी पी लेने से 6 दिन के भीतर ही अजीर्ण नष्ट हो जाता है।

(16) सोंठ, कालीमिर्च और पीपल—तीनों को समभाग लेकर कूट-पीसकर छान लें । 2-2 माशे की मात्रा में इस चूर्ण का सेवन करते रहने से अजीर्ण दूर होता है, भोजन पचता है तथा वायु शान्त होती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अजवाइन 5 तोला को नीबू के रस में भिगोकर सुखा लें । फिर उसे थोड़े-से काले नमक के साथ पीस-छानकर रख लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे

की मात्रा में सुबह-शाम ताजा पानी के साथ लें । इससे खाना जल्द हज्म होगा, बदहज्मी दूर होगी, हवा खारिज होगी तथा पेट का दर्द दूर होगा ।

(2) पाँच तोला कलौंजी को रातभर सिरके में भिगोकर रख दें । दूसरे दिन उसे छाया में सुखाकर सफूफ (चूर्ण) बनायें और 15 तोला असली शहद में मिलाकर रख लें । इस माजून को रोज सुबह-शाम 6-6 माशे चाटते रहें । इससे भूख लगेगी तथा हवा भी खारिज हो जाती है ।

(3) अदरक का रस 1 तोला थोड़े-से शहद में मिलाकर चाटने के कुपच के कारण आने वाली बुरी डकारें दूर हो जाती हैं ।

(4) अजवाइन 1 तोला, सोंठ 6 माशा तथा काला नमक 6 माशा इन तीनों को महीन पीसकर, 3-3 माशे को मात्रा में गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पेट का दर्द दूर हो जाता है ।

(5) आक (मदार) के बिना खिले फूल 5 तोला, सोंठ 3 तोला तथा काला नमक 1 तोला को महीन पीस-छानकर नीबू के रस में गूँथकर जंगली बेर के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें जरूरत के समय 1 गोली गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से अपच तथा पेट के दर्द में लाभ होता है ।

(6) एक तोला अदरख के रस में थोड़ा-सा नमक डालकर पीने से अफरा दूर होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

पेट सम्बन्धी विभिन्न विकारों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ देनी चाहिए । मात्रा आवश्यकतानुसार निश्चित कर लें ।

नक्सवोमिका 30, 200— एक बार में पाखाना साफ न हो, दो-तीन बार मल-विसर्जन की इच्छा हो तो इसे रात को सोते समय लें । कलेजे में जलन, मुँह का स्वाद खट्टा होना, पेट में मरोड़, ऐंठन, दस्त न होना आदि लक्षणों में भी हितकर है ।

ब्रायोनिया 6, 30— मल खुश्क हो जाना तथा तीव्र प्यास के लक्षणों में ।

ओपियम 30— कई-कई दिनों तक दस्त न होने पर भी कष्ट का अनुभव न होना तथा आँतों का काम बन्द कर देना ।

प्लम्बम 6— पुराने कब्ज में ।

एल्युमिना 30— आँतों की वेहद खुश्की में ।

कैल्केरिया-कार्ब 6— खट्टी वमन में ।

सल्फर 30— खट्टी डकार, कब्ज, पाकाशय में भारीपन आदि विकारों में ।

कार्बोवेज 30— यह अजीर्ण-रोग की श्रेष्ठ औषध है । खट्टी डकार वायु-सञ्चय, पेट फूलना आदि सभी विकारों को दूर करती है ।

लायकोपोडियम 30- अफारा, अजीर्ण तथा अधोवायु न निकलना आदि लक्षणों में ।

पल्सेटिला 6— प्यास का अभाव, जीभ सूखना तथा पतले दस्तों में ।

कोलोसिन्थ 2x, 30— पेट में मरोड़, ऐंठन, शूल जैसा दर्द, दबाने से दर्द कम होना आदि लक्षणों में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) पिल कोलोसिन्थ 60 ग्रेन, एक्सट्रैक्ट हायोसियामस 8 ग्रेन, एक्सट्रैक्ट बेलाडोना 4 ग्रेन, पोडोफाइलम $2\frac{1}{2}$ ग्रेन ।

इन सबको मिलाकर 16 गोली बनालें । भोजन के बाद 2 गोली दें । यह कब्ज में हितकर है ।

(2) कब्ज के लिए निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं—

परगोलेक्स, कैस्टीफीन, ग्लैक्सोन, टैक्सीन, हर्बोलैक्स, ट्रिफोलेक्सिन ग्लैक्सोना तथा कैस्टोबेस्ट ।

(3) एसकार्बिक एसिड 100 मि. ग्रा. एलिक्जिर विटामिन बी. 100 मि. ग्रा. कम्पलैक्स विद फोलिक एसिड 1 ग्राम, सिरप जिंजर 1 ड्राम तथा एकुआ एनेसी (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

इसे भोजन के बाद दिन में 3 बार दें । यह मिक्चर अजीर्ण में उपयोगी है ।

(4) अजीर्ण में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं-

डीजीप्लेक्स, पिटाडायस्टेज, पैक्रिजायम, कम्बिडायस, डायजेञ्जायम आदि ।

(5) मन्दाग्नि तथा अजीर्ण में 'एन्यूरीना' का इञ्जेक्शन लाभ करता है। यह इञ्जेक्शन पाचन-क्रिया के दोष, रक्ताल्पता, थकान, मस्तिष्क-दोष आदि में भी हितकर है ।

उदर-शूल का पेट या दर्द (Colic Pain)

यह रोग प्रायः अजीर्ण के कारण उत्पन्न होता है । इसमें पेट में शूल गढ़ने जैसी वेदना होती है । अम्लपित्त रोग में भी पेट-दर्द होता है, जिसे 'अम्लशूल' कहते हैं । पित्त के सूखकर कठोर हो जाने पर जो पेट में तीव्र शूल होता है, उसे 'पित्त-शूल' कहते हैं । इसके रोग में पेट में तीव्र वेतना के साथ ही पित्त-वमन अथवा मिचली के लक्षण भी प्रकट होते हैं । पेट में कीड़ों के कारण भी शूल होता है । भोजन के बाद नियमित रूप से जो शूल होता है, उसे 'परिणाम-शूल' कहते हैं । अतः शूल-रोग के यथार्थ कारण को जानकर ही उसकी चिकित्सा करनी चाहिए । मूल कारण को नष्ट कर देने से शूल रोग स्वतः दूर हो जाता है । शूल-रोग की तात्कालिक-शान्ति के लिए निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) शंख, काला नमक, भुनी हुई हींग, सोंठ, कालीमिर्च तथा पीपल-इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर चूर्ण करें । 3 माशा चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पेट के दर्द में लाभ होता है । अजीर्णजन्य शूल में यह विशेष हितकर है ।

(2) हरड़, बहेड़ा, आँवला और राई—इन्हें समभाग लेकर चूर्ण करें । 6 माशा चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से लाभ होता है । यह कब्ज में विशेष हितकर है ।

(3) असली जवाखार को $1\frac{1}{2}$ माशा की मात्रा में गरम पानी के साथ हर घण्टे बाद देने से वृक्क-शूल अर्थात् गुर्दे के दर्द में शीघ्र लाभ होता है ।

(4) पिपरमेण्ट का फूल आधी रत्ती अथवा 1 रत्ती की मात्रा में पानी अथवा बताशे में डालकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है ।

(5) कागजी नीबू का रस 1 तोला, शहद 3 माशा तथा जवाखार 3 माशा—इन सबको मिलाकर पीने से हर प्रकार का भयङ्कर पेट-दर्द भी दूर हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अजवायन 5 तोला और नौसादर 2 तोला को महीन पीसकर छानकर रख लें । जरूरत के वक्त 2-2 माशे चूर्ण को गुनगुने पानी के साथ पिलाने से पेट का दर्द दूर होता है ।

(2) अजवायन 1 तोला, सोंठ 6 माशा तथा काला नमक 3 माशा इन तीनों को महीन पीसकर 3-3 माशे की मात्रा में गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से पेट का दर्द दूर होता है ।

(3) आक के बिना खिले फूल 5 तोला, सोंठ 3 तोला तथा काला नमक 1 तोला महीन पीस-छानकर कागजी नीबू के रस में गूँथकर झार-बेरी के बराबर गोलियाँ बनाकर रखलें । आवश्यकता के समय 1 गोली गुनगुने पानी के साथ दें । इससे पेट-दर्द तथा अपच की शिकायत दूर हो जायेगी ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 6,30— यदि कब्ज के साथ पेट दर्द हो ।

कोलोसिन्थ 6, 30— यदि नाभि के चारों ओर तीव्र वेदना हो ।

लाइकोपोडियम 30— अफरा, अजीर्ण, अधोवायु न निकलना आदि शिकायतों के साथ होने वाले पेट दर्द में ।

कैमोमिला 12, 30— आमाशय, पेट और नाभि के समीप भयानक कटन के साथ दर्द, मुँह से लार अधिक आना, कमर में टूट जाने जैसा दर्द आदि लक्षणों में ।

चायना 30— दुर्बल शरीर वाले लोगों के पेट का दर्द, जिसमें अफरा भी अधिक हो, अपान-वायु न खुलना तथा आँथों में खिंचाव आदि लक्षणों में।

सल्फर 12, 30— नाभि-शूल, नाभि के समीप तनाव, अफरा, पेट में गड़गड़ाहट, हवा न खुलना आदि पर ।

एकोन 12, 30— पेट में सख्त दर्द, ऐंठन, आँतों में गड़गड़ाबट, गर्मी का अनुभव, कमर के निचले भाग में दर्द, पेट का स्पर्श करना भी सहन न हो।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक आधा औंस, टिंक्चर सिनकोना कम्पाउण्ड आधा औंस तथा टिंक्चर केप्सिकम 1 ड्राम—इन सबको मिला लें। मात्रा 5 से 265 बूँद तक पानी के साथ लें । यह पेट के दर्द को दूर करता है ।

(2) सोडा वाई कार्ब 20 ग्रेन टिंक्चर कार्ड को 20 बूँद नीबू का रस 20 बूँद तथा पानी 4 औंस ।

नीबू के रस के अतिरिक्त तीनों वस्तुओं को पहले गिलास में डालें । ऊपर से नीबू का रस निचोड़ कर तुरन्त रोगी को पिला दें । एक खुराक से लाभ न

होने पर, थोड़ी देर बाद ही दूसरी खुराक दें । इससे हर प्रकार का दर्द 15 मिनट में ही ठीक हो जाता है तथा रोगी को नींद आने लगती है ।

(3) निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ उदर-शूल में लाभ करती हैं-

बैलेडेनल, स्पाज्मोसिवालजीन, स्पाज्मण्डाल आदि ।

(4) निम्नलिखित इञ्जेक्शन उदर-शूल में हितकर हैं—

मार्फिया, मार्फिन, एट्रोपिन, डायोडिन, कोडीन, स्पाज्मिण्डान, मोर्फिन हाइपोफास्फेट, मोर्फिन हाइड्रोक्लोराइड, मोर्फिन हाकेसिन, हाइड्रोब्रोमाइड, अर्गोटिन आदि ।

वमन या उल्टी (Vommiting)

अधिक भोजन, अजीर्ण, यकृत्-विकार, अम्लपित्त, सवारी गाड़ी में यात्रा आदि अनेक कारणों से वमन होती है । यह सूखी उबकाई, पानी पित्त अथवा अन्न की उल्टी, हैजे की उल्टी आदि कई प्रकार की होती है, अतः इसमें लक्षणानुसार औषध देनी चाहिए । इसमें निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) अर्क-कपूर को चीनी में डालकर देने पर हर प्रकार के वमन में लाभ होता है ।

(2) जायफल को पानी में घिसकर चाटने से वमन होना बन्द हो जाता है ।

(3) सौंफ, पोदीना और बड़ी इलायची—इन तीनों को 1-1 तोला लेकर काढ़ा बनावें और उसमें 2 तोला मिश्री डालकर पियें तो वमन में लाभ होगा।

(4) बर्फ के टुकड़ों को मुँह में रखकर चूसने से वमन होना रुक जाता है ।

(5) आधा पाव पानी में एक तोला शहद घोलकर पीने से वमन होना बन्द हो जाता है ।

(6) दूब की जड़ का रस निकाल कर उसमें 2 माशे छोटी इलायची का चूर्ण मिलाकर चाटने से पित्त, पानी अथवा अन्न की वमन रुक जाती है ।

(7) नीबू को बीच में काटकर बीज निकाल दें, फिर उसमें सेंधा नमक तथा कालीमिर्च पीसकर भर दें तथा आग पर थोड़ा-सा गरम करके चूसें । इससे पित्त, पानी अथवा अन्न की उल्टी आना बन्द हो जायगा ।

(8) प्याज का रस, पोदीने का रस, मूली का रस तथा अदरक का रस इन सबको 1-1 तोला मिलाकर पिलाने से हैजे की वमन रुक जाती है ।

(9) गाय के मूत्र में सेंधा नमक मिलाकर पिलाने से भी हैजे की वमन में लाभ होता है ।

(10) लौंग के चूर्ण को चालीस गुने पानी में औटायें । जब तीन-चौथाई पानी शेष रह जाय, तब उतार लें । हैजे के रोगी को प्यास लगने पर यह पानी पिलायें । इससे वमन रुक जायगी तथा प्यास शान्त होगी ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) दो-तीन तोला बजनी गेरू के टुकड़े को गरम करके पानी में बुझायें। इसी तरह दो-तीन बार करें, फिर वह पानी रोगी को पिला दें । किसी भी कारण से आने वाली उल्टी (कै) इसके प्रयोग से बन्द हो जायगी ।

(2) राई 6 माशा को पानी में पीसकर आमाशय के ऊपर लेप कर दें तथा 10 मिनट बाद ही हटा दें । इससे उल्टी तथा उबकाई आना बन्द हो जायगा ।

(3) एक पाव सिरके में आधा सेर शक्कर मिलाकर शर्बत बनालें । इस शर्बत को चाटने से पित्त के कारण आने वाली उबकाई बन्द हो जायगी ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 3, 6— पित्त की अथवा खट्टी वमन होने पर ।

इपिकाक 6, 30— खाई वस्तु की वमन एवं बार-बार जी मचलाने के लक्षणों में ।

एण्टिम क्रूड 6, 30— वमन तथा जीभ का एकदम सफेद हो जाना आदि लक्षणों में ।

फास्फोरस 6— ठण्डा पानी पेट में पहुँचते ही गरम होकर वमन हो जाने के लक्षणों में ।

आर्सेनिक 6— प्यास, कमजोरी, घबराहट तथा पेट में जलन के लक्षणों सहति वमन होने पर ।

क्युप्रममेट 6x, 30— शूल का दर्द, अधिक हिचकी तथा मल की वमन होने पर ।

प्लम्बम 3, 6, 30— नाभि-स्थल में शूल जैसा दर्द तथा मल का गुदा से न निकलकर, मुख-मार्ग से निकलना और वमन में मल की गन्ध का रहना।

ऐसिड-कार्बोलिक 6, 30— नवीन मन्दाग्नि के कारण वमन तथा मिचली में हितकर है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) अर्क-कपूर (स्प्रिट कैम्फर) की 2-3 बूँद पानी में डालकर पिला देने से उल्टी आना रुक जाता है ।

(2) सेप्टोन नामक इञ्जेक्शन के प्रयोग से उल्टी आना रुक जाता है । यह ज्वर, दमा और श्वास-रोग में भी हितकर है ।

(3) देशी कपूर 1 तोला, डाइल्यूट अल्कोहल 1 ड्राम—दोनों को मिलाकर 5 से 7 बूँद की मात्रा में देने से वमन आना रुक जाता है । यह हैजा की वमन में भी लाभकारी है ।

(4) लेमनजूस 5 ड्राम, प्याज का रस 5 ड्राम, ऑयल मेन्था पिपरेटा 5 ड्राम, कैम्फर स्प्रिट 2 ड्राम तथा टिंक्चर ओपियम 10 बूँद सबको मिलाकर रख लें ।

मात्रा— 2 से 5 बूँद तक । इस औषध की एक ही खुराक से वमन (उल्टी) आना बन्द हो जाता है । यह हैजा, अतिसार, शूल तथा संग्रहणी में भी हितकर है ।

विशूचिका या हैज़ा (Cholera)

विशूचिका अर्थात् हैजा बड़ी भयङ्कर एवं संक्रामक बीमारी है । यह रोग बड़ी तेजी से आक्रमण करता है तथा क्रमशः बढ़ता चला जाता है । इसकी (1) आक्रमण, (2) बर्द्धमान और (3) पतन—ये तीन मुख्य अवस्थायें मानी जाती हैं । इस रोग की कोई अवधि नहीं हैं । 1 से 72 घण्टे तक इसका प्रकोप रहता देखा गया है । इसी अवधि में उचित उपचार हो जाने पर रोगी या तो बच जाता है अन्यथा प्राणों से हाथ धो बैठता है ।

अनियमित भोजन, गन्दा पानी, गन्दी हवा, अपच, गर्मी आदि कारण यह रोग होता है । कभी-कभी यह महामारी के रूप में भी फैलता है । उस स्थिति में स्वस्थ व्यक्ति भी इसकी चपेट में आ जाते हैं । गर्मी के दिनों में तथा भीड़-भाड़ वाली गन्दी जगहों में इसका प्रकोप अधिक होता है ।

इस रोग की प्रथमावस्था में शरीर शिथिल तथा चेहरा विवर्ण हो जाता है, सिर घूमता है, घबराहट बढ़ जाती है तथा रोगी को थोड़ा मल मिले पतले दस्त एवं वमन होने लगते हैं, शरीर कमजोर होता चला जाता है । दूसरी

अवस्था में केवल पानी जैसे दस्त होते हैं, वमन तथा दस्तों की संख्या बढ़ जाती है, पेट में काँटा चुभने जैसी पीड़ा होती है, शिथिलता बढ़ जाती है, आँखें गढ्ढे में धसने लगती है । कभी-कभी पेशाब बन्द हो जाता है । तीसरी अवस्था में रोगी मुर्दे जैसा हो जाता है, उसे श्वास लेने में कष्ट भी होता है, तकलीफ के कारण चीखता है तथा ठण्डे पानी एवं ठण्डी हवा की इच्छा करता है, शरीर पूर्णतः शिथिल हो जाता है, अन्तिम अवस्था में वमन और दस्त बन्द भी हो जाते हैं परन्तु शरीर का तापमान घटता चला जाता है । स्मरण-शक्ति एवं ज्ञान नष्ट न होने पर भी वह बातचीत करने में असमर्थ हो जाता है, पेशाब एकदम रुक जाता है ।

हैजे के लक्षण दिखाई देते ही किसी सुयोग्य चिकित्सक से तुरन्त इलाज कराना चाहिए । यह छूत की बीमारी है, अतः यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अन्य लोगों पर उसका असर न हो । रोगी की वमन अथवा दस्त को तुरन्त ही राख-मिट्टी आदि से ढँक देना चाहिए, ताकि उस पर मक्खियाँ न बैठें, अन्यथा वे बीमारी के कीटाणु एक से दूसरी जगह पर न जायँगी । रोगी की परिचर्य्या में लगे व्यक्तियों को भी अपने बचाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जहाँ चिकित्सक तुरन्त उपलब्ध न हों, वहाँ चिकित्सक के आने तक निम्नलिखित सामान्य उपचारों तथा औषधियों का उपयोग करना चाहिए । इसके व्यवहार से रोगी को मौत के मुँह में जाने से बचाया जा सकता है । इस रोग में रोगी को पानी पीने के लिये नहीं देना चाहिए । परन्तु यदि पानी के बिना रोगी के प्राण जाने की आशंका हो तथा रोगी पानी के बिना अत्यधिक घबड़ा रहा हो तो उसे एक-एक चम्मच पानी पिलाना चाहिए । पिलाया जाने वाला पानी उबला हुआ होना आवश्यक है । उबलने पर एक सेर का एक छटाँक भर शेष रहा पानी पिलाना ठीक बताया गया है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) चिरचिटा (अपामार्ग) की जड़ को पानी में पीसकर पिलाने से शूल सहित हैजा में लाभ होता है ।

(2) बेल का गूदा, सोंठ और जायफल—इन तीनों वस्तुओं को काढ़ा पिलाने से हैजा ठीक हो जाता है ।

(3) मदार की छड़ की छाल 2 तोला, अदरक का स्वरस 2 तोला को खरल में घोंटकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखाकर रख लें । आवश्यकता के समय रोगी को इन्हें एक, दो या तीन-तीन घन्टे के बाद एक

घूँट पानी से निगलवाते रहें । रोग की न्यूनाधिकता के आधार पर इन्हें जल्दी-जल्दी या देर से देना चाहिए । इन गोलियों के सेवन से हैजा में अवश्य लाभ होता है ।

(4) कपूर 1 रत्ती तथा सोंठ का चूर्ण 3 माशा—इन दोनों को इकट्ठा 10-15 मिनट तक खरल करें । इस दवा की 8 मात्राऐं बनायें 15-15 या 20-20 मिनट बाद एक-एक खुराक पिलाते रहें । इससे हैजा में तुरन्त लाभ होता है । वमन और दस्त बन्द हो जाने पर इसे नहीं देना चाहिए ।

(5) अफीम 1 रत्ती, कालीमिर्च 2 रत्ती हींग 2 रत्ती यथा सोंठ 2 रत्ती— इन सबको पीसकर मूँग के बराबर की गोलियाँ बना लें । दिनभर में आवश्यकतानुसार 1 से 5 गोली तक सेवन कराने से हैजा ठीक हो जाता है।

(6) एक तोला अरहर के पत्तों को एक छटाँक पानी में पीसकर कपड़े में छान लें । इस स्वरस को घण्टे-घण्टे भर बाद पिलाते रहने से हैजा ठीक हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) दरियाई-नारियल एक जौ के बराबर, अर्क-गुलाब में घोंटकर चाटने से दस्त और कै (वमन) शर्तिया बन्द हो जाते हैं ।

(2) इलायची के बीज, कासनी और धनियाँ 4-4 माशे तथा गुलकन्द 1 तोला—इन सबको घोंट छानकर पिलाने से गरमी के हैजा में लाभ होता है।

(3) हैजा के रोगी को कै और दस्त अधिक हों तथा आधा रत्ती अफीम को एक रत्ती चूना (पान में लगाये जाने वाले) में मिलाकर खिला दें । इसे दस्त तुरन्त बन्द हो जायेंगे तथा रोगी को नींद आ जायेगी ।

(4) बेलगिरी, सोंठ और जायफल का काढ़ा पिलाने से हैजे में लाभ होता है ।

हैजे की प्यास वमन और मूत्रावरोध

(1) पानी में थोड़ी-सी लौंग अथवा जायफल डालकर औटायें । जब आधा पानी जल जाय, तब उतारकर छानकर ठण्डा कर लें । वह पानी हैजे के रोगी को प्यास लगने पर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से प्यास कम हो जाती है तथा जी मचलाना, हृदय की पीढ़ा, सूखी उबकाई आना आदि लक्षण दूर होते हैं ।

(2) पानी के बर्फ के टुकड़े को चुसाने से प्यास कम हो जाती है ।

(3) राई और कपूर को पानी के साथ पीसकर गरम करके रोगी की छाती पर लेप कर देने से वमन (उल्टी) बन्द हो जाती है ।

(4) गोमूत्र अथवा काँजी को आग पर गरम करके उसमें फलालेन का टुकड़ा भिगोकर निचोड़ लें तथा उससे रोगी के पेट पर धीरे-धीरे सेकें । इसे पेट का दर्द शान्त हो जायगा ।

(5) मोरपंख के चँदोबे को जलाकर राख कर लें । उस 2 माशे राख में थोड़ा-सा शहद तथा पीपल का चूर्ण मिलाकर रोगी को चटाने से वमन (उल्टी) बन्द हो जाती हैं । इससे हिचकी आना भी दूर हो जाता है ।

(6) राई को पानी में गाढ़ा पीसकर एक चौकोर पतले कागज पर लगाकर, कागज को पेट पर चिपका दें । जब जलन होने लगे, तब राई के कागज को मय राई के हटा दें । इससे वमन होना बन्द हो जायगा । तब कोई औषध काम न करे तथा दवा पेट में न ठहरे और वमन होना जारी ही रहे, तब इस उपाय का प्रयोग करने में सफलता मिलती है । इस पलस्तर को न्यूनतम 20 मिनट तक रखना चाहिए । इस पलस्तर को पेट की बजाय पीठ की रीढ़ की हड्डी पर लगाने से भी जलन बन्द हो जाती है तथा कमर पर रखने से बन्द पेशाब खुल जाता है ।

(7) टेसू के फूल और कमली-शोरा—इन दोनों को दो-दो तोले लेकर, सिल पर रखकर पानी के साथ पीसकर लुगदी-सी बनालें । उस लुगदी को रोगी के पेट पर रक्खें । यदि आधा घण्टे के भीतर पेशाब न हो तो इसी लेप को दुबारा लगायें । इससे पेशाब अवश्य खुल जाता है ।

(8) चूहे की मैंगनी में थोड़ा-सा कलमीशोरा मिलाकर पानी के साथ पीस, लुगदी सी बनालें । उसे रोगी की नाभि ने नीचे पेडू पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दें । इस प्रयोग से पेशाब अवश्यक खुल जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

कैम्फर—रोगी के आरम्भ होते ही 5, 10 अथवा 15 मिनट के अन्तर से 1-1 मात्रा 'रुबिनीका कैम्फर' थोड़ी-सी चीनी अथवा बतासे को साथ देना आरम्भ करें । बच्चों को 1 से 3 बूँद तक तथा वयस्कों की 5 से 15 बूँद तक रोग की तीव्रता के अनुसार दें । दो घण्टे की अवधि में यह औषध 10 से 12 बार देने पर भी यदि लाभ दिखाई न दे तो लक्षणानुसार अन्य औषधियाँ देनी चाहिए । सामान्यतः यह हैजे की सर्वश्रेष्ठ दवा है ।

क्युप्रम ऐसेट 3x— अधिक खिंचाव या ऐंठन, हाथ-पाँव की उगलियों के सामने की ओर टेढ़ी दिखाई देने पर इसे दें ।

विरेट्रम ऐल्ब 6— हरे रङ्ग के पानी जैसे दस्त, वमन, पेट में दर्द, सिर

में ठण्डा पसीना, शरीर का ठण्डा हो जाना या नील पड़ जाना एवं उङ्गलियों में ऐंठन आदि लक्षणों के साथ प्रकट होने पर इसे देना चाहिए ।

रिसिनम 3— बिना दर्द के चावल के धोवन जैसे पतले दस्त, बारम्बार वमन होना, दस्तों पर छोटे-छोटे चकत्ते से तैरते हुए दिखाई दें, साथ ही ऐंठन तथा गहरी सुस्ती के लक्षणों में इसे दें ।

क्रोटनटिग 3— जोर के साथ पिचकारी जैसे पानी की भाँति पतले दस्त, पानी पीने के बाद वमन एवं दस्तों का बढ़ना आदि लक्षणों पर ।

सोरिनम 30, 200— यह बच्चों के हर प्रकार के हैजे में उपयोगी है ।

ओपियम 30— दस्त तथा पेशाब बन्द होकर पेट फूल जाने, श्वास लेने में कष्ट तथा मृत्यु के लक्षण दिखाई देने पर ।

कार्बोवेज 30— हैजे की हिमाङ्ग अवस्था में यह बहुत उपयोगी है । इससे शरीर की लुप्त हुई गर्मी पुनः लौट आती है ।

कैन्थरिस 30— पेशाब बन्द हो जाने पर इसके प्रयोग से पेशाब शीघ्र आ जाता है ।

कोब्रा 2 वि०—मृतक की भाँति चेहरे का रङ्ग बिगड़ जाना, शरीर का बर्फ की भाँति ठण्डा हो जाना, नाड़ी नायब हो जाना आदि अन्त समय के लक्षणों में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) कैम्फर 1 औंस, ऑयल मेन्था पिपरेटा 1 औंस, थाइमोल आधा औंस तथा रेक्टीफाइड 7 औंस । सबको मिलालें ।

मात्रा— 5 से 15 बूँद तक । यह हैजे की प्रारम्भिक अवस्था, पेट की अकड़न, पेट का दर्द, नयी पेचिस, दस्त, अन्न का न पचना आदि में भी लाभ करता है ।

(2) थैलाजॉल 2 टेबलेट तथा केओलीन 40 ग्रेन । यह दोनों मिलाकर एक खुराक है । इसे प्रत्येक उल्टी अथवा दस्त के बाद देते रहें ।

(3) क्लोरोरेम्फेनिकल 125 मि. ग्राम तथा स्ट्रैप्टोमाइसिन 150 मि. ग्राम। दोनों को मिलाकर 1 मात्रा बनायें ।

हर 15 से 30 मिनट बाद थोड़े से पानी में घोलकर देते रहें । पहले 4 घण्टों में 10 मात्राएँ दी जा सकती हैं । फिर हम 1 या 2 घण्टे बाद 1-1 मात्रा देते रहें ।

(4) डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड 20 बूँद, टिंक्चर कार्डिमोसम कम्पाउण्ड 20 बूँद, स्प्रिट अमोनिया एरोमेटिक 20 बूँद, स्प्रिट क्लोरोफार्म 20 बूँद तथा कैम्पर वाटर 1 औंस । इन सबको मिलाकर 1 मात्रा बना लें । ऐसी 1-1 मात्रा हर तीन घण्टे बाद या हर वमन एवं दस्त के बाद देते रहें । यह हैजे की दूसरी अवस्था में लाभकर है ।

(5) एरोमेटिक स्प्रिट ऑफ अमोनिया 2 ड्राम, सल्फ्यूरिक ईथर 2 ड्राम, क्लोरिक ईथर 2 ड्राम, वाइनम गेलोसाइ ब्राण्डी 6 ड्राम तथा पिरमेण्ट वाटर 6 औंस—सबको मिलाकर रख लें । इसकी 4-4 ड्राम की मात्रा हर घण्टे बाद देते रहें । यदि इतनी मात्रा न पचे तो कम कर दें । आवश्यकतानुसार हर आधा घण्टे बाद भी दे सकते हैं । यह हैजे की तीसरी अवस्था में उपयोगी है।

(6) निम्नलिखित इन्जेक्शन हैजे में लाभ करते हैं-

बेलाफोलीन, पिट्यूट्रीन (पी. डी.) नार्मल सैलाइन, इन्फ्यूजन आदि ।

अतिसार या दस्त (Diarrhoea)

पतले दस्तों को अतिसार कहा जाता है । समय-विरुद्ध, संयोग-विरुद्ध तथा भार, चिकने, रुके एवं प्रकृति-विरुद्ध, खान-पान आदि कारणों से यह बीमारी होती है । इसमें पानी के समान पतले दस्त-बार-बार होते हैं । वात-पित, कफ आदि के भेद से उनका रङ्ग-रूप कई प्रकार का होता है । अतिसार को सामान्य-चिकित्सा में निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

(1) बबूल के पत्तों का रस पीने से हर प्रकार के कठिन तथा भयानक दस्त ठीक हो जाते हैं ।

(2) प्याज को कूटकर रस निकाल लें, फिर उसमें थोड़ी-सी अफीम मिलाकर सेवन करने से अतिसार में अवश्य लाभ होता है ।

(3) आम की पुरानी गुठली की मींगी तथा भुनी हुई सौंफ—इन दोनों को समभाग लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनालें । इस चूर्ण को 6-6 माशे की मात्रा में प्रातः सायं पानी के साथ सेवन करने से हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(4) अजमोद, मोचरस, सोंठ और धाय के फूल—इन चारों को समभाग लेकर कूट-पीसकर कपड़छन करलें । 6-6 माशे चूर्ण प्रातः-सायं गाय के मट्ठे के साथ लेने से हर प्रकार के दस्तों में आराम होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बीज सहित मुनक्का 7 अदद, आम की गुठली की मींगी 1 अदद अफीम 5 रत्ती—इन सबको कूट-पीसकर, पानी के साथ 7 गोलियाँ बनालें । प्रतिदिन एक गोली खाते रहने से दस्त बन्द हो जाते हैं ।

(2) ताजा बेलगिरी को 2 तोले की मात्रा में भूनकर खाने से दस्त बन्ज हो जाते हैं ।

(3) अफीम 3 माशा, अकरकरा 7 माशा, हुब्बुल्लास 14 माशा, सामक 14 माशा तथा झाऊ के फल 14 माशा—इन सबको खरल में डालकर, बबूल के रस में घोटें तथा 1-1 माशे की गोली बनाकर सेवन करें । इससे 1 घण्टे के भीतर ही दस्त बन्द हो जाते हैं ।

(4) करेले के पत्तों का स्वरस 3 माशा, अनार के पत्तों का स्वरस 3 माशा तथा बकरी का दूध 1 तोला—इन सबको मिट्टी अथवा पत्थर के बर्तन में मिलाकर रखें । इसमें रुई का फाहा भिगो-भिगोकर नाभि पर रखने से हर प्रकार के दस्तों में लाभ होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सबोमिका 3, 6— अधिक अथवा भारी भोजन के कारण पेट में अम्ल, खरोंच जैसी पीड़ा, बार-बार पाखाने के लिए जाना, परन्तु दस्त साफ न आना आदि लक्षणों पर उपयोगी है ।

चायना 30— बिना दर्द वाले पीले रंङ्ग के दस्त, अजीर्ण मिले दस्त, पेट फूलना, तीव्र प्यास आदि लक्षणों पर ।

क्रोटनटिंग 6— पिचकारी की तरह पानी जैसे पतले पीले दस्त, खाने खाने के बाद रोग में वृद्धि, गरम पानी से चैन पड़ना, जी मचलना आदि लक्षणों में ।

एलोज 30— पिचकारी जैसे पतले दस्त, रोगी हाजत को रोकने में असमर्थ रहे तथा पेट में आवाज होती हों ।

पोडोफाइलम 30— सुबह से या पिछली रात से पेट में गड़गड़ाहट, सड़े, दुर्गन्धयुक्त, बिना दर्द के दस्तों पर ।

पल्सेटिला 30— आँव-मिश्रित तथा रङ्ग-रूप बदलने वाले दस्तों पर ।

विरेट्रम एल्ब 6— चावल के धोवन जैसे दस्त, अनजाने में दस्त हो जाना, ठण्डा पसीना, सम्पूर्ण शरीर ठण्डा हो जाना, तीव्र प्यास, शरीर में ऐंठन आदि लक्षणों पर ।

कैमोमिला—हरे रङ्ग के दुर्गन्धित, पानी जैसे गरम तथा ऐंठनयुक्त दस्त व बच्चों के दाँत निकलने समय होने वाले दस्तों की यह श्रेष्ठ दवा है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) बिस्मथ कार्बोनेट 5 ग्रेन, डावर्स पाउडर $\frac{1}{6}$ ग्रेन तथा केलोमल $\frac{1}{6}$ ग्रेन। यह खुराक है, इसे केवल एक बाद देने से ही दस्त बन्द हो जाते हैं । यदि इस औषध के कारण पेट में अफारा हो जाय तो 'सोडाबाई कार्ब' अथवा 'कैस्टर ऑयल' देना चाहिए ।

(2) सोडियम ब्रोमाइड 5 ग्रेन, टिंक्चर ऑफ बेलाडोना 15 बूँद, एकुआ 1 औंस । यह मिक्श्चर नाड़ी-मण्डल के विकार के कारण उत्पन्न अतिसार में लाभकारी है । यदि अतिसार तीव्र हो तो इसमें 1 ग्रेन 'कोडोन फास्फेट' भी मिला देना चाहिए ।

(3) डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड 16 बूँद, टिंक्चर ऑफ केप्सीकम 2 बूँद, टिंक्चर ऑफ ओपियम 7 बूँद तथा एकुआ (पानी) 1 औंस ।

इस मिक्श्चर को भोजन से पूर्व दिन में 2 या 3 बार दें । यह अतिसार में लाभ करता है ।

(4) टिंक्चर कैटेच्यो 30 बूँद, प्लोक्रेटा एरीमेटिक (पाउडर ऑफ चाक) 10 ग्रेन तथा चाक मिक्श्चर सहित 1 औंस ।

यह मिक्श्चर भी अतिसार में लाभकारी है । दिन में 3 बार दें । छोटे बच्चों के लिए मात्रा 1 ड्राम तथा बड़ों के लिए 3 से 5 ड्राम तक है ।

(5) पेटेण्ट औषधियों में **ऐण्टेरोवायो-फार्म** दस्तों को रोकने के लिए अच्छी दवा है । **क्लोरीडोन, कैम्फ्रोडीन, क्रीमोसक्सोडन, कैओपेक्टेट** तथा **इण्ड्रोजायम** भी लाभकारी हैं ।

(6) यदि दस्त बड़ी तेजी से आ रहे हों तो इमेटीन और यदि इमेटीन का व्यवहार न करना हो तो **मार्फिया एट्रोपीन** के इञ्जेक्शनों का प्रयोग अतिसार में लाभ करता है ।

(7) यदि अतिसार के रोगी को मूर्च्छा आ जाय तो 'सैलाइन' के घोल का इञ्जेक्शन 'इण्ट्रावीनस प्रणाली' से लगाना चाहिए ।

(8) अतिसार में निम्नलिखित इञ्जेक्शन भी लाभ करते हैं—

इमेटीन हाइड्रोक्लोर, कम्पाउण्ड, वैकीरियल वैक्सीन ।

बिना दवा खाये दस्तों में लाभ

(1) एक छटाँक आँवलों को खूब महीन पीसकर चूर्ण बना लें । फिर उस चूर्ण को घी में पीसकर चटनी-सी बनालें । जिस व्यक्ति को दस्त हो रहे हों, उसे चित्त लिटाकर, उसका नाभि के चारों ओर पूर्वोक्त घी में पिसे आवलों के चूर्ण (लुगदी) की ऊँची दीवार-सी बना दें । उस दीवार के बीच के गड्ढे मे अदरक का स्वरस भर दें तथा रोगी को उसी स्थिति में कम से कम दो घण्टे तक लिटाये रक्खें । इस प्रक्रिया द्वारा नदी की भाँति बहते हुए दस्त भी बन्द हो जाते हैं ।

(2) बरगद के दूध को रोगी की नाभि में भर दें तथा उनके चारों ओर रोक लगाकर दो घण्टे तक रोगी को लिटाये रक्खें । इससे भी दस्त बन्द हो जाते हैं ।

(3) आँवलों को घी में भूनकर पानी में पीस लें और रोगी की नाभि के चारों ओर लगावें । इसके साथ ही तनिक-सी अफीम को अदरक के रस में घोटकर रोगी की नाक में 2-3 बूँद टपका दें । इस क्रिया से दस्त तुरन्त बन्द हो जाते हैं ।

(4) आम की छाल को दही के तोड़ में पीसकर रोगी की नाभि के चारों ओर लेप कर देने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं ।

पेचिस (आँव-खून के दस्त) (Dysentry)

अधिक गरम, खुश्क, कच्चे तथा देर से पचने वाले पदार्थों का सेवन करने से बड़ी आँतों में सूजन आ जाता है और जख्म हो जाते हैं, जिनके कारण मरोड़ के साथ आँव अथवा आँव-खून मिश्रित दस्त होने लगते हैं । दस्तों के साथ ही नाभि में दर्द भी होता है । इस रोग की सामान्य-चिकित्सा में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हींग, काला नमक, बच तथा हरड़—इन्हें समभाग ले कूट-पीसकर कपड़छन कर लें । 6-6 माशे की मात्रा में प्रातः सायं गरम पानी के साथ सेवन करते रहने के आमातिसार में लाभ होता है ।

(2) बेलगिरी, बच, पीपल, सोंठ, पटोलपत्र, कूट मीठा, अजवायन और बायबिड्ङ्ग—इन सबको समभाग लें, एकत्र पीसकर कपड़छन करलें । इस चूर्ण

को 6-6 माशे की मात्रा में प्रातः-सायं गरम पानी के साथ सेवन करते रहने से आमातिसार में लाभ होता है ।

(3) चिरचिटा (ओंगा, अपामार्ग या अजाझारा) की जड़ को पानी में घिसकर पीने से आँव-मरोड़ के दस्त ठीक हो जाते हैं ।

(4) खसखस के बीजों को महीन पीसकर दही में मिलाकर खाने से आँव-मरोड़ की पेचिश दूर हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) कीकर का गोंद, ईसबगोल, तुख्मरिहाँ (काली तुलसी के बीज) और निशास्ता—इन सबको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लें, 2 से 4 तोले तक की मात्रा में सेवन करने से पेचस में लाभ होता है । इस नुस्खे में ईसवगोल की बिना कूटे-पीसे ही मिलाना चाहिए ।

(2) छोटी हरड़ और सोंफ—इन दोनों को बराबर लेकर घी में भूनकर पीस लें । फिर मिश्री मिलाकर 1 तोले की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करने से पेचिश में आराम होता है ।

(3) ईसवगोल 1 तोला को आधा पाव दही में मिलाकर खायें । तीन चार दिन इसका सेव करने से पेचिश ठीक जायगी ।

(4) कालीजीरी 4 तोला, हरड़ 4 तोला तथा हालों 1 तोला—इन सबको घी में भूनकर पीसकर रख लें । फिर खाँड की चाशनी बनाकर उसमें इस पिसे हुए मसाले को मिला दें । ऊपर से 6 माशा मस्तङ्गी भी मिलाकर रख दें । रोजा सुबह-शाम 2 तोले की मात्रा में इसका सेवन करते से पेचिस जल्दी ठीक हो जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मर्ककोर 3x, 6x— पेट में ऐंठन, मरोड़, मुख में पानी आना, बारम्बार थोड़ा-थोड़ा मल तथा मल के साथ आँव-रक्त, विशेषकर रक्त अधिक निकलता हो तो इसे दें ।

मर्कसोल 3x, 6x— उपरोक्त औषध के लक्षणों के साथ ही यदि मल में आँव की अधिकता हो तो इसे देना चाहिए ।

रसटाक्स 3x, 6x— अत्यधिक बेचैनी, बरसात अथवा ठण्डी जगह में रहने के होने वाली पेचिश में इसे दें ।

एकोनाइट 3x, 30— सूखी हवा के कारण उत्पन्न रोग में यह विशेष

हितकर है । पेचिश के साथ ज्वर, घबराहट, बेचेनी तथा मृत्यु आदि लक्षणों पर ।

सल्फर 3x, 30— मलद्वार में खुजली तथा मल में रक्त की लकीर-सी रहती हो तो इसे दें । पुराने रोग में यह अधिक लाभ करती है ।

आर्सेनिक एल्ब 3x, 6x— रोग की संक्रामक स्थिति में इसे देना चाहिए। मल-मूत्र से गन्ध आना, अत्यधिक कमजोरी, इन्द्रियों का शिथिल हो जाना, व्याकुलता, मृत्यु-भय, शरीर पर लाल -नीले दाग पड़ जाना आदि लक्षणों पर। यदि इन लक्षणों के रहते हुए भी यह औषध काम न करे तो 'कार्बोवेज' दें । 'आर्सेनिक-एल्ब' से रोग बढ़ जाय तो 'नक्सवोसिका' को पर्यायक्रम से भी दिया जा सकता है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) एण्टेरो बायोफार्म 1 टेब्लेट, थेलाजोल 2 टेब्लेट तथा सोडाबाई कार्ब 10 ग्रेन—इन सबको मिलाकर 1 खुराक बनायें, हर 4 घण्टे बाद 1-1 खुराक पानी के साथ देते रहें ।

(2) एण्ट्रीनिल $\frac{1}{6}$ टेब्लेट, सायोस्टरन 2 टेब्लेट, थेलाजोल 2 टेब्लेट तथा सोडाबाईकार्ब 10 ग्रेन—इन्हें मिलाकर एक खुराक बनायें । हर 4 घण्टे बाद पानी के साथ दें । जिन लोगों को 'एण्टेरो बायोफार्म' सहन नहीं हो पाता, उनके लिए यह औषध लाभकारी है । जब पीड़ा न रहे, तब इस नुस्खे में से 'एण्ट्रीनिल' को निकाल देना चाहिए ।

निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ पेचिश में लाभ करती हैं—

निवेम्विन तथा मेक्साफार्म

(4) निम्नलिखित इञ्जैशन पेचिस में हितकर हैं—

एमेटीन हाइड्रोक्लोराइड तथा एण्टी डिसेण्ट्रिक वैक्सीन ।

(5) पुरानी पेचिस में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभकारी हैं—

आयरन आर्सेनेट, आयनेट स्ट्रिक्नीन, आयरन आर्सेनेट न्यूक्लीन तथा आयरन आर्सेनेट ग्लिसरोफास्फेट ।

संग्रहणी

'ग्रहणी एक आँत का नाम है, जो कच्चे अन्न को ग्रहण कर, पके हुए को गुदा-मार्ग से बाहर निकाल देती है । जठराग्नि के दूषित हो जाने पर, वह कच्चे अन्न को बिना पकाये ही बाहर निकालने लगती है अर्थात् कच्चे दस्त होने

लगते हैं, उसी को 'संग्रहणी' कहा जाता है । अतिसार (दस्त) में पतली धातु निकलती है । तथा संग्रहणी में बँधा हुआ मल कभी पतला और कभी गाढ़ा-निकलता है, उसमें दुर्गन्ध आती है । कभी कम और कभी अधिक दस्त होना, कभी बन्द हो जाना, कभी पेट का फूलना आदि विभिन्न लक्षण प्रकट होते हैं। अन्त में शरीर पर सूजन आ जाती है, जो प्राण-घातक भी सिद्ध होती है यूनान में इस रोग को 'अरब' कहते हैं । इसकी सामान्य चिकित्सा के लिए निम्नलिखित योग हितकर है ।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

(1) सोंठ अथवा चीते के चूर्ण को मट्ठे के साथ सेवन करने से संग्रहणी में लाभ होता है ।

(2) हरड़ के वृक्ष की छाल को मट्ठे में पीसकर सेवन करने से आँव तथा रसयुक्त संग्रहणी में लाभ होता है ।

(3) कालीमिर्च, चीते की जड़ को छाल तथा सेंधा नमक—इन तीनों को 1-1 तोला लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लें । 3-3 माशा चूर्ण को प्रातः-सायं तथा मध्याह्न- दिन में तीन बार मट्ठे में डालकर सेवन करने से संग्रहणी, गुल्म, मन्दाग्नि तथा बबासीर आदि सभी उदर-रोगों में लाभ होता है।

(4) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, लौंग, आक की जड़ तथा अफीम—इन सबको कूट-पीस-छानकर रखलें । 1 से 2 रत्ती तक की मात्रा में सेवन करने से संग्रहणी, कफ, खाँसी आदि रोगों में लाभ होता है ।

(5) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्र-जौ, सुगन्धवाला और मोचरस इन्हें समभाग ले बकरी के दूध में डालकर दूध को पकायें । इस प्रकार के दूध को तीन दिन तक पीने से बहुत पुरानी, अत्यधिक बढ़ी हुई आँव तथा खून वाली असाध्य संग्रहणी में भी लाभ होता है ।

उक्त औषधियों के चूर्ण 4 तोला को 32 तोले दूध में डालें । साथ ही उसमें 1 से 10 छटाँक पानी भी मिलादें । फिर मन्दाग्नि से दूध को पकायें । जब पानी जल्कर दूध मात्र शेष रह जाय, तब उतारकर छान लें और पियें ।

(6) काला नमक, चीते की छाल और कालीमिर्च—इन तीनों को समभाग लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे की मात्रा में कुछ दिनों तक नियमित रूप से मट्ठे के साथ सेवन करते रहने से संग्रहणी, वायुगोला, तिल्ली, मन्दाग्नि आदि अनेक उदर-रोग दूर हो जाते हैं ।

(7) खजूर के फल 6 माशे की मात्रा में 2 तोला गाय के दही के साथ दिन में तीन बार सेवन करते रहने से संग्रहणी दूर हो जाती है ।

(8) बबूल की फली 6 माशे को आधा पाव ठण्डे पानी के साथ तीन दिन तक सेवन करने से संग्रहणी में लाभ होता है । यदि दस्त अधिक होते हों, तो 1 खुराक में 3 माशा खसखस के बीज मिलाकर सेवन करने से संग्रहणी में तुरन्त लाभ होता है ।

(9) ल्हिसोड़े की मुलायम पत्तियाँ 3 माशा महीन पीसकर सेवन करने से संग्रहणी में लाभ होता है ।

(10) भुनी हुई भाँग 2 माशा को 3 माशे शहद के साथ चाटने से संग्रहणी नष्ट हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) आम की पुरानी गुठली की मीगी तथा जामुन की गुठली की मीगी—दोनों को बराबर—बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनायें । सुबह-शाम 3-3 माशे की मात्रा में इस चूर्ण को छाछ के साथ सेवन करते रहने से संग्रहणी में लाभ होता है ।

(2) छोटी हरड़ 2 तोला तथा अफीम का डोडा 1 तोला लेकर दोनों को शुद्ध घी में अलग-अलग भूनें । फिर महीन पीसकर, बराबर की खाँड़ मिलाकर रखलें । प्रतिदिन 9-9 माशे सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करते रहने से संग्रहणी से लाभ होगा ।

(3) रसोत 5 तोला को पानी में घोलकर छानलें तथा थोड़ी देर के लिए रख दें, जिससे कि मिट्टी वगैरह नीचे बैठ जाय । फिर उस पानी को निथार कर इतना पकायें कि पानी तो जल जाय, सिर्फ रसौत रह जाय । फिर उसे हल्की आग पर सुखाकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बनाकर रख लें । दिन में 4 बार 5-5 गोलियाँ छाछ के साथ खिलायें तथा अन्य कोई भी खाने की वस्तु तीन दिन तक न दें । तत्पश्चात् मूँग की दाल दी जा सकती है । इससे संग्रहणी में लाभ होगा ।

होम्योपैथिक - चिकित्सा

अतिसार (दस्त) के लिए जो औषधियाँ बताई गयी हैं, उन्हीं को लक्षणानुसार इस रोग में भी देने से लाभ होता है ।

एलोपैथिक - चिकित्सा

(1) बिस्मथ कार्बेनेट 15 ग्रेन, सोडियम बाई कार्बोनेट 20 ग्रेन, लाइट कार्बोनेट ऑफ मैग्रेशिया 10 ग्रेन, क्यौसल्ज ऑफ ट्रोगाकन्थ 40 ग्रेन, क्लगेफार्म वाटर (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह मिक्चर दिन में दो या तीन बार दें । यह संग्रहणी में हितकर है । पेचिश तथा अतिसार में भी लाभ करता है तथा पाचन-शक्ति को बढ़ाता है ।

(2) मार्फिया, आर्गिटीन, हाइड्रोक्लोराइड तथा इमाटिक हाइड्रोक्लोराइड के इञ्जेक्शन भी इसमें लाभ करते हैं ।

कृमि - रोग (Worms)

अनेक प्रकार के कुपथ्य, विरुद्ध भोजन, मीठा और बासी भोजन आदि अनेक कारणों से शरीर के भीतर विभिन्न प्रकार के कीड़े पड़ जाते हैं । शरीर के भीतर कीड़े उत्पन्न हो जाने पर ज्वर, शरीर का रङ्ग बदल जाना, पेट में शूल, दस्त, मन्दाग्नि, वमन, भोजन का बुरा लगना, सोते समय दाँत किटकिटाना, गुदा में खुजली आदि विभिन्न लक्षण प्रकट होते हैं । ये कीड़े चपटे, केंचुए जैसे लम्बे, सूत जैसे पतले, छोटे-छोटे सफेद रङ्ग के तथा गोल आदि कई आकार-प्रकार के होते हैं । यदि समय पर इनका इलाज न किया जाय तो आगे चलकर मिर्गी, हैजा, पागलपन, पाण्डु आदि लक्षण प्रकट होते हैं । कुछ कीड़े पाँच से आठ गज तक लम्बे भी पाये जाते हैं । यह कीड़े छोटे बच्चों के पेट में अधिक होते हैं ।

पेट में किस प्रकार के कीड़े हैं, इसकी परीक्षा का सरल साधन पाखाने की जाँच (Stool test) कराना है ।

शरीरस्थ कृमियों को नष्ट करने के लिए निम्नलिखित योग लाभकारी हैं-

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) एक तोला बायबिडङ्ग को महीन कूट-पीसकर कपड़छन करलें फिर उस चूर्ण में शुद्ध शहद मिलाकर रख लें । इस औषध को दिन में तीन बार चाटने से करोड़ों कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

(2) बायबिडङ्ग और सहजने के काढ़े मे शहद डालकर पीने से उदरस्थ कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

(3) ढाक के बीज और अजवायन—दोनों को पीसकर खाने से कृमि रोग नष्ट हो जाता है ।

(4) अनार की छाल से काढ़े (क्वाथ) में 3 माशे तिल का तेल मिलाकर तीन दिन तक नित्य पीने से पेट के सब कीड़े निकल जाते हैं ।

(5) प्याज का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं तथा बदहज्मी भी दूर हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बासी पानी में 6 माशा खुरासानी-अजवायन पीसकर, उसमें 1 तोला पुराना गुड़ मिलाकर पीने से भीतर के सभी कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

(2) ढाक के बीच 5 माशे को छाछ में पीसकर पीने से पेट कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

(3) पेट में कद्दू-दाने (सफेद रङ्ग के घिये के बीजों जैसे कीड़े) होने पर पहले रोगी को 6 माशे अरण्डी का तेल पिलायें । फिर तारपीन का तेल 3 माशे को 3 तोला गुनगुने पानी में मिलाकर पिचकारी द्वारा पाखाने की जगह (गुरुद्वारा) से आँतों में पहुँचायें । इससे सब कीड़े मरकर बाहर निकल आयेंगे। इसके अलावा 1 माशे काफूर (कपूर) को 1 तोला बैसलीन में मिलाकर मलद्वार (गुदा) में लगाने से कीड़ों के काटने के कारण होने वाली खुजली दूर हो जाती है । खाने के लिए निम्नलिखित गोलियाँ देने से भीतर के कीड़े मर जाते हैं और उनकी उत्पत्ति रुक जाती है—

रसौत 2 माशा, चाकसू छिला हुआ 2 माशा एलुआ 1 माशा, कालीमिर्च आधा माशा और नीम के पत्ते 5 अदद—इन सबको महीन पीसकर मूँह के दाने के बराबर गोलियाँ बनालें । छोटे बच्चे को 1 और बड़े बच्चे को 2 गोली दूध में घोलकर सुबह-शाम पिलायें ।

(4) पेट में केंचुए हों तो 6 माशे से एक तोला तक (आयु के अनुसार कम-अधिक) अरण्डी का तेल पिलाकर पेट साफ कर दे, फिर निम्नलिखित गोलियाँ खिलायें ।

आफ्सन तीन, रूमी कमीला, बायबिडङ्ग, पलास पापड़े की गिरी—इन सबको 3-3 माशा महीन पीसकर आड़ू के पत्तों के पानी में गूँथकर चने के बराबर गोलियाँ बनाकर रखलें ।

बच्चे की उम्र के अनुसार 1 से 2 गोली तक सुबह शाम पानी या दूध में घोलकर दें । तीन-चार दिन इन्हें खिलाने के बाद फिर 6 माशे से 1 तोला तक अरण्डी का तेल पिलायें । फिर इन गोलियों को 3-4 दिन तक पुनः

खिलायें। ऐसा दो-चार बार करने से पेट के सभी केंचुए मरकर बाहर आ जाते हैं ।

(5) कमीला 6 माशे को खट्टी छाछ में मिलाकर पिलाने से दस्त आते हैं और कद्दू-दाने बाहर निकल जाते हैं ।

(6) बकायन की छाल 2 तोला को 1 सेर पानी में उबालें । जब आधा पानी रह जाय, तब थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर रोगी को रात के समय पिलायें । इस प्रयोग को तीन दिन तक करते रहने से सभी कद्दू-दाने निकल जाते हैं ।

(7) बच्चों के पाखाने की जगह (गुदा) में नीम का तेल लगाने से चुनूने मर जाते हैं ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मिना 2x, 200— यह हर प्रकार के कृमियों पर हितकर औषध है ।

टयुकियम 1x— सूत जैसे कृमियों के लिए इसे दें ।

सैण्टोनाइन 1x **वि०**—यह भी हर प्रकार के कृमियों पर लाभ करता है।

स्पाजिलिया 3— यह छोटे कृमियों पर लाभकारी है ।

मर्ककोर 3x— यह फीते की भाँति लम्बे कृमियों पर उपयोगी है ।

क्युप्रमम ऐसेटिकम 3— यह केंचुए जैसे लम्बे कृमियों पर हितकर है।

सल्फर 30— कृमियों के कारण होने वाली पेट की शूल-वेदना के शमन के लिए उपयोगी है ।

चेनोपोडियम तेल 30— इस तेल की 10 बूँद की मात्रा में 2-2 घण्टे के अन्तर से तीन बार दें । यह गोल कृमियों के लिए अत्युत्तम है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) 'सूत्र-कृमि' (थ्रेड वर्म) के लिए जैनसन वायलैट टैब्लेट अथवा पाउडर या मेराक्सेल टैब्लेट हितकर है । खाना खाने के बाद इसमें से किसी एक की टिकिया लेनी चाहिए ।

(2) केंचुआ (राउण्डवर्म) के लिए निम्नलिखित मिक्श्चर लाभ करता है—

सोडाबाई-कार्ब 2 ग्रेन, सेण्टोनाइन 2 ग्रेन तथा कैलोमेल 2 ग्रेन इन्हें मिलाकर सोते समय सेवन करायें । प्रातःकाल मैगसल्फ का जुलाब देना चाहिए।

इसके लिए निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ भी उत्तम हैं—

एण्टीपार, पिनीसिड, पाइप्रन वर्माजीन तथा मिण्टाजाल ।

(3) 'हुकवर्म' के लिए जिलेटिन कैप्सूल में 3 ग्रेन 'थाइमल' रखकर लें तथा तीन घण्टे बाद मैगसल्फ का विरेचन लें ।

आयल चेनोपोडियम 30 बूँद तथा कार्बन टेट्राक्लोर 30 बूँद—इन्हें मिलाकर जिलेटन कैप्सूल में भर लें और सेवन करें । इसके आधा घण्टे बाद 'मैगसल्फ' का तीव्र विरेचन लें । दस्त होने तक खाना न खायें ।

हुकवर्म के अतिरिक्त अन्य कृमियों के लिए भी यह उपयोगी है ।

(4) स्फीत कृति (टेपवर्म) के लिए पाँच दिन तक 'मेपाक्रीम' की टिकिया दिन में 3 बार लें । छठे दिन मैगसल्फ का विरेचन लें । एक सप्ताह बाद इसी क्रिया को पुनः दोहरायें ।

यकृत्वृद्धि या जिगर (Liver Diseases)

जिस प्रकार शरीर में बाँये भाग की पसलियों के नीचे तिल्ली होती है, उसी प्रकार दाँये भाग की पसलियों के नीचे यकृत् (जिगर) होता है । पुराने मलेरिया ज्वर, क्विनीन या पारे के अपव्यवहार, गरम जगह में रहना, अधिक मद्यपान आदि कारणों से यह बढ़ जाता है । अनियमित खान-पान तथा अनियमित जीवन ही इस रोग की उत्पत्ति का मूल-कारण है । इस रोग के आरम्भ में कम्प के साथ ज्वर आता है, बाद में यकृत कठोर तथा बड़ा होने लगता है । फलतः भूख कम हो जाती है । यह रोग बच्चों को अधिक होता है । बच्चों का यकृत् ठीक भी हो जाता है , परन्तु बड़ी आयु के मनुष्य का बढ़ा हुआ यकृत् कठिनाई से ही अच्छा हो पाता है । मन्दाग्नि को दूर करने वाली औषधियाँ यकृत्-वृद्धि में भी लाभ करती हैं । यकृत-रोग के लिए निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं । यकृत् के रोगी को घी और चीनी तथा इनसे निर्मित वस्तुओं का सेवन जहाँ तक हो सके, कम या बन्द कर देना चाहिए।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) जवाखार 3 माशे को मट्ठे अथवा जल के साथ दिन में 2-3 बार सेवन करते रहने से यकृत्-रोग में लाभ होता है ।

(2) मूली का रस 2 तोला में थोड़ा-सा जवाखार डालकर पीने से यकृत् में लाभ होता है ।

(3) बलुआ की जड़ तथा कालीमिर्च को पीसकर झरबेरी के बराबर की गोली बनालें । एक-एक गोली प्रायः-सायं शहद के साथ सेवन करने से यकृत्-रोग में लाभ होगा ।

(4) रोई को गोमूत्र में पीसकर पेट पर लेप करना हितकर रहता है ।

(5) अलसी तथा अरण्डी के बीजों को पानी में पीसकर यकृत् के ऊपर लेप करने से रोग में लाभ होता है ।

(6) प्लीहा-वृद्धि में आक के पत्तों को भस्म के चूर्ण का सेवन किया जाता है । यह यकृत-वृद्धि में भी हितकर है ।

यूनानी चिकित्सा

(1) हरी मकोय को कासनी के पत्तों को घोटकर उनका 6-6 तोला अर्क निकाल लें । उस अर्क को हल्की आग पर उबालें । फिर छानकर रोगी को पिला दें । कुछ दिनों के इस्तेमाल से ही जिगर (यकृत) की सूजन दूर हो जायेगी। अगर कासनी न मिले तो सिर्फ मकोय का पानी ही काफी रहेगा ।

(2) अमलतास का गूदा 2 तोला को हरी मकोय के पानी में पीसकर जिगर वाली जगह पर लेप करें । इससे जिगर की सूजन दूर हो जायगी ।

(3) कसौंदी बूँटी के पत्ते 1 तोला तथा कालीमिर्च 7 अदद—इन दोनों को पीस-छानकर पिलाने से जिगर की सूजन दूर हो जाती है ।

होम्योपैथिक - चिकित्सा

एकोनाइट 6, 30— यकृत्-स्थान पर सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वास-कष्ट ठण्डी हवा लगने से होने वाले दर्द आदि लक्षणों में दें ।

नक्सवोमिका 6, 30— यकृत् में टपक जैसा दर्द, यकृत् में सूजन और कड़ापन, दबाने से दर्द होना, भोजन अच्छा न लगना आदि लक्षणों में यह हितकर है ।

बेलाडोना 3, 6, 31— तीव्र ज्वर, यकृत् में दर्द की पित्त की अधिकता के लक्षणों में ।

एकोनाइट 3, 6— यकृत्-स्थान में सुई चुभोने जैसा दर्द ।

ब्रायोनिया 6, 30— कब्ज, यकृत् में दर्द, पित्त की अधिकता में हितकर है ।

चायना 6— यकृत् का फूलना, सामान्य-ज्वर, अधिक कमजोरी, बिना दर्द के दस्त जाना, खाना हज्म न होना आदि लक्षणों में ।

लाइकोपोडियम 6, 30— बायीं बगल में दर्द, पेट में वायु, पतले दस्त, कब्ज आदि लक्षणों में ।

सल्फर 30— पुराने यकृत्-रोग में इसे देना हितकर रहता है ।

एलोपैथिक - चिकित्सा

(1) क्विनीन सल्फ 1 ड्राम, पेट्रोलियम 5 ग्रेन, शुगर ऑफ मिल्क 5 ग्रेन तथा एक्सट्रेक्ट एलौज 7 ग्रैन—इन सबको मिलाकर 6 गोलियाँ बना लें । प्रतिदिन 2 गोली प्रातः-सायं सेवन करते रहने से यकृत्, प्लीहा तथा उदर-विकार दूर होते हैं ।

(2) लीवर रोग में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं—

सिरोसिन, कुमारेश, डेल्फिकाल, प्रोटोजेस्ट, हिकीसिटान, अमीनीजाइम तथा लिव 52 ।

(3) यकृत-प्रदाह में निम्नलिखित योग हितकर हैं—

सल्फाडायाजिन 1 टेब्लेट, साडावाई-कार्ब 5 ग्रेन, निकोटिनिक एसिड 50 मि. ग्रा. तथा ग्लूकोज 10 ग्रेन । सबको मिला लें ।

हर दो घण्टे बाद 1 पुड़िया पानी के साथ देते रहें । 24 घण्टे में 8 से 12 पुड़िया तक दें । यकृत् के स्थान पर बाह्य-भाग में 'एण्टीफ्लोजिस्टन' जैसा कोई प्लास्टर लगाना उचित है ।

(4) क्लोरोक्वीन सल्फ 200 मि. ग्रा. इण्टेरोबायोफार्म 300 मि. ग्रा. तथा सोडाबाई कार्ब 150 मि. ग्रा.—इन सबको मिलाकर एक मात्रा बनायें । दिन में 3 बार 1-1 मात्रा पानी के साथ लें । अमीवा से होने वाले यकृत् प्रदाह में यह विशेष हितकर है ।

प्लीहा-वृद्धि (तिल्ली)

(Enlarged Spleen)

शरीर में बाँये भाग की पसलियों के नीचे की तिल्ली होती है । जब यह बढ़ जाती है, तब आरम्भ में ज्वर, शरीर में रक्त-शून्यता, पीलापन, कब्ज बदहज्मी आदि लक्षण प्रकट होते हैं । बाद में आँव, खून के दस्त, शोथ आदि विकार उत्पन्न होते हैं । तिल्ली बढ़ने का मुख्य कारण मलेरिया-ज्वर होता है। यदि मलेरिया-ज्वर के रहते हुए तिल्ली बढ़ गई हो तो पहले मलेरिया की चिकित्सा करनी चाहिए, क्योंकि जब तक मलेरिया दूर नहीं होगा, तब तक

तिल्ली भी ठीक नहीं होगी । तिल्ली में निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) जवाखार 3 माशा को गोमूत्र के साथ सेवन करने से तिल्ली में लाभ होता है ।

(2) आक (मदार) के पीले पत्तों को साफ करके उन्हें समभाग नमक मिलाकर मिट्टी की हाँडी में भर दें । फिर उसे मुँह बन्द करके कण्डों (उपलों) की आग में रखकर गरम करें । जब हाँडी लाल हो जाय, तब उसे आग में निकालकर ठण्डा करलें । फिर उसके भीतर से नमक के पत्तों की राख निकाल कर रख लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे की मात्रा में पानी के साथ अथवा 1-1 माशे की मात्रा में अर्क-मकोय के साथ दिन में तीन-चार बार सेवन करते रहने से बढ़ी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है ।

(3) बहेड़े के वृक्ष की छाल, बच, जवाखार मिलाकर सेवन करने से तिल्ली में लाभ होता है ।

(4) नीबू का रस 5 तोला में शंख का चूर्ण 3 माशा डालकर पीने से बढ़ी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है । यदि यह मात्रा अधिक अनुभव हो तो कम कर लेनी चाहिए ।

(5) अजवायन, चीते की जड़ की छाल, बच, जवाखार, और दन्ती—इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करलें । इस चूर्ण को 3 माशे 6 माशे तक की मात्रा में दही के पानी के साथ सेवन करते रहने से तिल्ली में लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अधपके पपीते को छीलकर, टुकड़े करके सिरके में डाल दें । सात दिन बाद उसमें से दो-दो टुकड़े सुबह-शाम खाते रहें । भोजन के साथ भी पपीते का स्तेमाल करें । इससे तिल्ली घट जायगी ।

(2) राई तीन तोला तथा भुना हुआ सुहागा 1 तोला—इन दोनों को पीसकर रख लें । रोज सुबह-शाम 3-3 माशे की मात्रा में इस चूर्ण को पानी के साथ सेवन करें । यह दवा तिल्ली को घुलाकर भूख को बढ़ायेगी ।

(3) हरे करेलों को कूटकर उनका अर्क निचोड़ लें । इस अर्क को 2 तोले की मात्रा में दिन में 3 बार पीयें । 8-10 दिन के इस्तेमाल से ही पुरानी से पुरानी तिल्ली भी घट जायगी ।

(4) मूली के पत्तों को कूटकर उनका अर्क निचोड़ लें । 10 तोले अर्क में 1 माशा नौसादर मिलाकर सुबह-शाम पीते रहें । 8-10 दिन में ही तिल्ली घट जायगी ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 1x, 6, 30— रोग की प्रथमावस्था के लिए यह बहुत अच्छी औषध है ।

सियानोथस 1x, 1— तिल्ली का बढ़ना, कड़ी हो जाना, दर्द, कब्ज आदि लक्षणों में इस औषध के मदर-टिंक्चर की 5-5 बूँदों की मात्रा नित्य दिन में 2-3 बार दें ।

नेट्रमम्यूर 30— यह तिल्ली वृद्धि के पुराने रोग में उपयोगी है ।

कैलीबाई-क्रोम 30— बीयर शराब पीने के कारण हुई व्याधि में यह औषध उपयोगी है ।

विशेष—इस रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ भी दी जा सकती हैं—

एनोनाइट 3x, **आर्सेनिक** 3, 30, **चायना** 6, 30, **कार्बोवेज** 3x, **एसिड नाइट्रिक** 6, **फास्फोरस** 3x, **फेरम** 6 ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सल्फेट ऑफ आयरन 2 ग्रेन, सल्फेट ऑफ कोकीन 3 ग्रेन, सल्फेट ऑफ मैग्रेशिया आधा ड्राम, एसिड सोल्यूशन ऑफ आर्सेनिक हाइड्रो क्लोराइड 2 बूँद, डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड 5 बूँद तथा पिपरमेण्ट वाटर 1 औंस ।

यह मिक्श्चर तिल्ली की सूजन में लाभ करता है । भोजनोपरान्त दिन में 2 बार लें ।

(2) पाउण्डर जलाय को० 15 ग्रेन, रूबर्ब 5 ग्रेन, जिजर 15 ग्रेन तथा क्रीम ऑफ टारटर 5 ग्रेन ।

यह एक खुराक है । दिन में 3 खुराक 4-4 घण्टे बाद दें ।

(3) प्लीहा दो प्रकार की होती है— (1) मलेरिया की और (2) कालाजार की । इन दोनों किस्मों की प्लीहा में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभकारी हैं—

मलेरिया वाली प्लीहा में— क्विनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड, लिवर एक्स्ट्रैक्ट ।

कालाजार वाली प्लीहा में—स्टीवेटीन और यूरिया स्टेबेमिन ।

'लिवर एक्स्ट्रैक्ट' इञ्जेक्शन निम्नलिखित नामों से मिलते हैं-

लिवोजन, प्रोथेरिन, पेनहामीन, हिथेलीन आदि ।

(4) सरसों का तेल (मस्टर्ड ऑयल) 1 औंस , थाईलम 10 ग्रेन तथा रेक्टीफाइड स्प्रिट 2 ड्राम—इन सबको मिलाकर रख लें । यकृत् अथवा प्लीहा के ऊपरी भाग (बाह्य भाग) पर इस मिश्रण की मालिश करते रहने से वह छोटा तथा मुलायम हो जाता है ।

पाण्डु-रोग (पीलिया) (Jaundice)

यकृत् की क्रिया बिगड़ जाने पर जब पित्त भली-भाँति आशोषित नहीं होता, तब वह रक्त में मिलाकर उसके स्वाभाविक रङ्ग को बदल देता है । जिसके फलस्वरूप पीलिया रोग हो जाता है । इस रोग में रोगी के शरीर की त्वचा, आँखों के सफेद भाग, नाखून तथा पेशाब का रङ्ग पीला हो जाता है । रोग बढ़ जाने पर रोगी को सभी वस्तुएँ भी पीली दिखाई देने लगती हैं । मुँह का स्वाद कड़वा हो जाना, कब्ज, कमजोरी, ज्वर आदि के लक्षण इसमें प्रकट होते हैं । रोग के पुराना हो जाने पर हाथ-पाँव, मुख आदि पर शोथ (सूजन) भी आ जाती है ।

इस रोग की चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व रोगी को अच्छा जुलाब देना चाहिए—प्रायः दो तीन दिन जुलाब देने से रोगी ठीक हो जाते हैं, अन्य औषध की आवश्यकता ही नहीं पड़ती । यदि जरूरत हो तो निम्नलिखित औषधियों का सेवन लाभ पहुँचाता है—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) 1 तोला गुलकन्द को 6 माशा, शहद के साथ दिन में दो बार खिलाकर ऊपर से दूध पिलायें । 7 दिन तक यह उपचार करने से ही पीलिया दूर हो जाता है ।

(2) मूली के पत्तों का रस 1 तोला मिश्री में मिला निराहार मुँह पीयें । उसके सात दिन तक नित्य सेवन से रोग दूर होगा ।

(3) असली सरसों का तेल 1 सप्ताह तक आँखों में लगाने से आँखों का पीलापन दूर हो जाता है ।

(4) कड़वे नीम के पत्तों को पानी में पीसकर उनका पावभर रस निकाल लें । उस रस में मिश्री गरम करें तथा ठण्डा हो जाने पर पी लें । इस प्रयोग से पाण्डु-रोग ठीक हो जाता है ।

(5) गिलोय का चूर्ण 6 माशा को शहद में मिलाकर चाटने से पाण्डु-रोग दूर होता है ।

(6) बड़ी हरड़ को गुड़ में मिलाकर खाने से हर प्रकार के पाण्डु-रोग में लाभ होता है ।

यूनानी - चिकित्सा

(1) मेंहदी की पत्तियाँ 2 तोला को रात के समय पानी में भिगो दें । सुबह उन्हें छानकर रोगी को पिलायें, कुछ दिनों के नियमित सेवन करने से पीलिया ठीक हो जायगा ।

(2) मूले के पत्तों को कूटकर उनका 10 तोला अर्क निचोड़ लें । उसे आग पर रखकर खौलायें । फिर नीचे उतार कर छान लें तथा उसमें 2 तोला लाल शक्कर मिलाकर रोगी को पिलायें । भोजन में मूली और इसके पत्तों को पकाकर खिलाने से शीघ्र लाभ होगा ।

(3) कलौंजी के 7 दानों को स्त्री के दूध में पीसकर नस्य लेने से आँखों का पीलापन दूर हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

आर्सेनिक 3x, 30, 200— यह मलेरिया अथवा टायफायड-ज्वर में हुए कामला (पाण्डु) रोग में हितकर है ।

चायना 1x, 30, 200— यकृत् तथा प्लीहा दोनों बढ़े हों, भूख न रहने पर भी रोगी भोजन के लिए चिल्लाता हो, अफारा, डकार आदि के लक्षणों के साथ पीलिया में ।

नक्सवोमिका 1x, 6, 200— शराबियों को यकृत् की खराबी से होने वाले पाण्डु-रोग में विशेष हितकर है ।

ब्रायोनिया 3x, 30, 200— यकृत् में सूजन और प्रदाह- जीभ पर मैल, हिलने-डुलने से कष्ट का बढ़ना एवं तीव्र प्यासयुक्त पाण्डु-रोग में इसे दें ।

फास्फोरस 6x, 30, 200— यकृत् के किसी प्रदाह के कारण उत्पन्न पाण्डु-रोग, कठिन रक्तहीनता तथा प्राणघातक बीमारी जैसी स्थिति, जिसमें रोगी हर समय सोना चाहता हो, में इसे देना हितकर रहता है ।

मर्कसोल 6, 30, 200— क्विनीन के अपव्यवहार से उत्पन्न हुए पाण्डु-रोग में यह विशेष लाभकारी है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) कैलोमल $\frac{1}{2}$ ग्रेन तथा सोडाबाई कार्बन 2 ग्रेन इन्हें एक जिलेटिन कैप्सूल में भरें । हर आधा घण्टे बात ऐसे ही 1-1 कैप्सूल तब तक देते रहें जब तक कि तेज पतले दस्त आना आरम्भ न हो जायें । 8 से 12 कैप्सूल ले लेने पर तीव्र दस्त आना शुरू हो जाते हैं । जब दस्त बन्द हो जायें, तब रोगी को खाने के लिए पतली खिचड़ी दें ।

(2) पाण्डु-रोग में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं—
लिट्रिसन, यूनिवाइट, कम-कोलीन, डेल्फॉल ।

(3) पाण्डु-रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभकारी होते हैं—

एनोहिमोन—इसे बी. डी. एच. भी कहा जाता है, इसका प्रथम इञ्जेक्शन 2 सी. सी. का फिर चौदहवें दिन 1 सी. सी. का इञ्जेक्शन दिया जाना चाहिए ।

हेक्सामीन—इसे 10 प्रतिशत 2 से 5 सी. सा. को ग्लूकोज 25 प्रतिशत सी. सी. में मिलाकर नस में दिया जाता है ।

एमैटीन हाइड्रोक्लोर, पाइलो कार्जिन, एसजीकिन, लिबोसन, प्रेथेरिन पेनहानीन, हिथेलीन आदि भी लाभ करती हैं ।

सिर - दर्द (Headache)

सिर-दर्द भी अन्य बीमारियों का लक्षण मात्र ही है । मूल रोग की चिकित्सा से सिर-दर्द स्वतः दूर हो जाता है । सिर-दर्द की विशिष्ट औषधियों के प्रयोग से सिर-दर्द तो दूर होता ही है, उसके साथ ही मूल-रोग की चिकित्सा भी हो जाती है । सर्दी, गर्मी, जुकाम, अनिद्रा, रात्रि-जागरण, मानसिक-चिन्ता अधिक परिश्रम, रक्त-सञ्चय आदि कारणों से होने वाला सिर-दर्द कुछ समय बाद स्वतः ही दूर हो जाता है । मस्तिष्क में भ्रमण करने वाली वायु के अधिक विषैली हो जाने पर स्थायी सिर-दर्द भी आरम्भ हो जाता है । सिर-दर्द मुख्यतः तीन प्रकार का होता है—

आयुर्वेदिक - चिकित्सा

(1) अस्थायी, (2) स्थायी और (3) आधी शीसी अर्थात् आधे सिर में दर्द होना । इस रोग में निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

(1) गर्मी के दिनों में होने वाले अस्थायी सिर-दर्द के लिए चन्दन, कपूर और धनिये को घिसकर सिर पर लेप करें । ज्यों-ज्यों लेप सूखता जायगा, सिर-दर्द कम होता चला जायगा ।

(2) सर्दी के दिनों में होने वाले अस्थायी सिर-दर्द के लिए तुलसी के पत्ते, लौंग तथा हल्दी पीसकर सिर पर लेप करें । ज्यों-ज्यों सेप सूखेगा, सिर-दर्द दूर होता चला जायगा ।

(3) तुलसी के पत्तों को छाया में सुखाकर कपड़छन कर लें । इस चूर्ण को हुलास (नस्य) की भाँति सूँघने से सिर-दर्द 5-6 मिनट में ही दूर हो जाता है ।

(4) नारियल के भीतर की साबुत गिरी (गिरी गोला) लेकर उसमें से एक छोटा-सा टुकड़ा काट लें, फिर उस गिरी-गोला में कायफल की छाल का दो छटाँक चूर्ण भरकर गिरी के कटे हुए टुकड़े को यथा-स्थान लगाकर धागे से अच्छी तरह बाँध दें । फिर उस गोले को 4 सेर दूध में यहाँ तक उबालें कि दूध का मावा (खोआ) बन जाय । उस मावे को दो छटाँक शुद्ध घी में भून लें । तदुपरान्त नारियल की गिरी को कायफल सहित पीसकर 4 छटाँक शुद्ध घी में भूनें । अन्त में, दो सेर मिश्री की चासनी बनाकर उसमें उक्त मावा तथा नारियल, जायफल के चूर्ण को मिला दें । साथ ही 3 माशा केशर को पानी में घोलकर तवा 2 छटाँक बादामों को गिरी को भी पीसकर उसी में मिलादें, फिर उसे किसी थाली में जमा दें और ठण्डी हो जाने पर 42 कतलियाँ (बर्फियाँ) काटकर रख लें । एक-एक बर्फी प्रातः-सायं खाकर ऊपर से दूध पी लिया करें। 21 दिन तक इस प्रयोग को करते रहने पर स्थायी सिर-दर्द भी हमेशा के लिए दूर हो जायगा ।

(5) हरड़, बहेड़ा, आँवला, चिरायता, हल्दी, नीम की छाल और गिलोय-इन्हें समभाग लेकर तथा गुड़ डालकर काढ़ा बनायें । इस काढ़े को पीने से कठिन से कठिन तथा पुराने से पुराना सिर-दर्द भी दूर हो जाता है । यदि इस काढ़े के साथ ही महा-योगराज गुग्गल का सेवन की किया जाय तो अत्यन्त कठिन तथा पुराना सिर-दर्द भी ठीक हो जायगा ।

(6) मुचकन्द के फूलों को पीसकर सिर पर लेप करने से सिर-दर्द में लाभ होता है ।

(7) आधा-सीसी का दर्द जिस ओर हो उस ओर के हाथ की कोहनी से ऊपर वाले भाग पर खूब कसकर सूत की रस्सी बाँध दें । रस्सी इतनी जोर

से बाँधें कि दर्द होने लगे । जैसे-जैसे हाथ में दर्द बढ़ेगा, वैसे-वैसे आधा-सीसी दर्द वाला सिर-दर्द गायब होता जायगा । जब सिर का दर्द दूर हो जाय, तब हाथ की रस्सी खोल दें । यदि दूसरे दिन भी सिर-दर्द हो तो फिर यही प्रक्रिया दुहरायें । उसके बाद आधा-सीसी का दर्द नहीं होगा ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) भुने हुए तथा छिले हुए चने 3 तोला लेकर महीन पीस लें फिर उन्हें 4 तोला बादाम के तेल में भूनें । फिर निशास्ता 3 तोला, सफेद खसखस के बीज 3 तोला, मिश्री 16 माशा और बादाम के तेल में भुना हुआ आटा—इन सबको मिलाकर गाय के दूध में डाल दें तथा धीमी आग से पकायें । जब हरीरा-सा बन जाय, तब उतार कर रख लें । फिर दूसरी कड़ाही में 3 तोला घी डालकर गरम करें । जब घी पक जाय, तब उसमें पूर्वोक्त हरीरा डालकर चलायें । जब सब वस्तुएँ एकदिल हो जायें, तब उतार लें । इस हरीरे को खाने से हर तरह का सिर-दर्द दूर होता है तथा सिर में खूब ताकत भी आती है । जिन लोगों का दिमाग कमजोर हो, उसके लिए हरीरा बहुत गुणकारी है।

(2) तरबूजे के बीजे को पानी में खूब महीन पीसकर सिरपर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से गर्मी-सर्दी के कारण हुआ सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(3) कासनी के बीजों को गुलाबजल या पानी में पीसकर सिर पर मलने से गर्मी की बजह से हुआ सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(4) बकायन के पत्तों को पीसकर सिर पर लेप करने से गर्मी का सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(5) इमली 2 तोला पानी में भिगोकर मल लें, फिर उसमें चीनी मिलाकर पीलें । इससे गर्मी का सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(6) बकरी के मक्खन को सिर पर मलने से गर्मी और खुश्की में से किसी भी कारण से हुआ सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(7) सोंठ को अण्डी के तेल में घिसकर तथा गरम करके सिर पर लगाने से सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(8) एक बादाम की मींगी को सरसों के तेल में पीसकर सिर पर मलने से सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(9) कटहल की जड़ को पानी में उबाल कर, उसकी कुछ बूँद नाक में टपकाने से सर्दी का सिर-दर्द दूर हो जाता है ।

(10) सफेद कनेर की पत्तियों को छाया में सुखाकर महीन पीस-छान लें। फिर जिस ओर के सिर में दर्द हो, उसी ओर के नाक के नथुने में, इस चूर्ण को दो चावल-भर की मात्रा में फूँक दें । इससे खूब छींके आयेंगी तथा नाक में बहुत-सा पानी गिरेगा । इससे आधा-सीसी का सिर-दर्द ठीक हो जाता है।

(11) मुर्गी की बीट और कालीमिर्च—दोनों को बराबर लेकर पीस लें। अगर सिर में बायीं ओर दर्द हो तो इसे दायीं ओर, और यदि दायीं ओर दर्द हो तो बायीं ओर लगायें । इससे आधा-सीसी का दर्द दूर हो जायगा ।

(12) जङ्गली कबूतर की बीट और राई को एक साथ पीसकर सिर पर लगाने से पुरानी आधा-सीसी का दर्द दूर हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नक्सवोमिका 6, 12, 30— कब्ज, मानसिक-थकान आदि कारणों से उत्पन्न सिर-दर्द में ।

एकोनाइट 6, 30— धूप अथवा ठण्डी हवा लगने के कारण उत्पन्न पूरे अथवा आधे सिर के दर्द में ।

केल्केरिया-कार्ब 30— अधिक मानसिक-चिन्ता के कारण सिर-दर्द में ।

आर्निका 6, 12, 30— रक्त-सञ्चय अथवा स्नायविक-दुर्बलता के कारण सिर-दर्द में ।

जिंकम 6, 30— स्नायविक-दुर्बलता से उत्पन्न पुराने सिर-दर्द में ।

सल्फर 6, 30— पुराने सिर-दर्द में ।

वेलाडोना 3, 6, 30— अचनाक ही तीव्र दर्द आरम्भ होकर एकाएक बन्द हो जाना, चेहरे का लाल तथा गरम हो जाना, आवाज एवं रोशनी सहन न कर पाना आदि लक्षणों में ।

पल्स 6, **सिलिका** 30 **या प्लैटिना** 6— दायीं ओर के आधा-सीसी के दर्द में ।

थूजा 6, 200, **स्पाइजिलिया** 3, 30— बायीं ओर के आधा -सीसी के दर्द में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) ऑयल आलिव 3 ड्राम, मोम 1 ड्राम, ऑयल सिलामोली 30 बूँद तथा ऑयल वगमिण्ट 1 बूँद—इन सबको मिला लें तो 'वाम' (लेप) तैयार हो जायगी । इसे सिर पर लगाने से सिर-दर्द दूर हो जायगा ।

(2) सोडा सैलिसिलास 10 ग्रेन तथा एसिड एसिटिक सैलिसिलास 10 ग्रेन—उन दोनों को मिला लें । यह 1 मात्रा है, इसे पानी के साथ करने से अनेक प्रकार का दर्द दूर हो जाता है ।

(3) एस्पिरिन 5 ग्रेन, फिनेसिटिन 3 ग्रेन तथा कैफीन साइट्रास $\frac{1}{2}$ ग्रेन सबको मिलाकर पुड़िया बनालें । इसे ए. पी. सी. 'पाउडर' भी कहा जाता है। इसके सेवन से सिर का दर्द दूर हो जाता है ।

(4) लाइकर ट्राईनाइट्रेट 1 बूँद, लाइकर रास्ट्रकनीन 5 बूँद टिंक्चरप जेल्सीमाई 10 बूँद, सोडियम 10 ग्रेन तथा पानी 1 औंस ।

इस मिक्चर को दिन में 3 बार सेवन करने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाता है । इससे विष से सावधान रहना चाहिए ।

(5) सिर-दर्द में निम्नलिखित पेटेण्ट दवायें लाभ करती हैं— **कोडोपायरिन, एनासिन, अबेदन, एस्प्रो, सैरिडॉन, नोलेडान, वेगानिन** आदि ।

(6) निम्नलिखित इञ्जेक्शन सिर-दर्द में हितकर है—

आर्गेनिन—गर्भाशय के विकारों से उत्पन्न सिर-दर्द में ।

सोआमिन—मलेरिया के विकारों से उत्पन्न सिर-दर्द में ।

स्ट्रक्नीन—मस्तिष्क की कमजोरी से उत्पन्न सिर-दर्द में ।

ऐण्ट्रोजीन—कब्ज के कारण उत्पन्न सिर-दर्द में ।

ऐमोसार्किन—अजीर्ण के कारण उत्पन्न सिर-दर्द में ।

मोर्फिन हायोसामिन—किसी भी कारण से उत्पन्न सिर-दर्द में ।

हायोसिन, हाइड्रोब्रोम, कैल्शियम ब्रोनेट, गाइनार्जेन, ऐपोमार्फिन हाइड्रोक्लोर तथा ल्युमिनाल आदि इञ्जेक्शन भी सिर-दर्द में लाभ करते हैं ।

शोथ (सूजन) (Dropsy)

स्थानीय तथा सर्वाङ्गीण भेद से सूजन दो प्रकार की होती है । स्थानीय में शरीर के किसी एक भाग में सूजन रहती है और सर्वाङ्गीण में सम्पूर्ण शरीर पर । सूजन वाला भाग प्रायः पिलपिला हो जाता है । यदि उसे हाथ से दवाया जाय तो वह बैठ जाता है । सूजन का मुख्य कारण कोई दूसरा ही रोग, जैसे- हृदय रोग, दस्त, मासिक-धर्म की खराबी, तिल्ली, जिगर, वात-व्याधि आदि होता है । सूजन के साथ ही प्यास, अरुचि, ज्वरांश, अशक्तता, त्वचा का रूक्ष हो जाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं । सूजन की चिकित्सा के लिए पहले उस

मूल-रोग की चिकित्सा करनी चाहिए, जिसके कारण सूजन आई हो । मूल-रोग को लाभ होने पर सूजन स्वतः ठीक हो जाती है ।

शोथ (सूजन) रोग में निम्नलिखित औषधियाँ लाभकर सिद्ध होती हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) नीम की छाल, पटोल-पत्र, बड़ी हरड़ें, सोंठ, कुटकी, गिलोय, देवदारु और पुनर्नवा—इन आठ औषधियों को समभाग लेकर काढ़ा करें । इस काढ़े को पीने से सब प्रकार के शोथ रोग में लाभ होता है ।

(2) गोरखमुण्डी 1 तोला में सेंधा नमक 3 माशा डालकर , काढ़ा बनाकर पीने से हर प्रकार शोथ में लाभ होता है ।

(3) गोमूत्र $2\frac{1}{2}$ से 5 तो ले तक की मात्रा में [illegible] थ-रो ग में लाभ होता है ।

(4) जुलाब देकर पेट साफ कराने से हर प्रकार के शोथ-रोग में लाभ होता है ।

(5) पुनर्नवा का काढ़ा पीने तथा पुनर्नवा के रस को लगाने से शोथ रोग में लाभ होता है ।

(6) भैंस के मक्खन तथा भैंस के दूध में तिल पीसकर लेप करने से सूजन दूर हो जाती है ।

(7) गोमूत्र को थोड़ा-सा गरम करके सूजन वाले स्थान पर सींचने से सूजन दूर हो जाती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अजवाइन को महीन कूट-छानकर नीबू के रस में मिलाकर पकायें तथा उसे सूजन वाली जगह पर गुनगुनी बाँध दें । इससे सूजन दूर होकर तकलीफ मिट जाती है । नीबू का रस न मिले तो अजवायन को सिरके में भी पकाया जा सकता है ।

(2) धतूरे के पत्तों को आग पर सेंककर गुनगुना रहते हुए सूजन बाँध देने से सूजन में लाभ होता है ।

(3) सिरस के पत्तों को गरम करके, दिन में कई बार बाँधने से दर्द और सूजन की तकलीफ दूर हो जाती है ।

(4) गूलर की छाल को पानी में पीसकर लेप करने अथवा भिलावे के धूँए की धूनी देने से सूजन दूर हो जाती है ।

(5) महुए के पत्तों पर रेंडी या तिल का तेल लगातार गरम करें, फिर उन्हें गुनगुना रहते हुए बाँध दें तो वात के दर्द और सूजन दोनों में लाभ होता है ।

(7) बकरी की मैंगनी को पानी में पीसकर सूजन वाली जगह पर लेप कर देने से पुरानी सूजन भी गल जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

एपिस 30— शरीर के किसी एक अङ्ग अथवा सर्वाङ्ग में शोथ, प्यास का न रहना, श्वास-कष्ट, प्रलाप, वेदना,गरम सेंक से रोग में वृद्धि, जलन के साथ थोड़ा-थोड़ा पेशाब आना आदि लक्षणों में ।

कल्केरिया-कार्ब 6, 30— रक्त में श्वेत-कणों की वृद्धि के कारण उत्पन्न शोथ में ।

पल्सेटिला 6— स्त्रियों के रजःस्राव में गड़बड़ी के कारण उत्पन्न शोथ में ।

चायना 6— यकृत तथा प्लीहा की खराबी के कारण उत्पन्न शोथ में, जिसमें दुर्बलता एवं चेहरे का फीका पड़ जाने के लक्षण हों ।

विभिन्न अङ्गों के शोथ में निम्नलिखित औषधियाँ लक्षणानुसार दें । पोटेन्सी तथा मात्रा का चुनाव आवश्यकतानुसार करलें ।

पेट के शोथ में—**एपिस, मर्क्युरियस, बेलाडोना** ।

सन्धि के शोथ में—**पल्सेटिला, रसटाक्स, एकोनाइट** ।

सर्वाङ्गीण शोथ में—**ब्रायोनिया, सल्फर, आर्सेनिक** ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) विटामिन बी. 150 मि. ग्राम., विटामिन बी., कम्पलैक्स 1 टेब्लेट विटामिन सी. 50 मि. ग्रा., रूटीन 1 टेब्लेट तथा कैल्शियम लैक्टेट 10 ग्रेन। सबको मिलाकर, घोलकर 4 पुड़िया तैयार करें । हर 4 घण्टे बाद एक पुड़िया दें ।

इन रोग में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं—

इसिड्रैक्स, क्लोराइड, डाइडेमिल तथा डायमोक्स आदि ।

सामान्य शारीरिक -शोथ में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभ करते हैं—

मर्सालिन, नेप्टाल, डाइगोक्सीन, पिट्यूट्रीन, डिजीटेलिन, पाइलोकार्पिन आदि ।

'ड्रापसीहिपैटिक' (जिसमें लिवर में सूजन आ जाती है) में निम्नलिखित इञ्जेक्शन प्रभावकारी हैं—

स्पर्टिन सल्फेट तथा पाइलोकार्पिन नाइट्रेट ।

'ड्रापसी कार्डियल' (जिसमें हृदय-सम्बन्धी दोष के कारण शरीर में सूजन आ जाती है) निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

पिटयूट्रीन, डिजीटैलिन, मैस्ट्रोन, 'ग्राप्सी एनामिक्स' आदि । रक्त की कमी के कारण सूजन आई हो तो निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

साइट्रेट सोडियम कोकाडाइलेट, लाइवैक्स, आइरन थाइट्रेट, आयरन आर्सेनेट, विटा वीप्लेक्स तथा ग्लेसेरी फास्फेट कम्पाउण्ड ।

सन्धि-वात (गठिया)

(Rheumatism & Gout)

रस, रक्त आदि धातुओं की कमी से वात कुपित होकर शरीर में विभिन्न प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न कर देता है । आयुर्वेद में वात-व्याधि 80 प्रकार की बताई गई हैं । जो वात-व्याधि शरीर के जोड़ों में दर्द उत्पन्न कर देती है, उसे 'सन्धिवात' या गठिया कहते हैं । यह रोग विशेषकर घुटनों में होता है। इसमें निम्नलिखित उपचार हितकर रहते हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) लहसुन को पीसकर, तिल के तेल में मिलाकर या तलकर खाने से हर प्रकार की वात-व्याधि में लाभ होता है ।

(2) अरण्डी के बीजों को छीलकर पीस लें तथा पिसी हुई सोंठ मिलाकर दूध के साथ सेवन करें तो वात के कारण होने वाले कमर तथा अन्य स्थानों के दर्द में लाभ होगा ।

(3) 'महारास्नादि क्वाथ' के साथ 'महायोगराज गुग्गुल' का दीर्घकाल तक सेवन करते रहने से वात-व्याधि जड़ से चली जाती है । ये दवायें आयुर्वेदिक औषध-विक्रेताओं की दुकानों से खरीदी जा सकती हैं ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) असली उसवा और चोपचीनी के काढ़े को शहद में मिलाकर पीने से गठिया-वात में फायदा होता है ।

(2) हुलहुल की छाल की ऊपरी स्याही को दूर करके भीतरी छाल को छाया में सुखाकर कूट लें । इसमें बराबर की शक्कर मिलाकर सेवन करने से कमर का दर्द दूर हो जाता है ।

(3) मालकाँगनी, पँवार के बीज, बाबची और हालौं—इन्हें समभाग लेकर रख लें । 3 माशा दवा को पानी के साथ सुबह ही निगल लेने से सर्दी के कारण उत्पन्न कमर तथा जोड़ों का दर्द दूर हो जाता है ।

(4) हालौं, कलौंजी, मेथी और अजवायन— इन्हें समभाग लेकर रख लें । प्रतिदिन सुबह-शाम 3 माशे की मात्रा में पानी के साथ लेते रहने से गठिया और कमर-दर्द में लाभ होता है ।

(5) अरण्डी के बीज और सोंठ 5-5 तोले लेकर इन्हें अलग-अलग पीसकर रख लें । पहले अरण्डी के बीजों को थोड़े से अलसी घी में भून लें। फिर उन्हें तथा सोंठ को 1 सेर दूध में डालकर यह आँच तक पकायें कि खोआ बन जाय । इस खोये में खाँड़ मिलाकर रखलें तथा रोजाना 2-3 तोला खाते रहें यह दवा गठिया और कमर के दर्द में बहुत मुफीद (गुणकारी) है ।

(6) बिनौला को कूटकर थोड़े-से पानी में उबालें, फिर गुनगुना गरम रहते हुए उन्हें दर्द वाले जोड़ों पर बाँध दें । इससे दर्द दूर हो जायगा ।

(7) धतूरा, आक, अरण्ड और थूहर—इन चारों के पत्तों को 10-10 तोला लेकर कूटकर, अर्क निकाल लें । उस अर्क में समभाग तिली का तेल मिलाकर आग पर पकावें । जब सब पानी जल जाय, सिर्फ तेल रह जाय, तब इस गुनगुने तेल की मालिश दर्द वाली जगह पर करें तथा ऊपर से रुई गरम करके बाँध दें । इससे गठिया में बहुत आराम मिलेगा ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

सल्फर 30— यह रोग की नयी तथा पुरानी सभी अवस्थाओं में हितकर है । इसका प्रयोग अधिक समय तक नहीं करना चाहिए ।

पल्सेटिला 3, 6, 30— सन्धि-स्थान का थोड़ा सूज जाना तथा लाल हो जाना, दर्द का एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटना, अनिद्रा, बेचैनी, जोड़ों में सूजन, घुटने की छोटी सन्धियों में दर्द आदि लक्षणों पर इसे दें ।

बेलाडोना 3x, 6— दर्द वाले स्थान का अधिक फूलना एवं लाल हो जाना, आँख तथा चेहरे का लाल हो जाना, तीव्र सिर-दर्द, दर्द का अचानक उठना और बन्द हो जाना तथा रात्रि में बढ़ना—इन लक्षणों पर ।

रसटाक्स 6— हिलने-डुलने अथवा सेक करने पर रोगी-स्थान का दर्द कम होना, विश्राम के समय, प्रातः सोकर उठते समय अथवा रात्रि में दर्द का बढ़ना, अत्यधिक बेचैनी, कटि-वात आदि लक्षणों में इसे दें ।

एकोनाइट 1, 6— तरुण सन्धियों तथा पेशियों में छेदने जैसा दर्द रोगी-स्थान का लाल एवं फूला होना- आदि लक्षणों पर ।

ब्रायोनिया 3, 6, 12, 30— 'एकोनाइट' के प्रयोग से वात के दब जाने पर 'ब्रायोनिया' द्वारा उसे समूल नष्ट किया जा सकता है ।

आर्निका 3, 30— पेशियों में दर्द, उनका कड़ा हो जना, चोट लगने अथवा गिर जाने के कारण उत्पन्न हुए रोग में हितकर है ।

कोलचिकम 3, 6— पाकाशय अथवा हत्पिण्ड के दोष से उत्पन्न वात पाँव में सूजन, अस्थिरता, चलने-फिरने में कष्ट तथा दर्द, भोजन की गन्ध जी मिचलाना आदि लक्षणों पर ।

लिलियम 30— टेहुने तथा पाँव की अँगुलियों में दर्द और सूजन तथा चलते समय घुटनों में दर्द होना— इन लक्षणों पर ।

नेट्रमम्यूर 3x, 30— जोड़ों में दर्द, सदैव ठण्ड-सी लगना आदि पर ।

पुराने वात-रोग में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं । इन्हें 3 से 30 तक के क्रम में दें—

छाती की वात— **आर्निका, ब्रायोनिया, रसटाक्स** ।

छाती तथा पीठ की वात— **रसटाक्स, आर्सेनिक, इयुपेटपर्फ** ।

हत्पिण्ड का वात— **डिजिट, एकोन, स्पाइजिलिया** ।

उरु-सन्धि का वात— **एकोन, सिमिसि, कोलोसिन्थ** ।

बायीं बाँह का वात— **नक्समस्केटा** ।

दायीं बाँह का वात— **कैल्केरिया, फाइटोलैका** ।

कमर का वात— एण्टिमटार्ट, आर्निका, रसटाक्स ।

बाँये पाँव का वात— इलैप्स ।

दाँये पाँव का वात— लैकेसिस ।

घुटने अथवा पाँव की अँगुलियों का वात— **सल्फर** 200, **पल्सेटिला** ।

कन्धों का वात— **सैंगुइनेरिया** ।

गर्दन की पेशियों की वात— **एकोनाइट, बेलाडोना** ।

पार्श्व की वात— **रैनन क्यूलस, एल्ब** ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सोडा सैलिसिलास 24 ग्रेन, एण्टीपायरिन 24 ग्रेन, टिंक्चर जेल्सीमियम 1 ड्राम. टिंक्चर क्लोरोफार्म 40 बूँद, ग्लिसरीन 2 ड्राम, एकुआ 2 औंस ।

यह मिक्शचर 4 खुराक है । दिन में तीन बार 1-1 खुराक देने से आम-वात में लाभ होता है ।

(3) आम-वात में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं—

अर्गापायरिन टेब्लेट, ब्यूजोलिडिन, डेल्टा ब्यूटाजोलिडिन, प्रेसिन, फीनोसिन तथा ओरासिन के० ।

(4) पोटेशियम आयोडाइ 5 ग्रेन, टिंक्चर कोल्चिकम 10 बूँद, सोडियाई सल्फास 45 ग्रेन, स्पिरिट क्लोरोफार्म 15 बूँद तथा एकुआ (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह 1 खुराक है । ऐसी 3-4 खुराकें 24 घण्टे में दें । यह मिक्शचर वात-रक्त या गठिया में हितकर है ।

(5) 'गठिया' रोग में निम्नलिकित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं-

प्रेसिन, वीटा कार्टिल, वायोसोलोन, मिलिकार्टेन तथा डेकाड्रान ।

(6) 'गठिया' रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

एकोनाइट नाइट्रेट, आयोडीन स्ट्रैप्टो कोकस, कैफीन सोडियम वैञ्जोएट, पेनिसिलीन, आयोक्राइसिन, नोवाल्जिन, इरगापाइरिन, सोडियम सैलीसिलेट विद आयोडाइड, मिल्क आयोडीन, कैफीन सोडियम सैलसिलेट तथा वैक्सीन रियुसूमेटिके स्ट्रैप्टो कोकस ।

(7) कमर में दर्द में निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं-

वेरिन विद कैल्शियम (सैण्डोज), सोडियम सैलिसिलेट विद आयोडाइड, विद नार्मल सैलाइन नोवाल्जिन, मिल्क आयोडीन तथा मुल्टीन ।

गृध्रसी (साइटिका) (Sciatica)

यह भी एक प्रकार की वात-व्याधि है । इसमें कूल्हे, सन्धि, पीठ, कमर, उरु, जाँघ तथा पाँव रह जाते हैं और सुई चुभने जैसी तीव्र वेदना होती है । क ऊल्ह की सन्धि आदि शिरायें बार-बार काँपती रहती हैं इसमें रोगी को अत्यधिक कष्ट का अनुभव होता है । निम्नलिखित औषधियाँ इस रोग में लाभ करती हैं ।

आयुर्वेदिक - चिकित्सा

(1) अरण्डी का तेल 1 से 2 तोला तक को आधा पाव गोमूत्र में मिलाकर पीते रहने से गृध्रसी रोग दूर हो जाता है ।

(2) अरण्डी के बीजों के छिलके दूर कर दें, फिर उस छिली हुई गिरी 3 तोला को आधा सेर गाय के दूध में पकायें । जब वह खीर जैसी हो जाय, तब खायें । 21 दिन तक इसके नियमित सेवन से गृध्रसी रोग अवश्य दूर हो जाता है ।

(3) महानीम के 1 माशा गोंद को पानी में साथ पीने से तीव्र गृध्रसी रोग भी दूर हो जाता है । गोंद न मिलने पर महानीम की जड़ का काढ़ा पीना चाहिए।

(4) अरण्डी की जड़, बेलगिरी, बड़ी कटेरी और छोटी कटेरी इस सबको मिलाकर 2 तोले की मात्रा में लें । फिर उन्हें 32 तोले पानी में डालकर औटायें। जब 4 तोला पानी शेष रह जाय, तब छानकर उसमें थोड़ा सा काला नमक मिलाकर पीलें । इसके सेवन से वस्ति-शूल, वक्ष-शूल तथा पुराना गृध्रसी रोग भी ठीक हो जाता है ।

(5) वकायन की भीतरी छाल को पानी के साथ सिलपर पीसकर, उस पानी को छानकर पीने से असाध्य-गृध्रसी-रोग भी ठीक हो जाता है ।

(6) त्रिफला, (हरड़, बहेड़ा, आँवला) के काढ़े में अरण्डी का तेल 1 से 3 तोला तक मिलाकर पीने से गृध्रसी रोग दूर हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) अरण्ड की जड़, बेलगिरी, छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी—इन सबको मिलाकर कुल 2 तोला लेकर 32 तोले पानी में औटायें । जब 4 तोला पानी रह जाय, तब उसे छान लें और उसमें थोड़ा - सा काला नमक मिलाकर

पीलें । इसके सुबह-शाम नियमित सेवन से बहुत पुराना साइटिका भी ठीक हो जाता है ।

(2) अडूसा, जमालगोटे की जड़ और अमलतास का गूदा- ये तीनों वस्तुएँ 1-1 तोला लेकर आधा सेर पानी में औटायें । जब आधा पाव पानी रह जाय, तब नीचे उतार कर छान लें । फिर उस काढ़े में अरण्डी का तेल मिलाकर पियें । इस प्रयोग को 15 दिन तक करने से गृध्रसी-रोग दूर हो जाता है ।

(3) मेढ़ासिङ्गी, गोखरू, अरण्ड की जड़, बेल की जड़, बायबिड़ङ्ग ऊँटकटेरी और कटेरी की जड़—इन समभाग लेकर काढ़ा तैयार करें । उस काढ़े में अरण्डी का तेल मिलाकर पीने से भयानक वात-गृध्रसी रोग हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नैफेलियम 3, 30— स्नायुओं में तीव्र दर्द, ऐंठन तथा रोगी-स्थान के सूज जाने पर ।

कोलोसिन्थ 1, 3— सर्दी लगने अथवा अन्य कारणों से अचानक दर्द उत्पन्न हो जाने पर ।

एकोनाइट 3x— तेज हवा लगने से उत्पन्न दर्द, झनझनाहट अथवा सुन्नता का अनुभव होने पर ।

आर्सेनिक 3— निर्बल तथा वृद्ध मनुष्यों को पक्षाघात हो जाने पर ।

कार्बोनियम सल्फ 3— किसी अन्य औषध से लाभ न होने पर ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) 'सन्निपात' के लिए वर्णित औषधियाँ इस रोग में भी लाभ करती हैं—

(2) 'स्नायु-शूल' के लिए निम्नलिखित लेप हितकर है—

टिंक्चर ओपियम 2 ड्राम, टिंक्चर बेलाडोना, मीथिल सैलिसिलेट 2 ड्राम तथा स्प्रिट कैम्फर 4 ड्राम—इन सबको मिलाकर दर्द वाले स्थान पर लेप करें।

(3) गृध्रसी (साइटिका) में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं—

कोडोपायरिन, नोवाल्जिन, मल्टिविटाप्लेक्स फोर्ट कैप्सूल तथा बीकोस्यूल।

(4) गृध्रसी-रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं-
एण्टी पायरिन, एटोपेनिल, ओस्मिक एसिड ।

कण्ठमाला (गलगण्ड) (Scrofula)

दूषित वात, कफ तथा मेद गले की नाड़ियों में जो नीचे लटकने वाली अण्डकोषों जैसी सूजन उत्पन्न कर देते हैं, उसी को 'कण्ठमाला' या गलगण्ड कहा जाता है । गले के अतिरिक्त बगल तथा अन्य स्थानों में उत्पन्न होने वाली गाँठों को 'कण्ठमाला' कहते हैं । इससे निम्नलिखित उपचार करें ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) पीली सरसों, सुअर को सूखी हुई विष्ठा तथा सहजने के बीज तीनों वस्तुएँ 2-2 तोले लेकर पीसकर, आग में फूँककर भस्म बनालें । फिर कपड़छन करके कड़ुवे तेल में मिलाकर काँसी की कटोरी से रगड़ें । उस प्रकार को मरहम तैयार हो, उसे गलगण्ड पर आराम होने तक लगाते रहें । थोड़े ही दिनों में लाभ होगा ।

(2) सुअर की पूँछ के अगले हिस्से को आग में जलाकर, उसे सरसों के तेल में मिलाकर नस्य देने से गलगण्ड में अवश्य लाभ होता है ।

(3) कड़वी तूम्बी अथवा कड़वी लौकी के पके हुए फल में पानी अथवा शराब भरकर उसे 7 दिन तक रक्खी रहने दें । फिर उसका सेवन करें । इसे गलगण्ड में अवश्य लाभ होता है ।

(4) लाल अरण्ड की जड़ को चावलों के पानी में पीसकर लेप करने से गलगण्ड रोग शीघ्र दूर होता है ।

(5) कायफल को महीन पीस-छानकर गलगण्ड पर मलने से वह शीघ्र ठीक हो जाता है ।

(6) कचनार की छाल को चावलों के पानी में महीन पीसकर लेप सोंठ का चूर्ण मिलाकर पियें तो गलगण्ड तथा गले की सामान्य सूजन इन दोनों रोगों में लाभ होता है ।

(7) अमलतास को जड़ को चावलों के पानी में महीन पीसकर लेप करने से गलगण्ड में शीघ्र लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) बारहसिंघे के सींग 2-3 तोला वजनी 1 टुकड़े को लेकर मिट्टी के

कूड़े में डाल दें । फिर उसमें घीगुवार (ग्वारपाठा) के पत्तों का लसदार गूदा 5-6 तोला डालकर मुख बन्द कर दें । फिर उसे 5-6 सेर उपलों (कण्डों) की आग में रखकर तपायें । आग के ठण्डी हो जाने पर उसे निकाल लें । इस तरकीब से बारहसिंघे का टुकड़ा सफेद रङ्ग के कुश्ते (भस्म) के रूप में बदल जायगा। उसे पीसकर शीशी में रखलें । इस भस्म को 6 माशे की मात्रा में पानी से धोये हुए गाय के घी 2 तोला में मिलाकर गिल्टियों पर दो हफ्ते तक लगाते रहें । इसमें गिल्टियाँ घुल जायेंगी ।

(2) सिरस के बीज 20 तोला को कूट-पीसकर सफूफ (चूर्ण) बनायें फिर 60 तोले शुद्ध शहद को धीमी आग पर रखकर पकायें, जब उसमें उबाल आ जाय, तब उसके मैल को निथार कर साफ कर लें और उसमें सिरस के बीजों का चूर्ण मिलाकर मर्तवान में भरदें । 40 दिन बाद इसे इस्तेमाल में लायें । रोजना 1 तोले की मात्रा में इसका सेवन करते रहने से नयी गिल्टियों का निकलना बन्द हो जाता है और जो गिल्टियाँ निकल चुकी होती हैं । वे घुलजाती हैं ।

(3) बिषखपरे की जड़ को छाया में सुखाकर कूट-छान लें । इस चूर्ण को 1-1 माशे की मात्रा में सुबह-शाम पानी के साथ खिलाने तथा इसी को पानी में घोलकर गिल्टियों पर लेप करने से लाभ होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

कैल्केरिया कार्ब 6, 30— कानों की गाँठों का फूलना, नाक का लाल हो जाना तथा फूलना, आँखों में जलन, पतले दस्त आदि लक्षणों पर ।

सल्फर 6, 30— कान के पीछे, बगल में अथवा शरीर के अन्य स्थानों में गाँठें पड़ जाना, धातु-रोगी की कण्ठमाला, घुटने तथा अन्य जोड़ों का कड़ा हो जाना आदि लक्षणों में ।

बेलाडोना 3, 6— गाँठों में सूजन तथा दर्द, गले में दर्द. निगलने में कष्ट, आँखों की पुतली में सूजन या जख्म होने पर ।

सिलिका 6, 30— यदि गाँठें फूलकर सफेद रङ्ग की हो गई हों और उनमें मवाद पड़ने के लक्षण हों ।

एपिस एल्बा 6—शरीर के किसी भी स्थान की गाँठों के फूल जाने पर।

हिपर सल्फर 30— गिल्टियों का पकना, आँखों का प्रदार तथा पपोटों से पानी एवं मवाद निकलना—इन लक्षणों पर ।

कैल्केरियाफॉस 12x वि०—कण्ठमाला के रोगी को यदि गठिया की बीमारी भी हो तो—यह औषध बहुत लाभ करती है ।

डल्कमारा 6, 30— यदि सिफलिस के बाद कण्ठमाला आई हो तो तथा विशेषकर चेहरा आकान्त हुआ हो तो इसे दें ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) आयल गिलथेरिया 2 बूँद, कॉडलिवर, ऑयल 2 ड्राम, गम एकेसिया 20 ग्रेन, सीरप केलसिसाईलिको फास्फेट 1 ड्राम, एकुआ सिनासिन (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

इस इमल्शन को कण्ठमाला पर दिन में 3 बार लगाना चाहिए ।

(2) पोटाश आयोडाइड, 5 ग्रेन आयोडीन क्रिस्टल 5 ग्रेन, एक्काडिस्ट, 10 बूँद स्पिरिट रेक्टीफाइड 1 औंस ।

इस मिक्श्चर में से 1 बूँद प्रातः तथा 2 बूँद सायं पानी में मिलाकर दें। यही घेघा पर लाभकारी है ।

(3) घेघा रोग में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं-

पाराथायोराइड टेब्लेट्स विद कैल्शियम, थायोरेसिल टेब्लेट्स आदि ।

(4) घेघा रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभ करते हैं—

सोडियम क्लोराइड, आयोडीन, थायरोक्सिन, कैल्सी ओस्टिलिन, कैल्सिडिन, रेडियो एक्टिव आयोडीन आदि ।

अनिद्रा (Sleeplessness)

चिन्ता, मिथ्या आहार-विहार आदि अनेक कारणों से अनिद्रा-रोग उत्पन्न होता है । इसमें नींद नहीं आती । निम्नलिखित उपचार नींद लाने में सहायक सिद्ध होते हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) तिल के तेल 2 छटाँक को गरम करके नीचे उतार लें, फिर उसमें 6 माशे कपूर मिला दें । ठण्डा हो जाने पर अनिद्रा-रोगी के पाँव के तलवों पर आधा घण्टे तक इस तेल की खूब मालिश करें । इससे नींद अच्छी तरह आवेगी ।

(2) सोने से पूर्व पाँव के तलवों पर 1 तोला सरसों के तेल में आधा पाव पानी मिलाकर धीरे-धीरे मालिश करवाने से भी खूब नींद आती है ।

यूनानी - चिकित्सा

(1) अगर दिमाग खुश्की की बजह से नींद न आती हो तो रोजाना सुबह बकरी का ताजा दूध खाँड़ मिलाकर पियें ।

(2) मीठे बादामों की गिरी 5 अदद और खसखस के बीज 3 माशा को पानी में पीस-छानकर खाँड़ मिलाकर पियें तथा खसखस के बीज और भाँग-दोनों को मिलाकर 6 माशा लें । उन्हें दूध या पानी में पीसकर हाथ की हथेली तथा पाँव के तलवों पर मालिश करें—इससे नींद आ जायेगी ।

(3) सोए के साग को सिरहाने रखने से भी नींद आ जाती है ।

(4) बुखार की बजह से नींद न आती हो तो काँसी के कटोरे से हाथ की हथेलियों और पाँव के तलवों को सहलायें तथा तकिये के सहारे बैठाकर रोगी को पिण्डलियों पर गरम पानी गिरायें साथ ही दोनों हाथ से पिण्डलियों को नीचे की ओर सूँतते भी रहें । 15-20 मिनट तक ऐसा करने के बाद रोगी को लिटा दें, उसे नींद आ जायगी ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

इग्नेशिया 3,30— चिन्ता, दुःख आदि कारणों से रोग होने पर ।

काफिया 6, 30— मानसिक-उत्तेजना के कारण नींद न आने पर ।

चायना 6, 30— रक्तस्राव अथवा दस्त आदि को कमजोरी के कारण नींद न आने पर ।

एकोनाइट 6, 30— बेचैनी के कारण नींद न आने पर ।

ऐम्ब्राग्रिसिया 30— काम-काज की चिन्ता से नींद न आने पर ।

फास्को 3— वृद्धावस्था में नींद न आने पर ।

पैसिफ्लोरा एनकारनेटा Q— यह नये तथा पुराने अनिद्रा-रोग की सर्वश्रेष्ठ औषध है । मात्रा 1 से 20 बूँद तक आवश्यकतानुसार दें ।

एलोपैथिक - चिकित्सा

(1) अमाइलोबर्बिटोन 60 मिग्रा. मीप्रोवामेट 400 मिग्रा. प्रोमीथाजीन 25 मि. ग्रा.- यह सब मिलाकर 1 मात्रा है । इसे सोते समय देने से शीघ्र ही गहरी नींद आ जाती है ।

(2) नींद लाने वाली पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं—

एमिटोला, डियाल, औरैटॉल, सोनेरील, सोडियम आदि ।

इसमें से कोई भी 1 या 2 टिकाया सोते समय पानी के साथ दें ।

(3) अनिद्रा-रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

मार्फिया—किसी दर्द अथवा जलन की अनिद्रा में ।

किनीन सल्फेट—मलेरिया एवं उन्माद आदि की अनिद्रा में ।

हायोसिन हाइड्रोब्रोमाइड (हिस्टीरिया, मिर्गी अथवा पागलपन की अनिद्रा में) ।

पिटयूट्रीन—(हृदय की निर्बलता—अन्य अनिद्रा में) ।

ऐम्नोपेन—स्टमक, एपेण्डीसाइटिस आदि की अनिद्रा में ।

ल्युमिनाल सोडियम, डाइल, पराल्डीहाइड, मीरेनिल आदि ।

मूर्च्छा (बेहोशी)
(Syncope or Fainting)

चलते-फिरते समय अथवा बैठे हुए ही एकदम गिरकर पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से संज्ञाहीन हो जाने को मूर्च्छा या बेहोशी कहा जाता है । सामान्य-मूर्च्छा में रोगी कुछ देर बाद स्वतः अथवा चिकित्सा करने पर होश में आ जाता है । पक्षाघात आदि कारणों से उपस्थित होने वाली मूर्च्छा कुछ अधिक समय तक बनी रहती है । चिन्ता, भय, क्रोध, शोक, मासिक-धर्म की अनिमियतता अनियमित आहार-बिहार, गर्मी, परिश्रम तथा हृदय की क्रिया-विषमता आदि सामान्य मूर्च्छा के कारण हैं । इसमें निम्नलिखित उपचार हितकर सिद्ध होते हैं—

आयुर्वेदिक - चिकित्सा

(1) रोगी के मुख पर ठण्डे पानी के छींटे मारे, सिर पर ठण्डा पानी डालें, हवा करें, विशेषतः कमर के वस्त्रों को ढीला कर दें तथा प्याज के रस की नाम के दोनों छिद्रों में 2-2 बूँद टपकायें ।

(2) मूर्च्छित—व्यक्ति की दोनों रानों पर कसकर पट्टियाँ बाँध दें तथा उसे कपूर सुँघायें ।

(3) सम्पूर्ण शरीर पर मीठे तेल की मालिश करने से भी मूर्च्छा दूर हो जाती है ।

यूनानी चिकित्सा

(1) एक शीशी में चूना और नौसादर 6-6 माशे भरकर ऊपर से थोड़ा-सा पानी डाल दें । फिर उस शीशी को रोगी की नाक के सामने रक्खें । इसके साथ ही रोगी के पाँव का नीचे से ऊपर की ओर उठावें तथा रोगी के हृदय - स्थान को हथेली से थपथपायें—इस तरकीब से हृदय की कमजोरी के कारण आने वाली बेहोशी दूर हो जाती है । यदि रोगी शीघ्र ही होश में न आये तो किसी अनुभवी चिकित्सक को दिखाना चाहिए ।

(2) रोगी के शरीर के कपड़ों खासकर कमरबन्द को ढीला करके उसके मुँह पर पानी के छींटे मारें, मुँह में पानी डालें तथा हवा करें, सिर पर बर्फ रखें या ठण्डा पानी गिरायें— ये सब उपाय बेहोशी को दूर करते हैं ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

इस रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ देनी चाहिए । प्रायः एक मात्रा के प्रयोग से ही रोगी को होश आ जाता है ।

एकोनाइट 3x, **नक्सवोमिका** 30, **एमोन कार्ब** 6, चायना 6, मर्स्कस 3, ओपियम 30, आर्सेनिक 3x ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) मूर्च्छा-रोग में निम्नलिकित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

एनॉकार्डोन—ऑपरेशन के कारण अथवा पानी में डूब जाने के कारण उत्पन्न मूर्च्छा में ।

मूर्च्छा—नाशक अन्य इञ्जेक्शन ।

कार्डियोजोल मुश्क, नाइट्रोग्लिसरीन आदि ।

(2) सामान्य-मूर्च्छा कैम्फर आदि के प्रयोग तथा सामान्य उपचारों से दूर हो जाती है ।

मिर्गी (अपस्मार) (Epilepsy)

इस रोग में रोगी एकाएक चिल्लाकर अथवा चुपचाप ही बेहोश होकर गिर पड़ता है । बेहोशी की हालत में मुख से झाग निकलना इस रोग का प्रधान लक्षण है । आँखों की पुतलियों का घूम जाना, हाथ-पाँवों को इधर-उधर पटकना, शरीर का काँपना, शरीर कड़ा पड़ जाना तथा उससे पसीना निकलना,

गर्दन का टेढ़ा हो जाना आदि मिर्गी रोग के अन्य लक्षण हैं । इसमें निम्नलिखित उपचार हितकर हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) रोगी के गले में जायफल लटकाये रहने से इस रोग में लाभ होता है ।

(2) मिर्गी के दौरे के समय रोगी की नाक में प्याज का रस डालने अथवा घिसी हुई राई सुँघाने से उसे तुरन्त होश आ जाता है ।

(3) गधे के बाँये पाँव के नाखून की अँगूठी बनवाकर रोगी को पहिनाना लाभकर सिद्ध होता है ।

(4) दूध में शतावर डालकर औटायें तथा ठण्डा करके रोगी को पिलायें। इससे लाभ होगा ।

(5) हाथी की लीद को 6 माशे से 1 तोले की मात्रा में (अवस्थानुसार) पानी में घोलकर प्रातः-सायं एक महीने तक पिलाते रहने से मिर्गी रोग में लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) छोटी कटेरी के फल को थोड़े-से पानी में पीस-छानकर नाक में टपकाने से मिर्गी के रोगी को होश आ जाता है ।

(2) रीठे का छिलका उतारकर, उसे पानी में पीस-छानकर नाक में टपकाने से भी होश आ जाता है ।

(3) बिडाल डोडा को महीन पीस-छानकर रोगी की नाक में फूँकें । इससे रोगी होश में आ जायगा । बार-बार इस्तेमाल करने से रोगी का दिमाग साफ हो जायगा और मिर्गी का दौरा भी खत्म हो जायगा ।

होम्योपैथिक - चिकित्सा

ब्यूफो 6— हस्तमैथुन के कारण उत्पन्न रोग में । विशेषतः पुराने रोग में अत्युत्तम लाभ करती है ।

फास्फोरस, चायना अथवा फेरस—हस्तमैथुन आदि कारणों से उत्पन्न रोग में ।

साइना अथवा फिलिक्स—कृमि के कारण उत्पन्न रोग में ।

इग्ने, कैलिब्रोम अथवा एसिड हाइड्रो—नये रोग में ।

बेल, प्लबम, सल्फ, कल्केकार्ब अथवा क्युप्रम ऐसेड—पुराने रोग में ।

कैलिसल्फ 12x **वि०, कैलिफॉस** 12x **वि० कैलिम्यूर** 12x— कुछ चिकित्सकों के मतानुसार ये इस रोग की सर्वश्रेष्ठ औषधियाँ हैं । इन्हें रोगी की सहज-अवस्था में देना चाहिए ।

विशेष—औषध की शक्ति एवं मात्रा आवश्यकतानुसार निश्चित करें ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) पोटाश ब्रोमाइड 10 ग्रेन, सोडियम ब्रोमाइड 10 ग्रेन, एमो० ब्रोमाइड 5 ग्रेन, लाइकर आर्सेनिकलाइकर 2 बूँद तथा एकुआ (सब मिलाकर 1 औंस) ।

यह एक खुराक है । ऐसी दिनभर में तीन खुराक दें ।

(2) मिर्गी-रोग में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ लाभ करती हैं—

गार्डिनल, माईसोलीन, डाइलैण्टिव ।

(3) मिर्गी-रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

हायोसिन, हाइड्रोब्रोमाइड, पिट्युट्रीन, मार्फिया, स्ट्रिक्नीन, कैल्शियम ब्रोनेट, साइक्लोनल सोडियम, विलसो फास्फेट, मुश्क, पाइलोकार्पिन नाइट्रेट, सोडियम फिनोबार्बीटोन आदि ।

प्रमेह (धातु-विकार)

(Spermatorrhoea)

आयुर्वेद के मतानुसार प्रमेह रोग 20 प्रकार का होता है । यह रोग अधिक-मैथुन, कब्ज, मिथ्या आहार-बिहार आदि अनेक कारणों से होता है । यह बड़ा भयानक रोग है, जो शरीर को खोखला कर देता है । शीघ्र इलाज न होने पर प्रमेह रोग ही मधुमेह (डायबिटीज) में परिणित हो जाता है । इस रोग में पेशाब अधिक तथा गँदला आता है । पेशाब के साथ वीर्य भी निकलता है । कभी-कभी बिना पेशाब किये ही शिश्न से वीर्य की बूँदे टपकती रहती हैं। इस रोग में निम्नलिखित उपचार हितकर हैं । परन्तु चिकित्सा काल में तथा उसके काफी समय बाद तक भी प्रमेह—रोगी को ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है तथा भोजन भी हल्का और सुपाच्य होना चाहिए ।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

(1) हरड़, बहेड़ा तथा आँवला—तीनों को समभाग लेकर चूर्ण बनालें।

इस त्रिफला—चूर्ण को 3 माशे से 1 तोले तक की मात्रा में शहद अथवा गरम पानी के साथ प्रातः-सायं सेवन करते रहने से धातु-स्राव (प्रमेह) दूर हो जाता है ।

(2) आँवले के स्वरस में समभाग शहद मिलाकर सेवन करते रहने से धातुस्राव ठीक हो जाता है । सूखे आँवले का चूर्ण भी लाभ करता है ।

(3) शुद्ध शिलाजीत 1 से 3 माशे तक में शहद मिलाकर चाटने से धातुस्राव में लाभ होता है । परन्तु यह योग उत्तेजक भी बहुत है ।

(4) कोंच के बीज 2 तोला को 12 घण्टे तक गाय के दूध में भिगोकर उनके ऊपर के छिलके उतार दें, फिर छिले हुए बीजों को महीन पीसकर पिट्टी बनालें । उस पिट्टी के शुद्ध घी में 1-1 तोला वजन के बड़े तलें और तले हुए बड़ों को शहद में डाल दें । प्रतिदिन एक या दो बड़े प्रातःकाल दूध के साथ सेवन करते रहें तो धातु-पुष्ट होगी तथा प्रमेह-रोग दूर हो जायेगा ।

(5) बबूल की कच्ची फली (जिसमें बीज न पड़े हों) छाया में सुखाई हुई एक तोला, ताल-मखाना 6 माशा, बीजबन्द 3 माशा तक मिश्री $3\frac{1}{2}$ तोला—इन सबको कूट-पीस छानकर चूर्ण बनालें । इस चूर्ण को 6 माशे की मात्रा में प्रातःकाल ही फाँककर ऊपर से एक पाव गाय का दूध पी लिया करें । इससे प्रमेह नष्ट हो जाता है, धातु का गिरना बन्द हो जाता है तथा वीर्य की वृद्धि भी होती है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) सफेद मूसली 3 तोला, बहमन सफेद 4 तोला और ईसबगोल की भूसी 20 तोला लें । मूसली और बहमन को कूट-पीस-छान लें, फिर उसमें ईसबगोल की भुसी बिना कूटे ही मिला दें । इसमें से 6-6 माशे दवा सुबह शाम खाकर ऊपर से दूध पी लिया करें ।

(2) बरगद की नरम कोपलों को छाया में सुखा लें । फिर उन्हें कूट-छानकर, बराबर वजन की खाँड़ मिलाकर रखलें । रोजाना सुबह 1 तोला चूर्ण को दूध के साथ इस्तेमाल करते रहें । इससे जरियाना (प्रमेह) दूर हो जायेगा ।

(3) सिरस के बीज की गिरी और ढाक के बीज की गिरी दोनों को 5-5 तोला लेकर महीन पीस लें तथा 5 तोला खाँड़ मिलाकर रख लें रोजाना सुबह 6 माशा चूर्ण को दूध के साथ सेवन करें । 15-20 दिन में ही जरियाना (प्रमेह) की शिकायत दूर हो जायगी ।

(4) हजरत बेर को गुलाब-जल में 3 दिन तक घोंटकर रख लें । उसमें से 4 रत्ती से 1 माशे तक की मात्रा घी या शहद में मिलाकर सुबह-शाम चाटते रहने से नया अथवा पुराना प्रमेह दूर हो जाता है ।

(5) बड़ी इलायची के 3 माशा चूर्ण को शहद में मिलाकर नित्य चाटते रहने से भी प्रमेह दूर होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

लाइकोपोडियम 200—शिश्नेन्द्रिय की शिथिलता, पूर्ण उत्तेजित हुए बिना ही वीर्य-स्खलन, सिकुड़न, धातु-दौर्बल्य आदि पर ।

जैल्सीमियम 30—जननेन्द्रिय की शिथिलता, स्त्री-सहवास की इच्छा का विनाश, थोड़ी-सी उत्तेजना से ही स्खलन, धातु-दौर्बल्य आदि लक्षणों पर ।

नक्सवोमिका 30— हस्त-मैथुन जनित धातु-दौर्बल्य, स्मरण-शक्ति की कमी, स्वप्नदोष आदि लक्षणों पर ।

एसिडफॉस 6— हस्तमैथुन जन्य धातु-दौर्बल्य एवं अधि स्त्री-सहवास के कारण उत्पन्न नपुन्सकता एवं धातु-दौर्बल्य में ।

फास्फोरस 3, 200— नपुन्सकता एवं धातु-दौर्बल्यता में ।

कैलाडियम 1x— जननेन्द्रिय के उत्तेजित न होने पर ।

एलोपैथिक चिकित्सा

(1) एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना $\frac{1}{3}$ ग्रेन तथा जिङ्क 1 ग्रेन—यह एक मात्रा है। ऐसी 2-3 मात्राएं दिन भर में दें । यह औषध हर प्रकार के प्रमेह को दूर करती है, साथ ही स्तम्भक भी है ।

(2) सोडियम ब्रोमाइड 15 बूँद, पानी 1 औंस, यह 1 मात्रा है । दिनभर में ऐसी 2-3 मात्रायें खाना खाने के बाद दें । यह 'शुक्रमेह' तथा स्वप्नदोष नाशक है ।

(3) कम्युर्टिन साइट्रास 3 भाग, क्रीटा प्रिपेयरेआ 3 भाग तथा गम ट्रैगेकैंथ 6 भाग सबको मिलाकर 2-2 ग्रेन की गोलियाँ बना लें । 2 से 4 गोली तक ताजा पानी के साथ दिन में 3 बार दें । ये गोलियाँ हर प्रकार के प्रमेह को दूर करती हैं ।

(4) इर्गोटीन साइट्रेट, कैल्सीब्रोनेट, पासुमा, पैराण्ड्रीन तथा फास्फोटीन-योहम्बीन—ये सभी इञ्जेक्शन प्रमेह को दूर करते हैं ।

(5) इर्क्रेनील, काल्मोराल, टेण्टेक्सफोर्ट, पासुमा, स्ट्रोंग, बेलेण्डीस्पर्ट होर्नबीज पिल्स आदि पेटेण्ट गोलियाँ नपुन्सकता-नाशक हैं ।

मधुमेह (डायबिटीज) (Diabetes)

पेशाब के साथ चीनी जैसे पदार्थ के निकलने को 'मधुमेह' कहा जाता है । इस रोग में पेशाब अधिक तथा बार-बार होता है और रोग के बढ़ जाने पर सिरदर्द, कब्ज, भूख में कमी, दृष्टिमान्य आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं । रोगी के पेशाब में चीटियाँ लगती हैं तथा एक सफेद-सा अंश पेशाब करने वाली जगह पर जम जाता है । प्रायः अधिक मानसिक-परिश्रम करने वाले व्यक्ति इस रोग के शिकार होते हैं । प्रमेह रोग भी पुराना पड़कर मधुमेह में बदल जाता है । इस रोग का उपचार दीर्घकाल तक करना चाहिए । इसमें निम्नलिखित उपचार हितकर हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) एक या दो तोला तिलों में समभाग गुड़ मिलाकर प्रातः-सायं खाते रहने मूत्रमेह में लाभ होता है ।

(2) बेला के कोमल पत्तों को कूट पीसकर 1 तोला रस निकाल लें । प्रतिदिन प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर इस रस का डेढ़-दो महीने तक नियमित सेवन करें इससे मधुमेह में लाभ होगा । पेशाब में शक्कर जाना बन्द हो जाने पर इसे छोड़ देना चाहिए ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) कन्दूरी के पत्ते 7 नग और कालीमिर्च 7 दाने—इन दोनों को एक साथ पीस-छानकर पीने से पेशाब में शक्कर आना बहुत कम हो जाती है ।

(2) जामुन की गुठली की मींगी 2 तोला और खशखश का छिलका 2 तोला—इन्हें पीस-छानकर सुबह-शाम 3-3 माशे की मात्रा में छाछ या पानी के साथ सेवन करते रहने से मधुमेह-रोग में लाभ होता है ।

(3) हरे कोलों को कूटकर उनका 5 तोला अर्क निकालकर पीने से डायबिटीज में बहुत लाभ होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

सिजिजियम जैम्बोलिनम 1x, 6x—यह औषध मधुमेह की सभी अवस्थाओं में लाभ करती है ।

नेट्रमसल्फ 12x, **नेट्रमफॉस** 6x, 200— इन दोनों औषधियों के निरन्तर 4-5 मास तक सेवन करते रहने से रोग समूल नष्ट हो जाता है ।

यूरेनियम नाइट्रिकम 1x, 2x, 30—पेशाब में अधिक शक्कर जाना, साथ ही तीव्र प्यास, खाने-पीने के बाबजूद भी शरीर का सूखते जाना, पेट फूलना, शरीर के स्वाभाविक उत्ताप में कमी आना आदि लक्षणों पर इसे दें । इस औषध की 20 ग्रेन की एक मात्रा प्रातः खाली पेट सेवन करादें । तत्पश्चात् 6-7 दिन तक केवल शुगर ऑफ मिल्क की टिकिया ही देते रहें । यदि निम्न-क्रम में औषध दी जाय तो 10-12 दिन तक प्रतिदिन 2 मात्रायें दी जा सकती है ।

क्रियोजोट Q, 1— इस औषध के मूल-अर्क की 5-6 बूँद अथवा 1 शक्ति की औषध दिन में 3-4 बार सेवन करनी चाहिए ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) कोडीन फास्फेट $\frac{1}{2}$ ग्रेन, एक्सट्रैक्ट, जाम्बूलीन लिक्विड 1 ड्राम, सीरपग्लाइस्डो फास्फेट को 30 बूँद पानी (कुल मिलाकर) 1 औंस ।

यह एक मात्रा है, ऐसी तीन मात्राएँ दिन में 3 बार दें ।

(2) मधुमेह में निम्नलिखित पेटेण्ट औषधियाँ हितकर हैं-

डायबिनीज, रेस्टिनान, डी. बी. आई. यूनिटोलविड ।

(3) मधुमेह में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभ करते हैं ।

इन्सुलिन, प्रोटामिन, जिङ्क इन्सुलिन, न्युक्लिन, कोडिन फास्फेट ।

स्वप्नदोष (Nocturnal Emission or Night Dreams)

अश्लील दृश्य देखने, अश्लील साहित्य पढ़ने, मानसिक तथा शारीरिक व्यभिचार, कब्ज, मल-मूत्र का वेग रोकना, अधिक मानसिक-परिश्रम, आहार-विहार में त्रुटि आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है । इसमें सोते समय गन्दे स्वप्न दिखाई देते है तथा अनजाने में ही वीर्य-स्खलित भी हो जाता है । इस रोग के कारण हाथ-पाँव के तलवों में जलन खुश्की, प्यास, उदासी, आलस्य, आशक्ति, दर्द, शरीर से दुर्गन्ध आना लक्षण प्रकट होते हैं । इस रोग में मन, वचन तथा कर्म से पवित्र रहना, शारीरिक-स्वच्छता, हल्के तथा सुपाच्य पदार्थों का भोजन तथा उदर शुद्धि का ध्यान रखना आवश्यक है । निम्नलिखित उपचार लाभकारी सिद्ध होते हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) प्रतिदिन सुबह के समय एक पके हुए केले में दो-चार बूँद असली शहद मिलाकर खाते रहने से थोड़े-ही दिनों में स्वप्नदोष तथा प्रमेह आदि वीर्य-विकार नष्ट हो जाते हैं, वीर्य गाढ़ा हो जाता है और उसका गिरना बन्द हो जाता है ।

(2) एक पाव मुलहठी को कूट-पीसकर छान लें । 2 माशा मुलहठी के चूर्ण में 1 तोला शुद्ध घी तथा 6 माशा शहद में मिलाकर प्रतिदिन प्रातः काल चाटे तथा ऊपर से पावभर धारोष्ण दूध पिया करें तो थोड़े ही दिनों में स्वप्नदोष दूर हो जायगा ।

(3) प्रतिदिन प्रातः-सायं 3 से 5 तोले तक गुलाब के ताजा फूलों को मिश्री के साथ खाकर, ऊपर से गाय का दूध पी लेने से स्वप्नदोष कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है ।

(4) बबूल का गोंद 1 तोला को प्रतिदिन रात के समय आधा पाव पानी में भिगो दें । दूसरे दिन प्रातःकाल उसे मलकर छान लें तथा उसमें 2 तोला मिश्री मिलाकर पीलें । 21 दिन तक इस प्रकार सेवन करते रहने से स्वप्नदोष दूर हो जायगा ।

(5) बबूल के नर्म पत्तों तथा नर्म कलियों को छाया में सुखाकर पीस लें। फिर उसमें समभाग मिश्री मिलाकर रख दें । इस चूर्ण को प्रतिदिन प्रातः-सायं 6 माशे की मात्रा में ताजा पानी के साथ सेवन करते रहने से स्वप्नदोष तथा हर प्रकार के प्रमेह-रोग दूर होते हैं ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) सूखे धनिये को कूट-छानकर रखले । प्रतिदिन सुबह निराहार मुख 6 माशे धनिये के चूर्ण में समभाग शक्कर मिलाकर ठण्डे पानी के साथ सेवन करते रहें । कुछ ही दिनों में स्वप्नदोष की शिकायत दूर हो जायगी ।

(2) भाँग के बीज 1 तोला तथा अनार की बिना खिली कली 2 तोला लेकर दोनों को पीस-छानकर रखलें तथा इनके बराबर वजन की सफेद शक्कर मिला दें । रोजा सुबह इस चूर्ण को 3 माशे की मात्रा में ठण्डे पानी के साथ सेवन करते रहें । इससे स्वप्नदोष की शिकायत दूर हो जायगी ।

(3) रोजाना सुबह निराहार मुख सिर्फ एक गिलास ठण्डा पानी पीते रहने से भी स्वप्नदोष की शिकायत कम हो जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

बैराइटा-कार्ब 6— यह इस रोग की सर्वश्रेष्ठ औषध है ।

कार्बोवेज 6— सोते समय अनजाने में वीर्य-स्खलन हो जाने के लक्षणों में ।

चायना 30— जननेन्द्रिय से निरन्तर उत्तेजना सहित वीर्यपात हो जाने पर ।

आर्जेमेट 6, 30— हस्तमैथुन के परिणाम-स्वरूप स्वप्नदोष की बीमारी में ।

आरममेट 6, 30— रात्रि में स्वप्नदोष हो, रात भर तेजी बनी रहे, अश्लील स्वप्न आते रहें ।

सैबाडिल्ला 30— स्वप्नदोष के बाद पाँवों में भारी कमजोरी आने तथा शिश्न ढीले बने रहने के लक्षणों में ।

जेल्सीमियम 30— दुर्बलता के कारण होने वाले स्वप्नदोष में । रोगी की आँखें धँसी हुई तथा चेहरा पीला हो ।

कोनायम 30, 200— कामवासना के दमन-स्वरूप स्वप्नदोष होना तथा स्वप्नदोष के बाद तीव्र कामोत्तेजना के लक्षणों में ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) टिंक्चर कैंन्थेराइडिस 60 बूंद तथा टिंक्चर फरीक्लोराइड 180 बूँद । दोनों को मिलायें । 20 बूँद औषध को 1 औंस पानी के साथ दिन में 3 बार दें । यह स्वप्नदोष में बहुत उपयोगी है ।

(2) हायोसिन हाइड्रो ब्रोमाइड $\frac{1}{6}$ ग्रेन तथा कैम्फर मोनो ब्रोमेट 90 ग्रेन-इन दोनों को मिलाकर 12 कैप्सूल बनालें । रात्रि को सोते समय 1 कैप्सूल पानी के साथ निगल लें । ये स्वप्नदोष में लाभ करते हैं ।

(3) गार्डिनल टैब्लेट या पाउडर, पासुमा स्ट्रोंग, फीरोटोज तथा स्पीमेन—पेटेण्ट औषधियाँ स्वप्नदोष-नाशक हैं ।

(4) कैल्शियम ब्रोनेट, लीवर विद बी, कम्पलैक्स एट्रोपीन डिजीटेलिन लेसिथिन तथा स्पर्मोन, ये सभी इञ्जेक्शन स्वप्नदोष-नाशक हैं ।

पथरी (Stone)

मैथुन के समय स्खलित होने वाले वीर्य को रोक लेने के कारण तथा

खान-पान के दोष से यह रोग होता है । इसे वीर्य-पथरी भी कहते हैं । इसके कारण वस्ति या पेड़ू में शूल चुभने जैसा दर्द होता है तथा पेशाब करते समय बड़ी तकलीफ होती है । कुछ अन्य कारणों से भी यह रोग हो जाया करता है । इसमें निम्नलिखित योग हितकर हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) पेठे के रस में जवाखार तथा गुड़ मिलाकर पीने से पेशाब की रुकावट, पेशाब में शक्कर आना तथा पथरी-रोग में लाभ होता है ।

कुड़े की छाल को पीसकर, दही में मिलाकर खाने से बहुत पुरानी पथरी भी ठीक हो जाती है ।

(3) तीन माशे गोखरू के बीजों के चूर्ण को शहद में मिलाकर तथा भेड़ के दूध में घोलकर 7 दिन तक पीने से हर प्रकार की पथरी दूर हो जाती है ।

(4) सहजने की जड़ का काढ़ा गुनगुना गरम पीने से पथरी-रोग नष्ट हो जाता है ।

(5) कटेरी के स्वरस में शहद मिलाकर खाने से पथरी तथा भयङ्कर मूत्रकृच्छ रोग में भी लाभ होता है ।

(6) दो भाग गुड़ में एक भाग जवाखार मिलाकर खाने से पथरी तथा मूत्रकृच्छ में लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) सङ्ग यहूद को कूट-पीसकर छान लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे की माशा में सेवन करते रहने से पथरी दूर हो जाती है ।

(2) जवाखार तथा कच्चा सुहागा 2-2 माशा को पीसकर 2 तोला गोखरू के रस में मिलाकर पीने से पथरी गलकर बाहर निकल आती है ।

(3) करञ्ज के पत्तों का खार (क्षार) 2 माशा को 1 तोला शहद में मिलाकर पीने से पथरी गल जाती है ।

(4) गुरदाऊदी के पत्तों का काढ़ा बनाकर पीने से पथरी ठीक हो जाती है । गुलदाऊदी के पत्तों को कूट-छानकर तथा समभाग चीनी मिलाकर सेवन करने से भी लाभ होता है ।

(5) जङ्गली कबूतर की वीट 8 माशा तथा शक्कर 8 माशा—इन दोनों को मिलाकर पानी के साथ फाँकने से पथरी रोग दूर हो जाता है ।

(6) चौलाई का साग खाते रहने से पथरी ठीक हो जाती है ।

(7) तिल के पौधे का (क्षार) 2 माशा को गन्ने के सिरके में दो तोला में मिलाकर पीने से पथरी गल जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

लीथियन-कार्ब 3x— यदि पथरी मूत्राशय में हो तो इस औषध के कुछ दिनों तक नियमित सेवन से वह गल जाती है ।

बर्बेरिस—इस औषध के मदर-टिंक्चर की 5-5 बूँदें गरम पानी में डालकर, दर्द के समय, 15-15 मिनट के अन्तर से देने पर दर्द दूर हो जाता है ।

मैग्नेशिया-फॉस 3x— दर्द के समय इस औषध को खूब गरम पानी में घोलकर 5-10 मिनट के अन्तर से देते रहने पर आराम होता है ।

कल्केरिया-कार्ब 30— यह इस रोग की श्रेष्ठ औषध है । दर्द के समय 15-15 मिनट के अन्तर से देते रहने से आराम होता है ।

पथरी के दर्द में निम्नलिखित औषधियाँ भी प्रभावकारी हैं । इन्हें लक्षणानुसार मात्रा निश्चित करके प्रयोग में लाना चाहिए-

ओस्मियम केनम 200, **लाइकोपोडियम** 6, **डायस्कोरिया** 1x, **कैन्थरिस** 6 ।

ऐलोपैथिक - चिकित्सा

(1) 'एण्टीपाइरीन' का इञ्जेक्शन मूत्र-पथरी के लिए हितकर है । परन्तु दुर्बल तथा हृदय-रोग से पीड़ित व्यक्तियों को यह इञ्जेक्शन नहीं लगना चाहिए।

मूत्रकृच्छ (सूजाक) (Gonorrhoea)

यह रोग भी संसर्गजन्य है । सूजाक के रोगी स्त्री-पुरुष के साथ सहवास करने से यह व्याधि लगती है । इसमें आरम्भ में मूत्र नली के मुख में खुजली तथा सुरासुराहट होती है, फेर पेशाब में जलन, मवाद आना आदि लक्षण प्रकट होते हैं । रोग के बढ़ जाने पर मूत्र-त्याग के समय भयङ्कर जलन होती है । 7 से 14 दिन में रोग ठीक नहीं हुआ तो पुराने सुजाक का रूप ग्रहण कर लेता है, तब जलन कम रह जाती है तथा मूत्र-नली से पीला या सफेद मवाद निकलने लगता है । और पेशाब रुक-रुक कर आता है ।

इस रोग के रोगी को पहले सामान्य जुलाब देकर पेट साफ करादें । फिर पेशाब का जुलाब दें । कच्चे दूध में बराबर का पानी मिलाकर भर पेट पीने से पेशाब का जुलाब होता है अर्थात् पेशाब खुलकर और खूब उतरता है । सूजाक के रोगी को गुड़, मिर्च, तेल तथा खटाई का प्रयोग बन्द कर देना चाहिए ।

सूजाक में निम्नलिखित उपचार हितकर सिद्ध होते हैं—

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) शुद्ध हींग 1 तोला, छोटी इलायची के दाने 3 तोला, जवाखार 5 तोला—इन सबको महीन पीसकर 1 पाल ग्वार-पाठे के रस में घोंटे । जब मिश्रण गोली बनाने योग्य हो जाय, तब झरबेरी के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । प्रातः-सायं तथा मध्याह्न में 1-1 अथवा दो-दो गोली गुनगुने पानी के साथ सेवन करते रहें । एक ही गोली के सेवन से पेशाब की जलन बन्द हो जायगी तथा 7 दिन में सूजाक ठीक हो जायगा ।

(2) ताजा गिलोय 1 तोला को 1 पाव पानी में रात के समय भिगोकर रख दें । प्रातःकाल मलकर छान लें तथा उसमें 5 तोला शहद मिलाकर पियें इससे पेशाब जलन तुरन्त दूर हो जायगी तथा कुछ दिनों में सूजाक भी नष्ट हो जायगा ।

(3) हल्दी और आँवले बराबर लेकर पीस छान लें । फिर उसमें समभाग मिश्री मिला दें । प्रतिदिन 1 तोला चूर्ण प्रातः सायं शीतल जल के साथ सेवन करते रहने से नया सूजाक 8 दिन में ही दूर हो जाता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) शोरा कलमी और बड़ी इलायची के दाने 1-1 तोला लेकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण को 6-6 माशे की मात्रा में सुबह-शाम पानी से साथ सेवन करते रहने से पेशाब की जलन दूर होती है तथा पेशाब की नली का मवाद साफ हो जाता है ।

(2) खरेंटी बूटी या दूधिया बूटी को 1 तोला पानी में पीस-छानकर उसमें खांड़ डालकर मीठा करके पीयें । इससे सूजाक में लाभ होगा ।

(3) 10 तोला चने की दाल को पानी में खूब पी लें । फिर उसमें 7 सेर पानी मिलाकर उसे सुबह से पीना शुरू करें तथा चहलकदमी करते रहें । शाम तक पूरा पानी पी जायँ । शाम के वक्त दूध और चावल खायें । इससे सूजाक की तकलीफ बहुत कम हो जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

सीपिया 30— यह औषध रोगी की प्रारम्भिक-अवस्था में बहुत लाभ करती है ।

एकोनाइट 3x— यह प्रदाह की प्रथमावस्था में बहुत हितकर रहती है।

नाइट्रिक एसिड 3, 30— यह दवा रोग की दूसरी अवस्था में हितकर है । यदि रोग पारे के अपव्यवहार के कारण हुआ हो तो बहुत लाभ करती है ।

कैनाबिस सैटाइवा 30— यह रोग की तरुणावस्था में लाभकारी है ।

कैन्थरिस 30— बेहद जलन, बूँद-बूँद पेशाब होना, रोग का रात्रि के समय बढ़ जाना आदि लक्षणों में उपयोगी है ।

फेरम 30— दर्द आदि बन्द होकर जब केवल दूध जैसा स्राव निकलता हो, तब यह दवा बहुत लाभ करती है ।

पल्सेटिला 30— पुराने सूजाक में अत्युत्तम है ।

कोपेवा 3x— यह औषध स्त्रियों के सूजाक में हितकर है ।

एलोपैथिक-चिकित्सा

(1) पेनिसिलिन टैब्लेट 1 लाख यूनिट 1 गोली, एल्कोसीन टैब्लेट 2 टिकिया, चन्दन का तेल 13 बूँद, गम एकेसिया 1 ड्राम, गोखरू लिक्विड एक्स्ट्रेक्ट 1 ड्राम, डिस्टिल्स वाटर 1 औंस—यह एक मात्रा हुई । ऐसी 8 मात्राओं को हर 3 घण्टे बात एक मात्रा के हिसाब के 24 घण्टे में 8 मात्रायें पिला देने से सूजाक में लाभ होता है ।

(2) सैलोल 3 ग्रेन, कोपावा 3 बूँद, ऑयल सण्डल 3 बूँद तथा ऑयल सिनोमोमी 1 बूँद । इन सबको मिलाकर कैप्सूल में भर लें । ऐसे 1 या 2 कैप्सूल दिन में तीन बार देने सूजाक में लाभ होता है ।

(3) सूजाक-नाशक पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

एल्कोसिन, गोनोजोन, सल्फेनिन, सल्फाडायाजीन, सीबाजोल, सल्फामेरेजीन, पेण्टिडस सल्फा—4, सल्फाट्रायड, पेनिट्रायड औरासिनके, फीनोसिन, पेनसिलीन बी, होस्टासाइक्लीन, ओरियोमाइसीन, टेसामाइसीन तथा स्ट्रैप, सैण्ट्रोल, गोनोकिलर, लिक्विड, गोनोकोडिन, साइट्रासल्फास, एस आदि।

(4) सूजाक-नाशक इञ्जेक्शन निम्नलिखित हैं—

एल्कोप्लेविन, एक्रोमाइसीन, क्लोरोमाइसेटीन, टैरामाइसिन, डायमीन पेनसिलीन, हाईहाइड्रो स्ट्रैप्टोमाइसीन, गोनोरिया फाइलाकोजन, एण्टीगोनो कोक्स सीरम, कम्बाइण्ड गोगो वैक्सीन, बेञ्जिल पेनसिलीन, क्रिस—4 एलप्रोसिन, प्रोकेन-पेनसिलीन, पेनिड्रयोर ए. पी ।

(5) सूजाक में जिन औषधियों की डिस्टल्ड वाटर में मिलाकर मूत्र-नली

के बाहरी-छिद्र के काँच की साधारण सीरिंज द्वारा चढ़ाया जाता है, वे निम्नलिखित हैं—

(1) जिङ्क सल्फेट (4 ग्रेन, 1 औंस पानी में) ।

(2) पोटास परमैग्नेट (1 ग्रेन, 8 औंस पानी में) ।

(3) पोटागोल सिल्वर (2 ग्रेन, 1 औंस पानी में) ।

(4) नाइट्रेट (1 ग्रेन, 1 औंस पानी में) ।

(5) लेड-एसिटेट 4 ग्रेन, (10 औंस पानी में) ।

(6) मर्करी क्लोराइड (10, 5000 पानी में) ।

उपदंश (गर्मी) (Syphilis)

यह रोग आतशक (गर्मी) के रोगी स्त्री अथवा पुरुष के साथ सहवास करने से लगता है । यह संसर्गजन्य बीमारी है । इसमें शिश्न के ऊपर पहले मसूल जैसा दाना प्रकट होता है, तीन-चार दिन में ही यह तीन-चार बड़े दानों के रूप में फैलकर जख्म का रूप ग्रहण कर लेता है । इसका जहर शरीर में फैलकर सम्पूर्ण रक्त को दूषित कर देता है । यदि तुरन्त ही चिकित्सा न की जाय तो यह रोग अत्यधिक कष्टकर तथा प्राणघातक सिद्ध होता है । समुचित चिकित्सा के अभाव में वह कुछ दिनों के लिए दबकर पुनः उभर आता है । इस रोग में आभ्यान्तरिक तथा वाह्य दोनों प्रकार के उचार करने चाहिए और जब तक रोग पूर्णतः दूर न हो जाय, तब तक चिकित्सा बन्द नहीं करनी चाहिए। इस रोग में निम्नलिखित उपचार लाभकारी सिद्ध होते हैं । रोग के बढ़ जाने पर किसी सुयोग्य चिकित्सक को दिखाना आवश्यक है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) भिण्डी की जड़ 1 तोला मिश्री 1 तोला, तथा सफेद इलायची 1 माशा—इन तीनों को घोंटकर प्रतिदिन प्रातः सायं नियमित रूप से सेवन करते रहने पर दो-तीन सप्ताह में रोग दूर हो जाता है ।

(2) असली चन्दन के तेल की 4-5 बूँदों को 1 सप्ताह तक बताशे में डालकर खाते रहने से उपदंश-रोग में लाभ होता है ।

(3) उपदंश के घावों को दिन में दो बार त्रिफला के काढ़े अथवा नीम के पत्तों के काढ़े से धोते रहना चाहिए ।

(4) रस-कपूर को शुद्ध धुले हुए घी में मिलाकर रख लें तथा आतशक के घावों को पूर्वोक्त काढ़े से धोने के बाद, उनके ऊपर इस मरहम को लगाते

रहें । इससे घाव शीघ्र भर जायेंगे ।

(5) उपदंश के रोगी को सप्ताह में एक बार जुलाब अवश्य लेना चाहिए, ताकि पेट साफ बना रहे । पेट जितना साफ रहेगा, रोग भी उतना ही जल्दी दूर होगा ।

(6) हरड़ और रसौत को पीसकर शहद में मिलाकर लेप करने से लिंगेन्द्रिय के घाव ठीक हो जाते हैं ।

(7) कनेर की जड़ को साफ पत्थर के ऊपर पानी के साथ घिसकर उपदंश के घावों पर लगाने से उपदंश की असाध्य पीड़ा भी अवश्य दूर हो जाती है तथा घाव भर जाते हैं ।

(8) सिरस की छाल के चूर्ण को शहद में मिलाकर उपदंश के घावों पर लगाने से घाव जल्दी भर जाते हैं ।

(9) आक की लकड़ी जली हुई 2 तोला तथा मिश्री 2 तोला इन दोनों को मिलाकर पीस लें, इसमें से 6-6 माशे चूर्ण को प्रातः सायं खाते रहने से उपदंश-रोग ठीक हो जाता है ।

(10) सिरस की छाल, बबूल की छाल तथा नीम की छाल- इन तीनों को सवासेर लेकर नौ-सेर पानी में डालकर,, मिट्टी की हाँडी में भरदें । फिर उसे आग पर चढ़ाकर गरम करें । जब सवासेर पानी शेष रह जाय, तब उतार कर कपड़े में छान लें । छने हुए क्राथ को बातलों में भर दें । इसमें से आधा पाव पानी प्रतिदिन पीते रहें तो सात दिन में ही उपदंश दूर हो जायेगा । पथ्य के रूप में केवल चने की रोटी का सेवन करना चाहिए ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) सत्यानाशी की जड़ 1 तोला तथा कालीमिर्च 5 दानों को रात में पानी में भिगो दें । सुबह पीस-छानकर पीलें इसए आतशक का जहर दूर हो जायगा।

(2) हिरखुरी बूटी 1 तोला और कालीमिर्च 5 दानों को रात भर पानी में भिगो दें । सुबह उनके निथरे हुए पानी को पियें । इससे भी लाभ होगा।

(3) नगन्द बाबरी 1 तोला और कालीमिर्च 5 दानों को रात के समय पानी में भिगो दें । सुबह को उनका निथरा हुआ पानी पीयें । यह भी लाभकारी है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

मर्कसोल 6— यह औषध रोग की प्रथमावस्था में हितकर है ।

मर्क प्रोटो आयोड 2x— इसे रोग की दूसरी अवस्था में दें ।

कैलि आयोड 30— इसे रोग की तीसरी अवस्था में देना चाहिए ।

आरममेट 6— गाँठों के अक्रान्त होने तथा आँख अथवा नाक में जलन एवं जख्म होने के लक्षणों में ।

थूजा 6, 30— यदि जख्म की शक्ल फूलगोभी जैसी हो ।

साइलीशिया 6— जख्मों के पक जाने तथा मवाद पड़ जाने पर ।

एसिड नाइट्रिक 6— रोग की पुरानी हालत में ।

हिपर सल्फर 6, 30— जब पुराना होकर हड्डियों तथा मसूढ़ों में फैल गया हो ।

सिफिलिनम 30, 200— यह औषध रोग की सभी अवस्थाओं में लाभकारी है । इसे देने के दो दिन पहले तथा दो दिन बात तक और कोई औषध नहीं देनी चाहिए । इसे सप्ताह में एक या दो बार देने से पुराना रोग भी ठीक हो जाता है ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) हाइड्राज कमक्रीटा 2 ग्रेन, पल्व पोपियाए आधा ग्रेन, पल्व पियरस निग्रम 1 ग्रेन—इन सबको मिलाकर 1 गोली तैयार कर लें । ऐसी 1-1 गोली दिन में तीन बार देने से उपदंश में लाभ होता है ।

(2) प्रीटागलि 1 से 40 ग्रेन तथा डिस्टिल्ड वाटर 8 औंस—इन दोनों को मिला लें तथा इस लोशन से उपदंश के घावों को धोयें ।

(3) कैलोमल 1 ड्राम तथा वैसलीन 2 ड्राम—इन दोनों को मिलाकर मरहम (आइण्टमेण्ट) बनालें । पहले पूर्वोक्त लोशन से उपदंश के जख्मों को धोयें, उसके बाद उन पर इस मरहम को लगायें ।

(4) ईलोटासीन, एसिटार्सोली टैब्लेट, ओरासीन स्टोवारसल, लियो आयोडीन आदि पेटेण्ट टैब्लेट आतशक में उपयोगी हैं ।

सल्फर सैनोल, नोवार्सिनोबीलोन (एन. ए. बी.) पेनिड्योर एल. ए. नोवोस्टैव, विसोक्सोल, इण्टोडीन, कैलोमल, एसिटिलार्सन, विनायेन, सोआमिन, न्योआर्सिनो, बेंजोल, पेनसिलीन बिसमथ मेटिल, बिस्मथ आर्सेनिक, बैंजोबिस्मिथ, एक्पियल, स्पारीजन, न्यूट्रीयेल, ओलीसस, विसमोण्टोव, विस्मथ सबक्लीनेट आदि इञ्जेक्शन इस रोग में हितकर हैं ।

अर्श (बवासीर) (Piles)

बवासीर दो प्रकार की होती हैं— (1) खूनी और (2) बादी । इस रोग का मूल कारण भी पेट की खराबी ही है । इसमें कब्ज, अजीर्ण, मल का कठिनाई से होना, खून गिरना आदि लक्षण प्रकट होते हैं । गुदा-द्वार पर मस्से हो जाते हैं, जिनमें जलन और खुजली मचती है । मल-त्याग के समय जिन मस्सों के छिल जाने पर रक्त गिरता है उसे 'खूनी-बवासीर कहा जाता है । जिससे रक्त नहीं गिरता, उसे, 'बादी-बवासीर' कहते हैं । बवासीर की चिकित्सा के लिए पहले मृदु विरेचन (जुलाब) देकर कोष्ठ-शुद्धि करानी चाहिए । फिर पाचन औषध का प्रयोग करें, ताकि रोगी को ठीक से भोजन पचे । तत्पश्चात् बवासीर का इलाज करना चाहिए । दोनों प्रकार की बवासीर की सामान्य-चिकित्सा के लिए निम्नलिखित योग लाभकारी सिद्ध होते हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) लाल चन्दन, चिरायता, धमासा और सोंठ इन्हें समभाग लेकर जौकुट करलें फिर सोलह गुने पानी में औटाकर चतुर्थांश जल शेष रहने तक आग पर पकायें । बाद में छान लें । 2-2 तोले की मात्रा में यह काढ़ा दिन में तीन बार सेवन करते इहने से खूनी बवासीर में लाभ होता है ।

(2) हारसिंगार के बीजों की गिरी 3 तोला तथा कालीमिर्च 5 माशा—उन्हें पीसकर पानी में गूँथें और मूँग के दाने के बराबर की गोलियाँ बनालें । प्रतिदिन प्रातःकाल 2-3 माशे की गोलियों को पानी के साथ सेवन करते रहने से खूनी बवासीर में शीघ्र लाभ होता है ।

(3) काले तिल 1 तोला को मक्खन 1 तोला में मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करते रहने से आठ दिन के भीतर ही खूनी बवासीर में लाभ होता है ।

(4) इमली के चीयों की राख को 1 से 2 माशे तक की मात्रा में दही के साथ खाने से बवासीर का खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(5) आम की कोंपल को पानी में पीस-छानकर, थोड़ी-सी शक्कर मिलाकर पीने से बवासीर का खून गिरना बन्द हो जायगा ।

(6) केवल नागकेशर को पीसकर, मक्खन में मिलाकर खाने से खूनी बवासीर ठीक हो जाता है ।

(7) बकायन के बीजों की गिरी तथा सौंफ—दोनों के समभाग लेकर

महीन पीस लें । फिर उसमें दोनों के बराबर खाँड़ मिलाकर रख लें । इस मिश्रण को 3-3 माशे की मात्रा में प्रातः-सेवन करते रहने से बादी तथा खूनी बवासीर में लाभ होता है।

(8) कुसुम के फूल 3 माशे को पानी में पीसकर दही में मिलाकर खाने से खूनी तथा बादी—दोनों प्रकार की बवासीर में लाभ होता है ।

(9) हुलहुल के बीज 1 भाग तथा शक्कर 2 भाग मिलाकर रख लें । प्रतिदिन प्रातः-सायं 2 माशे की मात्रा में सेवन करते रहने से खूनी-बादी दोनों बवासीर में लाभ होता है ।

(10) नीम की पकी हुई निंबौलियों को पुराने गुड़ में मिलाकर खाने से बवासीर में लाभ होता है।

(11) कड़वी घीया और गुड़ को काँजी में पीसकर लेप करने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

(12) आक के पत्ते और सहजने के पत्तों का लेप करने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

(13) नीम और कनेर के पत्तों का लेप करने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

(14) ककरोंदा बूटी को पीसकर टिकिया बनायें । इससे मस्सों पर बाँधने से जलन तथा सूजन दूर हो जाती है ।

यूनानी - चिकित्सा

(1) कंघी बूटी के 21 पत्ते अथवा कालीमिर्च 21 अदद—इन दोनों को एक साथ पीसकर 7 गोलियाँ बनाकर रख लें । प्रतिदिन सुबह-शाम एक-एक गोली खाते रहने से खूनी-बादी दोनों प्रकार की बवासीर दूर हो जाते हैं ।

(2) गेंदे की पंखुड़ियों को थोड़े-से पानी के साथ पीसकर एक तोला रस निकाल लें । फिर उसमें 3 तोला गाय का घी मिलाकर पी जायें । इस प्रकार दिन में दो बार पीने से बवासीर से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(3) दो या तीन तोला काले तिलों को खूब गरम पानी के साथ पीसकर उसमें समभाग ताजा मक्खन मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल पीने से खूनी बवासीर नष्ट हो जाता है ।

(4) बकायन के पत्तों को पानी में उबालें फिर उस पानी में कपड़ा की गद्दी भिगो-भिगोकर मस्सों को सेकें तथा उबले हुए पत्तों की टिकिया बनाकर

मस्सों को बाँध दें । इससे मस्सों की सूजन, दर्द तथा जलन में लाभ होता है।

(5) हुलहुल के बीज एक भाग शक्कर 2भाग मिलाकर रख लें । इसे प्रतिदिन प्रातः-सायं 2 माशे की मात्रा में सेवन करते रहने से खूनी-बादी—दोनों प्रकार के बवासीर में लाभ होता है ।

(6) प्याज के रस में घी और चीनी मिलाकर खाने से बवासीर दूर हो जाता है ।

(7) अञ्जुवार की जड़ 4 तोला, मीठे अनार के छिलके 2 तोला सफेद चन्दन का बुरादा डेढ़ तोला—इन्हें कूटकर रात के समय किसी मिट्टी के बर्तन में एक सेर पानी में डालकर भिगो दें । सुबह किसी कलईदार कढ़ाही में पकायें। जब आधा पानी शेष रह जाय, तब उतार लें और मलकर छान लें । फिर इस काढ़े में बबूल का रस आधा पाव तथा मिश्री आधा सेर मिलाकर मन्दी आग पर पकायें। जब शर्बत की चाशनी हो जांय तब उतारें व छानकर रख लें । इस 'शर्बत अञ्जुवार' को 1 से 2 तोले की मात्रा में दिन में 6 बार दो-दो घण्टे बाद लेते रहने से बवासीर में खून जाना बन्द हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

(1) अधिक मैथुन करने के कारण उत्पन्न बवासीर में—

नक्सवोमिका 1x30, **सल्फर** 6, 30, **कार्बोवेज** 6, 30 तथा **कालिन्सोनिया** 6 हितकर है ।

(2) कब्ज के कारण उत्पन्न बवासीर में **नक्सवोमिका** 1x 30, **एलो** 6, 30, **कालिन्सोनिया** 6, 30 तथा **कार्बोवेज** 6, 30 लाभकारी रहते हैं ।

(3) खूनी बवासीर में—**एकोन** 3x, **एलो** 6 अथला **चायना** 6, 30 दें।

(4) बादी ववासीर में—**नक्सवोमिका** 30 अथवा **कैप्सिकम** 6 दें ।

(5) पुरानी बवासीर में—**एसिडफॉस** 6, **आर्सेनिक** अथवा **चायना** 6 देना हितकर रहता है ।

(6) खूनी बवासीर में अधिक रक्त बहने तथा मस्सों में दपदपाहट होने पर—'हैमामेलिस 1 मदर-टिंक्चर' की 15-20 बूँदें पानी में डालकर तथा उसमें किसी साफ कपड़े को भिगोकर मस्सों पर रखने से आराम मिलता है ।

(7) पुराने रोग में मलद्वार में जलन तथा खजली, अधिक कब्ज बार-बार मल-विसर्जन के लिए प्रयत्न करने पर भी मल न निकलना आदि लक्षणों में 'सल्फर 30' हितकर है ।

(8) मस्से का बाहर निकलना, मस्से के भीतर से गरम सुई निकलने जैसा अनुभव, सुस्ती, दुर्बलता, पीठ में तीव्र वेदना आदि लक्षणों में, 'आर्सेनिक 3x' का प्रयोग उचित है ।

(9) मलद्वार में किसी धारदार वस्तु के अटके होने का अनुभव, मस्से का मलद्वार से बाहर निकलना, कमर, पीठ तथा गुदा में दर्द आदि लक्षणों पर 'इस्क्युलस 1' देना चाहिए ।

(10) रात्रि को सोते समय 'नक्सवोमिका 30' तथा प्रातःकाल 'सल्फर 30' की एक-एक मात्रा पर्यायक्रम से देते रहने पर खूनी तथा बादी दोनों प्रकार के बवासीर ठीक हो जाते हैं ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) खूनी बवासीर के लिए 'एड्रीनेलिन' इञ्जेक्शन हितकर हैं ।

(2) बादी बवासीर में 'कार्बोलिक एसिड' का इञ्जेक्शन प्रयोग में आता है । बवासीर के मस्सों को दूर करने के लिए इसका प्रयोग ग्लिसरीन मिलाकर किया जाता है ।

(3) पेटेण्ट औषधियों में हान्डेसा, प्रेपरेशन एच०, एण्टीपाइल्स आदि औषधियाँ मुख्य हैं ।

विसर्प (जहरवाद) (Erysipelas)

खट्टे तीखे, खारे तथा गरम पदार्थों के सेवन से दूषित दोष धातुओं को दूषित कर विसर्प रोग की उत्पत्ति के कारण बनते हैं । शरीर में कहीं चोट लगने या छिल जाने पर भी यह रोग हो जाता है । इस रोग में शरीर पर सूजन होती है । ज्वर, अतिसार, वमन, अरुचि, क्लान्ति तथा चमड़ी का विदीर्ण होना—यह इस रोग के अन्य लक्षण हैं । इस रोग में औषध के आभ्यान्तरिक तथा बाह्य दोनों प्रयोग करने आवश्यक हैं । निम्नलिखित उपचार इस रोग में हितकर सिद्ध होते हैं ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

(1) गिलोय, अडूसे की जड़ की छाल, परवल के पत्ते, नागरमोथा, छितवन की छाल, खैर की लकड़ी, काले बैंत की जड़, नीम के पत्ते, हल्दी और दारुहल्दी—इन औषधियों को समभाग लेकर काढ़ा बनाकर पीने से विसर्प-रोग में लाभ होता है । इसका नाम 'अमृतादि कषाय' है ।

(2) चिरायता, अडूसा, कुटकी, परवल, त्रिफला, नीम तथा चन्दन—इन

वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर काढ़ा करके पीयें । इस 'युनिन्वादि क्वाथ' के सेवन से भी सब प्रकार के विसर्प, दाह, सूजन, खुजली, विस्फोटक, प्यास तथा वमन आदि विकारों में लाभ होता है ।

(3) परवल के पत्ते, छितवन की छाल, नीम की छाल, अडूसे की छाल और गिलोय—इन पाँचों को मिलाकर 1 सेर लें तथा 16 सेर पानी में डालकर पकायें । जब 4 सेर पानी शेष रह जाय, तब उसे छानकर रख लें । फिर त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला) को पीसकर 1 पाव कल्क या लुगदी तैयार करें। उस लुगदी तथा पूर्वोक्त क्वाथ (काढ़े) को किसी बर्तन में डालें, साथ ही 1 सेर शुद्ध घी भी डाल दें और पकायें । जब केवल घी मात्र शेष रह जाय, तब छानकर रख लें । इस घी को 6-6 माशे की मात्रा में सेवन करते रहने से विसर्प, विस्फोटक, कण्डु आदि रोग दूर हो जाते हैं ।

(4) गाय के मक्खन को 108 बार धोकर उसमें 5 तोला शुद्ध आमलासार गन्धक, 1 तोला फिटकरी तथा 6 माशे रस-कपूर मिलाकर रख लें । इस मरहम को लगाने से विसर्प में लाभ होता है ।

यूनानी-चिकित्सा

(1) नीला कर्बल, देवदारु, लाल चन्दन, बच, मुलहठी और रास्ना- इन सबको बराबर-बराबर घी में पीसकर लेप करने से जहरवाद में लाभ होता है।

(2) हरड़, बहेड़ा, पद्माख, खस, लाजवन्ती, कन्नेर की जड़, नरसल की जड़ और लाल जवासा—इन सबका लेप करना कफ वाले विसर्प में लाभकारी रहता है ।

(3) सिरस, जटामासी, कूट, नेत्रवाला, हल्दी, मुलेठी, दारुहल्दी, इलायची, तगर और चन्दन— इन सब दवाओं को घी में खूब महीन पीसकर लेप करने से विसर्प, सूजन तथा दाह के साथ ही सफेद कोढ़ में भी लाभ होता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

रसटाक्स 6— शरीर पर लाल रङ्ग के पानी भरे छाले, सम्पूर्ण शरीर में डङ्क मारने जैसा दर्द, जलन, फुन्सियों से पानी निकलना आदि लक्षणों पर ।

बेलाडोना 3, 6— सामान्य विसर्प में, जिसमें रोगी-स्थान लाल और सूजा हुआ हो ।

एकोनाइट 6— फुन्सियाँ निकलने से पूर्व असह्य जलन, दाहक विसर्प रक्त-स्राव तथा सड़न के लक्षणों में ।

हिपर सल्फर 6— स्पर्श तथा ठण्ड सहन न होना, पारे अपव्यवहार के कारण उत्पन्न रोग में मवाद उत्पन्न करने अथवा पकाने के लिए ।

कैन्थरिस 3— छालों का पानी लगने के कारण शरीर की खाल उधड़ जाने तथा पानी भरी फुन्सियों पर ।

एकिनेशिया Q, 3x— साँघातिक-विसर्प, बेचैनी, रक्त-दोश के लक्षण शरीर में तीव्र ताप आदि लक्षणों में ।

आर्सेनिक 6, 30— दर्दयुक्त काले रङ्ग के मवाद भरे छाले, सुस्ती, तीव्र-ज्वर, बेचैनी, दुर्बलता तथा सड़न के लक्षणों में ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

(1) सल्फाड्रायड (एम. बी.) 4 टेब्लेट, एलकोसिन (सीबा) 4 टेब्लेट, नियोट्राइजीन विद पेनिसिलीन (लीली) 2 टेब्लेट, गम एकेशिया 6 ड्राम, सीरप ग्लूकोज 6 ड्राम तथा एकुआ (सब मिलाकर) 6 औंस ।

इस मिक्श्चर को 1 औंस की मात्रा में हर 4 घण्टे बाद सेवन करें इससे जहरवाद 24 घण्टे में ही दूर हो जाता है ।

(2) इसमें निम्नलिखित टेब्लेट तथा गोलियाँ भी लाभकर हैं—

एल्कोसिन, गैण्ट्रिसिन, रिडोक्सीन, ओरियोमाइसिन कैप्स्यूल, क्लोरोमाइसेटीन कैप्स्यूल, टैरामाइसीन कैप्स्यूल, सिन्थोमाइसेटीन कैप्स्यूल आदि।

(3) इसमें रोग में निम्नलिखित इञ्जेक्शन लाभकारी हैं ।

पेनसिलीन, सल्फा थियाजाल, सल्फा डियाजीन, एक्रोमाइसीन रिडोक्सन आदि ।

(4) इस रोग में निम्नलिखित वैक्सिन, इञ्जेक्शन हितकर हैं ।

स्ट्रैप्टो कोकस वैक्सिन, कोलोसल मैग्नीज ।

निम्नलिखित प्रलेप विसर्प पर लगाने चाहिए—

इक्टुथाल और सुविटाल ।

आँख की बीमारियाँ
(Diseases of The Eye)

विभिन्न कारणों से आँखों में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। आँख के प्रमुख रोगों में हितकर औषधियों का वर्णन यहाँ किया जा रहा है । आयुर्वेदिक तथा यूनानी प्रयोगों में बहुत कुछ साम्य होने के कारण उन्हें एक साथ ही प्रस्तुत किया गया है ।

आयुर्वेदिक-चिकित्सा

आँखें दुखना— (1) चार रत्ती फिटकरी के फूला को 2 तोला गुलाब के अर्क में घोल लें तथा दिन में तीन-चार बार 2-2 बूँद आँखों से टपकाते रहें । इससे लाभ होगा । यदि गुलाब का अर्क न मिले तो उसकी जगह स्वच्छ तथा मीठे पानी का प्रयोग भी किया जा सकता है ।

(2) त्रिफला के काढ़े की बूँदें आँखों में डालने से दुखती हुई आँखें ठीक हो जाती हैं ।

(3) गैदे के पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर दुखती आँखों पर रखने से वे शीघ्र ठीक हो जाते हैं ।

(4) भैंस के दूध में रुई का फाहा भिगोकर रखने से आँखें दुखना, सूजन, लाली आदि में लाभ होता है ।

नेत्र पीड़ा— (1) बरगद के दूध को आँखों में लगाने से नेत्र-पीड़ा तुरन्त दूर हो जाती है ।

रतोंधी—(1) करेले के पत्तों के रस में काली मिर्च घिसकर आँखों में आँजने से 3 दिन में ही रतौंधी दूर हो जाती है ।

(2) अरीठे को पानी में घिसकर आँखों में लगाने से रतोंधी दूर हो जाती है ।

मोतिया-बिन्द— (1) बच्चे वाली औरत के दूध में भीमसेनी कपूर पीसकर आँखों में आँजने से मोतियाबिंन्द दूर हो जाता है ।

(2) मनुष्य के कान का मैल तथा हींग—दोनों समभाग लेकर पीस लें शहद में मिलाकर आँखों में लगायें, इससे मोतियाबिन्द ठीक हो जायगा ।

पलकों की खुजली—अण्डे के छिलके की राख महीन पिसी हुई को आँखों में लगाने से आँखों तथा पलकों की खुजली दूर हो जाती है ।

दृष्टिमांद्य—कालीमिर्च 1 तोला, पीली हरड़ का छिलका 2 माशा तथा छिली हुई हल्दी 3 माशा—इन सबको गुलाबजल अथवा पानी में खरल करके सुरमे की भाँति आँखों में आँजते रहने से नेत्र ज्योति बढ़ जाती है ।

धुन्ध, माढ़ा नाखूना जाला— (1) कबूतर तथा मुर्गी की बीट को कागजी नीबुओं के रस में खूब खरल करके ताँबे की प्याली में ढँककर रख दें । इसे आँखों में लगाने से माढ़ा-फूली तथा जाले में लाभ होता है ।

(2) मदार की जड़ को पानी में घिसकर आँजने से नाखूना ठीक हो जाता है ।

(3) अरहर के पुराने पेड़ की जड़ अथवा बैंगन की जड़ को घिसकर आँखों में लगाने से फूली कट जाती है ।

(4) कूजे की मिश्री 1 तोला, कलमीशोरा 1 तोला, रसौत 1 तोला तथा शुद्ध नीला थोथा 2 माशा । पहले मिश्री और शोरे को खूब गरम करें फिर उसमें शुद्ध नीला थोथा मिला दें तथा खरल करें । अन्त में रसौत भी मिला दें और खरल करें । जब घुटकर सुरमा जैसा हो जाय, तब पानी डालकर घोटे तथा गोलियाँ बनाकर रख लें । आवश्यकता के समय 1 गोली को पानी के साथ रगड़कर, सलाई से आँखों में आँजे इन गोलियों के व्यवहार से धुन्ध, फूला, जाला आदि नेत्र रोग ठीक हो जाते हैं ।

ढलका—पीली हरड़ की छाल तथा अन्जरूत—इन्हें समभाग लेकर तथा पीसकर आँखों में लगाने से 'ढलका' ठीक हो जाता है ।

नासूर—समन्दरसोख को पानी के साथ पीसकर बत्ती बनायें, इस बत्ती को आँखों के नासूर में रखने से अवश्य लाभ होता है ।

घाव—बबूल के पत्तों का काढ़ा औटाकर खूब गाढ़ा करें फिर उसमें शहद मिलाकर आँखों में आँजे तो आँखों का घाव तथा ढलका शीघ्र ठीक हो जाता है ।

परवाल— (1) फिटकरी अथवा हरताल को पानी में घिसकर लगाने से 7 दिन में आँखों के परवाल दूर हो जाते हैं ।

जलन और खुजली— (1) नीम के पत्तों को थोड़ी-सी सोंठ के साथ पानी में पीस लें । फिर उसमें थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर गरम करें, फिर आँखें बन्द करके आँखों पर सफेद मलमल का एक टुकड़ा बिछा दें और उस पर दवा का लेप कर दें । इससे आँखों की खुजली और जलन दूर हो जाती है ।

(2) केशर को शहद में घोटकर आँजने से आँखों की जलन दूर होती है ।

गर्मी—प्यास के रस में मिश्री मिलाकर रात के समय आँखों में लगाने से अथवा लाल चन्दन को घिसकर आँखों में लगाने से आँखों की गर्मी दूर हो जाती है ।

नाखूना—लाहौरी नमक 6 माशा तथा लौंग 1 अदद—दोनों को सुरमे की तरह महीन खरल करके शीशी भर लें । इसे नित्य सुबह-शाम सलाई द्वारा आँखों में लगाने से नाखूना ठीक हो जाता है ।

गुहरी या अंजनी—पुरानी दीवाल का कोयला, केशर अथवा लौंग को पानी में घिसकर लगाने से गुहेरी अथा अन्जनहारी ठीक हो जाती है ।

रोहे कुकरे—माज को खूब महीन खरल करके रख लें । फिर पपोटों को उलटकर इसे चुटकी द्वारा रोहों पर छिड़कें अथवा सलाई से रोहों पर लगायें तो रोहे कुकरे ठीक हो जायेंगे ।

नेत्र-रोग—प्रतिदिन सोते समय काली-तिली का ताजा तेल आँखों में डालने से अनेक प्रकार के नेत्र-रोग दूर हो जाते हैं ।

होम्योपैथिक- चिकित्सा

आँख के विभिन्न रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ लाभ करती हैं—मात्रा आवश्यकतानुसार निश्चित कर लें ।

आँखें दुखना—**बेलाडोना** 3x, **फेरमफॉस** 6x, **ऐल्यूमिन** 30, **आरममेट** 6, **मर्ककोर** 3, **हिपरसल्फर** 6, **सिलिका** 6 ।

नेत्र-पीड़ा—ब्रायोनिया 6, हिपर सल्फर 6 ।

मोतियाबिन्द—सिनेरिया मेरेटिमा सक्स, की 1-1 बूँद दिन में 3-4 बार 4-5 महीने तक डालते रहें । अन्य रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करें—

दृष्टिमांद्य—**नक्सवोमिका** 1x, **फास्फोरस** 6, **बेलाडोना** 3, **कैक्टस** 6 **चायना** 6, 30 **पल्सेटिला** 30, **मर्क्यूरियस** 6, **सल्फर** 30 ।

धुन्ध माड़ा—**एकोनाइट** 6, **फास्फोरस** 6, **बेलाडोना** 6, **स्पाइजिलिया** 3, **अर्जेण्टम नाइट्रिक** 6 ।

जाला—**चायना** 6, **ऐसेडफॉस** 30 ।

ढलका—**युफ्रेशिया** 3x, **पल्स** 3 ।

घाव—जैबोरैंडी 1x ।

जलन—बेल 3, सल्फर 30, आर्सेनिक, पल्स 6 ।

परवाल—फाइजस्टिग्मा 3, कास्टिकम 3 ।

तारकमण्डल-प्रदाह—यदि चोट के कारण प्रदाह हो तो आर्निका का सेवन करें तथा आर्निका **मदर-टिंक्चर** 10 बूँद को 1 औंस डिस्टिल्ड वाटर में मिलाकर दिन में 3-4 बार दो—दो बूँद करके आँख में डालें ।

गुहेरी या अंजनी—पल्सेटिला 6, 30 । इससे लाभ न होने पर हिपर सल्फर 6 ।

रोहे कुकरे—अल्युम, एण्टिम, कास्ट, चायना, कोलोसिन्थ, हिपर सल्फर, युफ्रेशिया, ग्रैफाइटिस, लाइको, स्पाइजिलिया, थूजा, सल्फ आदि । मात्रा एवं शक्ति का निर्णय आवश्यकतानुसार कर लें ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

आँख दुखना—जिङ्क सल्फ 4 ग्रेन को गुलाबजल 1 औंस में मिलाकर आँख में डालने से लाभ होता है ।

लाली, दर्द, जलन, पानी गिरना—बोरिक एसिड 6 ग्रेन, जिङ्कसल्फ 2 ग्रेन तथा डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस—इन सबको मिलाकर आँखों में डालने से आँखों की लाली, दुखना, दर्द, जलन तथा पानी गिरना आदि शिकायतें दूर होती हैं ।

फूली—डायोनिन, सल्फ 10 ग्रेन को एकुआ डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस में मिलाकर प्रातः-सायं 1-2 बूँद आँखों में डालने से फूली ठीक हो जाती है ।

माड़ा—एट्रोपिन सल्फ 5 ग्रेन को एकुआ डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस में मिलाकर प्रातः-सायं एक-एक बूँद डालने से माड़ा ठीक होता है ।

नेत्र-रोग—क्विनीन डाईहाईड्रोक्लोर 2 ग्रेन, टिंक्चर ओपियम 3 बूँद जिङ्क सल्फ 2 ग्रेन, बोरिक एसिड 5 ग्रेन तथा डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस ।

इसके प्रयोग से आँखों की हर बीमारी में लाभ होता है ।

रोहे-कुकरे—सिल्वर नाइट्रेट 2 ग्रेन, डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस—इस लोशन की रुई की फुरहरी द्वारा आँखों के पपोटों को उलटकर लगाना चाहिए।

मोतियाबिन्द—पोटाशियम आयोडाइड $5\frac{1}{6}$ ग्रेन, ग्लिसरीन $56\frac{1}{2}$ भाग, डिस्टिल्ड वाटर $31\frac{1}{2}$ भाग—इन सबको मिलाकर ऊँट के बालों के ब्रुश से दिन में 2 बार आँखों में लगाने से मोतियाबिन्द में लाभ होता है । मोतियाबिन्द के पक जाने पर उसकी चिकित्सा ऑपरेशन द्वारा की जाती है ।

घाव—पल्फोफोसीन 8 ग्रेन, कार्बोनेट ऑफ सोडा 12 ग्रेन तथा डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस । इस लोशन के प्रयोग से आँख के घाव ठीक हो जाते हैं ।

तीव्र-नेत्र-पीड़ा—हाइड्रोक्लोरिक ऑफ कोकीन 18 ग्रेन, डिस्टिल्ड वाटर 1 औंस । इस लोशन की एक बूँद ही आँखों में डालने से तीव्र नेत्र-पीड़ा शान्त हो जाती है ।

मरहम—एट्रोपीन (अल्कालाइड) $4\frac{1}{2}$ ग्रेन, ओलीइक एसिड 40 ग्रेन साफ्ट पैराफीन 1 औंस—इन्हें तब तक गरम करें, जब तक एक-दिल न हो जाय । फिर ठण्डा करते समय निरन्तर हिलाते रहें । तत्पश्चात् इसे बिल्लौर की सलाई से आँखों में लगायें । यह मरहम अनेक प्रकार के नेत्र-रोगों पर हितकर है । नेत्र-रोगों की पेटेण्ट औषधियाँ तथा इञ्जेक्शन निम्नानुसार हैं—

पेटेण्ट मरहम—पेनिसिलीन, सीब्रॉजाल, औरियोमाइसिन, बोरिक एलोआईएण्टमेण्ट आदि ।

पेटेण्ट आईड्राप्स—एल्बुसिड, लोक्युला, बर्नवाल, आइ-मो, नीबा कार्टिल एन्टिलेशन आदि ।

इञ्जेक्शन—मुल्टीन, पेनिसिलीन, मिल्क आयोडीन, कैल्शियम ग्लूकोनेट, सीबाजोल, आस्टीलीन फोर्ट, बेरीन, गाइनरजन, बिस्मस्टाव एसिटीलार्सन आदि ।

पेटेण्ट आइण्टमेण्ट आईड्राप्स तथा इञ्जेक्शनों के लाभ एवं सेवन विधि का उल्लेख उनके पैकिङ्ग पर छपा रहता है ।

नाक की बीमारियाँ

(Diseases of The Nose)

नाक के कुछ प्रमुख रोगों की उपचार विधि नीचे लिखी जा रही हैं । आयुर्वेदिक तथा यूनानी योगों को एक साथ दे दिया गया है ।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

नकसीर फूटना— (1) मुल्तानी मिट्टी 1 तोला को थोड़ा-सा कूटकर एक प्याला पानी में रात के समय भिगों दें । प्रातःकाल इसका साफ पानी रोगी को पिलायें तथा नीचे बैठी हुई मुल्तानी मिट्टी को रोगी के मस्तक तथा नाक पर रखें ।

(2) एक रत्ती कपूर तथा हरे धनिये के पत्तों को पानी में घोलकर नाक में टपकाने से नकसीर रुक जाती है ।

(3) प्याज के रस को नाक में टपकाने से नाक से खून गिरना (नकसीर) बन्द हो जाता है ।

नाक के कीड़े— (1) तारपीन के तेल 6 माशे को आधा पाव गुनगुने पानी में भली-भाँति मिलाकर नाक में पिचकारी करें । इससे सारे कीड़े मरकर बाहर निकल आयेंगे ।

(2) दो रत्ती हींग को थोड़े-से पानी में घोलकर नाक में टपकाने अथवा पिचकारी से नाक में पहुँचाने से भी नाक के कीड़े मर जाते हैं ।

(3) संभालू अथवा नीम के कोमल पत्तों को पीसकर, उनका रस नाक में टपकाने से भी कीड़े मर जाते हैं ।

नाक की दुर्गन्ध—कड़वी तुम्बी के रस की एक-एक बूँद नाक के छिद्रों से टपकाने से नाक की दुर्गन्ध दूर हो जाती है ।

छींकें आना— (1) कुलीजन को पोटली में बाँधकर सूँघने से छीकें आने का रोग दूर हो जाता है ।

(2) हरे धनिये की पत्ती तथा सफेद चन्दन को सूँघने से छींकें आने का रोग मिट जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

नाक के विभिन्न रोगों पर लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं—

नकसीर फूटना—फेरम आयोड 6 वि०, **मिलिफोलियम** 3, **ऐम्ब्राग्रीशिया** 3, **नेट्रम नाइट्रिकम** 2x, **हैमामेलिस** 1x **एकोनाइट** 3x **बेलाडोना** 3x, **चायना** 330 **विरेट्रम विरि** 3x ।

नाक के कीड़े (पीनस रोग)—कैडियम सल्फ 3x वि० **आरममेट** 6, **कैलिबाइक्रोम** 3, **एसिड नाइट्रिक** 6, **आर्सेनिक** 3, 30 **सोरिनम** 30, **मर्क्युरियस** 3, **पल्सेटिला** 6, **आरममेट** 3x, 30 ।

नाक में सर्दी (छींकें आना)—एकोनाइट 3x, **एलियमसिपा** 1x, 3, **आर्सेनिक** 1, **नक्सवोमिका** 6, **कैलिकार्ब** 6 ।

नाक में फुन्सी— पेट्रोलियम ।

नाक की नोंक पर फुन्सी—एमोनकार्ब 3, **कैलिब्रोम** 3x, **साइलिशिया** 6, **कैप्सिकम** 3 ।

नाक में दर्द—कैलिबाई 3x **वि०** ।

सूँघने की शक्ति नष्ट हो जाना—एकोन 3x, **पल्स** 3, **मर्कबाई** 6x **सल्फर** 30 ।

नाक में घाव—हिपर सल्फर 3x ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

नाक के विभिन्न रोगों पर निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करें—

पीनस—सोडियम क्लोराइड 20 ग्रेन, गरम पानी 1 पौण्ड—इस सोल्यूशन से प्रातः सायं नाक को भली-भाँति धोकर साफ करने से पीनस-रोग में लाभ पहुँचता है ।

नाक के कीड़े— (1) कार्बोलिक एसिड 1 ड्राम, पानी 5 औंस । पानी में कार्बोलिक एसिड को हल करके पिचकारी द्वारा नाक में थोड़ा-थोड़ा टपकाने से नाक के कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

(2) तारपीन का तेल 1 ड्राम को 1 औंस पानी में मिलाकर नाक में हल्की पिचकारी करने से भी नाक के कीड़े मर जाते हैं ।

नाक की सूजन—फैनोल 5 ग्रेन, सोडाबाई कार्ब 20 ग्रेन, ग्लिसरीन 1 ड्राम, एकुआ 6 औंस—सबको मिलाकर नाक में डूस करने से नाक की सूजन दूर होती है ।

नोज ड्राप—एफीड्राइन हाइड्रोक्लोराइड 5 भाग, क्लेरोब्यूटेनल 3 भाग तथा ह्वाइट मिनरल ऑयल 99.2 भाग । तेल को थोड़ा सा गरम करके उसमें क्लोरो ब्यूटेनल घोल दें । फिर थोड़े-से अल्कोहल में एफ्रोड्राइन हाइड्रोक्लोराइड को घोलकर उसमें भी तेल मिला दें । फिर सबको भाँति-भाँति हिलाकर रख दें ।

यह 'ड्राप' नाक की बीमारियों में लाभ करती है ।

विशेष—नाक के रोगों से सम्बन्धित विभिन्न पेटेण्ट औषधियों की जानकारी कैमिस्टों से प्राप्त कर लें ।

कान की बीमारियाँ
(Diseases of The Ear)

विभिन्न कारणों से उत्पन्न होने वाले कान के कुछ प्रमुख रोगों की चिकित्सा के विषय में निम्नानुसार समझ लें । आयुर्वेदिक तथा यूनानी योग एक साथ ही दे दिये गये हैं ।

कान का दर्द— (1) पीपल के पत्तों को सिल पर पीस लें, फिर उस लुगदी में तेल मिलाकर आग में रक्खें । आगपर रखने से जो तेल निकले उसे कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है ।

(2) आक के पीले पत्तों पर घी चुपड़कर, उन्हें दीपक की लौ अथवा आग पर सेंक लें । फिर उन्हें पीसकर रस निचोड़ लें । इस रस को गुनगुना गरम करके कान में डालने से कान का दर्द तुरन्त दूर हो जाता है ।

(3) बकरी के दूध में सेंधा नमक मिलाकर तथा थोड़ा-सा गरम करके कान में डालने से कान का घोर दर्द तुरन्त दूर हो जाता है । कान में आवाज होने तथा मवाद बहने में भी लाभ होता है ।

(4) गोमूत्र को गरम करके कान में भरने से कान का दर्द अवश्य दूर हो जाता है ।

(5) गेंदे के पत्तों को आग पर गरम करके, उन्हें पी लें तथा उनका पानी निचोड़ कर हल्का गरम करके कानों में टपकायें- इससे कान का दर्द दूर हो जायगा ।

(6) तुलसी के पत्तों को पीसकर उनका रस निकालें । इस रस की 5-6 बूँदें कान में टपकाने से दर्द दूर हो जाता है ।

कान का बहना— (1) पीली कौड़ियाँ 2 तोला लेकर, उन्हें जला लें फिर महीन पीस-छानकर शीशी में भरकर रख लें । जब कान में दर्द हो, तब 4 रत्ती इस चूर्ण को कान में डालकर ऊपर से थोड़ा-सा नीबू का रस निचोड़ दें । कान का दर्द थोड़ी देर में ही दूर हो जायगा । इस क्रिया से कान में उबाल पैदा होता है । दर्द दूर हो जाने पर कान को नीचे की ओर झुकाकर पानी निकाल दें तथा कान में साफ रुई का फाहा रख लें । यह हर प्रकार के कान-दर्द तथा बहने की अत्युत्तम दवा है ।

(2) बिजौरा नीबू के रस में थोड़ा-सा सज्जी का चूर्ण मिलाकर कान में डालने से कान का दर्द और जलन तथा बहना जल्दी ठीक हो जाता है ।

कान में फुन्सी—लहसुन तथा अजवायन 3-3 माशे लेकर चार तोला तिलों के तेल में पकायें । जब ये चीजें पककर सुर्ख हो जायँ, जब तेल को छानकर शीशी में भरकर रख लें । आवश्यकता के समय इसे गुनगुना करके कान में टपकायें । इससे कान की फुन्सी और उसके कारण होने वाला दर्द

दूर हो जाता है ।

कान में कीड़े—(1) कान में घाव हो जाने पर यदि उचित इलाज न किया जाय तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं । उन्हें मारने के लिए 6 माशा तारपीन के तेल को 10 तोला गुनगुने पानी में मिलाकर कान में पिचकारी दें । इससे सारी कीड़े मरकर बाहर निकल आयेंगे ।

सम्भालू के हरे पत्तों का रस कान में टपकाने से भी कीड़े मर जाते हैं।

(3) सरसों के तेल को कान में डालने से भी कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

कान का घाव— (1) प्याज का रस मुर्गी के अण्डे की सफेदी मिलाकर कान में टपकाने से कान का घाव ठीक हो जाता है ।

(2) बकरी का दूध कान में टपकाने से कान का घाव ठीक हो जाता है।

कान की सूजन—(1) लहसुन की जड़ को पानी में पीसकर तथा थोड़ा सा गरम करके कान के पीछे वाले हिस्से पर लगाने से पह ठीक हो जाता है।

(2) हुलहुल की पत्तियों को सिल पर पीसकर तथा कपड़े में डालकर रस निचोड़ लें । इस रस की कुछ बूँदें कान में टपकारते रहने से कान के भीतर की सूजन ठीक हो जाती है । और गन्दगी बाहर निकल जाती है।

कान की खुजली—तेल और सिरके को मिलाकर औटा लें । फिर उसे छानकर कान में टपकायें तो इससे कान की खुजली ठीक हो जाती है ।

बहरापन—(1) ऊँट के पेशाब को गरम करके कान में टपकाने से बहरापन दूर हो जाता है ।

(2) प्याज के रस को थोड़ा-सा गरम करके कान में टपकाने से कम सुनना कान में भिनभिनाहट की आवाज, कान में दर्द तथा कान का बहना आदि रोगों में लाभ होता है ।

(3) पपड़िया कत्थे को सिरके में महीन पीसकर छान लें तथा थोड़ा गरम करके कान में टपकायें । इससे ऊँचा सुनने में लाभ होता है ।

(4) कड़वे बादाम के तेल को कान में टपकाने से भी बहरापन दूर होता है।

(5) आक (मदार) का पीला पत्ता जिसमें छेद न हो, को आग पर गरम करके उसके स को कान में निचोड़ें । दो सप्ताह तक इस प्रयोग को करते रहने से बहरापन दूर हो सकता है । अगर कान में घाव हो तो भी प्रयोग से अच्छा हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

कान के विभिन्न रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं । मात्रा का निर्णय आवश्यकतानुसार करलें ।

कान का दर्द—**एकोनाइट** 3x, **आर्निका** 3, **एपिस** 6, **पल्सेटिला** 30, **कैमोमिला** 12, **मर्कसोल** 6 ।

कान का बहना—**मर्का** 6x, **पल्स** 3, 6 **आर्निका** 3x, **कैप्सिकम** 6 **आरममेट** 6, **नाइट्रिक एसिड** 6, **कल्केरिया-कार्ब** 6, 30 **सिरोनम** 30 ।

कान में फुन्सी—**बेलाडोना** 1x, **सिलिका** 6, **मर्कसोल** 6, **हिपर सल्फर** 6x **वि० थूजा** 30 ।

कान में जलन—**आर्निका** 6x, **बेल** 6x **बोरेक्स** 6x, **कल्के** 6 **मर्क** 6x, **नक्स** 6, **पल्सेटिला** 6, **एकोन** 1x, **कैमोमिला** 3 ।

कान में खुजली मैल जन जाने के कारण हो तो—**कोनायम** 3, **कार्बोवेज** 30, **लेकेसिस** 6, **ग्रेफाइटिस** 3x, **स्पन्जिया** 3x, **सल्फर** 3 ।

एक्जिमा के कारण हो तो—**ग्रेफाइटिस** 3, **बेलाडोना** 3, **पल्सेटिला** 3, **रसटाक्स** 3, **विरेट्रम-विरि** 3x, **आर्सेनिक** 3, **सल्फर** 30 ।

बहरापन—**चिनिसल्फ** 3, **वि० केक्टस** 3x **पेट्रोल** 3x, **आस** 3, **केलिहाइड्रो** 3x, **वि० डल्कामारा** 3, **एकोन** 2x, **चायना** 3x, **एसिड फॉस** 3, **सल्फर** 30 ।

श्रवण शक्ति की कमी—**एकोनाइट** 3x, **पल्सेटिला** 3, **मर्क्युरियस** 3, **कैमोमिला** 3x, **हिपर सल्फर** 6, **मर्क्युरियस** 6, **कैल्केरिया** 6, **सल्फर** 30, **फास्फोरस** 6, **साइक्यूटा** 3, **आर्जेटमनाई** 6 ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

कान के विभिन्न रोगों पर निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं—

कर्ण शूल—(1) टिंक्चर एकोनाइट 2 बूँद, टिंक्चर बेलाडोना 2 बूँद तथा पानी 4 ड्राम । यह एक खुराक है । हर 3 घण्टे बाद ऐसी 1-1 खुराक दें ।

(2) पोटाश परमैंगनेट 4 ग्रेन तथा पानी 4 औंस— इन्हें मिलाकर दिन में 3-4 बार कुल्ले करायें ।

कान का दर्द—(1) कार्बोलिक एसिड 5 बूँद तथा ग्लिसरीन 1 औंस दोनों को मिला लें । इसमें से 1 या 2 बूँद कान में डालें ।

(2) स्पिरिट क्लोरोफार्म 10 बूँद, क्लोरोटोन, 5 ग्रेन, ऑयल मेन्था पिपरेटा 5 बूँद तथा ग्लिसरीन 1 औंस । सबको मिलाकर कान में 1 से 2 बूँद तक डालें ।

कान बहना— (1) लिनीमेण्ट कैम्फर 6 ड्राम, ऑयल मेन्था पिथरेटा 10 बूँद, बोरिक एसिड 1 ड्राम तथा टिंक्चर आयोडीन डिल 1 ड्राम ।

सबको मिलाकर 4 बूँद कान में में डालें । इससे कान का बहना तथा कान का दर्द दोनों में लाभ होता है ।

(2) पेनिसिलीन सोडियम 2 लाख, नार्मल सैलाइन 25 सी. सी. दोनों को मिलाकर 5 मिनट पर कान में 1 बूँद डालें । कान के बहने में अत्यन्त लाभकारी है ।

कान का मेल—सोडाबाई कार्ब 20 ग्रेन, एकुआ $\frac{1}{2}$ पौण्ड—इसे गुनगुना करके पहले कान में पिचकारी करें । ग्लिसरीन की कुछ बूँद कान में डालें । इसके कुछ ही दिन में कान बिल्कुल साफ हो जाते हैं ।

कान के विभिन्न रोगों की प्रमुख पेटेण्ट औषधियाँ तथा इञ्जेक्शन आदि निम्नलिखित हैं ।

पाउडर्स—आयडोफार्म पाउडर, सिबाजॉल पाउडर, आयोडाइल्ड बोरिक पाउडर, पेनिसिलीन पाउडर तथा स्ट्रैप्टोमाइसिन पाउडर इन्हें पाउडर- स्प्रेयन्त्र, द्वारा कान में डाला जाता है ।

प्लग (बत्ती)—मर्क्युरोक्रोम, एकरीप्लेविन, स्प्रिट क्लोरोफार्म आदि की बत्तियाँ कान में लगाई जाती हैं ।

पेटेण्ट औषधियाँ—नीवासल्फ, इन्स्टिलेशन, लाक्यूला, क्लोरोमाइसेटीन, ईयर ड्राप, आप्टिसिड आदि ।

इञ्जेक्शन—मिल्क, सीवाजॉल, पेनिसिलीन आदि ।

गला, जीभ, मुँह तथा दाँतों की बीमारियाँ (Diseases of the Mouth & Teeth)

गला, जीभ, मुँह तथा दाँतों में उत्पन्न होने वाली कुछ प्रमुख व्याधियों का उपचार निम्नानुसार करें । आयुर्वेदिक तथा यूनानी योग एक साथ वर्णित हैं ।

होठों का फटना— (1) तेल, घी, राल, मोम, रास्ना, गुड़, सेंधानमक और

गेरू— इन सबको समभाग लेकर पकाकर रख लें । इस लेप को होठों पर लगाने से होठों का फटना तथा होठों के घाव ठीक हो जाते हैं ।

(2) गुड़, मोम और राल—इन सबको समभाग लेकर तेल या घी में पकाकर रख लें । इसका लेप करने से होठों में सुई चुभने जैसा दर्द, कड़ापन तथा खून आदि विकार दूर हो जाते हैं ।

(3) मक्खन में थोड़ा-सा नमक मिलाकर होठों पर मलें । वह होठों के फटने में हितकर है ।

जीभ का फटना— (1) अगर पान में चूना अधिक खाने से जीभ फट गई हो तो हरे नारियल की गिरी चबाना चाहिए ।

(2) ईसबगोल अथवा बीदाना 6 माशा को पावभर पानी में भिगोकर रख दें । फिर उसे मलकर लेस निकालें और उससे कुल्लियाँ करें । इससे जीभ के फटने में लाभ होगा ।

स्वाद-शक्ति का नष्ट हो जाना— (1) एक तोला राई को पानी में उबालकर उस पानी से कुल्लियाँ करने से स्वाद-शक्ति ठीक हो जाती है ।

(2) दालचीनी अथवा बच को महीन पीसकर शहद में मिलाकर जीभ पर मलने से स्वाद-शक्ति ठीक हो जाती है ।

जीभ के छाले— (1) पीपल को महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करने, जीभ पर मलने तथा लार गिराने से जीभ के छाले आदि ठीक हो जाते हैं ।

(2) पोदीने की पत्ती और मिश्री मिलाकर चबाने तथा थूकने से जीभ के छाले दूर हो जाते हैं ।

जीभ के रोग—सफेद सरसों तथा सेंधा नमक को पीसकर मुँह में रखने से जीभ के अनेक रोग दूर हो जाते हैं ।

जीभ का भारीपन—राई, पीपल, सोंठ, नौसादर और अकरकरा इन्हें बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लें । इस चूर्ण को सिरके में मिलाकर या बिना सिरके में मिलाये ही जीभ पर मलने से जीभ का भारीपन दूर हो जाता है ।

मुँह आना— (1) मसूर को जलाकर तथा उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर पीस लें । इसे जीभ पर छिड़कने से मुँह आना तथा जीभ के दानों के रोग में लाभ होता है ।

(2) जला हुआ गावजवा और उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँह में छिड़कने से मुँह आने का रोग ठीक हो जाता है ।

गले के रोग— (1) हरड़ के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से गले के रोग ठीक हो जाते हैं ।

(2) दारुहल्दी, नीम की छाल, रसौत और इन्द्र-जौ का काढ़ा पीने से गले के रोग ठीक हो जाते हैं ।

मुँह की दुर्गन्ध— (1) चमेली के पत्तों को बराबर चबाते रहने से मुँह की दुर्गन्ध दूर हो जाती है तथा जीभ के छाले और मुँह के घाव ठीक हो जाते हैं ।

(2) बिजौरा नीबू के फल का छिलका खाने से मुँह की दुर्गन्ध दूर हो जाती है तथा वात-जनित मुख पाक भी ठीक हो जाता है ।

गले का दर्द और सूजन (टॉन्सिल)— (1) अमलतास की फली का गूदा 5 तोला को आधा सेर पानी में उबालकर, उससे कुल्लियाँ करने पर गले के दर्द तथा सूजन में लाभ होता है ।

(2) अरहर की पत्तियों अथवा अरहर की दाल को पानी में उबालकर गरारे करने से गले की सूजन तथा दर्द ठीक हो जाते हैं ।

(3) तिल के तेल को गुनगुना करके कान में टपकाने से भी गले की सूजन (टॉन्सिल) में लाभ होता है ।

(4) थूहर के दूध का लेप करने से गलगुण्डी (टॉन्सिल) में लाभ होता है ।

गला बैठ जाना— (1) अडूसे के पत्तों का काढ़ा शहद मिलाकर पीने से बैठा हुआ गला खुल जाता है तथा गले की जलन दूर हो जाती है ।

(2) गन्ने को भूनकर चूसने से बैठा हुआ गला खुल जाता है ।

गले की खराश—अमलतास के गूदे का काढ़ा बनाकर, उसके गुनगुना रहने की अवस्था में कुल्ले (गरारे) कराने से गले की खराब एवं दर्द में लाभ होता है ।

मसूढ़ों का दर्द—चमेली के पत्तों को पान की तरह चबाने से मसूढ़ों का दर्द तथा मुँह के छाले दूर होते हैं ।

मसूढ़ों की सूजन— (1) एक तोला नीबू के रस को दो तोला पानी में मिलाकर कुल्ला करने से मसूढ़ों की सूजन दूर हो जाती है ।

(2) काले चनों को भिगोकर औटायें तथा उस पानी से गुनगुना रहते हुए कुल्ला करें । इससे मसूढ़ों की सूजन दूर होगी ।

दाँत का दर्द— (1) दर्द वाले दाँत पर थोड़ा-सा कपूर रखकर दबा लेने और यदि दाँत में कीड़े ने छेद कर दिया हो तो उस छिद्र में कपूर भर देने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है ।

(2) सज्जी और कालीमिर्च को पीसकर मलने से सर्दी के कारण होने वाला दर्द दूर हो जाता है ।

(3) शहद, पीपल और घी— इन्हें मिलाकर मुँह में रखने से दाँतों का दर्द तथा उनका हिलना तुरन्त दूर हो जाता है ।

(4) अकरकरा और कपूर दोनों को समभाग लेकर पीस लें । इस चूर्ण को जब तक आराम न हो, एक-एक घण्टे बाद दाँतों पर मलते रहने से हर प्रकार की पीड़ा अवश्य दूर हो जाती है ।

दाँत का हिलना— (1) नियमित रूप से मौलश्री की दाँतौन करने से हिलते हुए दाँत जम जाते हैं ।

(2) सरसों के तेल में पिसा हुआ सेंधा नमक मिलाकर मञ्जन करने से हिलते दाँत जम जाते हैं । दाँत का दर्द दूर होता है, दाँत सुन्दर, स्वस्थ तथा मजबूत होते हैं, तथा उनके सभी रोगों का नाश हो जाता है ।

(3) मौलश्री की ताजा छाल को मुँह में चबाने से हिलते हुए दाँत जम जाते हैं तथा उनसे खून निकलना बन्द हो जाता है ।

दाँत के कीड़े— (1) हींग को गरम करके लेप करने अथवा गरम हींग को दाँतों के बीच में दाढ़ के नीचे दबाये रखने से दाँत के कीड़े मर जाते हैं ।

(2) थूहर की जड़ को चबाकर दाँत के नीचे दबाये रखने से कीड़े मर जाते हैं ।

दाँत से खून आना— (1) मौलश्री, कचनार या जामुन की राख को मलने से दाँतों से खून आना बन्द हो जाता है ।

(2) फिटकरी तथा माजूफल को उबालकर कुल्ले करने पर दाँतों से पीब आना बन्द हो जाता है तथा मैल उतर जाता है ।

(3) माजूफल पीसकर मलने से दाँतों से खून आना बन्द हो जाता है तथा मसूढ़े मजबूत हो जाते हैं ।

मसूढ़ों से खून आना—कटसरैया का रस और शहद दाँतों में लगाने से मसूढ़ों से खून आना बन्द हो जाता है ।

मसूढ़ों के रोग—शहद, सरसों का तेल अथवा काँजी के गरारे करने से मसूढ़ों के सब रोग दूर हो जाते हैं ।

दाँतों की स्वच्छता—सीप की राख मलने से दाँत साफ हो जाते हैं ।

दाँतों का खट्टापन—नमक पीसकर मलने से दाँतों का खट्टापन तुरन्त दूर हो जाता है ।

पायरिया—भुना हुआ नीलाथोथा तथा भुनी हुई फिटकरी प्रत्येक 2-2 माशा तथा सेंधा नमक 3 माशा । इन तीनों को पीसकर एक गिलास हल्के गरम पानी में मिलाकर सुबह-शाम कुल्लियाँ करते रहने से पायरिया रोग में लाभ होता है ।

गले, मुँह तथा दाँतों के विभिन्न रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं । मात्रा का निर्धारण आवश्यकतानुसार कर लें ।

एकदम गला बैठ जाना—**फाइटो** 6 ।

गले से अधिक काम लेने के कारण स्वर-भङ्ग **आर्निका** 6, **फइटो** 6 **बेल** 6 **कैलिबाई** 6 **वैराइटा कार्ब** 6 ।

सर्दी के कारण गला बैठ जाना—**कास्टिकम** 6 ।

कमजोरी के कारण गला बैठ जाना—**फास्फोरस** 6, **आयोडियम** 6 ।

गले में जख्म के कारण स्वर-भङ्ग— **एरमट्राइफलम** 3 ।

आवाज का बिगड़जाना— **कास्टिकम** 6 ।

स्वर-लोप— **चिनोपोडियम** 3x, 6 **जेल्स** 30, **कैलिब्रोम** 30, **एनाकार्डियम** 30, **स्ट्रैमो** 30 ।

मुँह के भीतर घाव या प्रदाह— **बौरेक्स** 3x, 30 ।

अधिक लार बहना— **मर्क्युरियस** 6, **चायना** 12, 30 ।

श्वास में बदबू आना— **आर्निक** 3 ।

श्वास में प्याज जैसी दुर्गन्ध —**पैट्रोलियम** 6 ।

मसूढ़ों में खून आना— **कार्बोवेज** 6 ।

मसूढ़ों में घाव— **मर्कवाइवस** 3x, 6x, **वि० बेल** 3x, **फास्फोरस** 3, **सल्फर** 30, **हिपर सल्फर** 6 ।

मुँह में घाव— **बौरेक्स** 6, **मर्क्युरियस** 6, **कार्बोवेज** 6, **नाइट्रिक एसिड** 6 ।

गले में घाव— **मर्ककोर** 6, 30, 6 x **वि० आर्स एल्ब** 6, 30 **कार्बोवेज** 30, 200 **डल्कामारा** 30, 200 ।

जीभ का प्रदाह— **मर्कवाइवस** 3x, 6x **वि०** ।
जीभ का अधिक फूलना— **एपिस** 3x, 30 ।
जीभ में चोट लगना— **आर्निका** 3x ।
जीभ में छाले— **नाइट्रिक एसिड** 3, **हिपर-सल्फर** 6, 30 ।
जीभ में जलन— **एल्यूमेन** 30 ।
जीभ का मोटा हो जाना— **जेल्सीमियम** 3 ।
जीभ के नीचे फुन्सी हो जाना— **लाइको** 12, 30 ।
गले में दर्द— **बेलाडोना** 3x, 30 ।
उप-जिह्वा का लम्बा होना (टान्सिल)— **कैल्केरिया फॉस** 6x **वि.** ।
घूँट निगलते समय गले में दर्द— **बैराइटा-कार्ब** 6 ।
तालुमूल की घण्टी का बढ़ जाना— **कैल्के आयोड** 3 वि. ।
दाँत में दर्द— **प्लेण्टैगो** 3, **एकोनाइट** 3x, **कियोजोट** 6, **बेलाडोना** 3x **पल्सेटिला** 30, **आर्सेनिक** 6, **कैमोमिला** 6, **कार्बोबेज** 2, **मर्क्युरियस** 6 ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

गला, जीभ, मुँह, दाँत आदि की बीमारियों में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं—

डिपथीरिया— (1) फार्मलहीड 10 भाग, ग्लिसरीन 10 भाग, एकुआ डिस्टिल्ड 80 भाग सबको मिलाकर गले में पेण्ट करें ।

(2) टिंक्चर स्टील (आइरन) 15 बूँद, क्विनाइन सल्फ 5 ग्रेन, एसिड हाइड्रोक्लोराइड डिल 10 या 15 बूँद, पोटासियम आयोडाइड 4 ग्रेन पानी 1 औंस—सबको मिलाकर 1 मात्रा बनायें । ऐसी मात्रा हर चार घण्टे बाद देते रहें ।

(3) पेनिसिलीन बी. 50,000 यूनिट, सल्फा क्रियाजीन आधी टिकिया, इन्हें मिलाकर 4-4 घण्टे बाद दें ।

(4) टिंक्चर स्टील 1 औंस, गरम पानी 7 औंस— दोनों को मिलाकर कुल्ला करायें ।

(5) डिपथरिया रोग में लाभ करने वाले इञ्जेक्शन यह है—
एण्टी डिपथीरिया सिरप पेनसिलीन, कोरामिन, ग्लूकोज आदि ।

टांसिल्स— (1) टिंक्चर एकोनाइट 1 बूंद, लायकर एमोनिया साइट्रास

2 ड्राम, सोडिआई साइट्रास 2 ग्रेन, स्प्रिट एमन, एरोमेटिक 10 बूँद, एकुआ आरेशिया क्लोरिस (सब मिलाकर) 1 औंस । यह एक खुराक है । ऐसी 1-1 खुराक हर 3 घण्टे पर दें ।

(2) पोटास क्लोरास 80 ग्रेन, एसिड हाइड्रोक्लोर डिल $1\frac{1}{2}$ ड्राम, ग्लिसरीन 4 ड्राम, पानी (सब मिलाकर) 8 औंस— सबको मिलाकर कुल्ली करें ।

(3) पेटेण्ट औषधियों में मुख द्वारा पेनिसिलीन लौजेञ्जेज तथा पेनिसिलीन ड्राचेज एवं ब्रुश द्वारा गले में लगाने के लिए 'मेण्डल का पेण्ट' आदि का प्रयोग किया जाता है ।

कण्ठ प्रदाह— (1) बौरेक्स 240 ग्रेन, टिंक्चर मई 4 ड्राम, ग्लिसरीन 4 ड्राम तथा पानी 20 औंस—सबको मिलाकर दो-दो घण्टे बाद कुल्ला करायें ।

(2) गले के बाहर 'एण्टी फ्लाजिस्टीन' का प्लास्टर लगायें अथवा सिकाई करें ।

मुख की दुर्गन्ध— 'लस्ट्रीन' को समभाग पानी में मिलाकर कुल्लियाँ करें ।

मुख के छाले— (1) बोरिक एसिड पाउडर 20 ग्रेन सोडियम बाई कार्बोनेट 20 ग्रेन तथा एकुआ 4 औंस— सबको मिलाकर कुल्लियाँ करने से मुँह के छाले दूर होते हैं ।

(2) पोटेशियम क्लोरेट 30, बोराग्लीस 3 ड्राम तथा डिस्टिल्ड वाटर समभाग मिलाकर कुल्ला करायें ।

(3) पेनिसिलीन लौंजेज तथा ड्राचेस चूसने के लिए दें ।

(4) कनिकोटिन, एसिड सिल्वर एक्सट्रेक्ट के साथ विटामिन प्लैक्स एसीटीलार्सन के इञ्जेक्शनों का भी प्रयोग किया जाता है ।

दाँत का दर्द— (1) कोकीन हाइड्रोक्लोर 1 ड्राम, क्लोरल हाइड्रेट 10 ग्रेन, कैम्फर 1 ड्राम तथा स्प्रिट रैक्टीफाइड 10 बूँद—सबको मिलाकर फुरहरी द्वारा दाँतों पर लगाने से दाँत का दर्द दूर होता है ।

(2) दाँत दर्द में स्प्रिट क्लोरोफार्म, स्प्रिट तारपीन, यूकेलिप्टस, क्रियोजोट आदि में फुरहरी डुबाकर, उसे दाँत पर दबाने या भर देने से भी दर्द कम हो जाता है ।

मसूढ़ों का फूलना— जेन्शन बायोलेट 2 भाग, एसीटोन 60 भाग, अल्कोहल 50 भाग तथा डिस्टिल्ड वाटर 200 भाग—इन सबको मिलाकर मसूढ़ों पर लगाने से लाभ होता है ।

मसूढ़ों में मवाद पड़ना— एसिड थाईमिक 3 ग्रेन, एसिड बेंजोनियम 45 ग्रेन, ऑयल मेंथापिल 10 बूँद तथा टिंक्चर यूकेलिप्टस $4\frac{1}{2}$ ड्राम—इन सबको मिला लें। इस औषध की थोड़ी-सी मात्रा पानी में मिलाकर कुल्लियाँ करने से दाँत या मसूढ़ों में मवाद या पीव पड़ने की खराबी दूर हो जाती है।

दाँतों के अन्य विकार—रोज वाटर 1 औंस, तथा कॉपरसल्फ आधा ग्रेन-इनसे कुल्ला करने पर दाँतों की सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं।

विशेष— (1) मुँह तथा दाँत के विभिन्न रोगों में उपयोगी पेटेण्ट औषधियों तथा इञ्जेक्शनों की जानकारी कैमिस्ट से करें।

(2) **टैक्सीन स्ट्रैप्टो कोकस डेण्टल**—यह दाँत के विषैले रोगों तथा उनमें लगने वाले कीड़ों को नष्ट करती है। मसूड़ों से पीव तथा रक्त निकलने को रोकती है।

(3) **वैक्सीन पायोरिया**— यह पायेरिया, मसूढ़ों से खून तथा मवाद निकलना आदि दन्त-रोगों में हितकर है।

(4) **वैकईन मिक्सड इञ्जेक्सन फाईलाकोजन**— यह मसूढ़ों से मवाद आने में अत्युत्तम है।

हृदय की बीमारियाँ

(Diseases of the Heart)

हृदय सम्बन्धी कुछ प्रमुख व्याधियों की चिकित्सा में निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करें। आयुर्वेदिक तथा यूनानी रोग एक साथ वर्णित है।

आयुर्वेदिक व यूनानी - चिकित्सा

हृदय शूल— (1) हिरन के सींग को लोहे की रेती से रितवाकर चूरा करा लें। उस चूरे को एक मिट्टी के शकोरे में रखकर उसके ऊपर दूसरा खाली शकोरा औंधा कर चार-पाँच बार कपड़े मिट्टी करके तेज धूप में सुखा लें। फिर उस शराब-सम्पुट को 10 सेर जङ्गली कोयलों की दहकती हुई आग में रख दें अथवा हलवाई की भट्टी में 1 घण्टे तक रख दें। आग से निकालने के बाद शकोरे में से भस्म को निकाल लें तथा शीशी में भर दें।

इस 1 माशा भस्म को 3 माशा शुद्ध गरम घी में मिलाकर सेवन करने से हृदय-शूल में तुरन्त लाभ होता है।

यह हृदय के दर्द के अतिरिक्त नितम्ब (चूतड़) के दर्दों की भी उत्तम

औषध है। अनेक बार इससे हर प्रकार शूल (दर्द) में आराम होते देखा गया है।

(2) मुनक्के में से गुठली निकालकर, उसमें 1 रत्ती हीरा-हींग को गोली बनाकर रख दें तथा गुनगुने पानी से खिलायें, यह हृदय शूल में लाभ करती है।

हृदय-रोग— हरड़, बच, रास्ना, पीपल, सोंठ, कपूर तथा पोहकर भूल-इन सबको समभाग लेकर पीस-छानकर रख लें। इसमें 2 या 3 माशे चूर्ण को पानी के साथ सेवन करने से हृदय-रोग दूर हो जाते हैं।

दिल की धडकन का बढ़ जाना— सेवती का गुलकन्द, सेब का मुरब्बा अथवा गाजर का मुरब्बा—इनमें से जो भी उपलब्ध हो सके, 2 तोला लेकर, चाँदी के बर्क में लपेटकर खाने से लाभ होगा।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

हृदय के विभिन्न रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

हृदय-शूल— **एकोन** 3, 30, **ग्लोनोयन** 3, 30 **बेलाडोना** 3, **आर्स** 3, 30 **कैल्मिया** 3, 6, **आरम** 6, **मेगफॉस** 3x।

हृत्पिण्ड में दर्द— **स्पाईजिलिया** 3।

हृत्पिण्ड में धीमा कम्पन्न— **जेल्समियम** 3, 30।

हृत्पिण्ड में अधिक कम्पन्न— **एकोन** 3, 30 **कैक्टास** 3।

हृत्पिण्ड की कमजोरी— **ग्रिण्डेलिया** 3x।

हृत्पिण्ड के बाह्य आवरण में प्रदाह— **एकोन** 3, 30, **कोलिचिकम** 1x, 6 **स्पाइजिलिया** 3, 30 **आर्निका** 3, 30।

हृत्पिण्ड की आवरक झिल्ली में नया प्रदाह— **ऐक्टियारेसिमोसा** 3, 30, **कोलिचिकम** 1x 6, **आरममेट** 6, **एकोन** 3x, 30, **आयोडियम** 3।

हृत्पिण्ड के आकार में वृद्धि— **कैक्टस** 1x, **आर्निका** 6 **आर्सेनिक** 6, **स्पाइजिलिया** 6।

ऐलोपैथिक चिकित्सा

हृदय के विभिन्न रोगों में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर हैं—

कल्जेस्टिव हार्डफैल्योर— (1) टिंक्चर डिजिटेलिस 20 बूँद, कैफीन साइट्रास 2 ग्रेन, स्प्रिट ईथर नाइट्रोसी आधा ड्राम तथा एक्कामेन्था पिपरेटा (सब मिलाकर 1 औंस)— यह 1 मात्रा है।

ऐसी 1-1 मात्रा हर 6 घण्टे बाद दें । दवा का असर शुरू हो जाने पर इसकी आधी मात्रा दिन में दो बार दें ।

(2) इस रोग की पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

डिजिटाक्सिन, सीडोनल, हाइग्रोटोन, डिजिटेलिन, नेलेक्स तथा डाइण्डेमिल आदि ।

हृदय की अशक्तता— (1) टिंक्चर डी-जी डेल्स 5 बूँद, सीरप ऑफ आरेञ्ज 1 ड्राम, क्लोरोफार्म वाटर 1 औंस । यह मिक्श्चर हृदय को शक्ति देता है । आवश्यकता के समय केवल 1 खुराक का ही सेवन करायें ।

(2) एमोनिया कार्बोनेट 5 ग्रेन, स्प्रिट क्लोरोफार्म 15 बूँद, टिंक्चर ऑफ स्कीयल्ज 8 बूँद, इन्फ्यूजन ऑफ स्नेगा (कुल) 1 औंस—यह मिक्श्चर भी हृदय के लिए उपयोगी है । दिन में तीन बार दें ।

(3) स्प्रिट ऑफ ईथर 30 बूँद, एरोमेटिक स्प्रिट ऑफ एमोनिया 30 बूँद, टिंक्चर ऑफ औरेन्ज 20 बूँद, कैम्फर वाटर (कुल मिलाकर) 1 औंस यह मिक्श्चर भी हृदय को शक्ति देता है । (दिन में 3 बार दें) ।

हृदय-प्रदाह— पेनिसिलीन बी. 1 लाख यूनिट 1 टिकिया, सोडाबाई कार्ब 5 ग्रेन. ग्लूकोज 10 ग्रेन—ऐसी एक पुड़िया हर तीन घण्टे बाद तब तक देते रहें, जब तक कि लक्षणों में पर्याप्त सुधार दिखाई न दे ।

हृदय-शूल— (1) सीप्रोबामेट 200 मि. ग्रा. एण्टाइरिथिट्राल टेट्रानाइट्रेट 10 मि. ग्रा., डाइप्रोफाइलीन 100 मि. ग्रा. पापायरीन हाइड्रोक्लोर 60 मि. ग्रा. गार्डिनल 10 मि. ग्रा. ।

यह सब मिलाकर 1 मात्रा है । ऐसी मात्रायें दिन में 3-4 बार दें । यह हृदय की पीड़ा को शान्त करता है तथा पुनः उत्पन्न होने से रोकता है ।

(2) हृदय-शूल की पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

गिलिसिरिन ट्राइनाइट्राइट, कार्डियोप्लान, निओकार कोरल्जिम ।

(3) **एसिडनाइट्राइट**— सूँघने पर तुरन्त लाभ दिखाती है ।

(4) इंज्जेक्शन—**टैल्टाविरानडिपो, टैस्टोस्टरान प्रोपियोनेट ।**

त्वचा की बीमारियाँ

(Diseases of The Skin)

त्वचा सम्बन्धी कुछ प्रमुख व्याधियों का उपचार निम्नानुसार करें ।

आयुर्वेदिक तथा यूनानी योग एक साथ दिये गये हैं ।

आयुर्वेदिक व यूनानी-चिकित्सा

खुजली— (1) नीम की कोंपल 1 तोला को 7 काली मिर्चों के साथ पानी में पीस-छानकर पीने से खुजली में लाभ होता है ।

(2) नीबू का रस तथा चमेली का तेल दोनों को बराबर लेकर मिलालें। इसे सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करने से सूखी खुजली ठीक हो जाती है ।

दाद— (1) गेंदे के फूलों का रस निकल कर लगाने से दाद जल्दी अच्छा हो जाता है ।

(2) पुराना दाद किसी दवा से अच्छा न होता हो तो उसे कपड़े से रगड़कर, उस पर आक का दूध लगायें । इसे लगाने से कष्ट तो बहुत होगा परन्तु दाद हमेशा के लिए दूर हो जायगा ।

(3) ढाक के बीजों की गिरी को पानी में पीसकर लेप करने से भी दाद दूर हो जाता है ।

झाँई— (1) पीली सरसों को दूध में पीसकर रात को चेहरे पर लगायें तथा प्रातःकाल मुँह धोयें। कुछ दिनों तक नित्य इस प्रयोग को करते रहने से झाँइयाँ दूर हो जाती है ।

(2) हल्दी और तिलों को पानी में पीसकर नित्य चेहरे पर लेप करने से भी झाइयाँ दूर हो जाती हैं ।

घम्हौरी (अम्हौरी या गर्मी दाने)— (1) मुलतानी मिट्टी को पानी में घोलकर गर्मी-दानों पर लगाने से वे ठीक हो जाते हैं ।

(2) नीम की कोंपलों को पानी में पीसकर लगाने से गर्मी-दाने ठीक हो जाते हैं ।

(3) सफेद चन्दन को पानी में घिसकर लगाने गर्मी-दानों की जलन दूर हो जाती है ।

छाजन— (1) आम के वृक्ष की छाल तथा बबूल के वृक्ष की छाल- इन दोनों को दो-दो तोले लेकर 1 सेर पानी में उबालें, फिर उस पानी की भाप छाजन वाली जगह पर देकर, ऊपर से शुद्ध घी लगायें ।

(2) महुए के पत्तों पर मीठा तेल चुपड़कर, उन्हें हल्का गरम करके छाजन वाली जगह पर बाँधें । तीन घण्टे बाद पहले पत्ते बदल कर दूसरे बाँध दें । इस प्रकार दो-चार बार बाँधने से ही रोग दूर हो जाता है ।

पित्ती— (1) पोटीना 7 माशा, गुड़ वाली, लाल शक्कर 2 तोला— दोनों को उबाल कर पीने से बार-बार उछलने वाली पित्ती ठीक हो जाती है ।

(2) असरोल बूटी की 1 माशा जड़ को महीन पीसकर पानी के साथ फांक लेने से पित्ती तुरन्त दब जाती है ।

दाद— (1) चकबड़ और हरड़ को काँजी में पीसकर लेप करने से दाद ठीक हो जाता है ।

(2) दूध, हरड़, सेंधा, नमक, चकबड़ और वन तुलसी- इन्हें इकट्ठा कर, काँजी और मट्ठे में पीसकर तीन दिन लेप करने से दाद अच्छा हो जाता है ।

(3) आमलतास के पत्तों को मट्ठे में पीसकर लेप करने से दाद ठीक हो जाता है ।

(4) हारसिंगार की पत्तियों को पीसकर दाद पर लगाने से लाभ होता है।

पामा खुजली— (1) दूध, हल्दी और दारुहल्दी पीसकर लेप करने से पामा खुजली दूर हो जाती है ।

(2) दो तोले नीम की कोंपल को पानी में पीस-छानकर 15 दिन तक पीने से खुजली दूर हो जाती है ।

(3) कनेर की बीस पत्तियों को एक पाव मीठे तेल में जलायें । इस तेल की मालिश से खुश्क तथा तर दोनों तरह की खुजली दूर हो जाती है ।

(4) कलमी शोरा को कड़वे तेल में मिलाकर मलने से खुजली दूर हो जाती है ।

(5) एक छटाँक चमेली के तेल में 1 तोला कपूर मिलाकर मालिश करने से सूखी खुजली दूर हो जाती है ।

फोड़ा-फुन्सी, घाव— (1) मेथी की पुल्टिस फोड़े पर बाँधने से फोड़े की सूजन तथा पीड़ा दूर हो जाती है ।

(2) जिन फोड़ों में अत्यन्त दाह होता हो, उन पर नीम के पत्ते पीस कर लगा दने से दाह तुरन्त शान्त हो जाता है ।

(3) यदि घाव में दर्द होता हो तो प्याज को चीरकर घी में तलें तथा घाव पर बाँध दें । इससे दर्द दूर हो जायगा ।

(4) बेल के वृक्ष की लकड़ी को पानी में घिसकर फोड़े पर लेप करने से फोड़े की जलन, लाली और सूजन दूर हो जाती है ।

(5) नीम के पत्तों को पानी में औटाकर, उस पानी से घाव को धोयें यह घावों को साफ करने की सर्वोत्तम दवा है । कुछ दिनों के प्रयोग से घाव भर जाते हैं ।

(6) कनेर की सूखी पत्तियों का कपड़े में छना महीन चूर्ण घाव पर छिड़कने से वह शीघ्र सूख जाता है ।

(7) मुर्गी के पंख की राख को घाव पर छिड़कने से वह शीघ्र भर जाता है ।

(8) घीया-तोरई की पत्ती को पीसकर घाव पर बाँधने से घाव भर जाता है ।

(9) अरण्ड की छाल और विषखपरा की जड़ को पानी में पीसकर लगाने से पर प्रकाट के फोड़े-फुन्सियों में लाभ होता है ।

(10) नीम की छाल को पानी में घिसकर लगाने से बरसाती फुन्सियाँ ठीक हो जाती हैं ।

बद— (1) हालोंन और मेथी को पानी में पीसकर लेप करने से वाद ठीक हो जाती हैं ।

(2) चूना और शहद मिलाकर कपड़े पर मरहम की भाँति फैलाकर उसे बद पर बाँध देने से बद बैठ जाती है ।

बिवाई फटना— (1) मोम, राल, गूगल, पुराना गुड़ और सेंधा नमक— इन सबको समभाग लें तथा गाय का घी इन सब औषधियों के वजन से दूना लें । फिर इन सबको मिलाकर मरहम तैयार कर लें । इस मरहम के लगाने से हाथ-पाँव का फटना तथा बिवाई में लाभ होता है ।

(2) बिवाई में बरगद का दूध भरने से वह ठीक हो जाती है ।

नहरुआ— (1) हींग को पीसकर ठण्डे पानी के साथ पीने से नहरुआ रोग ठीक हो जाता है ।

(2) धतूरे के पत्ते पर घी को चुपड़ कर, उसे गरम कर लें, तत्पश्चात् उसे नहरुआ वाले स्थान पर बाँध दें । इससे रोग की पीड़ा तुरन्त शान्त हो जायगी ।

(3) सहजने की जड़ तथा पत्तों को सेंधा नमक के साथ काँजी में पीसकर लगाने से नहरुआ अवश्य नष्ट हो जाता है ।

काखौरी— पीपल के पत्ते पर घी चुपड़ कर, उसे हल्का गरम करें तथा

कखौरी पर बाँध दें । इस तरह 2-3 बार बाँधने से कखौरी घुल जाती है ।

अंगुलबेड़ा— बैंगन के एक फल को भूमल में दबा दें । जब वह भुलभुला जाय तब उसे बीच में से काटकर, उसके भीतर रोगी उँगली को रखकर बांध दें । तो चार बार यह क्रिया करने से सूजन घुल जायगी अथवा अंगुलबेड़ा पककर फूट जायेगा ।

भगन्दर— कत्था और एरण्ड के पत्तों को पीसकर , हल्का गरम करके बाँधने से भगन्दर बाँधने से भगन्दर घुल जाता है ।

नासूर (1) अमलतास, हल्दी मँजीठ— इन्हें समभाग लेकर शहद में पीसकर बत्ती बना लें । इस बत्ती को नासूर के मुँह में रखने से वह ठीक हो जाता है ।

(2) हंसराज, नीम तथा चमेली के पत्तों का रस तेल में मिलाकर पकालें। इस तेल को लगाने से नासूर ठीक हो जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

विभिन्न चर्म-रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं। शक्ति एवं मात्रा का निश्चय आवश्यकतानुसार करें ।

खाज— **फैगोपाइरन** 2, 3, **मेरेरियम** 6, 30 **डसकिस** 3 ।

खुजली— **रेडियम ब्रोनेटम** 30, **एकोन** 3x, **सल्फर** 30, **आर्स** 3x, 30, **इग्नेशिया** 3 ।

तीव्र खुजली— **क्रोटन** ।

दाद— **बैसिलीनम** 30, 200, **टेल्यूरियम** 6 ।

झाँई— **नेट्रमम्यूर, सल्फर, सोरिनम, कैलिबाई, पल्स** ।

घम्हौरी— **एण्टिमक्रूड रसटाक्स, एपिस, एकोनाइट, आर्स** ।

मुँहासे— **बौरेक्स** 3x **वि०, कैल्केकार्ब** 6, **सल्फ्यूरिक एसिड** ।

छाजन— **रसवेन** 3, **रसटाक्स** 30, 200, **हिपर सल्फर** 6, **एण्टिमक्रूड** 6, **आर्सेनिक** 6, **सल्फर** 30, **मर्ककोर** 3, **कार्बोवेज** 6 ।

फोड़ा— **बेल** 2x, **एपिस** 3, **मर्कसोल** 6, **हिपर-सल्फर** 6, **साइलीशिया** 6, 30 ।

फुन्सी— **कार्बोवेज** 6, **रेडियम ब्रोम** 30, **सल्फर** 30, **रसटाक्स** 3 ।

पीली फुन्सियाँ— **वायोलाट्राई** 3, **एण्टिम-टार्ट** 3, **साइक्यूटा** 3, **क्रोटनटिग** 6, **आर्स** 30, **कैलिबाई** 30 ।

पीठ का फोड़ा— **बेल** 1x, **साइलीशिया** 3x **वि०, बेलाओना** 3x, **कार्बोविज** 6, **आर्सेनिक** 3, 30 **एपिसमेल** 3 ।

खाल उधड़ जाना— **कैमोमिला** 6, **लाइको** 6, **मर्कसोल** 6 ।

उँगली का घाव— **साइलीशिया** 3x, **आर्सेनिक** 6, **लैकेसिस** 6 ।

सम्पूर्ण शरीर में काले दाग पड़ना— **बैप्टीशिया** ।

त्वचा पर घाव— **कैल्केरिया** 6, **हिपर - सल्फर** 30, 200 **लैकेसिस** 30 **लाइको** 30, 200 **नाइट्रिक एसिड** 30 **पेट्रोलियम** 30, 200 **साइलीशिया** 30 आदि।

नासूर— **बेलाडोना** 6, 30 **मर्क्युरियस** 200, **हिपर सल्फर** 30, **मेजेरियम** 30, **आर्सेनिक** 30, **एसाफिटिडा** 6, 30, **पल्सेटिला** 6, 30 **रसटाक्स** 6, 30 **साइलीशिया** 3x, 6 30, 200 ।

अंगुलबेड़ा— **एमोनकार्ब, एमोनम्यूर, एपिस, आर्निका, एलम, हिपर सल्फर, कैल्मिया, मर्क, लैकेसिस आदि** । सभी औषधियाँ 6 या 30 शक्ति में।

कार्बङ्कल— **एन्थ्रासिनम, आर्सेनिदम, टैरेण्टुला, माइरिस्टिका, कार्बोलिक-एसिड, लैकेसिस आदि - लक्षणानुसार शक्ति में दें** ।

भगन्दर— **बेलाडोना** 3x, **मर्कवाइवस** 3x, **हिपर सल्फर** 3 **वि०, सिलिका** 30, **कैल्केरिया फ्लोर** 12x, **कैल्केरिया कार्ब** 30, **नक्सवोमिका** 30 ।

मलद्वार का फटना— **नाइट्रिक एसिड** 6, 30, **इस्क्यूलस** 3, **ग्रैफाइटिस** 6, **रैटानिया** 3, **आर्स** 3, **हैमामेलिस** ।

मलद्वार के बाहर खुजली— **रेडियम ब्रोमेटम** 30, **सल्फर** 30, **लाइको** 30, **आर्स** 30 **नेट्रमम्यूर** 12x **वि०, पेट्रोलियम** 30 ।

अपरस— **सल्फर** 30 **आर्सेनिक** 30, **फास्फोरस** ।

एलोपैथिक - चिकित्सा

खुजली— (1) एक्सट्रेक्ट ऑफ नक्सवोमिका 3 ग्रेन, प्यूरीफाइड औकसवाइल 6 ग्रेन, गम (चूर्ण किया हुआ) आवश्यकतानुसार ।

इन सबको मिलाकर 23 गोलियाँ बना लें । दिन में तीन बार 1-1 गोली खिलायें ।

(2) सल्फर 2 भाग, कार्बोनेट ऑफ पोटाश 1 भाग, सफेद मरहम 8 भाग सबको मिलाकर लगायें ।

स्त्रियों की योनि में खुजली— कैम्फर 30 ग्रेन, कैलोमल 40 ग्रेन, चर्बी 1 औंस, रेक्टीफाइड स्प्रिट आवश्यकतानुसार । सबको मिलाकर लगायें ।

बच्चों की खुजली— सल्फर आधा ड्राम, बैंजोएट लार्ड 1 औंस—दोनों को मिलाकर लगायें ।

गुदा की खुजली— वैसलीन एक औंस, मैन्थोल 4 ग्रेन, कार्बोलिक एसिड 4 ग्रेन— सबको मिलाकर लगायें । यह गुदा की खुजली में भी हितकर है ।

खुजली की पेटेण्ट दवायें— स्कैबेट्रोन, एस्केबिजाल टेटामोसाल आदि । कार्टिजोन युक्त मरहम हर प्रकार की खुजली पर काम करते हैं ।

खुजली के इञ्जेक्शन— पकने वाली खुजली में डाइक्रिस्टिन का इञ्जेक्शन लगाना लाभकर रहता है ।

दाद— (1) क्राइसोफेनिक एसिड 1 ड्राम, बोरिक एसिड 1 ड्राम, जिङ्क आक्साइड 1 ड्राम, कैम्फर आधा ड्राम, टिंक्चर आयोडीन 1 ड्राम, वैसलीन 9 औंस— सबको मिलाकर दाद पर लगायें ।

(2) कुर्सियों सत्बलीमेण्ट 4 ग्रेन, टिंक्चर बैञ्जोएट 1 औंस—दोनों को मिलाकर लगायें ।

(3) पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

निक्सोडर्म, एफकार्लिन आइण्टमेण्ट आदि ।

छाजन— (1) सल्फेट ऑफ मैग्नेशिया 1 ड्राम, बाई कार्बोनेट ऑफ सोडा 60 ग्रेन, टिंक्चर ऑफ जिंजर 15 बूँद, पानी 1 औंस— यह 1 खुराक है । ऐसी खुराकें 4-4 घण्टे पर दें ।

(2) लाइकर कार्बोनिस डिटर्जेण्ट आधा ड्राम, लाइकर प्लम्बम सब एसीटास आधा ड्राम, बाइट प्रेसीपिटेट ऑफ चाक 15 ग्रेन तथा वैसलीन 1 औंस—इन सबको मिलाकर लगायें ।

पित्ती— (1) कार्बोनेट ऑफ पोटाश 30 ग्रेन, गुलाबजल 12 औंस, स्प्रिट रेक्टीफाइड आधा औंस— इसे मिलाकर रोगी-स्थान पर कपड़े से लगायें ।

(2) फीवर टेब्लेट 24 मिग्रा. सोडिसमबाई कार्बोनेट 400 मिग्रा. 24 घण्टे में ऐसी 2-3 पुड़िया दें ।

(3) पित्ती की पेटेण्ट औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

नाडिल लाजीपेन, जीट एण्टीस्टिन आदि ।

(4) पित्ती पर लाभ करने वाले इञ्जेक्शन निम्नलिखित हैं—

कैल्शियम एड्रेनेलीन, ब्रोनेट, एण्टिस्टिन आदि ।

घम्हौरी— बोरिक एसिड 1 औंस, जिङ्क आक्साइड 1 औंस तथा स्टार्च 1 औंस सबको मिलाकर घम्हौरियों पर लगायें ।

झाँई मुँहासे—( ) स्प्रिट ऑफ कैम्फर 2 ड्राम प्रेपिटेटड सल्फर आधा औंस, लाइमवाटर 1 औंस—सबको मिलाकर मुंहासों पर लगायें ।

(2) ग्लिसरीन 2 ड्राम, कार्बोलिक एसिड 2 ड्राम, मिल्क ऑफ सल्फर 2 ड्राम, रेक्टीफाइड स्प्रिट 2 ड्राम—सबको मिलाकर मुँहासों पर लगायें ।

पामा खुजली—वैसलीन $12\frac{1}{2}$ औंस, फ्लावर ऑफ सल्फर 2 औंस, बाई कार्बोनेट ऑफ पोटाशियम 1 औंस, ऑयल ऑफ विटर एनमण्डस 1 ड्राम, पहले वैसलीन को धीमी आग पर पकायें । फिर उसमें सब वस्तुओं को एक-एक करके मिला दें । यह पामा खुजली पर बहुत लाभकारी है ।

जहरवाद—(1) सेप्टानलीम (ग्लेक्सो) 8 टिकिया, पीलोनिन (ग्लेक्सो) 8 टिकिया तथा ग्लूकोज 'डी' 1 ड्राम । इन सबको मिलाकर 8 पुड़िया बना लें तथा प्रत्येक 3 घण्टे बाद प्रयोग में लायें ।

(2) निम्नलिखित इञ्जेक्शन हितकर हैं—

पेनिसिलीन, सल्फाथियाजाल, सल्फाडियाजीन, स्ट्रैप्टोकोकस वैसलीन आदि ।

जख्म/घाव— (1) एक्रिप्लेविन 1 ड्राम 'डिस्टिल्ड वाटर 20 औंस— इससे लोशन गॉज में भिगोकर लगायें ।

(2) सल्फासीटामाइड 1 ड्राम, नार्मलसैलाइन 50 सी० सी०— इन्हें मिलाकर गॉज में भिगोकर लगायें ।

पेटेण्ट दवायें— (1) सल्फानिलामाइड पाउडर, थियाजामाइड पाउडर सीबाजल पाउडर, आयडोफार्म पाउडर, पेनिसिलीन आइण्टमेण्ट, स्ट्रैप्टो माइसिन वि०, पेनिसिलीन आइण्टमेण्ट, बेलाडोना प्लास्टर, फ्येयोजेल स्ट्रिक्नीन आदि ।

पेटेण्ट इञ्जेक्शन—डायक्रिसटन, पेनिसिलीन कैल्शियम आदि ।

विभिन्न चर्म-रोग—अनेक प्रकार के चर्म-रोगों पर लाभ करने वाली औषधियाँ निम्नलिखित हैं—

आयोडीन 50 ग्राम, पोटाशियम आयोडाइड 25 ग्राम, डिस्टिल्ड वाटर 25 मिलीलीटर, अल्कोहल (60 प्रतिशत शक्ति का) 90 मि. ली. । आयोडीन तथा पोटाश को पानी में घोलकर अल्कोहल को इतना मिलाया कि कुल टिंचर

100 मिलीलीटर को मात्रा में तैयार हो जाय । यह अनेक प्रकार के चर्म-रोग में लाभकारी है ।

(2) विभिन्न चर्म-रोगों में निम्नलिखित इञ्जेक्शन प्रयुक्त किये जाते हैं—

पेनिसिलीन, बिस्मथ, सीबाजाल, न्यूसालबर्शन, सल्फार्खेलानोल, मैफोसाइड, चालमोगरा ऑयल, न्यूकलोन, लैक्सीप्रोटीन, लैक्टोनल, सायोथायाजोल, साइनीगाइड, ऐण्टीसेप्टिक, वैक्सीन, एण्टीस्ट्रोप्रो कोक्ससीरम आदि ।

इन इञ्जेक्शनों के लाभ आदि का विवरण इनके पैकिंग पर छपा रहता है ।

स्त्रियों के रोग

स्त्रियों को होने वाली कुछ प्रमुख व्याधियों की चिकित्सा के लिए औषधियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है । आयुर्वेदिक तथा यूनानी-योग एक साथ दे दिये गये हैं ।

यूनानी तथा आयुर्वेदिक -चिकित्सा

प्रदर— (1) अशोक की छाल 2 तोला को गाय के दूध में पकाकर तथा मिश्री मिलाकर नित्य सुबह-शाम कुछ दिनों तक पीते रहने से घोर 'रक्त-प्रदर' भी अवश्य ठीक हो जाता है ।

(2) पके हुए गूलर के फल को सुखा लें । फिर उसे कूट-छानकर, उसमें समभाग मिश्री मिलाकर रख लें । बर्तन का मुँह बाँधकर रखें । इस चूर्ण को नित्य प्रातः-सायं दूध अथवा पानी के साथ सेवन करते रहने से रक्त प्रदर अवश्य ठीक हो जाता है ।

(3) प्रातः-सायं एक-एक पका हुआ केला 6-6 माशे शुद्ध के साथ खाते रहने से 8 दिन में ही प्रदर रोग में लाभ दिखाई देने लगता है । यदि किसी को सर्दी का अनुभव हो तो इसमें 4 बूँद शहद भी मिला लेना चाहिए ।

(4) कड़वे नीम की छाल के रस में 1 तोला में थोड़ा-सा सफेद जीरा डालकर सात दिन तक पीने से उदर-रोग नष्ट हो जाता है ।

(5) कैथ के पत्ते और बाँस के पत्तों को समभाग लेकर सिल पर पीसकर लुगदी बना लें । इस लुगदी को शहद में मिलाकर खाने से तीव्र प्रदर रोग भी दूर हो जाता है ।

(6) भिण्डी की जड़ सूखी हुई 10 तोला तथा पिंडारू (सुथनी) सूखा हुआ

10 तोला लेकर कूट-पीस छानकर रख लें । इसमें से 6-6 माशे चूर्ण को पाव भर गाय के दूध के साथ 1 तोला मिश्री मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करते रहें । यदि कभी दूध न मिले तो थोड़ी-सी मिश्री मिलाकर पानी से ही दबा को उतार लें । इसमें 15-20 दिन में ही श्वेत-प्रदर अवश्य ठीक हो जाता है ।

(7) चौलाई की जड़ को चावलों के पानी के साथ पीसकर तथा उसमें रसोत और शहद मिलाकर पीने से हर प्रकार के प्रदर रोग नष्ट हो जाते हैं ।

(8) आँवले के बीजों को पानी के साथ सिल पर पीसकर, उसे पानी में ही मिलादें । ऊपर से शहद और मिश्री भी मिला दें । इस पानी को पीने से 3 दिन में ही श्वेत-प्रदर नष्ट हो जाता है ।

(9) सतावर, असगन्ध, सफेद मूसली, रूमी मस्तङ्गी और राल—इन्हें दो-दो तोला, चाँदी के वर्क 6 माशा तथा मिश्री 10 तोला लें । सबको कूट-पीस-छानकर तथा 21 पुड़िया बनाकर रख लें । नित्य एक पुड़िया गाय के दूध के साथ सेवन करते रहने से श्वेत-प्रदर दूर हो जाता है ।

योनि का प्रदाह— प्रतिदिन आँवलों के रस में चीनी मिलाकर पीने अथवा कमलिनी की जड़ को पानी में पीसकर पीने से योनि का दाह और जलन दूर होते हैं ।

योनि को दुर्गन्ध— पहले अमलतास के काढ़े से योनि को धोकर बाद में बच, अडूसा कड़वे परवल, प्रियंगु के फूल तथा नीम- इनके समभाग चूर्ण की योनि में रखने से योनि की दुर्गन्ध तथा उसका लिबलिबापन दूर हो जाता है ।

योनि की खुजली— गिलोय, हरड़, आँवला तथा जमालघोटा—इनका काढ़ा बनाकर, उस काढ़े की धार से योनि को धोने पर योनि की खुजली दूर हो जाती है ।

योनि से पानी आना— कत्था, हरड़, जायफल, नीम के पत्ते और सुपारी— इन्हें महीन पीसकर छान लें । फिर इस चूर्ण को मूँग के यूष में मिला कर सुखा लें । इस चूर्ण को योनि में डालने से उसमें पानी आना बन्द हो जाता है और वह सिकुड़ जाती है ।

योनि-शूल— (1) कड़वे नीम की निबौलियों को नीम के रस में पीसकर योनि में रखने अथवा लेप करने से योनि-शूल मिट जाता है ।

(2) अरण्डी के बीजों को नीम के रस में पीसकर गोलियाँ बना लें । इन गोलियों को योनि में रखने अथवा पानी में पीसकर इनका लेप करने से योनि-शूल मिट जाता है ।

योनि-रोग— घी, तेल अथवा शहद में भीगे रूई के फाहे को योनि में बहुत दिनों तक रखे रहने से हर प्रकार के योनि-रोग नष्ट होते हैं ।

योनि-कन्द— त्रिफला के काढ़े में शहद डालकर योनि में पिचकारी देने से 'योनि-कन्द' रोग ठीक हो जाता है ।

रजोधर्म— (1) लाल गुड़हल के फूलों को काँजी में पीसकर पीने से बन्द मासिक-धर्म पुनः होने लगता है ।

(2) गाजर के बीजों को सिल पर पीसकर तथा पानी छानकर पीने से बन्द हुआ मासिक-धर्म खुल जाता है ।

अत्यार्त्तव (रजःस्राव का अधिक मात्रा में आना तथा निश्चित समय के बाद भी खून गिरना)— (1) मसूर, अरहर और उड़द तीनों 2 तोला तथा साँठी का चावल 1 तोला— इन चारों को जलाकर राख कर लें । हथेली पर थोड़ी सी राख रखकर प्रातः-सायं फाँकने से योनि से खून बहना अर्थात् पैरजारी होना बन्द हो जाता है ।

(2) अनार की छाल को औटाकर 1 तोले की मात्रा में पीने से लाभ होता है ।

ऋतुस्राव की अधिकता— मासिक-धर्म के दिनों में उचित परिणाम से अधिक मात्रा में रक्त निकलने पर निम्नलिखित उपचार करें—

(1) लोध पठान, गेरू तथा सामू— इन तीनों को बराबर लेकर महीन कूट छानकर चूर्ण बना लें । 4-4 माशे चूर्ण प्रातः-सायं दूध के साथ सेवन करते रहने से अधिक खून आना बन्द हो जाता है ।

(2) अनार की छाल को औटाकर 1 तोला पीने से अत्यार्त्तव रोग दूर हो जाता है ।

(3) रसौत और लाख 3-3 माशा को महीन पीसकर दो खुराक बना लें । एक खुराक सुबह और एक शाम को खिलायें । 2-3 दिन तक इसके नित्य प्रयोग से खून आना बन्द हो जायगा ।

(4) रसौत, बबूल का गोंद और रालधूना— इन तीनों को 3-3 माशा लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लें, मासिक-धर्म के दिनों में 1-1 पुड़िया प्रातः सायं लेकर ऊपर से ताजा गुनगुना पानी पी लें । 6 दिन तक नित्य प्रयोग करते रहने से मासिक-धर्म में अधिक रक्त जाना बन्द हो जायगा ।

ऋतुस्राव में कमी— ऋतुस्राव में उचित परिमाण से कम खून आने पर निम्नलिखित उपचार करें—

(1) बादाम की गिरी 7 अदद को रात के सम पानी में भिगो दें । प्रातःकाल इन्हें पीसकर 1 रत्ती केशर तथा 2 तोला मक्खन मिलाकर खायें । 40 दिन तक नित्य सेवन करते रहने से ऋतुस्राव ठीक हो जायगा ।

कष्टार्त्तव— ऋतुस्राव के समय अधिक कष्ट होने पर निम्नलिखित उपचार करें—

असली नाग-केशर तथा मिश्री को समभाग लेकर, कूट-पीस -छानकर चूर्ण बनालें 6-6 माशे चूर्ण प्रातः-सायं गाय के दूध के साथ सेवन करते रहने से ऋतु विकार, कमर तथा पेड़ू का दर्द आदि शिकायतें दूर हो जायेंगी ।

अनियमित ऋतुस्राव— ऋतुस्राव की अनियमितता में निम्नलिखित उपचार हितकर हैं—

बबूल (कीकर) का गोंद 3 तोला, छोटी इलायची के दाने 1 तोला, असगन्ध नागौरी 5 तोला तथा शतावर 5 तोला—सबको कूट-पीस कर छान लें । 3-3 माशा चूर्ण को नित्य प्रातः सायं गाय के धारोष्ण दूध इके साथ 40 दिन तक सेवन करते रहने से अनियमित ऋतुस्राव ठीक हो जाता है ।

हिस्टीरिया— भुनी हींग 1 तोला, मीठी बच 2 तोला, सेंधा नमक 8 तोला, मीठी कूट 4 तोला तथा वायविडिङ्ग की छाल 16 तोला सबको कूट-पीस छानकर रख लें । इस चूर्ण को 3-3 माशे की मात्रा में नित्य दिन में तीन बार गरम पानी के साथ सेवन करते रहने से बहुत शीघ्र ही हिस्टीरिया रोग जड़ से चला जाता है ।

स्तन-पीड़ा— (1) इन्द्रायण की जड़ को पानी या बल के मूत्र में घिसकर लेप करने से स्तनों की पीड़ा और सूजन तुरन्त मिट जाती है ।

(2) नीम की निबौलियों का तेल चुपड़ने से स्तनों का पकना कठिन हो जाता है । स्तन पकने की अत्युत्तम औषध है ।

स्तनों का ढीलापन— (1) कमलगट्टे की गिरी को महीन पीस-छान कर दूध या दही के साथ पीने से दूध खूब उतरता है तथा वद्धावस्था में भी स्त्री के स्तन कठोर हो जाते हैं ।

(2) भैंस का लौनी, कूट, खिरैटी, बच और बड़ी खिरैटी- इन सबको पीसकर स्तनों पर लगाने से स्तन कठोर और पुष्ट हो जाते हैं ।

योनि-संकोचन— बेंगन को सुखाकर, पीसकर चूर्ण कर लें । इस चूर्ण को योनि में रखने से वह सिकुड़कर कठोर हो जाती है ।

(2) समन्दरझाग और हरड़ के बीजों की गिरी को समभाग पीस लें । इस चूर्ण को योनि में रखने से वह तङ्ग हो जाती है, अर्थात् ढीली योनि सिकुड़ जाती है ।

बाँझपन— (1) कायफल को कूट-छानकर तथा समभाग शक्कर मिलाकर रख लें । ऋतु-स्नान के बाद तीन दन तक हथेली भर खायें । दूध-भात का पथ्य लें । तत्पश्चात् सहवास करने से गर्भ ठहर जाता है ।

(2) एक समन्दर-फल को थोड़े-से दही में मिलाकर निगल जाने से गर्भ ठहर जाता है ।

(3) नागकेशर तथा सुपारी को समभाग लेकर पीस-छान लें, इसे 3 से 6 माशे तक सेवन करते रहने से गर्भ ठहर जाता है ।

पुत्रोत्पत्ति—गर्भवती स्त्री यदि ढाक के पत्ते को दूध में पीसकर पिये तो उसके गर्भ से बलवान पुत्र का जन्म होता है ।

गर्भनिरोध— (1) ढाक के बीजों की राख को ठण्डे पानी के साथ पीने से स्त्री का गर्भ नहीं ठहरता है ।

(2) करेले का रस पीने से गर्भ नहीं ठहरता ।

(3) तालीस-पत्र और गेरू—इन दोनों को 2 तोला ठण्डे पानी के साथ 4 दिन तक पीनि से गर्भ नहीं ठहरता और स्त्री बाँझ हो जाती है ।

गर्भिणी (गर्भवती) स्त्री के, विभिन्न रोगों की सामान्य चिकित्सा में नीचे लिखे योग उपयोगी सिद्ध होते हैं-

ज्वर— (1) लाल चन्दन, सारिबा, लोध, दाख और मिश्री—इन्हें समभाग लें । इनका काढ़ा पीने से गर्भिणी-स्त्री का ज्वर शान्त हो जाता है ।

(2) बकरी के दूध के साथ पिसी हुई सोंठ का सेवन करने से गर्भवती स्त्री का विषम-ज्वर ठीक हो जाता है ।

अतिसार— (1) ईसबगोल 4 माशा को 2 तोला पानी में भिगोकर उसमें थोड़ी-सी मिश्री डालकर, भोजन के बीच में खाने से गर्भिणी का अतिसार (दस्त) दूर हो जाता है ।

(2) केवल बकरी का दूध पीने से गर्भवती स्त्री का अतिसार दूर हो जाता है ।

(3) आम की पुरानी गुठली की मीगी, बेलगिरी, धनियाँ और लोधकर इन चारों वस्तुओं को समभाग लेकर, चूर्ण बनालें । उस चूर्ण के बराबर मिश्री

पीसकर उसी में मिला दें । इस चूर्ण को 3-3 माशे की मात्रा में दही के साथ सेवन करते रहने से गर्भावस्था का अतिसार दूर हो जाता है ।

ग्रहणी— आम की छाल और जामुन की छाल का काढ़ा बनाकर उसमें खीलों का सत्तू मिलाकर खाने से गर्भिणी का ग्रहणी-रोग शान्त हो जाता है ।

पेचिश— खिचड़ी में दही मिलाकर खिलायें ।

गर्भस्राव— (1) सिंघाड़ा कमल-केशर, दाख, कसेरू, मुलहठी और मिश्री। इन्हें गाय के दूध में पीसकर पीने से गर्भस्राव रुक जाता है ।

(2) कुम्हार बर्तन बनाते समय अपने हाथ में लगी हुई जिस मिट्टी को पोंछता जाता है, उस मिट्टी को लाकर गर्भिणी स्त्री को पिलाने से गिरता हुआ गर्भ थम जाता है ।

(3) गूलर की जड़ या छाल का काढा बनाकर गर्भवती स्त्री को पिलाने से गर्भस्राव रुक जाता है ।

मितली और वमन— (1) गुलकन्द और मक्खन 1-1 तोला मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम दिन में तीन बार चटाने से गर्भवती की मितली और वमन रुक जाती है ।

(2) अनार अथवा सन्तरे का रस चूसने से भी वमन और मितली में लाभ होता है ।

पेट का दर्द— सफेद जीरा 1 तोला, सोंठ 6 माशा तथा काला नमक 3 माशा को पीसकर रखलें । इसे 3-3 माशे की मात्रा में खिलाने से गर्भिणी का पेट दर्द दूर हो जाता है ।

सिर दर्द— (1) दूध में लाल शक्कर मिलायें ।

(2) धनियाँ पीस माथे पर लगायें ।

(3) हरड़ का मुरब्बा अथवा गुलकन्द 2 तोला खिलाने से कब्ज दूर हो जाता है और कब्ज के कारण होने वाला सिर दर्द भी शान्त हो जाता है ।

खाँसी मुलहठी और भुना हुआ सुहागा 1-1 तोला तथा बबूल का गोंद 6 माशा को पीस कर रखलें । इसे 4-3 रत्ती की मात्रा में थेड़े से शहद में मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम को चटाने से गर्भिणी की खाँसी दूर होती है ।

थूक अधिक आना— पोस्त, अनार या बबूल की छाल 2 तोला को आधा सेर पानी में उबालकर, उस पानी से बार-बार कुल्लियाँ करायें, तथा भोजन के बाद 3 माशा सफेद जीरा को महीन पीसकर शहद के साथ चटायें ।

दिल की धड़कन— सेब का मुरब्बा 2 तोला चाँदी के बर्क में लपेट कर खायें। यदि कब्ज हो तो पहले उसे दूर कर दें।

कब्ज—(1) लाल शक्कर मिला हुआ दूध रात को पिलायें।

(2) गुलकन्द 2से 4 तोला तक खिलायें।

(3) कब्ज अधिक होने पर अरण्डी के तेल 3-3 तोला को दूध में मिलाकर पिलायें।

भग की खुजली— (1) भग को प्रतिदिन गरम पानी से धोयें तथा कपूर को गुलाब के अर्क में घोलकर लेप करें।

(2) रसौत को गुलाब में घोलकर लेप करें।

प्रसव में विलम्ब— प्रसव होने में विलम्ब हो रहा तो तो निम्नलिखित टोटका-उपचार हितकर सिद्ध होते हैं :-

(1) घोड़ी की लीद और कबूतर की बीट को पानी में घोल कर गर्भिणी को पिला देने से सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है।

(2) लाल कपड़े में थोड़ा सा नमक बाँधकर, गर्भिणी के बाँये हाथ की ओर लटका देने से प्रसब बिना कष्ट के हो जाता है।

(3) बारहसिंगे का सींग स्त्री के सतन पर बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

(4) केले की गाँठ को कमर में बाँध देने से तुरन्त बच्चा हो जाता है। ज्योंही प्रसव हो जाय और जेर निकल चुके, गाँठ को खोलकर फेंक देना चाहिए।

(5) कड़वे नीम की जड़ को गर्भिणी की कमर में बाँध देने से बच्चा तुरन्त हो जाता है।

प्रसूता स्त्री के रोगों में निम्नलिखित उपचार करें—

सूतिका ज्वर— (1) सोंठ काँकड़ासिंगी तथा पीलामूत— इन्हें एकत्र मिलाकर सेवन करने से प्रसूता स्त्री का ज्वर तथा वात-रोग नष्ट हो जाते हैं।

(2) दशमूल काढ़े में पीपलों का चूर्ण डालकर गुनगुना पीने से बढ़ा हुआ प्रसूति-रोग शान्त हो जाता है।

प्रसूता का योनि-शूल— बेल और भाँगरे की जड़ को सिर पर पानी के साथ पीसकर, मदिरा के साथ पीने से योनि-शूल तुरन्त शान्त हो जाता है।

प्रसूता की योनि के घाव— तूम्बी के पत्ते और लोध— इन दोनों को

समभाग लेकर खूब पीसकर योनि में लेप करने से घाव शीघ्र भर जाते हैं।

प्रसूता की भग की सूजन— नीम के पत्ते 5 तोला तथा अफीम के डोड़े 2 तोला को 2 सेर पानी में खूब उबालें। उस पानी में साफ कपड़े की गद्दी को भिगोकर भग तथा पेडू को सेंकने से प्रसव के बाद आई हुई योनि की सूजन दूर हो जाती है।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

विभिन्न स्त्री-रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का सेवन हितकर सिद्ध होता है। मात्रा का निर्णय आवश्यकता के आधार पर करें।

रक्त-प्रदर— **कैल्केरिया कार्ब** 30, 200, **पल्सेटिला** 6, **सीपिया** 6, 200, **क्रियाजोट** 6, **ग्रैफाइटिस** 30, 200 **सल्फर**।

रक्त प्रदर— **चायना** 6, 200, **काक्युलस** 6।

योनि-प्रदाह— **एकोनाइट** 3x, **मर्क्युरियस** 3, **सीपिया** 12, **आर्निका** 3।

योनि की सड़न— **बेल** 3, **आर्स** 6, **लैकेसिस**।

योनि की खुजली— **सल्फर** 30, **डलकिस** 6, **एम्ब्राग्रीशिया** 30, **एपिसमेल** 30, **कैल्केकार्ब** 30, **कोपेवा** 6, **क्रोटनटिग** 6।

योनि का कड़ा होना— **कोनायम** 6, **बेल** 3।

योनि का नासूर— **हिपर** 6, **सल्फर** 30, **लाइको** 30, **थूजा** 30, **सीपिया** 30।

योनि की स्थान-च्युति— **स्ट्रैनम** 6, **क्रियोजोट** 6।

योनि का आक्षेप— **सिलिका** 6, **बेलाडोना** 6, **इग्नेशिया** 6, **नक्सवोमिका** 30।

योनि की सूजन— **कैल्केरिया- कार्ब** 30, **आरममेट** 30, **हिपरसल्फर** 30, **लैकेसिस** 30, **लाइकोपोडियम** 30, **थूजा** 30, **सल्फर** 30।

रजोरोध— **एकोन** 30, **बेल** 6, 30, **ब्रायोनिया** 30, **नक्सवो०** 30, **सीपिया** 30, 200, **ग्रैफाइटिस, थूजा** 30, 200, **पल्सेटिला** 6, **इग्नेसिया** 6।

कष्टार्त्तव— **सीपिया** 30, **सल्फर** 30, 200, **सैंगुइनेरिया** 30, 200, **प्लम्बम** 30, 200, **प्लैटिनम** 30, **नक्सबोमिका** 30, 200 **ग्रैफाइटिस** 6x, 30, **क्रियोजोट** 12, **कैल्केरिया-कार्ब** 30 आदि।

अत्यार्त्तव— **हाइड्रैस्टिस** 1x, **हाइड्रैस्टिनाइन** 3x, **बोरैक्स** 6, **इग्नेशिया एमेरा** 6, **सैबाइना**।

अनियमित रक्तस्राव— **कोनाइम** 3, 30 **पल्सेटिला, चायना** 6 ।

ऋतुस्राव की अधिकता— **आर्निका, कैमोमिला, कोक्स, इरिजियन, फेरम, हायोसियामस, हैमामेलिस, इपिकाक, प्लेटिना, सिपिया, सिकेलि** ।

ऋतुस्राव में कमी—**पल्सेटिला** 6, **सीपिया** 30, **फेरम** 6, **सल्फर** 30, **ग्रैफाइटिस** 6 **कार्बोवेज** 6, 30 ।

हिस्टीरिया— बेहोशी के समय निम्नलिखित उपचार करें—

नाक के पास **कैम्फर** या **एमोनिया** रक्खें अथवा **मस्कल** 3 का सेवन करावें।

कारणानुसार निम्नलिखित उपचार करें—

रजःस्राव की अधिकता अथवा रजःस्राव एकदम न होने के कारण उत्पन्न रोग में— प्लैटिना 6, 30 ।

ऋतुकाल में दर्द अथवा रजःस्राव बन्द होने के कारण उत्पन्न रोग में —**पल्सेटिला** 6 **सिलिका** 30 **सैबाइना** 6 ।

जरायु के विकार के कारण उत्पन्न रोग में— **सिमिसिफ्यूगा** 3 ।

पेट में गोला-सा उठता अनुभव होने पर— **इग्नेशिया** 6, 30 ।

बेहोशी के समय प्रलाप के लक्षणों में— **बैलेरियाना** 3 ।

जरायु के दर्द में— **सिमिसिफ्यूगा** 3x, 30, **आर्निका** 6 ।

जरायु के प्रदाह में— **विरेट्रम विरिडि** 3x, **नक्सवोमिका** 30, **पाइरोजेन** 30, **बेलाडोना** 6 ।

जरायु में रक्तस्राव— **सैबाइना** x, **हैमामेलिस** 3x, **सिकेलि** 3 ।

जरायु में अर्बुद— **कैल्केरिया आयोड** 2x, **वि०, लैकेसिस** 30, **सिलिका** 6x **वि० सिकेलि** 2x ।

जरायु के स्थान-च्युति— **सीपिया** 12, **आरमम्यूर** 6, **आमरमेट** 3x, **वि० फेरम आयोड** 3x **वि० बेलाडोना** 3x ।

जरायु का फूल उठना— **आरमम्यूर** 6x, **सीपिया** 6 ।

जरायु का निकलना— **सीपिया** 6, **कैल्केरिया कार्ब** 30, **मर्कसोल** 6 ।

डिम्बकोष का प्रदाह— **एकोनाइट** 3x, **एपिस** 6, **लैकेसिस** 6, **कोनायम** 6, **आरमम्यूर नैट** 3 **वि० सिमिसफ्यूगा** 30 ।

डिम्बकोष का शोथ— **एपिस** 3, **आयोड** 6, **सिकेलि** 3, **लाइको** 6, 30 ।

डिम्बकोष की स्थान-च्युति— **कोनायम** 6, **ब्यूफो** 6 ।

डिम्बकोष में दर्द— **नैजा** 3, **सिमिसिफ्यूगा** 3, **हैमामेलिस** 3x ।

डिम्बकोष का कड़ापन— **आरमम्यूर नैट** 3x, **वि०, ग्रैफाइटिस** 6, 30 ।

स्तनों में वेदना— **बेलाडोना** 3x, **हिपर-सल्फर** 6x, **ब्रायोनिया** 3x, **साइलीशिया** 30 ।

स्तनों में घाव— **फाइटोलैका, हिपर, ग्रैफाइटिस, साइलीशिया, सल्फर आदि** ।

बाँझपन— **कोनायम** 3, **बोरैक्स** 6 ।

गर्भपात या गर्भस्राव— **सैबाइना** 3x, **सिकेलि** 3, **आर्निका** 3, **कैमोमिला** 6, **बाइवर्नम** 3x, **आर्निका** 3x ।

बार-बार के गर्भपात को रोकने के लिए— **एपिस** 6, **सिकेलि** 6, **सैबाइना** ।

गर्भस्राव हो जाने के बाद दी जाने वाली औषधियाँ— **पल्सेटिला** 30, **सिकिलि** 30, 200, **चायना** 6, 200 ।

प्रसूति-ज्वर— **कैलिफॉस** 3x **वि० ऐकोनाइट** 3x, **ब्रायोनिया** 6, **चायना** 6, **एपिस** 6, **पल्सेटिला** 6, **हैमामेलिस** ।

गर्भिणी की वमनेच्छा और अरुचि— **सिम्फोरिकार्पस रेसिमोसा क्रियोजोट** 12 **विरेट्रम** 12, **लैप्टैण्ड्रा** 6, **नक्सरमस्केटा** 6, **फास्फोरस** 12, **वौविस्टा** 30 **आदि** ।

गर्भिणी का अतिसार— **एकोनाइट** 1x, 3x, **फेरमफॉस** 6x **वि०**, 30, 200 **विरेट्रम** 30, **इपिकाक** 6, 30 ।

गर्भिणी की पेचिस— **एपिल मेलिफिका** 6, **इपिकाक** 6, 30 ।

कब्ज— **नक्सवोमिका** 30, **सल्फर** 30, **ब्रायोनिया** 6, 30, **ओपियम** 30, **प्लेटिनम** 30 ।

गर्भिणी का आकस्मिक रक्तस्राव— **ब्रायोनिया** 30, **बेलाडोना** 6, **फेरम** 30 ।

प्रसव में विलम्ब— **एकोनाइट** 3x **आर्निका** 6, 30, **बेलाडोना** 30, **कोलोफाइलम** 1x, 3x, **कैलोमिला** 6, 30 **नक्समस्केटा** 30 ।

प्रसवोत्तर स्राव— **एकोनाइट** 6, **आर्सेनिक** 6, **बेलाडोना** 5, **कोलोफाइलम** 6, **हिपर सल्फर** 30, **प्लैटिना** 6, 30 ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

विभिन्न स्त्री-रोगों पर निम्नलिखित ऐलोपैथिक औषधियाँ लाभ करती हैं—

श्वेत प्रदर— (1) ऐलम 1 ड्राम, जिङ्क सल्फ 2 ड्राम, पोटाश परमैंगनेट 1 ग्रेन, होमेट्रोपिर 1 ग्रेन, गरम पानी 8 छटाँक— इन सबको मिलाकर पिचकारी द्वारा योनि-मार्ग को प्रातः-सायं धोयें ।

(2) **पेटेण्ट औषधियाँ**— ल्यूकोरा ल्यूकाल, माइकोस्टैटिन साइरन की वेनीफ्लैव, ट्राइसल्फा क्रीम, होमोर्टीन टी. फ्लैजिल ।

पेटेण्ट इञ्जेक्शन— पेनिसिलीन सोडियम, फोलिक एसिड, मिल्क विद आयोडीन, सैण्डोज कैल्शियम विद रिजैक्शन, विटामिन बी. कॉम्पलैक्स, लीवर ऐक्स्ट्रैक्ट, एण्टीसैप्टिक वैक्सीन, स्पेशल एक्जिमा बैक्सीन, एटफिलौ कोकर वैक्सीन आदि ।

हिस्टीरिया— स्प्रिट एमोनिया एरोमैटिक 15 बूँद, स्प्रिट क्लोरोफार्म 15 बूँद, टिंक्चर हायोसायमस 30 बूँद, टिंक्चर ऐसीफिटोडा 30 बूँद, टिंक्चर बैलिरियन एमोनएटा 30 बूँद, एकुआ 1 औंस । जिस समय रोगिणी को दौरा पड़ रहा हो, उस समय इस मिक्श्चर की एक-एक मात्रा दो-दो घण्टे के अन्तर से पिलानी चाहिए ।

मासिक-धर्म की अनियमितता— (1) अरगोइन 2 ग्रेन, पिलएलोज एटमिरा 3 ग्रेन, पिल एलोज फैरो— सबको मिलाकर 1 गोली बना लें । दिन में एक बार 1 गोली ही दें, इससे मासिक-धर्म ठीक समय पर आने लगता है।

(2) ऐगोमैन्साइन इञ्जेक्शन इस रोग में लाभकारी है ।

कष्टार्त्तव— एक्स्ट्रैक्ट औपियाई सकी $1\frac{1}{2}$ ग्रेन, एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना सकी $1\frac{1}{2}$ ग्रेन, क्विनीन सल्फास 15 ग्रेन— इन सबको मिलाकर 12 गोलियाँ बनालें। एक-एक गोली 3- घण्टे बाद दें । इससे मासिक - धर्म कष्ट के साथ आने की तकलीफ दूर हो जाती है ।

एर्गोटिन साइट्रेट इञ्जेक्शन इसमें हितकर सिद्ध होता है ।

गर्भाशय का रक्तस्राव— इसके लिए भी एर्गोटिन साइट्रेट टारट्रेट का इञ्जेक्शन हितकर है ।

गर्भावस्था की वमन— इसे रोकने के लिए डेबस्ट्रोज इञ्जेक्शन लाभकारी है ।

प्रसूति ज्वर— (1) सल्फापाइरीडीन 1 टेब्लेट, गम अकेशिया 2 टेब्लेट, निकोटिनिक एसिड 100 मिग्रा. सिरपग्लूकोज 1 ड्राम, एकुआ मेन्था पिपरेटा (सब मिलाकर) 9 औंस । यह एक खुराक है । ऐसी 4 खुराकें चार-चार घण्टे के अन्तर से एक दिन में दें ।

(2) **पेटेण्ट औषधियाँ**— पेण्टिडसल्फा, औरासिन, असोका-कार्डियम, पेनिटायड ।

(3) **इञ्जेक्शन**— स्ट्रैप्टो पेनिसिलीन, डायक्रिस्टन, कोलोनल अर्जेण्टम सीरम, एण्टी स्ट्रेप्टो कोक्स, पोलीविलेण्ट वैक्सीन प्योरेप्यूरेल सेप्टीसीपिया स्पेशल आदि ।

गर्भपात— टिंक्चर ओपियम 40 बूँद, एलिग्ज बाईवरनम 4 ड्राम । इसे 1 ड्राम की मात्रा में थोड़े से पानी में मिलाकर देने से लाभ होता है ।

बाँझपन— एक्स्ट्रैक्ट वाइवरनम, प्रोनियम फोलियम लिक्विड 20 बूँद टिंक्चर कार्डोयम को० 14 बूँद, टिंक्चर जेंशन 15 बूँद, तथा एकुआ 1 औंस। ऐसी एक मात्रा नित्य प्रातः-सायं मासिक-धर्म आरम्भ होने के दिन से पूर्व देनी चाहिए ।

बच्चों के रोग

बच्चों को होने वाले विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए उपयुक्त औषधियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है । आयुर्वेद तथा यूनानी योग एक साथ दिये गये हैं ।

आयुर्वेदिक तथा यूनानी-चिकित्सा

ज्वर— (1) नागरमोथा, पीपल, अतीस और काँकड़ासिङ्गी— इन चारों को महीन कूट-पीस छानकर रख लें । इस चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटने से बालकों के ज्वर, अतिसार, ज्वरातिसार, खाँसी, वमन तथा श्वास इन सब रोगों में लाभ होता है ।

(2) कुटकी का चूर्ण बनाकर, उसे मिश्री और शहद के साथ चाटने से बालकों का ज्वर नष्ट हो जाता है ।

(3) कुटकी को पानी में पीसकर ज्वर-ग्रस्त बालक के शरीर पर लेप कर देने से उसका ज्वर शान्त हो जाता है ।

अतिसार— (1) असली केशर को 1 या 2 चावल की मात्रा में घी मिलाकर चाटने से बच्चों के दस्त बन्द हो जाते हैं ।

(2) कपास के ताजा फूलों को गरम राख में भूनकर उनका रस निकाल लें। इस रस को पिलाने से बालक का अतिसार दूर हो जाता है।

(3) खस-खस के दानों को पानी में पीसकर, हलवा बनाकर खिलाने से बालकों के आँव-मरोड़ के दस्तों में लाभ होता है।

(4) बेलगिरी तथा सफेद कत्था— इन दोनों को 1-1 माशा लेकर महीन पीसकर रख लें। इस चूर्ण को 4-4 रत्ती की मात्रा में माँ के दूध के साथ प्रातः सायं सेवन कराते रहने से बच्चों के दाँत निकलते समय होने वाले दस्त बन्द हो जाते हैं।

(5) थोड़े-से प्याज के रस में बाजरा के दाने के बराबर अफीम घोल कर देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

खाँसी— (1) दाख, अडूसा, हरड़ और पीपल— इनका चूर्ण कर शहद में मिलाकर 3 या 5 दिन तक चाटने से बालकों की खाँसी श्वास एवं तमक रोग में लाभ होता है।

(2) धनिया और मिश्री— इन्हें पीसकर चावलों के पानी के साथ पिलाने से बच्चों की खाँसी और श्वास दूर हो जाते हैं।

(3) नागर मोथा, अतस, जवासा, पीपल और काँकड़ासिङ्गी इनका चूर्ण बनाकर, शहद में मिलाकर चटाने से बच्चों की पाँचों प्रकार की खाँसी ठीक हो जाती है।

(4) दाख, पीपल और सोंठ- इनका चूर्ण बनाकर, शहद और घी में मिलाकर चाटने से बच्चों की पाँचों प्रकार की खाँसी में लाभ होता है।

विसर्प— (1) घर का धूँआसा, हल्दी, कूट, राल और इन्द्र- जौ इन्हें पीसकर लेप करने से बालकों का विसर्प रोग नष्ट हो जाता है।

(2) कड़वे परवल, हरड़, आँवला, नीम और हल्दी— इनका काढ़ा पीने से क्षत, विस्फोटक-ज्वर तथा विसर्प रोग दूर होते हैं।

बादी का दर्द— सेंधा नमक, सोंठ, हींग तथा भारङ्गी— इनका चूर्ण बनाकर घी में मिलाकर खिलाने से बालकों की बादी का दर्द-दूर हो जाता है।

मूत्राघात— पीपल, सोंठ, मिश्री, शहद, छोटी इलायची और सेंधा नमक- इन सबको पीसकर तथा चटनी-सी बनाकर चाटने से बालकों के पेशाब की जलन आदि सभी मूत्र-रोग ठीक हो जाते हैं।

खुजली— (1) तिल और चावलों को एकत्र पीसकर नाभि पर लेप करने

से अथवा भारङ्गी और मुलहठी को पीसकर नाभि पर लेप करने से बालकों के खुजली, पामा, विचर्चिका आदि सब रोग दूर होते हैं।

(2) चन्दन, खस और पद्माख— इन्हें पीसकर लेप करने से बच्चों के सिध्म पामा तथा विचर्चिका आदि रोग दूर हो जाते हैं।

मुख-स्राव— सारिवा, तिल, लोध और मुलहठी इनका काढ़ा बनाकर नित्य मुँह में लगाने से अथवा मुँह धोने से बालकों के मुँह से स्राव (लार) बहना दूर हो जाता है।

तालुकण्टक— हरड़, बच और मीठा-कूट— इन्हें पानी में पीसकर लुगदी-सी बना लें। फिर उसे शहद में मिलाकर, माता के दूध के साथ पिलायें इससे बच्चे का तालु नीचे लटक जाना और उसके कारण सिर में गढ्ढा पड़ जाना तथा बच्चे का दूध न पी सकना— रोग दूर हो जाते हैं।

मुख-पाक— पीपल की छाल और पीपल के पत्तों को पीसकर शहद में मिलाकर लेप करने से बच्चों का मुख-पाख (मुँह पक जाना या मुँह आ जाना) रोग दूर हो जाता है।

कुकूणक— बच्चों की पलकों पर कुकूणक नामक रोग होता है। इन रोग के कारण आँखों में अत्यन्त पानी, स्राव तथा खुजली होती है। बच्चा आँखें बन्द किये रहता है। उसे सूरज की धूप बुरी लगती है और वह अपने मस्तक, आँख तथा नाक को घिसता रहता है।

नाभि की सूजन— (1) बकरी और मैंगनी जलाकर, उसकी राख को नाभि पर लगाने से नाभि की सूजन और पकना ठीक हो जाता है।

(2) चन्दन के बुरादे को महीन पीसकर नाभि पर बुरकने से नाभि का पकाव ठीक हो जाता है।

गुदा-पाक— शंख, मुलहठी और रसौत— इन्हें पानी में पीसकर बच्चा की गुदा पर लेप करने से उनका गुदापाक रोग (बच्चों की गुदा का पकना) ठीक हो जाता है।

अहिपूतना— शंख, सफेद सुरमा और मुलहठी- इन्हें पानी में महीन पीसकर गुदा पर लेप करने से अहिपूतना- रोग, जिसमें गुदा में खुजली और घाव हो जाते हैं, ठीक हो जाता है।

सूजन— कालीमिर्च को लौनी घी में मिलाकर सेवन करने से बच्चों की सूजन दूर हो जाती हैं।

सूखा-रोग— सेंधा नमक, त्रिकुटा, बड़ी करंज, पाढ़ और पहाड़ी करंज इन्हें एकत्र पीसकर, शहद तथा घी में मिलाकर सेवन करने से बालकों का सूखा-रोग ठीक हो जाता है।

दन्त-रोग— (1) धाय के पूल, पीपल और फलों का रस— इन्हें एकत्र मिलाकर लगाने से दाँत सहजता से जम जाते हैं ।

(2) चूना और शहद मिलाकर मसूढ़ों के ऊपरी भाग पर लगाने दाँत सहज ही जम जाते हैं।

होंठ फटना— घी में नमक मिलाकर, नित्य दिन में तीन बार नाभि पर मलने से बच्चों के होंठ फटना बन्द हो जाता है ।

डब्बा रोग (पसली चलना)— (1) बच्चे के पेट पर अरण्डी का तेल मलकर, उस पर बकायन की पत्तियाँ गरम करके, सुहाती-सुहाती बाँध देने से डब्बा रोग में लाभ होता है।

(2) कमीला 8 माशा तथा हींग 2 माशा— इन्हें पीसकर दही के तोड़ में खरल करके कालीमिर्च के बराबर की गोलियाँ बनाकर रख लें । दूध पीने वाले बालक को 1-1 गोली गरम पानी के साथ दिन में 3-4 बार दें । बड़ी आयु के बालक के लिए औषध की मात्रा बढ़ा दें । इससे डब्बा रोग (पसली चलना) ठीक हो जाता है ।

जूँ— कड़वे नीम के बीजों को पानी में मिलाकर सिर में लगाने से जूँ मर जाते हैं ।

बदहज्मी— (1) प्याज का रस पिलाने से बदहज्मी दूर हो जाती है । इससे पेट के कीड़े भी मर जाते हैं।

(2) नीबू के रस में केशर घिसकर चटा देने से अजीर्ण दूर हो जाता है।

(3) नीबू के रस में जायफल घिसकर चटा देने से पेट में रुका हुआ मल सरलता से निकल जाता है ।

अफारा—(1) हींग को पानी में पीसकर तथा गरम करके नाभि की सँड़ी के आस-पास और सूँड़ी पर भी लेप कर दें ।

(2) आक के पत्ते पर घी चुपड़ कर तथा उसे सेंककर पेट पर बाँध दें।

(3) सरसों की खली अथवा गधे की लीद को गरम करके पेट पर बाँध दें ।

कृमि— केशर तथा कपूर 1-1 चावल भर अथवा कुछ कम या अधिक मात्रा में खिलाकर दूध पिलादें।

नेत्र-रोग— (1) आँख दुखती हों तो प्याज का रस आँख में डालें ।

(2) आँख में गर्मी हो तो प्याज के रस में मिश्री मिलाकर आँखों में आँजें।

(3) आँखों में जलन हो तो गुलाब-जल के छींटे मारें अथवा केशर को घोंटकर एवं शहद मिलाकर आँख में आँजें ।

(4) आँख में दर्द हो तो नीम की कोंपलें पीसकर उनका रस निकाल कर गरम करें । यदि दोनों आँखों में दर्द हो तो उक्त रस दोनों कानों में टपकायें, यदि बायीं आँख में दर्द हो तो दाँये कान में और दायीं आँख में दर्द हो तो बाँये कान में उक्त रस टपकायें । इससे दुखती आँखों में भी लाभ होता है ।

कम सुनाई देना— सफेद कत्था को कूट-पीसकर कपड़छन कर गरम पानी में मिलाकर कान में टपकायें तथा बाद में कान को धो-पोंछकर साफ कर दें । यदि किसी जख्म आदि के कारण या चेचक के बाद बहरापन हो गया हो तो वह ठीक हो जायगा ।

मुख में घाव— (1) शहद और ठण्डे पानी को मिलाकर गरारे करायें ।

(2) बड़े बालक के मुँह में घाव हों तो सफेद चिरमिटी के पत्ते शीतलचीनी और मिश्री मुँह में रखकर चुसायें अथवा चिरमिटी की जड़ चबायें ।

पेट में दर्द— एलुआ, हल्दी, फिटकरी, नौसादर और सुहागा- इन्हें गौ-मूत्र में पीसकर गरम करके, गुनगुना रहते समय पेट पर लेप करें ।

पाँव फटना— स्त्री का दूध, गुड़, घी, शहद और गेरू सबको समभाग लेकर तथा मिलाकर पाँवों पर लेप करें ।

फोड़े-फुन्सियाँ— (1) बालक के शरीर पर फुन्सियाँ हों तो दालचीनी को लकड़ी को पानी में घिसकर उन पर लेप करें ।

(2) यदि फोड़ा हो तो आँवले की राख को घी में मिलाकर लेप करें ।

(3) यदि फोड़े-फुन्सी हों तो आँवलों को दही में मिलाकर लगायें अथवा नीम की छाल को पानी में घिसकर लगायें ।

दस्त कराना— यदि बालक को कब्ज हो और उसे दस्त कराने हों तो निम्नलिखित उपाय करें—

(1) रात के समय छुआरे को पानी में भिगोदें । प्रातःकाल उसे पानी में मसलकर निचोड़ लें तथा छुआरे को फेंक दें । फिर वही पानी पिलादें ।

(2) एक भाग दाख और एक भाग हरड़ को कूट-पीसकर नित्य 4 माशे की मात्रा में खिलायें । बालक बड़ा हो तो मात्रा में वृद्धि करदें ।

कान में कीड़ा— (1) बालक के कान में कीड़ा या मच्छर घुस जाय तो मकोय के पत्तों का रस कान में टपकायें ।

(2) यदि कन खजूरा घुस गया हो तो मरोड़फल की जड़ को अरण्डी के तेल में घिसकर 10-15 बूँद कान के भीतर डालें । इससे कीड़ा मरकर ऊपर आ जायगा ।

छोटे बच्चों के विभिन्न रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं । मात्रा का निर्णय आवश्यकतानुसार करलें ।

ज्वर— **बेलाडोना** 6, **ब्रायोनिया** 6, 30 **एकोनाइट** 6, 30 ।

अतिसार— **इपिकाक** 6, 30, **कैमोमिला** 6, 12 **चायना** 6, 30 **बेलाडोना** 6, 30 **कोलोसिन्थ** 6, 30, **सल्फर** 30 ।

सर्दी खाँसी— **एकोनाइट** 3x, **ब्रायोनिया** 3, **पल्स** 6 ।

हूप खाँसी— **ड्रोसेरा** 3x, **क्यूप्रम** 6, **इपिकाक** 6 ।

ब्रोंकाइटिस— **हिपर सल्फर** 6, **लाइको** 12 ।

बदहज्मी— **नक्सवोमिका** 30, **सल्फर** 30 ।

यकृत-वृद्धि (जिगर)— **ब्रायोनिया** 6, 30, **चेलिडोनियम** 6, 30 ।

प्लीहा— **सियोनोथस** 1, 3x, **ब्रायोनिया** ।

भूख न लगना— **पल्सेटिला** 6, 30, **नक्सवोमिका** 30 ।

अधिक भूख लगना— **स्ट्रैफिसेग्रिया** 6, 30 ।

वमन— **आर्निका** 3x, **इपिकाक** 3x ।

दूध डालना— **इपिकाक** 6, **एण्टिमक्रूड** 6, 30 **थूजा** 3, 6, **कैमोमिला** ।

कब्ज— **ब्रायोनिया** 6, 30, **पल्सेटिला** 6, **एकोनाइट** 6, 30 ।

पाण्डुरोग (पीलिया)— **कैमोमिला** 6, 12 **मर्क्युरियस** 6 ।

अधिक रोना— **बेलाडोना** 6, **कैमोमिला** 6, 12, **एण्टिम-क्रूड** 3 ।

अनिद्रा— **काफिया** 6, **ओपियम** 6, 30, **बेलाडोना** 6 ।

आँख उठना— **एकोनाइट** 3x, **बेलाडोना** 6, 30 **पल्सेटिला** 6, 30, **एपिस** 3, 30, **कैल्केरिया-कार्ब** 6, 30 ।

नाक बन्द होना— **कार्बोवेज** 6, **नक्सवोमिका** 6, 30 **एण्टिमटार्ट** 6, **मर्क्युरियस** 6 ।

गले में जख्म— **एकोनाइट** 3x, 6, **रसटाक्स** 3, 6, 30 ।

मुँह में जख्म— **सल्फर** 30, **मर्क्युरियस** 6, 30 **बौरेक्स** 6, 30, **कैल्केरिया-कार्ब** 6, 30, **वैक्टीशिया** 3x ।

शरीर फटना— **कैमोमिला** 6, 30, **लाइको** 6, 30 **कार्बोवेज** 6, 30 ।

पेट में दर्द— **चायना** 6, 30, **पल्सेटिला** 6, 30, **इपिकाक** 6, 30 ।

हिचकी— **इग्नेशिया** 6, 30, **पल्सेटिला** 6, 30, **नक्सवोमिका** 6, 30, **बेलाडोना** 6, 30 ।

हैजा— **एण्टिमक्रुड** 6, 30, **कार्बोवेज** 6, 30 **इपिकाक** 6, 30, **आर्सेनिक** 6, 3x ।

पेट में कीड़े— **साइना** 30, 200 ।

श्वास में कष्ट— **इपिकाक** 6, 30, **लोबेलिया** 1x ।

तुतलाना— **स्ट्रैमोनियम** 3, **हायोसाइमस** 2 ।

नकसीर फूटना— **आर्निका** 3, 6, **मर्क्युरियस बाइवस** 6x, **वि०** ।

नाक में जख्म— **आरममेट** 30, **कैल्केरिया-कार्ब** 30 ।

कान में दर्द— **एकोन** 3, **बेल** 3, **कैमोमिला** 12 ।

कान में पीव पड़ना— **पल्सेटिला** 3, **हिपर-सल्फर** ।

दाँत निकलते समय का कष्ट— **एकोनाइट** 3, 6, **बेलाडोना** 3, 6, **इपिकाक** 6, 30, **काफिया** 6, 30 ।

खुजली— **कार्बोवेज** 30, **इग्नेशिया** 6, 30 ।

फोड़ा-फुन्सी— **आर्निका** 6, 30 ।

घम्हौरी— **कैल्केरिया-कार्ब** 30, **कैमोमिला** 30 ।

सूखा रोग— **नक्सवोमिका** 6, 30, **एब्रोटेनम** 30, **आर्सेनिक** 30, **नेट्रमम्यूर** 30, 200, **सल्फर** 30, 200 ।

गुहेरी (अञ्जनहारी)— **पल्स** 3, **हिपर** 3, **स्ट्रैफिसेग्रिया** 3 ।

हड्डियों की कोमलता— **कैल्पेरियाफॉस** 30, 200, **एसिडफॉस** 30, 200, **रूटा** 6, 30, **वैराइटा-कार्ब** 6, 30 ।

हड्डी की विकृति— **कैल्केरिया-कार्ब** 6, 30 ।

ब्रह्म-तालु का भरना— **सल्फर** 30, 200, **कैल्केरिया-कार्ब** 30, 200 ।

सिर में रूसी— **सल्फर** 30, **कैल्केरिया-कार्ब** 30 ।

केश गिरना— **सल्फर** 6, **कैन्थरिस** 3, **कैल्केरिया-कार्ब** 30 ।

कान में एग्जिमा— **सल्फर** 30, **कैल्केरिया-कार्ब** 30 ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

बच्चों के विभिन्न रोगों में निम्नलिखित ऐलोपैथिक औषधियाँ लाभकर सिद्ध होती हैं—

ज्वर— पोटासियम साइट्रेट 40 ग्रेन, स्प्रिट ईथर नाइट्रोसाई 2 ड्राम लाइकर एमोनि एसीटेट 1 औंस, कैम्फर वाटर 5 औंस । इसमें से 1-1 ड्राम, की मात्रा दिन में तीन बार दें । यह 2 वर्ष तक की आयु के बालकों के ज्वर में हितकर है ।

अतिसार— बिस्मथ कार्ब 3 ग्रेन, सोडाबाई-कार्ब 2 ग्रेन, हाइड्रार्स क्रमक्रीटा आधा ड्राम, पल्ब इपिकार कं० $\frac{1}{3}$ ग्रेन— सबको आपस में खूब खर करलें । दिन में 3-4 बार दें ।

खाँसी— स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक 3 बूँद, स्प्रिट एलीथ 3 बूँद, क्लोरोफार्म वाटर 1 ड्राम । सबको एक साथ मिलाकर पिलायें, यह एक मात्रा है ।

पेचिश— सोडाकार्ब 1 ग्रेन-पवइपिकाक $\frac{1}{3}$ ग्रेन— इस एक मात्रा को थोड़े-से शर्बत में मिलाकर चटायें ।

पेट का दर्द— मैग्नेशिया 20 ग्रेन, टिंक्चर एसाफिटेडा 15 ग्रेन, टिंक्चर हायोसायमस 10 ग्रेन ओयम एनोसाई 12 ग्रेन, एनोंमैन्थ पिप 1 औंस तथा एकोएनीथाई 1 औंस— सबको मिला लें । हर तीन घण्टे बाद 1 ड्राम की मात्रा में देते रहें ।

कब्ज— कैस्टर ऑयल 5 बूँद, गम एकेशिया 2 ग्रेन, एलाइन वाटर 1 ड्राम । कैस्टर आयल तथा गोंद को भलीभाँति मिलायें । नित्य दिन में 3-4 बार पिलाने से बालक के कब्ज एवं पेचिश में लाभ होता है ।

दर्द (वेदना)— सोडियम बाई कार्बनिट आधा ग्रेन, स्प्रिट एमोनिया एरोमेटिक $1\frac{1}{2}$ औंस, टिंक्चर कार्डेकम कम्पाउण्ड 3 बूँद, ग्लिसरीन 5 बूँद, तथा डलवाटर 5 ड्राम । सबको एक साथ मिलाकर दिन में 2-3 बार एक-एक मात्रा देते रहें ।

अजीर्ण— पोटाशियम कार्बोनेट $2\frac{1}{2}$ ग्रेन, टिक्चर ऑफ जिंजर 3 बूँद, कम्पाउण्ड इन्फ्यूजन ऑफ जनशन 20 बूँद, इन्फ्यूजन ऑफ रोवब 60 बूँद- सबको मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करायें ।

सूजन— पोटाशियम साईट्रेट 5 ग्रेम, ग्लिसरीन 10 बूँद, क्लोरोफार्म वाटर 50 बूँद । सबको मिलाकर दिन में 2-3 बार पिलायें । यह ज्वर में भी लाभकारी हैं ।

जलन रोग— योरोट्रोवीन 2 ग्रेन, टिंक्चर और हैनहैन 2 बूँद, सीरप ऑफ ओरेञ्ज 10 बूँद, एलुआ 50 बूँद— सबको मिलाकर दिन में तीन बार दें ।

दाँत निकलते समय की तकलीफ— टिंक्चर एन्थेमफ्लोर 1 औंस, टिंक्चर कार्डयम कम्पाउण्ड $\frac{1}{2}$ औंस, ग्लिसरीन $\frac{1}{2}$ औंस— सबको मिलाकर रख लें । मात्रा- आधा ड्राम से 1 ड्राम तक । यह बच्चों के दाँत निकलते समय की तकलीफों में हितकर है ।

सूखा रोग— फास्फोरस की कमी के कारण बच्चे का शरीर सूखता जा रहा हो तो 'लैथीन' इञ्जेक्शन का प्रयोग करें ।

आक्समिक बीमारियाँ

अचानक हो जाने वाली प्रमुख व्याधियों की चिकित्सा का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है । आयुर्वेदिक तथा यूनानी योग एक साथ दे दिये गये हैं ।

आयुर्वेदिक व यूनानी-चिकित्सा

आग से जलना

(1) परवल के पत्तों को पीसकर लुगदी बनालें तथा परवल के ही पत्तों का काढ़ा पकायें । इस लुगदी तथा काढ़े के साथ सरसों का तेल पकायें । इस सिद्ध तेल को लगाने पर आग से जलने के कारण उत्पन्न व्रण, पीड़ा, जलन, फफोले, मवाद निकलना आदि सभी कष्ट दूर हो जाते हैं ।

(2) पुरानी फिटकरी या पुराने चूने को पानी में पीसकर तथा दही में मिलाकर लेप करने से आग से जलन के कारण उत्पन्न हुआ व्रण शीघ्र ठीक हो जाता है ।

(3) आग से जली हुई जगह पर असली शहद का लेप कर देने से जलन तुरन्त शान्त हो जाती है ।

(4) अनार की पत्तियों को पीसकर लगाने से आग से जलने के कारण उत्पन्न जलन शान्त हो जाती है ।

चोट लगना

(1) तीन माशा महीन पिसी हुई हल्दी को दूध के साथ फाँकें अथवा दूध में मिलाकर पियें । यह चोट लाभकर है ।

(2) गेहूँ को जलाकर महीन पीस लें । फिर उसमें समभाग घी तथा गुड़ मिलाकर प्रतिदिन 2-2 तोले की मात्रा में दूध के साथ सेवन करें । इससे चोट का दर्द दूर हो जायगा ।

(3) चूना और हल्दी मिलाकर, थोड़ा-सा गरम करके चोट वाले स्थान को सेकें अथवा उस पर बाँध दें तो चोट का दर्द दूर हो जायगा ।

मोच

(1) अरण्डी के बीज की गिरी 1 तोला को तिलों के साथ भेड़ के दूध में पीसकर खीर-सी बनालें । फिर उसे मोट वाले स्थान पर बाँध दें । इससे मोच में लाभ होगा ।

रक्तस्राव

चोट लगने, कट जाने आदि कारणों से जो रक्तस्राव हो रहा हो, उसे रोकने के लिए निम्नलिखित उपचार करें—

(1) कटे हुए स्थान पर पेशाब कर दें, इससे खूब निकलना बन्द हो जायगा ।

(2) पिसी हुई हल्दी को सरसों के तेल में मिलाकर कटे हुए स्थान पर लगा देने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है ।

(3) माजूफल की राख को घाव पर बुरकने, से उसमें से खून निकलना बन्द हो जायगा ।

(4) भुने हुए तूतिया को पीस-छानकर घा में भर देने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है ।

हड्डी टूटना

(1) चावलों के आटे में नमक मिलाकर लेप करने से टूटी हड्डी जुड़ जाती है ।

(2) इमली अथवा आम के रस का लेप करते रहने से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है ।

(3) चमेली की जड़ को पीसकर उसमें शहद मिलायें । इस लेप को वीट

वाली जगह पर लगाते रहने से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

आकस्मिक व्याधियों में नीचे लिखे अनुसार होम्यो० उपचार करें—

जलन

जले हुए स्थान पर **'कैन्थरिस मदर-टिंक्चर'** को दस-गुने पानी में मिलाकर, उसमें पट्टी भिगोकर बाँध दें । दिन में तीन बार पट्टी बाँधें । साथ ही **कैन्थरिस** 6, 30 का सेवन भी करायें ।

जल जाने के बाद जख्म भरने तथा ज्वर आदि उपसर्गों को दूर करने के लिए लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करें ।

एकोनाइट 3, 6, **कैमोमिला** 12, 30, **हिपर सल्फर** 6, 30, **पल्सेटिला** 6, 30, **कैल्केरिया कार्ब** 6, 30, **आर्सेनिक** 30, **सल्फर** 30 **तथा साइलीशिया** 6, 30 **आदि** ।

चोट

गिरने अथवा लाठी आदि लग जाने के कारण आने वाली चोट में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ दें—

आर्निका 3, 6, **बेलाडोना** 6, 30, **एकोनाइट** 3, 6, **ओपियम** 6, 30, **हामोसियामस** 6, 30 ।

मोच

ऊँची-नीची जगह में पाँव पड़ जाने आदि के कारण जाने वाली पाँवों की मोच तथा वजन न साध सकने के कारण आई हुई गर्दन की मोच में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करें—

आर्निका 2, 6, **रसटाक्स** 6, 30, **ब्रायोनिया** 6, 30, **फास्फोरस** 6, 30, **ओपियम** 6, 30 ।

रक्तस्राव (कट जाना)

चाकू, छुरी अथवा किस शस्त्र या अन्य वसृतु से शरीर के किसी भाग के कट जाने पर पहले उस स्थान से रक्त बन्द करना चाहिए । यह कार्य ठण्डे पानी की पट्टी अथवा बर्फ चढ़ाने से हो सकता है ।

'कैलेण्डुला मदर-टिंक्चर' को आठ गुने पानी में घोलकर जख्म पर लगाने से भी खून बहना बन्द हो जाता है । इसके बाद जख्म पर 1 औंस वैसिलीनम,

40 बूँद कैलेण्डुला मदर-टिंक्चर तथा आधा ड्राम बोरिक-एसिड का मरहम बनाकर घाव पर लगाने से शीघ्र लाभ होगा ।

हड्डी टूटना

सर्वप्रथम हड्डी के जोड़ को ठीक से बैठायें । फिर पीड़ित स्थान पर **'आर्निका लोशन'** की पट्टी चढ़ायें । बाद मे कैमोमिला 12, 30, **सिम्फाइटम** 6, 30 आदि औषधियाँ आवश्यकतानुसार सेवन करायें ।

हड्डी उतर जाना

हड्डी उतर जाने पर सर्वप्रथम उसे यथा-स्थान बैठायें, फिर आर्निका 6, 30 का सेवन करायें ।

कुचल जाना

कुचल जाने में निम्नलिखित औषधियों का सेवन हितकर सिद्ध होता है—

आर्निका 3, 6, **रूटा** 6, 30, **हिपर सल्फर** 3, 30, **कोनायम** 6, 30 **हाइपेरिकम** 6, 30, **एकोनाइट** 3, 6 ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

आकस्मिक व्याधियों में निम्नलिखित ऐलोपैथिक उपचार लाभप्रद सिद्ध होता है—

जलना

(1) एसिड कार्बोलिक 10 बूँद, लाइमवाटर 2 ड्राम तथा लिनसीड ऑयल 2 ड्राम— सबको मिलाकर खूब हिलायें । इस लोशन को जले हुए स्थान पर लगाना लाभकारी है ।

(2) टैनिक एसिड 10 ग्रेन, पानी 1 औंस— दोनों को मिलाकर जले हुए स्थान पर लगायें ।

चोट

एमोनिया क्लोराइड 4 ड्राम, स्प्रिट वाइन मैथिलिटेड 6 ड्राम, एसिटिक एसिड 6 ड्राम एकुआ 6 औंस— सबका लोशन बनाकर चोट वाली जगह पर लगायें । खुले हुए खाव पर यह लोशन नहीं लगाना चाहिए ।

हड्डी टूटना

हड्डी को जोड़कर प्लास्टर चढ़वायें ।

विषोपचार

सर्प-बिच्छू आदि कीड़े-मकोड़ों के काटने तथा संखिया, नीलाथोथा आदि स्थावर-विषों को खा लेने के कारण रोगी में प्राण सङ्कट में पड़ जाते हैं । ऐसे रोगियों को तुरन्त ही डाक्टरी-सहायता उपलब्ध करानी चाहिए । जब तक चिकित्सा की सहायता न मिले, तब तक प्राथमिक-उपचार के रूप में निम्नलिखित उपाय करने चाहिए—

आयुर्वेदिक व यूनानी-चिकित्सा

सर्पविष— (1) मनुष्य का मूत्र पीने से घोर सर्प-विष भी नष्ट हो जाता है ।

(2) परवल की जड़ की नस्य देने से सर्प-विष में अत्यधिक लाभ होता है ।

(3) घी, शहद, मक्खन, पीपल, अदरख, कालीमिर्च तथा सेंधा नमक लें, इसमें पीसने योग्य वस्तुओं को पीस-छान लें । फिर सबको साँप के काटे हुए व्यक्ति को पिलायें, इससे विष दूर हो जाता है ।

(4) चौलाई की जड़ को चावलों के पानी में पीसकर पीने से सर्प का विष तुरन्त उतर जाता है ।

(5) कालमिर्च 7 माशा और जमालगोटा की गिरी 7 माशा— इन दोनों को 3 कागजी नीबुओं के रस में घोंटकर कालीमिर्च के बराबर की गोलियाँ बनालें। इनमें से 1 या 2 गोली पत्थर पर रखकर पानी के साथ पीस लें तथा सर्प-दंशित मनुष्य की आँखों में आँज दें । साथ ही 2-3 गोलियाँ खिला भी दें । इससे अवश्य लाभ होता है— यह 'इलाजुलगुर्बा' का मत है ।

(6) केवल जमालगोटे की घी में पीसकर, ठण्डे पानी के साथ पीने से सर्प-दंशित व्यक्ति तुरन्त ठीक हो जाता है ।

(7) मोर के टखों (डडारों) को चिलम में रखकर तम्बाकू की भाँति पीने और धुँआ गले के भीतर उतार लेने से सर्प का विष दूर हो जाता है । यदि सर्प-दंशित व्यक्ति मूर्च्छित हो तो किसी अन्य व्यक्ति को यह चिलम पीकर उसका धुँआ मूर्च्छित रोगी की नाक में भरना चाहिए, ताकि वह उसके शरीर के भीतर पहुँच जाय ।

बिच्छू का विष— (1) जमालगोटे को पानी में पीसकर बिच्छू के स्थान पर लेप करने से ही बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

(2) कपास के पत्ते और राई—दोनों को एकत्र पीसकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लेप करने से ही बिच्छू का विष उतर जाता है।

(3) लहसन का रस 3 तोला तथा शहद 3 तोला— इन दोनों को मिलाकर बिच्छू के काटे हुए व्यक्ति को पिलाने से तुरन्त लाभ होता है ।

(4) अजाझारा (चिरचिटा, अपामार्ग या ओंगा) की जड़ को दिखाने मात्र से ही सामान्य-बिच्छू का विष उतर जाता है । यदि दंशित-स्थान पर अजाझारे (अपामार्ग) की जड़ को पानी में घिसकर लगा भी दिया जाय तो शीघ्र लाभ होगा ।

(5) कोंच के बीज को छीलकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर मलने से विष उतर जाता है ।

(6) नीबू के रस को बिच्छू के काटे हुए स्थान पर मलने से जहर उतर जाता है ।

चूहे का विष— (1) गोबर के रस में सोंठ, कालीमिर्च तथा छोटी पीपल के चूर्ण को पीसकर आँखों में आँजने से लाभ होता है तथा मूषक-विष के कारण उत्पन्न मूर्च्छा दूर हो जाती है ।

(2) कैथ के रस तथा गोवर के रस में शहद मिलाकर चाटने से लाभ होगा।

(3) सिरस की जड़ की शहद, चावलों को पानी अथवा बकरी के दूध में पीने से चूहे का विष नष्ट हो जाता है।

बर का विष

(1) पानी के साथ छोटी पीपल पीसकर बर के काटे हुए स्थान पर लेप करने से तुरन्त लाभ होता है ।

(2) गन्धक को पानी में पीसकर दंशित-स्थान पर लेप करने से बर का जरह नष्ट हो जाता है ।

(3) दंशित-स्थान पर ताजा गोबर रखने से तुरन्त लाभ होता है ।

(4) दंशित-स्थान पर आक का दूध लगा देने से बर का जहर उतर जाता है ।

कुत्ते का विष

(1) कुत्ते के काटे हुए स्थान पर पहले चिराग का तेल लगायें, फिर लाल मिर्च पीसकर उस जख्म में दबा दें । ऊपर से मकड़ी का सफेद जाला रख दें तथा कसकर पट्टी बाँध दें । इससे जहर उतर जायगा ।

(2) ल्हिसौड़े के पत्ते 1 तोला तथा कालीमिर्च 1 माशा को आधा पाव पानी में घोटकर 9 या 15 दिन तक पीने से उक्ते का काटा हुआ आदमी ठीक हो जाता है ।

(3) कुत्ते के काटे हुए स्थान पर आक (मदार) के दूध का लेप करने से लाभ होता है ।

(4) जङ्गली कड़वी तोरई के काढ़े में घी मिलाकर पीने से वमन होती है तथा कुत्ते का विष उतर जाता है ।

मकड़ी का विष

(1) सोंठ और सफेद जीरे को पानी में पीसकर लगाने से मकड़ी के विष का विकार नष्ट हो जाता है ।

(2) खली और हल्दी को पानी में पीसकर लगाने से मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है ।

(3) चौलाई का साग पानी में पीसकर लगाने से मकड़ी का विष शान्त हो जाता है ।

स्थावर - विष

(1) स्थावर-विष के सेवन से रोगी हुए मनुष्य को बल-पूर्वक वमन (कय या उल्टी) करानी चाहिए, क्योंकि यही सबसे अच्छा इलाज है । वमन कराने के बाद शीतल जल से सेंचन करना चाहिए ।

(2) सिरस की छाल, जड़, पत्ते, मूल और बीज— इन सबको गौमूत्र में पीसकर शरीर पर लेप करने से विष नष्ट हो जाता है ।

(3) गरम पानी से वमन कराने तथा बारम्बार घी और दूध पिलाने से जहर उतर जाता है ।

(4) हरी चौलाई की जड़ 1 तोला को पानी में पीसकर गाय के घी के साथ खाने से गरम जहर उतर जाता है । यदि चौलाई की जड़ सूखी हो तो 6 माशा ही लेनी चाहिए ।

(5) बिनौलों की गिरी को कूट-पीसकर तथा गाय के दूध में औटाकर पिलाने से अनेक प्रकार के जहर उतर जाते हैं ।

(6) नीम की निबौलियों को पानी के साथ पीसकर पीने से संखिया आदि स्थावर-विष शान्त हो जाते हैं ।

(7) कालीमिर्च, नीम के पत्ते, सेंधा नमक, शहद और घी— इन सबको

मिलाकर पानी से स्थावर तथा जङ्गम दोनों प्रकार के विष शान्त होते हैं ।

(8) एक माशा दरियाई नारियल पीसकर खिलाने से सब प्रकार के जहर उतर जाते हैं ।

(9) गाय का घी 40 माशा तथा सेंधा नमक 8 माशा— इन्हें मिलाकर पीने से हर प्रकार के विष उतर जाते हैं ।

(10) मुर्गे की बीट पानी मिलाकर पिलाते ही वमन होती है तथा विष निकल जाता है ।

होम्योपैथिक-चिकित्सा

विभिन्न प्रकार के विषों पर निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं—

सर्प-दंश

साँप के काटे हुए स्थान पर जख्म को चाकू से चीरकर उसमें पोटाश परमैंग्रेट भर दें तथा जख्म वाले स्थान के ऊपर दो-तीन जगह कसकर बाँध दें। रोगी को 'इपिकाक' का विचूर्ण 30 ग्रेन खिलाकर वमन करायें तथा बीच-बीच में 'आर्सेनिक 3' का सेवन भी कराते रहें । रोगी को किसी भी तरह सोने न दें । विष का बाहर निकाल देना तथा लोहे के गरम टुकड़े से जख्म को निरन्तर सेंकना ही श्रेष्ठ उपाय है ।

बिच्छू-विष

दंशित-स्थान पर पोटाश परमैंग्रेट भर दें और ऊपर से पानी की एक बूँद डाल दें ।

बर्र-ततैया का विष

चिमटी, सुई आदि के डङ्क निकाल कर उस जगह पर पोटाश परमैंग्रेट भर दें ।

कुत्ता का विष

पागल कुत्ते, सियार अथवा लोमड़ी के काटे हुए स्थान को गरम लोहे अथवा कास्टिक से जला दें, तत्पश्चात् कुछ दिनों तक 'बेलाडोना 6' देते रहें इससे अनिष्ट की आशङ्का समाप्त हो जायगी ।

संखिया का विष

पहले वमन कराने वाली औषधियाँ देकर, बाद में पैराक्साइड ऑफ

आयरन शर्बत में मिलाकर पिलायें । फिर सर्वप्रथम 'इपिकाक' दें । इससे लाभ न होने पर 'चायना' दें । चिकने पतले दस्त होने पर 'नक्सवोमिका' तथा जलन रहने पर 'विरेट्रम-एल्ब' देना चाहिए ।

अफीम का विष

पहले गरम पानी अथवा वमन कराने वाली दवायें देकर रोगी को खूब वमन करायें । विष निकल जाने पर 'बेलाडोना मदर-टिंक्चर' 1-1 बूँद के हिसाब से घण्टे में 4-5 बार दें ।

एसिड (तेजाब का विष)

एसिड का विष दूर करने लिए साबुन का फेन तथा 'मैग्रेशिया' का प्रयोग करें । 'नाइट्रिक-एसिड' के विष के लिए 'कोर्बोनेट ऑफ लाइम' श्रेष्ठ औषध है ।

ऐलोपैथिक-चिकित्सा

सर्प-दंश

सर्प-दंशित स्थान पर पोटाशियम परमैंग्रेट भरकर ऊपर से 1 बूँद पानी डाल दें । दंशित-स्थान को ऊपर कई जगह खूब कसकर बाँध देना चाहिये, ताकि जहर ऊपर न चढ़ने पाये ।

अन्य विष

बिच्छू, बर्र आदि के विष पर भी 'पोटाशियम परमैंग्रेट' का प्रयोग हितकर है । स्थावर विषों के लिए वमन करायें तथा डाक्टर की सलाह लें ।

कुछ सामान्य रोगों की होम्योपैथिक-विधि से चिकित्सा

अकड़न— **थूजा, क्यूप्रम, कैमोमिला, बेल, साइक्यूटा ।**

अतिसार— **आर्निका, डल्कामारा, नाइट्रक-एसिड, नक्सवोमिका ।**

अतिसार (बच्चों का)— **एपिस-मेल, बेलाडोना ।**

अतिसार (पुराना)— **नेट्रमसल्फ, सल्फर, एल्युमिना, आर्जनाई ।**

अनिद्रा— **एकोन, कर्नाबिस इण्डिका, नक्सवोमिका ।**

अर्श (बवासीर)— **एण्टिमक्रूड, एनाकार्डियम, कैक्टस, एस्क्यूलस ।**

आँख में जख्म— **आर्सेनिक, ग्रैफाइटिस, पल्स, मर्कसोल, साइलीशिया।**

आँख से आँसू बहना— **कैलिबाई-क्रोम, युफ्रेशिया।**

उदर-शूल— **कोलोसिन्थ, क्यूप्रम ।**

उदासी— **एपिस, जैयोरियम, पल्सेटिला, सिसिसिफ्यूगा ।**

एपेण्डिसाइटिस— **इचिनेसिया, बेल ।**

कब्ज— **एल्युमेन, ओपियम, ग्रैफाटिस, नक्सवोमिका ।**

कान में दर्द— **पल्सेटिला, प्लेण्टेगो, मर्कसोल ।**

कृमि— **एण्टिम-क्रूड, सिना, क्यूप्रम ।**

क्षय— **आयोड कैल्के-कार्ब, कैल्के-फॉस, कैलि-बाई, सल्फर ।**

खाँसी— **पल्स, फेरम-मेट, ब्रायोनिया, बेल, स्पाञ्जिया ।**

गण्डमाला— **मर्कसोल ।**

ग्रन्थियों का फूलना— **कैल्के, फाइजन्टिमा, रसटाक्स ।**

चोट— **आर्निका, फाइटोलैक्का, ब्रायोनिया, रसटाक्स ।**

छोटी माता— **आर्स, एन्थ्रासिनम, एण्टिम-टार्ट, रसटाक्स ।**

जाड़ा— **इपिकाक, पल्स ।**

ज्वर (मलेरिया)— **इपिकाक, चायना, जेल्सीमियम, नक्सवोमिका ।**

टॉन्सिल का बढ़ना— **हिपर-सल्फ फाइटोलैक्का ।**

ठण्ड लगना— **हिपर सल्फ ।**

डर लगना— **ओपियम, विरेट्रम, साइलीशिया ।**

त्वचा की बीमारियाँ— **आर्स, आयोड, एण्टिम - क्रूड, एनाकार्डियम, कोनायम, डल्कामारा, नाइट्रिक-एसड, नैट्रमम्यूर ।**

थकान— **काफिया ।**

दमा— **आर्स, आर्जनाई, एमोनकार्ब, ओरिएण्टेलिस, कार्बोवेज, कैक्टस कैलिब्रोम, नक्सवोमिका ।**

दाँत का दर्द— **एण्टिम-क्रूड, क्रियोजोट, कैमोमिला, प्लेण्टेगो ।**

दाँत का जख्म— **क्रियोजोट, साइलीशिया ।**

दुर्बलता— **एसिड-फॉस, चायना, नेट्रम-कार्ब, सल्फर, स्टैनम ।**

दृष्टि-क्षीणता— **रूटा ।**

धातु-दौर्बल्य— **डिजिटेलिस ।**

धातु-क्षीणता— **कैनाबस-इण्डिका, कैलि-ब्रोम, कैन्थरिस, नक्सवोमिका ।**

न्युमोनियाँ (सर्दी-जनित)— **आर्स, आयोड, एण्टिमटार्ट, ट्युबरकुलिनम ।**

पक्षाघात (अङ्ग-प्रत्यङ्ग)— **क्यूप्रम, एसिड, कोनायम ।**

पाकाशय में गड़बड़ी— **एण्टिम-क्रूड मर्कसोल ।**

पेशाब से कष्ट— **नाइट्रिक-इसिड, बेंजोइक-एसिड ।**

प्लीहा-वृद्धि— **कैल्के, आर्स, कैप्सिकम, सियानोथस ।**

फील-पाँव— **हाइड्रोकोटाइल ।**

फोड़ा— **आर्स, हिपर-सल्फर, ब्रायोनिया, मर्कसोल, लाइको ।**

बहरापन— **जेल्सीमियम ।**

बहुमूत्र— **आयोडियम, ओपियम, एसेटिक-एसिड, फास्फोरिक-एसिड ।**

मन्दाग्नि— **आर्निका, आर्स, कार्वोवेज, नक्सवोमिका पल्सेटिला ।**

यकृत की गड़बड़ी— **आयरिस ।**

वमन— **इपिकाक, एण्टिम-टार्ट, एण्टिम-क्रूड, नक्सवोमिका ।**

सिर-दर्द— **क्यूप्रम, कैलिबाई, कैल्के-फॉस, नेट्रमम्यूर ।**

हैजा— **एकोनाइट, कैम्फर, कार्बोवेज, विरेट्रम - एल्ब, सिकेलि ।**

उक्त उल्लेख आकारादिक्रम में किया गया है । औषधियों का शक्ति निर्णय तथा समय का अन्तर रोग की स्थिति देखकर स्वयं कर लें ।

इस पुस्तक में अब तक बायोकैमिक-चिकित्सा का उल्लेख नहीं हुआ है। अतः अगले अध्याय में केवल बायोकैमी द्वारा ही समस्त मानव - रोगों को सामान्य चिकित्सा का वर्णन किया जायगा ।

बायोकैमिक चिकित्सा

अपने चिकित्सक जीवन में भाँति-भाँति के परीक्षणों के बाद इस पद्धति के आविष्कार ओल्डेनवर्ग (जर्मनी) निवासी डॉ० विलियम एच० सुशलर ने यह निष्कर्ष निकाला कि संसार के समस्त प्राणियों का स्वास्थ्य केवल 12 तत्वों पर आधारित है।

उन तत्वों का पूर्ण विश्लेषण करने के बाद उन्होंने उनका नामकरण किया। उन्हें वायोकैमी के पार्थिव लवण या डॉ० सुशलर की 12 तन्तु औषधियाँ' कहा जाता है। उन 12 पदार्थों में 1 मुख्य लवण तथा एक मूल पदार्थ सिलिका या साइलीशिया है।

बारहों औषधियों के पूर्ण एवं संक्षिप्त नाम निम्नलिखित हैं—

पूरा नाम	संक्षिप्त नाम
1— कैल्केरिया-फ्लोरिक	कैल्केरिया-फ्लोर
2— कैल्केरिया-फॉस्फोरिका	कैल्केरियाफॉस
3— कैल्केरिया-सल्फोरिका	कैल्केरिया सल्फ
4— फेरम-फॉस्फोरिकम	फेरम फॉस
5— काली-म्योरेटिकम्	काली-म्योर
6— काली-फॉस्फोरिकम	काली-फॉस
7— काली-सल्फोरिकम	काली-सल्फ
8— मैग्नेशिया-फॉस्फोरिकम	मैग्नेशिया-फॉस
9— नेट्रम-म्योरेटिकम	नेट्रम-म्योर
10— नेट्रम-फॉस्फोरिकम	नेट्रम-फॉस
11— नेट्रम-सल्फोरिकम	नेट्रम - सल्फ
12— सिलिका	साइलीशिया

बायोकैमिक औषधियों के गुणधर्म

संक्षिप्त मेटेरिया मेडिका

बायोकैमिक औषधियाँ 11 मुख्य लवणों तथा एक मूल पदार्थ- 'सिलिका' के आधार पर ही तैयार होती हैं। इन औषधियों के गुण-धर्म के विषय में निम्नानुसार समझना चाहिए।

(1) कैल्केरिया फ्लोर (Calcarea Fluor)

इसे कैल्केरिया फ्लोरिका, कैल्शियम फ्लोराइड ऑफ लाइम तथा कैल्केरिया फ्लोरेटा के नामों से भी पुकारा जाता है। इसका संक्षिप्त नाम 'कैल्केरिया फ्लोर' है। इसे डॉ० सुशलर का 'बोनसाल्ट' भी कहते हैं। सामान्यतः इसे 'काली फ्लोर' ही कहते हैं।

यह औषध प्राकृतिक रूप में मिलती है तथा हड्डियों एवं दाँतों की ऊपरी पर्त, सभी हड्डियों के लचीले रेशों एवं त्वचा के ऊपरी धरातल पर भी पाई जाती है।

'कैल्केरिया फ्लोर' की कमी से पुट्ठों में ढीलापन आ जाता है, रक्त नलिकाएें फैल जाती हैं, नसें बढ़ने तथा फूलने लगती हैं तथा शरीर में आलस्य बना रहता है। हर प्रकार की कठोर सूजन तथा लचकीले रेशों की कमी वाले सभी रोगों की श्रेष्ठ औषध है। कड़ी ग्रन्थियों 'शिराओं' के फैलने तथा बढ़ने एवं हड्डियों को दुर्बलता के लक्षणों में यह अत्यन्त लाभकर है।

सिर की हड्डी को कुचल जाना अथवा हड्डी की गाँठों में घाव, नासूर, पुट्ठों में ढीलापन, रक्त-नलिकाओं का पैल जाना, नवजात शिशु का रक्त-गुल्म खोपड़ी पर कड़ी गुठलियाँ अथवा कठोर किनारे वाले छालेदार घाव, नेत्रप्रदाह, आँख उठना, मोतियाविन्द, कण्ठमाला, शंखास्थि के समीप, कान के भीतर हड्डियों में कड़ापन तथा मवाद, कान के मध्यभाग से पुराना स्राव, पीनस, सूखा जुकाम, नाक की झिल्ली का क्षीणता-जनित प्रदाह, पपड़ी की अधिकता, जीभ पर कड़ी पपड़ी या जीभ का फटना, मसूढ़ों की फुन्सी, दाँतों का ढ़ीलापन, गले में जलन और दर्द, टाँसिल बढ़ना, गुदा की खुजली, अण्डकोषों में कड़ापन और उनमें पानी आना, धमनी का अर्बुद, जीर्ण कटिवात, क्रूप-खाँसी रसौली, बच्चों की आँख की हड्डी का बढ़ना, ऑपरेशन के बाद आया हुआ चिपकाव, जबड़े अथवा गाल की हड्डी का बढ़ जाना, मुँह पर छोटे-छोटे घाव, मुँह फटना, कण्ठशूल, गर्दन में गिल्टियाँ, घेघा, रीढ़ की जड़ में दर्द, बिना पचे अन्न की वमन,

पीले रङ्ग का मूत्र अधिक मात्रा में आना, स्त्रियों के गर्भाशय की स्थान-च्युति, मासिक-धर्म से पूर्व कष्ट, गर्भाशय का ढ़ीला अथवा कड़ा हो जाना, प्रसव के बाद रक्तस्राव अथवा गर्भाशय का संकुचित न होना, क्रूपखाँसी, हाथ-पाँव की अँगुलियों के जोड़ों का ढ़ीला पड़ जाना, त्वचा का खुरदरी, कड़ी अथवा भद्दी हो जाना, जलोदर, रात्रि में बुरे स्वप्न दिखाई देना, हाथ-पाँवों का फटना, स्त्री के स्तनों का पत्थर की भाँति कड़े हो जाना तथा प्रसव के बाद के कष्ट आदि रोगों की यह प्रमुख औषध है ।

घटना-बढ़ना— इस औषध का रोग प्रातः सायं बढ़ता है । वर्षाऋतु में आराम करने से रोग-वृद्धि होती है तथा सेंकने, उष्णता पहुँचना एवं मालिश करने से रोग-लक्षणों में कमी आती है ।

(2) कैल्केरिया फॉस (Calcarea Phos)

इसे कैल्केरिया फास्फोरिकम, कैल्केरिया, फास्फोरिका तथा कैल्शियम फास्फेट भी कहते हैं । इसका संक्षिप्त नाम 'कैल्केरिया-फास' है ।

इस औषध को साल्टडायल्यूट फास्फोरिक एसिड तथा लाइम वाटर के मिश्रण से तैयार किया जाता है । यह बलबर्द्धक तथा निर्बलता नाशक है । इस लवण की रक्त में कमी हो जाने से हड्डी बनना बन्द हो जाता है तथा रक्त भी समुचित मात्रा में नहीं रहता, फलतः मनुष्य का शरीर तथा चेहरा पीला पड़ जाता है और वह गठिया रोग का शिकार भी बन जाता है ।

यह बच्चों के रोगों की मुख्य औषध है । जिन बच्चों की हड्डियाँ नहीं बढ़ती, पेट थुलथुल रहता है, दाँत निकलते समय अधिक कष्ट होता है अथवा दाँत देर से निकलते हैं, जिनकी गर्दन पतली तथा कमजोर होती है, जिनकी टाँगें कमजोर होती हैं, और उन पर वे अपने शरीर को नहीं सँभाल पाते । फलतः चलने में देर लगती है, तथा जिनकी नाभि के चारों ओर अत्यधिक दर्द रहता है उसके यह बहुत लाभकर है । दुर्गन्धयुक्त मलहोना, दूध पलटना, ब्रह्माण्ड तथा मस्तक की हड्डी का बहुत समय तक न जुड़ आना, नाभि से चमकीला रक्तस्राव होना, गर्दन की दुर्बलता के कारण सिर को सीधा न कर पाना आदि रोगों में हितकर है । टूटी हुई हड्डी को जोड़ने में यह औषध अच्छा काम करती है । हड्डी का एक बार जुड़ कर पुनः खुल जाना एवं टूट जाना, हरबार भोजन करते समय पेट में दर्द होना, हर बार शीतऋतु में वात रोग का प्रकोप तथा बसन्त ऋतु में ठीक हो जाना, रोग के विषय में चिन्ता करने के कारण रोग-वृद्धि, आँखों में कालापन, जलन तथा सूजन, जँभाई लेने पर आँखों

से पानी निकलना, अचानक गुहेरियों का निकलना, मन्दाग्नि, अतिसार, मुँह में व्रण, छात्राओं का सिर-दर्द, स्त्रियों का शुक्रमेह, पुरुषों का प्रमेह, स्वप्नदोष, गर्भस्राव, मुँह से लार बहना, खूब भोजन करने पर भी शरीर पुष्ट न हो, स्मरण-शक्ति की कमी, भयानक स्वप्न दिखाई देना, अज्ञानता का स्वभाव, एकान्त-प्रियता; गज, बाल गिरना, शाम को भोजनोपरान्त सिर-दर्द, आँखों के आगे चिनगारियाँ-सी उड़ती प्रतीत हों, कान में खुजली व दर्द, जुकाम का जल्दी-जल्दी होना, नाक की जड़ में फुन्सियाँ चेहरे का रङ्ग सफेद बादामी, पीला या मटमैला, रक्त की कमी, मुँह में पानी भी आना अपच, जँभाइयाँ तथा अँगड़ाइयाँ आना, जीभ के अग्रभाग में छाले, कण्ठ के भीतर घाव होने जैसा दर्द, गला बैठना, पेट में दर्द-मानो भोजन पेट में रक्खा हो, पेट में भारीपन, बच्चों को हैजा, भगन्दर, बवासीर, बार-बार पेशाब करने की इच्छा, स्वप्नदोष, सूजाक, कुकर-खाँसी, पित्ती उछलना आदि रोगों में हितकर है ।

घटना-बढ़ना—इस औषध का रोग प्रातः सायं बढ़ जाता है । ठण्डक तथा शीतऋतु में वृद्धि होती है तथा खुश्क हवा एवं गरम मौसम में रोग घटता है ।

(3) कैल्केरिया सल्फ (Calcarea Sulph)

इसे कैल्शियम सल्पेट, कैल्केरिया सल्फोरिका, कैल्केरिया सल्फोरिकम, सल्फेट ऑफ लाइम तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस भी कहते हैं । इसका संक्षिप्त नाम कैल्केरिया सल्फ है । इसे सोल्यूशन ऑफ कैल्शियम क्लोराइड तथा डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड द्वारा तैयार किया जाता है ।

नाक के रास्ते निकलने वाले एल्ब्युमिन जुकाम तथा खाँसी के विकारों में यह औषध विशेष लाभ करती है । यह रक्त की थैली के दूषित तत्व को मल मूत्र के रास्ते बाहर निकाल देती है । मूत्र के साथ जाने वाले एल्ब्युमिन, जिसे 'ब्राइट डिसीज' कहा जाता है । और जिसके कारण त्वचा पर फोड़ा बन जाता है, उसमें इस औषध के सेवन से अच्छा लाभ होता है ।

पुराना घाव, मवाद का कभी न सूखना तथा घाव का ठीक न होना, पुराना नासूर— विशेषकर कान का रक्त-मिश्रित मवाद निकलना, घाव का दुर्गन्ध रहित गाढ़ा मवाद तथा भगन्दर आदि में भी यह औषध हितकर है । बच्चों के एग्जिमा की मुख्य औषध है ।

ऐसा जुकाम-खाँसी जिसमें गाढ़ा पीला कफ जमा हो जाता हो, तपैदिक

की खाँसी, गले की गिल्टी की सूजन और घाव आतशक, सूजाक, नासूर, जलोदर पुराना फोड़ा तथा ऐसी पेचिस जिसमें पिला गाढ़ा रक्त-मिश्रित स्राव ही, यह औषध लाभ करती है । इनके अतिरिक्त सिर के ऐसे घाव जिनसे सड़ा हुआ मवाद निकलता रहता है, तथा कानों पर खुरण्ड जम जाते हों, खोपड़ी पर सूजन मिचली, आँखों का लाल होना तथा इनसे पीला गाढ़ा मवाद (कीचड़) निकलना, दाँये कान के कष्ट, पुराना जुकाम, नथुनों का छिला होना तथा उन पर सूजन आ जाना, चेहरे पर कड़ी सूजन वाले फोड़े-फुन्सी, खास कर बांई ओर के मुँहासे, दाँई ओर के जबड़े में दर्द, मसूढ़ों से खून निकलना, दाँतों के ऐसे घाव, जिनके कारण चेहरे पर सूजन आ गई हो, मुँह का खराब स्वाद जीभ पर लाल धारियाँ तथा सूजन, गले में घाव तथा गिल्टियों में सूजन चर्म रोग, आग के घाव, जो बिगड़ गये हों, स्त्रियों के रजःस्राव में पीला गाढ़ा मवाद मिश्रित रक्त निकलता हो, तपैदिक की अन्तिमावस्था की खाँसी आदि में भी इस औषध के सेवन से लाभ होता है ।

घटना-बढ़ना— इस औषध का रोग खुली तथा गरम हवा में घटता है तथा रात के समय एवं वर्षा में भीगने से बढ़ता है । इस औषध के रोगी को माँस से घृणा होती है तथा फल एवं सब्जियाँ अच्छी लगती हैं ।

(4) फेरमफॉस (Ferum Phos)

इसे 'फेरम फास्फेट' फेरम फास्फोरिकम तथा संक्षेप में 'फेरम फॉस' भी कहा जाता है । इसका निर्माण 'फेरम-सल्फेट' तथा 'सोडियम फास्फेट' से होता है । यह फौलाद मिश्रित होती हैं तथा इसमें ऑक्सीजन को खींचने की शक्ति रहती है ।

फेरमफॉस की कमी से शीत लगने के कारण होने वाले रोग- प्रतिश्याय, निमोनियाँ, सन्निपात, ज्वर, रक्तस्राव आदि होता है । यह सब प्रकार के ज्वर तथा प्रदाहिक-अवस्थाओं की मुख्य औषध है । रक्तहीन फीके रङ्ग वाले रोगियों की घोर प्रादाहिक-अवस्था में विशेष लाभ पहुँचाती है । यह तपैदिक की प्रचण्डता में शान्तिदायक तथा प्रभावशाली सिद्ध होती है । यदि लाल तथा चमकदार रक्त का स्राव हो तो इसके सेवन से शीघ्र लाभ होता है । इसे वृद्ध लोगों की मुख्य औषध माना जाता है ।

किसी भी स्थान से लाल रङ्ग के रक्त का स्राव, खूनी बवासीर, हर प्रकार की जलन, आमाशय की कमजोरी, मसाने की कमजोरी, फेफड़ों की कमजोरी, मसाने की कमजोरी, फेफड़ों की दुर्बलता के कारण पसलियों का चलना,

निमोनिया, तपैदिक, क्रूप-खाँसी, कड़ी खाँसी, मोच आने के काण सूजन, फोड़ा-फुन्सी का प्रारम्भिक शोथ, नसों का फूलना, ठण्ड के असर के कारण होने वाले सभी रोग, मस्तिष्क में रक्त का जन जाना, सिर में भयङ्कर दर्द, आँखों की लाली, सूजन तथा रोहे, नीचे की पलक में गुहेरी, कान में जलन, दर्द तथा पीव बहना, सुनाई न देना, किसी भी कारण से नकसीर फूटना, चेहरा अधिक लाल तथा लाल गरम हों तथा गर्दन के नीचे ठण्डापन लगे, रक्त की कमी के कारण चेहरे का पीला पड़ जाना ठण्डा पानी पीने अथवा ठण्डी हवा लगने के कारण दाँत में दर्द होना, बच्चों के दाँत निकलते समय के कष्ट, दाँत और समूढ़ों में दर्द, भोजन करते समय दाँत-दर्द में वृद्धि, जीभ का साफ, लाल तथा सूजन युक्त होना, कण्ठ की गिल्टियों में जलन, गले में खुश्की, सूजन अथवा दर्द, हृदय में दर्द और धड़कन, आँतों में जलन अथवा कीड़ा, पेट में जलन, वमन, अजीर्ण, आँव, खूनी बवासीर खाँसते समय पेशाब निकल जाना, बहुमूत्र, फेफड़ों में जलन, अण्डकोषों की नसों का फूलना, स्त्रियों के स्तनों में दूध की अधिकता के कारण ज्वर होना, मासिकधर्म का कष्ट के साथ जल्दी-जल्दी होना, गर्भाशय में जलन व सूजन, गर्भावस्था में वमन, जुकाम, खाँसी, कुकर-खाँसी, उरःक्षत, हृदय का बढ़ जाना, आम-वात का दर्द, हाथ-पाँव में किसी भी प्रकार की जलन का अनुभव, सुन्न होना, हथेलियों का गरम रहना, मोच आना, पीठ का अकड़ जाना, पीठ तथा गर्दन के ऊपर दर्द होना, हर प्रकार का शोथ, जलोदर, त्वचा पर छाजन होना, ऑक्सीजन की कमी के कारण आने वाले हर प्रकार के ज्वर, टाइफाइड, रान का फोड़ा तथा बद आदि रोगों में यह औषध लाभकर है । सब प्रकार के ज्वर-विकार तथा प्रादाहिक-अवस्थाओं की यह मुख्य औषध है।

घटना-बढ़ना— इस औषध का रोग प्रातः 4 से 6 बजे तक तथा रात्रि में हिलने, छूने तथा झटका खाने से बढ़ता है और ठण्ड से घटता है ।

(5) काली-म्यूर (Kali Mur)

इसे काली म्योरेटिकम, क्लोराइड ऑफ पोटाश, कैल्शियम म्यूरेटिकम अथवा पोटेशियम क्लोराइड भी कहा जाता है । यह औषध पोटेशियम तथा मैग्नेशियम का डबल क्लोराइड है । पहले पोटाश को सज्जी और दूसरे हाइड्रोक्लोरिक तेजाब को भिन्न-भिन्न प्रकार से मिलाकर प्राप्त किया जाता है ।

शरीर के रक्त तथा अन्यान्य अङ्गों के रेशों में 'फाइब्रिन' (जो एल्ब्यूमेन की भाँति अन्यान्य पदार्थों के सम्मिलिन से बनता है) की कमी को यह औषध पूरा करती है । जब रक्त में फाइब्रिन पूर्ण रूप से काम नहीं करता और शरीर

शिथिल पड़ जाता है, तब काली म्यूर का प्रकोप आवश्यक होता है ।

जुकाम में नाक तथा मुँह से सफेद मलाई जैसे कफ का निकलना बच्चों के मुँह में सफेदी लिए छाले, डिफ्थीरिया में रोगी का बार-बार थूकना जीभ पर सफेद मलाई जैसी पर्त का चढ़ जाना, त्वचा पर आटे के रङ्ग के सफेद छिलके, होठ तथा बिवाई के फटने पर सफेद मलाई जैसे छिलके उतरना प्लूरिसी, पसली चलना, निमोनियाँ, सफेद मलाई जैसे कफ वाली खाँसी, हर प्रकार का शोथ, मोच, निमोनियाँ, फेफड़ों की सूजन, कण्ठमाला, अण्डकोष की नसों में शोथ, हर प्रकार की जलन, ज्वर के साथ सूजन, बवासीर के रोगी की गुदा के अथवा मासिक-धर्म के समय स्त्री की योनि से काले रङ्ग का लोथड़े जैसे रक्त निकलना, दिल का जल्दी-जल्दी धड़कना, रक्ताधिक्य के कारण दिल की धड़कन में वृद्धि, पाण्डु, प्लीहा, यकृत् - वृद्धि, यकृत् की खराबी के कारण सिर-दर्द, बच्चों के सिर पर छाले तथा फियास, आँखों के वे सभी रोग जिनमें गाढ़ा तथा सफेद मवाद निकलता हो, कान से गाढ़ा तथा भूरे रङ्ग का मवाद निकलना, गले की गिल्टियों में सूजन, जुकाम का रुक जाना, नाक की जड़ में खुजली, जुकाम में गाढ़ा तथा सफेद मवाद निकलना, ठण्ड से होठों का फट जाना, पेट में गुड़गुड़ाहट, अफारा, कण्ठ में सफेदी लिए घाव तथा दर्द निगलने में कठिनाई, रीढ़ का टेढ़ापन, रक्त की कमी तथा ऐसे ज्वर जिनमें जीभ पर सफेद तथा खाकी पर्त जमी हो तीसरे पहर अथवा हमेशा जाड़ा लगता हो, हाथ-पाँव अकड़े रहते हों तथा अजीर्ण युक्त टाइफाइड एवं जोड़ों में सूजन-युक्त गठिया के ज्वर में यह औषध विशेष लाभ करती है । यह मिर्गी रोग की भी जो विशेषतः किसी दूषित वस्तु के रुक जाने से हुई हो— प्रमुख औषध है ।

घटना-बढ़ना— इस औषध के रोग के उपद्रव तीसरे पहर बढ़ जाते हैं। गरिष्ठ भोजन तथा अङ्ग-संचालन से भी रोग-वृद्धि होती है ।

काली फॉस (Kali Phos)

इसे काली फास्पोरिकम, काली फास्फोरिका, फॉस्फेट ऑफ पोटाश, फास्फोरिकम एसिड तथा पोटेशियम नाइट्रेट अथवा पोटेशियम कार्बोनेट द्वारा तैयार किया जाता है ।

जिन रोगों नर्वसःसिस्टम पर प्रभाव पड़ता है और जिनके कारण मस्तिष्क में संक्षिप्त एक प्रकार का भूरे रङ्ग का द्रव-पदार्थ अधिक व्यय हो जाता है, उनमें 'काली-फॉस' का सेवन आवश्यक है । उक्त द्रव-पदार्थ की कमी से रोगी आँखें बन्द करके मूर्च्छित अवस्था को प्राप्त होता है, अतः जिन रोगी में रोगी आँखें

बन्द किये चुपचाप पड़ा रहता हो उनमें वह औषध विशेष लाभकर सिद्ध होती हैं ।

प्रत्येक उस रोग में, जिसमें कि रोगी चीखे-चिल्लाये अथवा बेहोश पड़ा हो, हर प्रकार के पक्षाघात में, जबकि शरीर का कोई अङ्ग काम करना बन्द करदे पढ़ते समय जल्दी थक जाना, नींद में बकबक करना, हिस्टीरिया सरनाम, गर्भावस्था में अथवा प्रसवोपरान्त दाँत पीसना, दस्त, वमन, जुकाम अथवा मासिक-धर्म में दुर्गन्ध-युक्त स्राव निकलना, संग्रहणी, पेचिश तथा नकसीर में बिना छिछड़े वाला काले रङ्ग का पतला रक्तस्राव तथा शरीर के बाँईं ओर होने वाले कष्टों में यह औषध विशेष लाभ करती है ।

मस्तिष्क का हिलना, पागलपन तथा मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की यह मुख्य औषध मानी जाती है । साँस का रुक-रुक कर आना, नाड़ी की अनियमित चाल, दिल की कमजोरी, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, रुपया कमाने की तदबीरें सोचना, परन्तु कुछ कर न पाना, भ्रम, भूत प्रेत की भावना, थोड़ी- सी बात पर नाराज हो जाना, प्रतिकूल बातों से अप्रसन्नता, बुरी-बुरी गालियाँ बकना, थकान के कारण सिर-दर्द, आँखों की पुतलियों का फैल जाना, कम दिखाई देना, कानों से शब्द सहन न हो पाना, कम सुनाई देना, दुर्गन्धितस्राव युक्त जुकाम, चेहरा काला या पीला पड़ गया हो, जँभाई आना, बच्चों का सोते समय दाँतों को पीसना, दाँतों की जड़ों का दुःखना, मसूढ़ों में खराबी, जीभ पर जलन तथा खुश्क, गले में खुश्की, गर्दन का अकड़ जाना, सम्पूर्ण पुट्ठों में दर्द, भोजन कर लेने पर भी भूख लग आना, पेट का फूलना, पेट में गुड़गुड़ाहट, हाथ - पाँव में दर्द, रात को पाँवों में खुजली, हथेली और तलवों में खुजली, पेशा करते समय दर्द होना, मासिक-धर्म का बिलम्ब से अथवा कम होना, मेदे में जलन युक्त शोथ, क्रूप-खाँसी, कुकर-खाँसी, पित्ती उछलना त्वचा पर कुछ रेंगता-सा जान पड़े, नाड़ी सुस्त, हर प्रकार का तेज एवं खराब ज्वर सोते समय दर्द का अनुभव, भूत, प्रेत, डाकू, आग लगना आदि के स्वप्न दिखाई देना आदि में यह औषध बहुत लाभ करती है । हिस्टीरिया, गले में गोला-सा अटका हुआ अनुभव होना, गर्भपात होने की आशङ्का, मिथ्या-प्रसव वेदना तथा स्वर-यन्त्र में पक्षाघात आदि में इसका प्रयोग हितकर रहता है । गर्भिणी स्त्री को प्रसव से एक मास पूर्व ही इस औषध का सेवन कराते रहने से प्रसव बिना कष्ट के होता है ।

घटना-बढ़ना— इस औषध के रोगी को सामान्यतः प्रातःकाल अधिक कष्ट होता है । शोर-गुल के बीच काम करने अथवा एक ही स्थान पर बैठे हुए

काम करने से रोग में वृद्धि होती है । रोगी का स्वभाव चिड़चिड़ा अधीर असन्तुष्ट एवं अप्रसन्न रहता है ।

काली सल्फ (Kali Sulph)

इसे काली सल्फोरिकम, पोटाशियम सल्फेट तथा कैल्शियम सल्फ्युरिकम भी कहा जाता है । यह लक्षण प्राकृतिक रूप में ज्वालामुखी पर्वतों पर मिलता है तथा शरीर की ऊपरी त्वचा पर भी पाया जाता है । शरीर में इसकी कमी से दम घुटने लगता है । यह ऑक्सीजन तथा आयरन को शरीर में नियमानुसार पहुँचाने का कार्य करता है ।

शरीर के किसी भी भाग से पीले रङ्ग का अथवा चूने जैसा पतला मवाद बहना, सूजाक से अथवा फोड़ा-फुन्सी से उक्त प्रकार का मवाद बहना, खाज-खुजली, कखौरी, पित्ती उछलना तथा चलते-फिरते दर्द वाले गठिया रोग में यह हितकर है । यदि रोग मध्याह्न अथवा सन्ध्या के समय बढ़ता हो और गर्मी से अधिक तथा ठण्डक से कम हो जाता हो तो इस औषध के सेवन से विशेष लाभ होता है । यह पसीना लाने की मुख्य औषध है । मोतीझरा (टायफाइड) के दबे हुए दानों को उभारने के लिए इसका प्रयोग अत्युत्तम रहता है । ऐसा ज्वर— जिसके कारण कभी सिर में तथा कभी पाँव में दर्द रहता हो और जो सन्ध्या के समय प्रचण्ड रूप ग्रहण कर लेता हो, उसमें यह औषध अपना चमत्कारिक प्रभाव दिखाती हैं ।

सिर पर गंज तथा भूसी छूटना, गंज के दाग, कान की नली का बहरापन, पीले-चिकने स्राव के साथ जुकाम, पीले-चिकने दस्त, हरे-पीले-चिकने स्राव वाला सूजाक, जलन, प्यास, वमन, मिचली, उदर-शूल, कैंसर, शीतपित्त गर्दन की जड़, पीठ तथा अन्य अङ्गों में वेदना, मासिक-धर्म का बिलम्ब से अथवा अल्प मात्रा में होना, गर्भाशय से रक्त-स्राव, बच्चों में इन्फ्लुएेञ्जा के आक्रमण के बाद की खाँसी, ऊपर की ओर ध्यान पूर्वक देखने से चक्कर आना अथवा गिरने का डर लगना, सिर को इधर-उधर घुमाने से सिर में दर्द होना सिर में ऐसी फुन्सियाँ, जिनसे पतला पीला पीव निकलता हो, पलकों के सिरों पर जलन, आँखों से पीला चूने जैसा पानी निकलना, दाँयें कान के नीचे तेज काटने वाला दर्द, दाँये कपोल पर शोथ तथा स्थान बदलने वाला दर्द, मुँह तथा होठ में छाले और जलन, होठों के ऊपर फुन्सियाँ, जीभ पर पीली तथा मैली तह का जमना, दाँतों में ऐसा दर्द, जो खुली हवा में कम तथा गर्मी में अधिक होता हो, सर्दी लगने से गला बैठ जाना, जोड़ों में गठिया का दर्द, कमर की हड्डी के सिरे पर दर्द, जलन-युक्त

सूजाक, स्त्रियों को पेडू में दवाब का अनुभव, पीली कीचड़ सदृश प्रदर-स्राव एवं चमड़ी पर से भूसी उतरना आदि लक्षणों में भी यह लाभ करती है ।

घटना-बढ़ना— इस औषध का रोग सामान्यतः, सायंकाल बढ़ता है ।

इसे मैग्नेशिया फास्फोरिकम, मैग्नेशिया फास्फेट तथा फास्फेट ऑफ मैग्नेशिया भी कहते हैं । इसे सल्फेट ऑफ मैग्नेशिया तथा फास्फेट ऑफ सोड़ा या कार्बोनेट ऑफ सोडा से तैयार किया जाता है ।

मैग्नेशिया फॉस (Magnesia Phos)

यह लवण नसों तथा पुट्ठों के सफेद रेशों में मुख्य रूप से पाया जाता है। इसकी कमी से सफेद रेशे सिकुड़ने लगते हैं, जिसके कारण शरीर में एक प्रकार की अकड़न तथा ऐंठन उत्पन्न हो जाती है । आमाशय की दीवारों के पुट्ठों में इसकी कमी होने से आमाशय में काटने तथा छेदने वाला दर्द उत्पन्न हो जाता है । नसों के कमजोर होने पर हाथ-पाँव काँपने लगते हैं ।

यह स्नायु-संस्थान के रोगों के लिए एक आवश्यक औषध है । काटने, छेदने वाले जो दर्द जल्द शुरू हों तथा जल्द दूर हों, ठण्ड से कष्ट हो अथवा सेंक या पेट से घुटने लगाने से जिन रोगों में आराम मिलता हो, उनके लिए यह लाभकर है । पुट्ठों तथा सन्धियों के दर्द में यह बहुत फायदा करती है । अधिक काम करने के कारण जिनका स्वास्थ्य बिगड़ गया हो अथवा नसों के खराब होने के कारण हाथ-पाँव काँपने लगते हों, उनके लिए यह अत्यधिक हितकर है ।

हर प्रकार के आक्षेप तथा आक्षेप-जनित दर्द, पेट-दर्द का आकस्मिक रूप से आवागमन, रजःस्राव के समय जरायु का दर्द, लिखते समय अँगुलियों में होने वाली ऐंठन, हिलने से सिर में दर्द, मानसिक कार्यों में अरुचि, आँखों से पानी बहना, गले की गिल्टियों में सूजन, भौंओं में व्याकुल करने वाली वेदना पेट में अफारा तथा तीव्र पीड़ा, छाती पर बोझ सा प्रतीत होना, अजीर्ण तथा उबकाई, डकारें अधिक आना, गले की गिल्टियों में सूजन, श्वास अथवा कुकर खाँसी का दौरा, कफ का छाती से न निकलना, सूखी तथा खुरदरी खाँसी, गले में दुखन, दिल बैठता हुआ- सा लगे, रजःस्राव होने से पूर्व तीव्र वेदना तथा रजःस्राव में छिछड़ों का निकलना, कभी काले डोरे जैसा रजःस्राव, भग के ऊपरी भाग में सूजन, दोपहर तथा रात्रि के भोजन के बाद रोगी को कम्पयुक्त शीत लगना तथा दम घुटता हुआ-सा प्रतीत होना, हिस्टीरिया में हाथ-पाँवों का ऐंठना,

पेचिश में पेट में मरोड़, गिरने अथवा सिर में चोट लगने से दाँती भिच जाना, पक्षाघात के कारण गर्दन का अकड़ जाना, ज्वर में जीभ लड़खड़ाना एवं दाँतों का किटकिटाना, पढ़ते समय जँभाई आना, माँसपेशियों में ऐंठन, हिचकी आना, दाँतों की जड़ में टीस मारने वाला दर्द, मुँह तथा होठ में ऐंठन, कभी-कभी जबड़े का उतर जाना, मुँह में दर्द तथा कभी बहने और कभी बन्द हो जाने वाला जुकाम आदि लक्षणों में यह औषध लाभकारी है । शरीर के दाँये भाग के कष्टों में विशेष हितकर है ।

दुर्बल, लम्बे, थके-माँदे तथा थोड़ा परिश्रम करने से ही थककर चूर हो जाने वाले लोगों के लिए यह औषध विशेष प्रभावकारी सिद्ध होती है ।

घटना-बढ़ना— दाँई और लेटने, ठण्ड तथा स्पर्श से इस औषध के रोग में वृद्धि होती है तथा गर्मी, सेंक एवं दबाने से कमी आती है । दिन में 10 से 11 बजे तक सायं 4 से 5 बजे तक इस औषध का रोग अधिक बढ़ता है ।

नेट्रम-म्यूर (Natrum Mur)

इसे नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-म्योरिटिकम तथा सोडियम क्लोराइड भी कहा जाता है ।

यह औषध सामान्य खाने के नमक से तैयार की जाती है । यह लवण हमारे शरीर के पानी को प्रत्येक टिश्यू में विभक्त करता है । इसकी कमी से वह उचित विभाजन रुक जाता है, जिसके कारण रोग उत्पन्न होते हैं । यह लवण रक्त के दूषित अंगों को निकाल कर उसे शुद्ध करता है ।

यह औषध शरीर के तरल पदार्थ निकल जाने के कारण रक्त की कमी एवं दुर्बलता, उपयुक्त आहार देने पर भी बालक का सूखते जाना, बच्चों का देर से चलना सीखना, होठों पर ज्वर के कारण दाने, फफोले अथवा चकत्ते हो जाना, सूर्योदय से 'सूर्यास्त' तक क्रमशः सिर-दर्द एवं मन्द-दृष्टि, मूत्र-त्याग के बाद काटने जैसा दर्द, 15 से 25 वर्ष तक की आयु की अध्ययनशील लड़कियों का सिर-दर्द, स्वप्न में चोर-डाकुओं को घर में घुसा हुआ दीखना, स्त्री-सहवास के कुछ देर बाद ही स्वप्नदोष, नमकीन वस्तु खाने की प्रबल इच्छा, क्विनीन के सेवन से रुका हुआ ज्वर अथवा दुर्बलता, सिर में रक्त के जमाव के कारण तीव्र वेदना, कनपटी में तीव्र वेदना, सिर के बालों का उड़ना आँखों में तेजाबी पानी बहना, नाक के भीतर फुन्सियाँ, नाक से पानी बहते रहने वाला जुकाम, कभी-कभी नाक से अण्डे जैसी सफेदी निकलना, खाना खाने के बाद पेट में जोर का दर्द, कान

में दर्द, तथा घनघनाहट का मन्द, ज्वर की स्थिति में मुँह के छाले, गले डाट सी अनुभव होना, मसूढ़ों से लुआवदार रक्त निकलना, दाँतों में दर्द, श्वास लेने में कठिनाई, वक्षःस्थल में जलन, त्वचा पर सूजन, मल का खुश्क होकर कठिनाई से निकलना तथा गुदा का छिल जाना, पाँवों पर सूजन, कमर में दर्द, जो कठोर बिस्तर पर लेटने से दूर हो, गर्दन में अकड़न के साथ दर्द, इन्द्रिय-पीड़ा, प्रमेह, छाजन, गुदा में सूजन, अतिसार के कारण शारीरिक-दुर्बलता, भोग शक्ति में कमी तथा ज्वर में प्यास की अधिकता आदि लक्षणों में लाभ करती है ।

इसका प्रभाव रक्त पर अधिक पड़ता है अतः दुर्बल एवं रक्त की कमी वाले मनुष्यों पर शीघ्र प्रभाव करती है ।

घटना-बढ़ना— गाने-बजाने के शब्द, सूर्य के ताप, ग्रीष्मकालीन उष्णता, नमी तथा मानसिक परिश्रम आदि से इस औषध के रोग-लक्षणों में वृद्धि होती है तथा खुली हवा, स्नान एवं भोजन से कमी आती है ।

(10) नेट्रम-फॉस (Naturm Phos)

इसे नेट्रम फास्फोरिकम, फास्फेट ऑफ सोड़ा तथा सोडियम फास्फेट भी कहते हैं ।

इसे कार्बोनिट ऑफ सोडा तथा आर्की फास्फोरिक एसिड के संयोग से तैयार किया जाता है । इसे हड्डी की भस्म से भी बनाया जाता है । यह लवण शरीर में रक्त, पेशी, स्नायु, मस्तिष्क कीटाणु तथा कोषाणुओं के भीतर रस में रहता है तथा लैक्टिक एसिड को विघटित कर, कार्बोनिक एसिड तथा पानी में बदल देता है । यह शरीर में जल को उत्पन्न कर, उसके प्रत्येक अङ्ग में बाँटता है तथा अधिक जल को शरीर से बाहर निकालता है ।

यह औषध अम्ल की अधिकता वाले रोगों में तथा शरीर में लैक्टिक एसिड की अधिकता के कारण उत्पन्न रोगों में विशेष लाभकर है । यह शिकायत प्रातः अधिक चीनी खाने के कारण होती है । यदि पेशाब में ऑक्जेलेट अधिक हो तो इस औषध की 1x शक्ति में दिन में 4 बार देते रहने से पथरी का बढ़ना रुक जाता है ।

खट्टी डकारें, आना, मुँह का स्वाद खट्टा रहना, कृमि लक्षणों के साथ शूल पेशाब में ऑक्जेलेट का अधिक मात्रा में जाना, आँखों से सुनहरे पीले रङ्ग का स्राव, कृमि जैसे रङ्ग की कीचड़ आना, आँखों के श्वेत भाग का मैला हो जाना, प्रातःकाल सिर में भारीपन तथा कम्पन्न, रात के समय दूसरे कमरे में किसी की

पदचाप सुनकर भयभीत हो जाना, एक कान का लाल तथा गरम रहना, कान से दुर्गन्धित, गाढ़ा, पीला श्लेष्मा बहना, चेहरे का लाल अथवा पीला पड़ जाना, होठ तथा गालों पर सड़े-गले घाव, जीभ के सिरे पर छाले तथा जीभ पर पतला और तर मैल जमना, तालु के पिछले भाग पर क्रीम जैसा मैल जन जाना, निगलने में कष्ट, त्वचा का रङ्ग पीला पड़ जाना, हरे रङ्ग के दस्त, घुटनों के जोड़ में वात-पीड़ा, कलाई तथा अँगुलियों के जोड़ों में टीस, पाँव की नसों में दर्द, सन्धि-प्रदाह, टखनों में खुजली, जुलपित्ती, स्त्रियों के मासिक-धर्म का समय से पूर्व तथा पतले पीले पानी जासा होना, योनि से तेजाबी स्राव, प्रदर, गर्भाशय में जलन तथा खट्टी वमन आदि में यह औषध हितकर है । बच्चों को रात में स्वयं पेशाब हो जाना, पेट में कीड़े पड़ जाना, छाजन तथा वमन अथवा खट्टे पसीने वाले ज्वर में भी लाभकर है ।

घटना-बढ़ना— इस औषध का रोग हिलने-डुलने ऋतु-परिवर्तन तथा सीढ़ी पर चढ़ने से बढ़ जाता है । ग्रीष्म-ऋतु में प्रातःकाल आलस्य अधिक रहता है । प्रातः-सायं विशेषकर आधी रात को लक्षण बढ़ते हैं तथा खाना खाने के बाद लक्षणों में कमी आती है ।

(11) नेट्रम-सल्फ (Naturm Sulph)

इसे नेट्रम सल्फोरिकम, सल्फेट ऑफ सोड़ा, सोडियम सल्फेट तथा ग्लोबर्स साल्ट भी कहते हैं ।

यह लवण प्राकृतिक ढङ्ग पर कैल्शियम सल्फेट के साथ मिला होता है। मनुष्य के शरीर में पानी को उचित परिमाण में बनाये रखना इसी का काम है।

इस औषध का सर्वाधिक प्रभाव यकृत पर पड़ता है । तर-जलवायु में रहने के कारण रोग में वृद्धि, वर्षा-ऋतु में घबराहट तथा सदैव उष्ण-जलवायु के इच्छुक मनुष्यों को यह औषध विशेष लाभ करती है ।

चोट लगने के कारण मानसिक-विकार, जलोत्पन्न सब्जी को खाने के कारण होने वाले रोग, नमी के कारण उत्पन्न, वेदना-शून्य गाढ़ा पीला प्रमेह-स्राव, आँख के सफेद भाग में प्रदाह, सिर में चोट लगने के कारण उत्पन्न शिरोरोग, गर्दनतोड़ बुखार, प्रत्येक बसन्त-ऋतु में लौटने वाले चर्म-रोग गठिया, आँख, पाँव तथा अँगुलियों के रोग में यह औषध विशेष हितकर है ।

आत्महत्या की प्रवृत्ति, नृत्य-सङ्गीत से घृणा, सिर पर लाल रङ्ग की गुमड़ियों का निकलना, सिर-दर्द, चक्कर आना, भोजन के बाद चेहरे पर पसीना

आना, सुबह आँख के पलकों का चिपकता तथा उन पर छोटी फुन्सियाँ, नाक से गाढ़ा-पीला स्राव, नमकीन मवाद गिरना, छीकें अधिक आना, गरम कमरे में दर्द का बढ़ना मुँह का स्वाद कड़वा, अधिक थूक गिरना, कड़ी वस्तु को निगलने में कष्ट, यकृत् में कठोरता एवं दर्द, पेट को दबाये रखने से आराम का अनुभव, सूखी खाँसी, हाथ तथा बाँहों में चीटियाँ रेंगने जैसी अनुभूति, बगल की गिल्टियों में सूजन, रत-विकार के कारण त्वचा पर फोड़े-फुन्सी, लाल रङ्ग के चकत्ते, मूत्रकृच्छ, अण्डकोषों का बढ़ना, इन्द्रिय पर खुजली, स्त्रियों को बिलम्ब से तथा कम परिणाम में रजःस्राव, ऋतु-काल में नकसीर फूटना तथा प्रसवोपरान्त रक्त आते रहना आदि लक्षणों में हितकर हैं ।

घटना-बढ़ना— बाँये करबट लेटने, तर-स्थान में रहने तथा ठण्डे मौसम में इस औषध के रोग के लक्षणों में वृद्धि होती है । करवट बदलने, दबाने पर गरम मौसम तथा गर्मी से कमी आती है ।

(12) साइलीशिया (Silicea)

इसे सिलिका अथवा साइलीशिया भी कहते हैं ।

इसे पहाड़ी नदियों अथवा रेत में से निकलने वाले एक प्रकार के चमकीले पाषाण-चूर्ण द्वारा तैयार किया जाता है । मानव-शरीर में यह पदार्थ वालों, त्वचा हड्डियों, नाखूनों तथा बाहरी झिल्लियों में पाया जाता है ।

इस औषध का प्रभाव गहरा और दीर्घ होता है । इसके प्रयोग से घाव का पीव (मवाद) शीघ्र निकल आता है । जिन पीड़ाओं में मवाद बनने की आशङ्का हो, उसमें यह विशेष लाभकर है । इसकी निम्न शक्ति फोड़ों को पकाती तथा फाड़ती एवं उच्च शक्ति घाव को शीघ्रता से भर देती है । घाव फिर चाहे वह त्वचा में हो अथवा हड्डी में, इस औषध के प्रयोग से शीघ्र भर जाता है । इसका रोगी मोटे शरीर का नहीं होता, परन्तु उसका पेट बड़ा रहता है । वह क्षीणकाय दुर्बल, ढीले अबयवों वाला, कोमल स्वभाव, बड़े सिर तथा खोपड़ी की बैडौल नसों वाला होता है । ऐसे चिन्ह कण्ठमाला के रोगी में पाये जाते हैं, अतः यह औषध कण्ठमाला में भी हितकर है । इसके रोगी पर ठण्ड का प्रभाव तत्काल प्रकट होता है ।

सरलान्त्र से मल-निस्सारण गति का रुक जाना, मल का मलद्वार से बाहर निकल कर पुनः भीतर चले जाना, शरीर में स्वाभाविक गर्मी की कमी गर्दन से चोटी तक सिर-दर्द, केवल सेर से पसीना आना, ऋतु-स्राव से पूर्व कोष्ठबद्धता,

स्तन से दूध पिलाते समय पर रजःस्राव लेटने से रोग में वृद्धि, अमावस्या को रोग में वृद्धि, नासूर के घावंमें सहज ही पीव पड़ना, खाद्य पदार्थ के स्वाद को ग्रहण करने में शारीरिक-अक्षमता एवं सूखा रोग आदि में यह औषध विशेष लाभ करती है ।

न्युमोनिया तथा फेफड़ों में मवाद पड़ जाना, कार्बङ्कल, विषहारी आदि सब प्रकार के घाव, आँखों में नासूर, घाव तथा माँस बढ़ना, बालों का गिरना मस्तिष्क की निर्बलता, शीतला निकलने के बाद की खाँसी तथा आँख की फुली, खराब लिम्फ से टीका लग जाने पर पक जाना, सूजन वाली फुन्सियाँ, हड्डियों का बढ़ना तथा सड़ना, पुराने जोड़ों का दर्द, चिड़चिड़ा स्वभाव मस्तिष्क में भ्रम, उदासी, सोक, चेहरे पर फुन्सियाँ, नाक के भीतर घाव, कण्ठ के काग में सूजन, भोजन निगलने में कष्ट, बवासीर, भगन्दर, मूत्रत्याग के समय बल प्रयोग से वीर्य निकलना, शुक्ल पक्ष की रात्रि में मिर्गी के दौरे पड़ना तथा ब्राँकिटिस आदि में भी बहुत हितकर है।

घटना-बढ़ना— इस औषध इका रोग ऋतु-स्राव के समय, द्वितीया को, ठण्ड तथा नमी के कारण, वस्त्र उतारने एवं लेटने पर बढ़ता है तथा ग्रीष्म काल में, ठण्डा भोजन करने के बाद एवं सिर पर वस्त्र लपेटने से घटता है । इसके रोगी पर ठण्ड का प्रभाव तत्काल प्रकट होता है ।

रोगानुसार बायोकैमिक चिकित्सा

विषम-ज्वर (मलेरिया)

नेट्रमसल्फ 6— यह मलेरिया-ज्वर की मुख्य औषध है । सविराम (नागा देकर आने वाले) ज्वर में निम्नलिखित औषधियाँ दें—

फेरमफॉस 6x, **नेट्रमम्यूर** 6x— सविराम मलेरिया ज्वर में जबकि ज्वर चढ़ा हुआ हो और सिर-दर्द तथा प्यास की तीव्रता हो ।

फेरमफॉस 6x, **कालीसल्फ** 6x— सिर-दर्द तथा ज्वर हो, परन्तु पसीना न आता हो ।

श्लेष्मवात-ज्वर (इन्फ्लुऐञ्जा)

नेट्रमम्यूर 6x-- यह इस रोग की मुख्य औषध है ।

फेरमफॉस 6x, **नेट्रमम्यूर** 6x— ज्वर, आँख, नाक, कान से पानी बहने की स्थिति में ।

नेट्रमम्योर 6x, **नेट्रममसल्फ** 30x— ज्वर के शान्त हो जाने पर ।

फेरमफॉस 30x, **नेट्रमसल्फ** 30x, **कालीफॉस** 30x— तीन-तीन घण्टे बाद अदल-बदल कर देना चाहिए । यह इन्फ्लुएञ्जा के सभी विकारों के लिए श्रेष्ठ है ।

नेट्रमम्योर 30x, **नेट्रमसल्फ** 30x— ज्वर को रोकने के लिए ।

आन्तरिक-ज्वर (मोतीझरा या टायफाइड)

फेरमफॉस 30x, **नेट्रमसल्फ** 30x— पर्याय-क्रम से दिन में अधिक से अधिक चार बार दें । ज्वर तथा प्यास की तीव्रता में यह लाभकारक है ।

फेरमफॉस 30x, **कालीम्योर** 30x— यदि कब्ज कड़ा हो ।

फेरमफॉस 3x, **नेट्रमसल्फ** 3x— यदि घबराहट अधिक हो ।

फेरमफॉस 3x, **कालीसल्फ** 3x— यदि दाने न उभरे हों अथवा कम उभरे हों ।

फेरमफॉस 30x, **कैल्केरियासल्फ** 30x— ज्वर, आँतों में रक्त आना, रक्तातिसार की स्थिति में ।

फेरमफॉस 3x— सम्पूर्ण शरीर में धड़कन होने पर ।

फेरमफॉस 30x, **कालीम्योर** 30x— दोनों को बारी-बारी से स्थिति में दें जब रोगी चीखता-चिल्लाता अधिक हो ।

डोंगू-ज्वर (हड्डी - तोड़ बुखार)

फेरमफॉस 6x, **नेट्रमम्योर** 6x, **मैग्नेशियाफॉस** 6x— इनमें से प्रत्येक औषध को 10-10 ग्रेन की मात्रा में लेकर खल कर लें। फिर उसकी 6 मात्राएँ बनाकर 1-1 मात्रा प्रति दो घण्टे बाद दें।

नेट्रमम्योर 30, **नेट्रमसल्फ** 30x, **मैग्नेशियाफॉस** 30x— ज्वर के उतर जाने पर इन औषधियों को अलग-अलग बारी-बारी से देना चाहिए।

चेचक (शीतला)

इस रोग में निम्नलिखित औषधियाँ भी देनी चाहिए—

कालीम्योर 30— जिन दिनों यह बीमारी फैल रही हो, उन दिनों में इस दवा का सेवन करने से बीमारी से सुरक्षा होती है।

फेरमफॉस 6x, **कालम्योर** 6x— जिन दिनों रोग फैल रहा हो, तब ज्वर, नाड़ी की तीव्र गति, खाँसी एवं जिह्वा पर भूरा मैला जमा होने के लक्षण दिखाई देने पर।

फेरमफॉस 6x, **नेट्रमम्योर** 6x— जब ज्वर हो, प्यास तीव्र हो, भ्रम रहे, पानी जैसा मवाद निकलता हो अथवा दानों में मवाद दिखाई देता हो और दाने परस्पर मिल गये हों।

फेरमफॉस 6x, **कालीफॉस** 6x— ज्वर, दानों में मवाद तथा रोगी के शरीर से खट्टी गन्ध आने की स्थिति में।

कैल्केरिया-सल्फ 12x— दानों के पक जाने पर और उनसे गाढ़ा मवाद निकलने पर।

कालीफॉस 12x— मवाद में गन्ध आने तथा रोगी के मूर्च्छित रहने की स्थिति में।

खसरा

कालम्योर 6x— खाँसी, गला बैठ जाना, जीभ पर भूरे रङ्ग का मैल जमना, पीले रङ्ग के दस्त, श्रवण-शक्ति में कमी आदि लक्षणों के समय।

नेट्रमफॉस 12x— प्यास की अधिकता, आँखों से आँसू तथा मुँह से लार निकलने पर।

कैल्केरियाफॉस 20x— रोगी को आराम हो जाने पर जब दुर्बलता शेष रह गई हो, तब इस औषध की दो मात्रा प्रातः-सायं कुछ दिनों तक देनी चाहिए।

कालीसल्फ 6x— रोगी को आराम न होने, दानों के स्वयं न निकलने अथवा निकलकर शीघ्र नष्ट हो जाने या समय से पूर्व दब जाने पर इसे दिन में 3-4 बार दें। इससे दाने पूरी तरह निकल आते हैं।

खाँसी

नेट्रमम्योर 6x, 30x— शरद्ऋतु की खाँसी, जिसमें बलगम नमकीन हो, वह अधिक और कठिनाई से निकलता हो।

साइलीशिया 6x— ठण्ड या प्रातःकाल के समय खाँसी का अधिक उठना, रात्रि के समय दम घोंट देने जैसी खाँसी उठना, कफ खराब, दुर्गन्धित गाढ़ा, हरा-पीला एवं कठिनाई से निकले।

कालीम्योर 3x— ऐंठन की खाँसी, तीव्र दौरे के समय आँखें बाहर निकल पड़ने जैसी हो जायें, जीभ का रङ्ग सफेद भूरा, कफ से गन्धक के धुँए जैसी गन्ध आना।

कैल्केरिया-फ्लोर 6x— गले में खुजली, कफ का हरा-पीला होना तथा कठिनाई से निकलना।

कैल्केरियाफॉस 6x— छाती में कफ घड़घड़ाना, हाथ-पाँवों का ठण्डा हो जाना, कफ का साफ-सुथरा न होना।

कालीसल्फ 6x— शाम के समय खाँसी का बढ़ना, ज्वर के कारण छाती में कफ का घड़घड़ाना, पीले तथा पतले कफ का कठिनाई से निकलना, गला बैठना।

नेट्रमसल्फ 6x, 30x— ठण्ड या वर्षा में रोग की वृद्धि, हरे या पीले रङ्ग का गाढ़ा कफ, छाती दबाने पर आराम का अनुभव, मुँह का स्वाद कड़वा अन्न की वमन।

कालीफॉस 6x— रोगी का दुर्बल स्वभाव, पीले रङ्ग का नमकीन एवं दुर्गन्धयुक्त कफ निकलना, भोजन से खाँसी में तीव्रता आना।

फेरमफॉस 6x— फेफड़े की जलन के कारण सूखी खाँसी, कफ का शब्द सुनाई देना, जकड़न, रात्रि के समय खाँसी का बढ़ जाना।

मैग्नेशियाफॉस 6x— ऐंठनयुक्त खाँसी रात्रि में अधिक बढ़े, सोने में कष्ट, भीतर से बड़ी तेजी के साथ खाँसी उठना।

दमा (श्वास)

नेट्रमम्योर 6x— श्वेत रङ्ग का झागदार कफ, खाँसते समय आँखें तथा मुख से पानी निकलना, कफ अधिक परन्तु कठिनाई से निकलता हो।

कालीम्योर 6x— पाकस्थली के विकारों से उत्पन्न रोग, यकृत् के कार्य में कमी, कफ कड़ा तथा श्वेत रङ्ग का, अजीर्ण, जिह्वा पर सफेदी लिए मैल श्वास लेने में कठिनाई ।

कैल्केरिया-फ्लोर 6x— पीले रङ्ग के कफ का छोटी-छोटी डेलियों में कठिनाई से निकलना, कष्ट के साथ श्वास आना, वायुनली की तङ्गी आदि लक्षणों के साथ यदि कफ में दुर्गन्ध भी हो तो 'कालीफॉस' मिलाकर दें ।

कालीफॉस 6x— कोमल स्वभाव का रोगी, दुर्गन्धयुक्त कफ का कठिनाई से निकलना, दौरे की प्रवलता । इस औषध के सेवन से दौरा बहुत हल्का रह जाता है ।

कैल्केरियाफॉस 6x— पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण रोगी की दुर्बलता, कफ पीले रङ्ग का तथा कड़ा, रोगी गला साफ करता हो ।

कालीसल्फ 6x— भोजन करने के बाद श्वास का दौरा, गर्मी की अधिकता, ठण्ड तथा रात्रि में आराम, कफ पीले रङ्ग का, चिकना तथा गले में शब्द करने वाला हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— प्रातःकाल रोग का बढ़ना, रोगी सिर नीचे तथा कमर ऊपर करके लेटना अथवा बैठना पसन्द करे, कभी-कभी भोजन की वमन स्वाद कड़वा, प्रातःकाल मल पतला हो, श्लेष्मा सड़ा हुआ तथा अधिक निकले, सिर के बाल कमजोर हों— जो जंघा के काढ़ने पर टूटते हों, नमी वाले स्थान पर रहना रोग का कारण हो, अल्पायु में रोग गला घुटने जैसा हो जाय तथा श्वास कठिनाई से आती हो ।

फुफ्फुस-प्रदाह (न्युमोनिया)

फेरमफॉस 6x— ज्वर का आधिक्य, श्वास का छोटा तथा कष्टपूर्वक जल्दी-जल्दी आना, कभी-कभी बेहोश हो जाना । फेफड़ों की सूजन के लिए यह औषध सर्वोत्तम है । जब तक रोगी को ज्वर रहे तब तक नीचे लिखी अन्य औषधियों के साथ इस औषध को भी देते रहना चाहिए ।

कालीसल्फ 6x— घरघराहट वाली खाँसी की अधिकता, साँय-साँय शब्द, श्वास घुटता सा लगे तथा ज्वर सायंकाल से अर्द्ध-रात्रि तक अधिक रहता हो ।

कालीम्योर 6x— फेफड़ों में गन्दे कफ का संग्रह झागदार कफ निकलना, तेज खाँसी, जिह्वा का रङ्ग सफेद होना ।

नेट्रमसल्फ 6x— रोगी खाँसते-खाँसते छाती पर हाथ रक्खें, छाती में दर्द, हरापन लिए गाढ़ा कफ निकले ।

कैल्केरियाफॉस 6x— ठण्ड के कारण प्रातःकाल में रोग का बढ़ना, छाती में दर्द, हरे रङ्ग का कफ, रोगी गला साफ करता हो । यह औषध मुख्य रूप से बालकों के लिए श्रेष्ठ है ।

साइलीशिया 30x— पुराना रोग, गाढ़ा, दुर्गन्धयुक्त कफ निकलना, अत्यधिक तीव्र वेदना, रोटी पेट के बल लेटना चाहे ।

तपेदिक (यक्ष्मा)

नेट्रमम्योर 200x, **कालीम्योर** 200x— प्रातःकाल ज्वर न रहे, ग्यारह बजे के लगभग हरारत-सी प्रतीत होकर ज्वर तीव्र हो जाय, पानी के समान झागदार कफ निकले, जीभ का रङ्ग भूरा हो तथा अजीर्ण बना रहता हो ।

नेट्रमम्योर 200x, **नेट्रमसल्फ** 200x— रात्रि के समय बेचैनी बढ़ जाती हो, मुख का स्वाद कड़वा, बाँयें कन्धे में दर्द, दोपहर से पहले ज्वर रहे प्रातः एकदम उतर जाय तो इन औषधियों को केवल प्रातःकाल बदलकर देना चाहिए।

फेरमफॉस 30x, **कल्केरियाफॉस** 30x— ज्वर की तीव्रता तीसरे प्रहर हो, श्वास घुटकर आता हो, छाती में दर्द तथा रक्त मिला कफ निकलता हो, ऐसी स्थिति में इन दोनों औषधियों को बदलकर देना चाहिए ।

साइलीशिया 30x— रोगी पतला-दुबला हो, गला बैठ गया हो, श्वास खींचकर आहें भरता हो ग्रीवा तथा सिर के चारों ओर पसीना आता हो तथा कफ एलवोमिन जैसा निकलता हो ।

साइलीशिया 200x— ज्वर के कारण पाँव के तलवे गरम रहें, पसीना अधिक आये, मुख का स्वाद मीठा-विशेषकर रात्रि के समय, खाँसी में दुर्गन्धित सड़ा हुआ-सा पीला कफ निकलता हो, कभी-कभी कोमल स्वभाव के कारण दिल अधिक धड़कने लगता हो ।

हैजा (कालरा)

फेरमफॉस 6x, **मैग्नेशियाफॉस** 6x, **कालीफॉस** 6x— इन तीनों औषधियों को बराबर मात्रा में लेकर खरल में घोंटकर रख लें, आवश्यकता के समय इनका मिश्रित चूर्ण 3-3 ग्रेन की मात्रा हर 10 मिनट बाद देते रहें ।

प्यास अधिक हो तो— एक पौण्ड उबले हुए पानी में 10 ग्रेन 'नेट्रम म्योर' मिलाकर रख लें और उसी को आवश्यकतानुसार पिलाते रहें ।

कैल्केरियाफॉस 6x, **फेरमफॉस** 6x— हरे रङ्ग की वमन, पतले दस्त शरीर अत्यन्त दुर्बल तथा निचुड़ा हुआ-सा हो।

फेरमफॉस 6x, **नेट्रमफॉस** 6x— रोग की प्रारम्भिक स्थिति में जब कि सफेद रंग के पतले दस्त तथा वमन हों, मुख लाल हो गया हो, आँखें गड्ढे में घुस गई हों, बेचैनी तथा तन्द्रा हो, तब इन औषधियों को 15-15 अथवा 30-30 मिनट बाद क्रमशः परिवर्तित करते हुए देना चाहिए।

नेट्रमम्योर 6, **नेट्रमफॉस** 6x— प्यास की तीव्रता तथा पानी जैसे पतले गन्धयुक्त दस्तों में।

मैग्नेशियाफॉस 6x— दर्द की अधिकता तथा सम्पूर्ण शरीर में दर्द होने पर 'फेरमफॉस 6xनेट्रमसल्फ 6x' को इस औषध के साथ मिलाकर दें।

कालीफॉस 6x— चावलों के माँड़ जैसे, दस्त नाड़ी की अत्यन्त निर्बलता, चेहरे के रङ्ग में परिवर्तन तथा खराब स्थिति हो जाने पर इस औषध के साथ फेरमफॉस 6x, मिलाकर 10-12 मिनट बाद दें।

कण्ठ-झिल्ली प्रदाह (डिप्थीरिया)

फेमफॉस 6x, **नेट्रमसल्फ** 6x— रोगी की ग्रीवा अकड़ी हुई लगे, मुख में पतले रङ्ग के पदार्थ से युक्त श्लेष्मा निकलता हो, मुख का स्वाद कड़वा हो जाय, सिर-दर्द ज्वर हो या न हो।

फेरमफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— ज्वर, सिर दर्द, व्याकुलता, ग्रीवा का अकड़ी हुई-सी प्रतीत होना, कण्ठ में जलन, कण्ठ के भीतर सूजन। रोग की प्रारम्भिक अथवा द्वितीय अवस्था में इन औषधियों को एक के बाद एक करके 3-3 घण्टे के अन्तर से देना चाहिए।

कैल्केरियाफ्लोर 6x, **कैल्केरियाफॉस** 6x— रोग का प्रकोप श्वासनली तक प्रवेश कर गया हो, चिकित्सा में कुपथ्य हुआ हो तथा स्राव के निकलने पर कुछ सफेदी रह गई हो।

कालीफॉस 6x— रोगी की हालत में खराबी, दुर्बलता, दुर्गन्धयुक्त स्राव, रोगी स्थान पर जलन, दृष्टि-क्षीणता आदि लक्षणों पर।

नेट्रमम्योर 6x— पानी के समान पतले दस्त, मुख से लुआवदार स्राव का निकलना, निन्द्रा, मुख पर पीलापन, प्यास, जीभ का सूख जाना, श्वास लेने में कठिनाई आदि लक्षणों पर।

विशेष— इस रोग की मुख्य औषधियाँ फेरमफॉस, तथा कालीफॉस है।

रोग के अन्य लक्षणों के बढ़ने पर ही आवश्यकतानुसार नेट्रमम्योर तथा कालीम्योर देनी चाहिए।

धनुष्टंकार (टिटेनस)

कैल्केरियाफ्लोर 30x— गन्दे चाकू द्वारा नाल काटे जाने के कारण शिशु को यह रोग होने पर, इसे दिन में तीन बार दें, नाल पक गया हो तो 'साइलीशिया 2x' का मरहम बनाकर लगावें। यदि सूजन हो, रक्त टपकता हो तो 'फेरमफॉस 2x' तथा 'कालम्योर 2x' का वैसलीन में मरहम बनाकर लगायें।

साइलीशिया 30— कटे या छिले हुए स्थान पर मवाद पड़ गया हो और वहाँ गाढ़ा पीला तथा दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलता हो तो यह औषध दें।

फेरमफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— ज्वर, सिर-दर्द, घरघराहट, गर्दन का अकड़ा हुआ लगना, कण्ठ में जलन, कण्ठ के भीतर सूजन आदि रोग की प्रथम एवं द्वितीय अवस्था में इन दोनों औषधियों को एक के बाद एक करके 3-3 घण्टे के अन्तर से दें।

कैल्केरियाफ्लोर 6x, **कैल्केरियाफॉस** 6x— समुचित चिकित्सा के अभाव में जब रोग का प्रकोप श्वास-नली तक हो चुका हो, तब इन औषधियों को क्रमशः देना चाहिए।

कम्पन रोग ताण्डव या कोरिया

साइलीशिया 6x, **नेट्रमम्योर** 6x— अधिक तृष्णा, क्षुधा उछल-कूद अच्छी लगना, दाने दब जाने के कारण रोग की उत्पत्ति, नाक में खुजली, मुख का रंग फीका पड़ जाना, आँखों से देखना अच्छना न लगना आदि लक्षणों पर।

साइलीशिया 6x, **नेट्रमफॉस** 6x— स्वभाव में चिड़चिड़ापन, व्याकुलता तन्द्रा अनिद्रा व अजीर्ण होते हुए भी भूख अधिक लगना, पेट में कीड़े, पाकस्थली में विकार, पुराना अजीर्ण, नाक खुजाना अच्छा लगना आदि लक्षणों पर।

मैग्नेसियाफॉस 6x, **कल्केरियाफॉस** 6x— मानसिक-दुर्बलता, दुर्व्यसनों का प्रभाव, चिन्ता, हाथ-पाँवों का अधिक हिलना आदि लक्षणों में इन औषधियों को क्रमशः पर्यायक्रम से दें।

ऐंठन (अकड़न)

मैग्नेशिया 3x, **कल्केरियाफॉल** 30x— मैग्नेशियाफॉस को सुबह तथा कैल्केरियाफॉस को सायंकाल सेवन करना चाहिए।

मस्तिष्क से काम करने वालों के लिए यह रोग होने पर पहले 'कैलीफॉस

3x' भी दें । बाद में इसे 6x तथा 200x शक्ति में देना चाहिए ।

पक्षाघात (लकवा या फालिज)

कैल्केरियाफॉस 6x— शीत ऋतु में सर्दी के कारण होने वाले रोग जबकि मुख्य रूप से बायीं ओर को ऐंठन हो तथा आधी रात के बाद कष्ट बढ़ता हो।

कालीफॉस 6x, **मैग्नेशियाफॉस** 6x— रोग चाहे धीरे-धीरे हुआ हो अथवा एक साथ हुआ हो, दोनों औषधियों को अदल-बदल कर 3-3 घण्टे के अन्तर से अथवा आवश्यकतानुसार और कम अधिक समय के अन्तर से देना चाहिए।

उन्माद (पागलपन)

बुद्धि का भ्रष्ट हो जाना, चीखना-चिल्लाना, भागना, कपड़े फाड़ना, बकना, नाचना-गाना, भूख का कम हो जाना आदि इस रोग के लक्षण हैं ।

इसमें निम्नलिखित औषधियाँ लाभप्रद हैं—

नेट्रमम्योर 3x, **कालीफॉस** 30x— इन दोनों औषधियों को अदल-बदल कर 4-4 घण्टे के अन्तर से दें । कुछ लाभ होने पर यही औषधियाँ 60x तथा 200x इन ऊँचे क्रमों में देनी चाहिए ।

अनिद्रा (नींद न आना)

फेरमफॉस 3x, **कालीफॉस** 30x— इन दोनों औषधियों को अदल-बदल कर दिन में चार बार देना चाहिए ।

मिर्गी (अपस्मार)

फेरमफॉस 12x— रक्त का दौरा मस्तिष्क की ओर हो, शरीर अकड़ा जाता हो तथा दाँत बन्द हो जाते हों ।

कालीम्योर 6x— जीभ पर श्वेत तथा भूरे रङ्ग के पर्त हों, शरीर पर किसी प्रकार के दाने निकले हों अथवा दब गये हों- की विशेष औषध है ।

केल्केरियाफॉस 6x— शरीर में रक्त की कमी तथा रोगी को अधिक भोजन की आदत होने पर ।

सिलीशिया 6x— दौरे रात्रि के समय, विशेषकर मास के प्रारम्भ में आते हों तथा दौरा आने से पूर्व ठण्ड लगती हो ।

कालीफॉस 6x, **मैग्नेशियाफॉस** 6x— सिर का नीचे की ओर झुक जाना बेहोशी, अकड़न आदि लक्षणों पर इन दोनों औषधियों अदल-बदल कर दें ।

सन्निपात (प्रलाप)

फेरमफॉस 6x, **कालीफॉस** 6x— यदि रोगी चुपचाप पड़ा रहता हो और मुर्दे जैसा लगता हो ।

नेट्रमम्योर 6x, **मैग्नेशिया** 6x, **फेरमफॉस** 6x— यदि रोगी अण्ट-शण्ट बकता हो ।

मस्तिष्कावरण-प्रदाह

कालीम्योर 12x, **नेट्रमसल्फ** 12x— ज्वर, प्रलाप, मस्तिष्क में तीव्र वेदना, चेहरे पर लाली, नाड़ी में तेजी, सुस्ती तथा रोगी का एकाएक चिल्ला उठना आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमसल्फ 6x— वेदना, मस्तिष्क फटता हुआ-सा लगे, व्याकुलता, चोट लगने के कारण होने वाला रोग ।

विशेष— यदि रोग माता के गर्भ से मिला हो अथवा पुराना पड़ गया हो तो 'कैल्केरियाफॉस 6x' देना अत्यन्त लाभदायक है ।

चक्कर आना

कालीफॉस 6x— तेज धूप में काम करने, इधर-उधर घूमने, उठने-बैठने, दृष्टि घुमाने आदि कारणों से होने वाले रोग में ।

नेट्रमफॉस 3x— प्रातःकाल या मध्याह्न में खोपड़ी में दर्द, क्षुधा, अरुचि आदि लक्षणों पर ।

फेरमफॉस 12x— खोपड़ी पर चोट पड़ती हुई-सी प्रतीत हो, सिर भीतर से लुप-लुप करता जान पड़े, चेहरा तमतमाया हुआ हो, सब वस्तुएं घूमती हुई लगें, सिर में चक्कर आदि लक्षणों पर ।

सिर-दर्द

साइलीशिया 30x— अधिक मानसिक कार्य करने के कारण शक्ति की क्षीणता से सिर-दर्द, गर्मी अथवा त्वचा-रोग के कारण सिर-दर्द एवं रात्रि के समय पसीना आने के लक्षणों में ।

नेट्रमसल्फ 30x— लिखने-पढ़ने अथवा चलने के कारण प्रातः से मध्याह्न तक सिर में दर्द की अधिकता, सायंकाल में कभी-कभी पित्त की वमन, मुख का स्वाद कड़वा होना आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमफॉस 30x— खोपड़ी गरम रहे और उस पर कोई बैठा हुआ-सा

लगे, कभी-कभी खट्टी बमन होना, आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमफॉस 30x, **कैल्केरियाफॉस** 30x— प्रातःकाल सोकर जगने पर सिर-दर्द के लक्षणों में दोनों औषधियाँ बारी-बार से दें ।

नेट्रमम्योर 30x, **नेट्रमसल्फ** 30x— आधे माथे में दर्द होने पर इन दोनों औषधियों में से पहली को सुबह तथा दूसरी को सायंकाल सेवन करायें ।

कर्णमूल कनफेड़े

फेरमफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— सिर-दर्द, सूजन तथा कर्णमूल के उभर आने पर ।

यदि लार अधिक गिरती हो, सूजन अधिक हो अथवा सर्दी के कारण सूजन अण्डकोषों में बदल गई हो तो उक्त औषधियों के साथ ही **'नेट्रमम्योर** 6x' भी देना चाहिए ।

फेरमफॉस 2 x तथा **कालीम्योर** 2x— का मरहम बनाकर लगाना तथा उस पर रुई से सेंककर के बाँध देना लाभदायक रहता है । फलालैन के कपड़े से कर्णमूल की सिकाई करना आवश्यक है ।

सन्यास-रोग (शिथिलता)

फेरमफॉस 6x, **कैल्केरियाफ्लोर** 6x— मस्तिष्क की दुर्बलता एवं झिल्ली-प्रदाह के कारण रोग के प्रारम्भ होने, पर इन दोनों औषधियों को बदल-बदलकर आधा-आधा घन्टे के अन्तर से देना चाहिए तथा ज्यों-ज्यों लाभ प्रतीत हों त्यों-त्यों औषध देने के समय में अन्तर को बढ़ाते जाना चाहिए ।

फेरमफॉस 6x, **कालीफॉस** 6x— रोग आरम्भ होने की पहली अथवा मध्यावस्था में यदि अर्द्धाङ्ग वायु भी शामिल हो गई हो तो इन दोनों औषधियों को मिलाकर देना चाहिए ।

फेरमफॉस 6x, **कालम्योर** 6x— नाक से काला रुधिर बहना जारी हो तो इन औषधियों को अदल-बदल कर देना चाहिए ।

फेरमफॉस 6x, **मैग्नेशियाफॉस**— रोग गी अधिकता में इन औषधियों को मिलाकर देना चाहिए ।

दिल का धड़कना

फेरमफॉस 6x, **कैल्केरियाफॉस** 6x— दिल का धड़कना, हृदय की निर्बलता, दिल में दर्द, जलन, फड़कन, रोगी को दरिद्र हो जाने का भय अथवा धनी होने की आकाक्षा आदि लक्षणों पर ।

कैल्केरियाफॉस 6x— पेट में गुड़गुड़ाहट, अफारा, दिल की धड़कन, सुस्ती, हाथ-पाँवों का काँपना, श्वास लेते समय दिल के चारों ओर दर्द आदि लक्षणों पर ।

मैग्नेशियाफॉस 6— अचानक दिल के धड़कने का दौरा दिल में तीव्र ऐंठन करता हुआ दर्द एवं धड़कन पर ।

फेरमफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— रक्त की अधिकता से दिल की गति का बढ़ जाना, कभी-कभी मूर्च्छा आना तथा दिल के स्थान पर ठण्डक प्रतीत होना आदि लक्षणों पर ।

गठिया

मैग्नेशियाफॉस 6x— जब दर्द असहनीय हो तथा उसमें शूल के समान तीव्रता हो ।

कालीसल्फ— जब दर्द स्थान परिवर्तन करता रहता हो ।

नेट्रमसफल्स 6x, **फेरमफॉस** 6x— जब पाँवों के जोड़ों में तीव्र दर्द, व्याकुलता, जलन और ज्वर के लक्षण हों ।

कालीफॉस 6x— जब दर्द कुछ देर रहता हो, चलने-फिरने से अधिक बढ़िता हो, मल त्यागने पर राहत अनुभव होती हो, जोड़ों में तीव्र खिंचाव युक्त दर्द हो एवं रोगी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया हो ।

फेरनफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— रोग की प्रथमावस्था में जब सर्दी के कारण पीठ या गर्दन अकड़ गई हो, चलने-फिरने से रोग बढ़ता हो तथा जोड़ों में सूजन ।

स्नायुशूल (साइटिका)

कालीफॉस 6x, **नेट्रमसल्फ** 6x— दर्द की तीव्रता, व्याकुलता, धीरे-धीरे चलने में कुछ आराम अनुभव होने पर ।

मैग्नेशियाफॉस 6x— यदि दर्द की लहरें उठती हों तो पहले इस औषध की कुछ मात्राएँ देकर तत्पश्चात् पूर्वोक्त औषधियाँ देनी चाहिए ।

यकृत और प्लीहा

कालीम्योर 6x— यकृत् के कार्य में कमी, तिल्ली का अधिक बढ़ना, पाकाशय की खराबी, अजीर्ण, जीभ पर सफेदी, शुक्रमेह, सीधी और दर्द तथा बायीं प्लीहा की वृद्धि होने पर ।

फेरमफॉस 6x— यकृत् प्लीहा में रक्त संग्रह, दर्द, सूजन, ज्वर, नाड़ी की तीव्रता आदि रोगों की प्रारम्भिक अवस्था में ।

नेट्रमफॉस 6x— यकृत् की शिकायत या मूत्रकृच्छ होने पर ।

नेट्रमसल्फ 6x— यकृत् में रक्त-संग्रह, दर्द की अधिकता, पित्त की अधिकता आदि लक्षणों पर ।

कालीफॉस 6x— अधिक परिश्रम-जन्य मस्तिष्क की दुर्बलता, यकृत् में दर्द, प्लीहा-वृद्धि आदि लक्षणों के समय यदि रोगी का स्वभाव कोमल हो तो इस औषध को अन्य लक्षणों की औषध के साथ अदल-बदल कर देना चाहिए।

कैल्केरियासल्फ 6x— यकृत् में फोड़ा तथा दुर्बलता अधिक होने पर ।

पीलिया (पाण्डु-रोग)

इस रोग में निम्नलिखित औषधियाँ देनी चाहिए—

कालीम्योर 30x, **नेट्रमकॉस** 30x— इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से दें।

जलोदर

कालीम्योर 6x, 30x, **कालीफॉस** 6x, 30x— गठिया, यकृत, दिल, गुर्दे अथवा पित्त की रुकावट के कारण होने वाला जलोदर जिसमें सूजन बर्फ के समान चमकती हो ।

नेट्रमसल्फ 6x, 30x, **नेट्रमम्योर** 6x, 30x— जलोदर में पानी ठीक से न बैठना तथा सूजन के लक्षणों पर इन औषधियों को पर्यायक्रम से दें ।

फेरमफॉस 6x, 30x, **कैल्केरियाफॉस** 6x, 3 0x— यदि रोग अधिक मैथुन, स्वप्नदोष, रक्त की कमी अथवा भोजन की खराबी के कारण हुआ हो।

कैल्केरिया-फ्लोर 6x, 30x— अण्डकोषों में पुराने नजले का पानी उतर आने अथवा किसी दिल के रोग (भय, शोक अथवा दुःख), के कारण यह बीमारी होने पर ।

लू लगना

नेट्रमम्योर 6x—15-15 मिनट के अन्तर से इस औषध की कुछ मात्राएँ दें । बीच में एक-दो मात्रा 'कालीफॉस 6x' की भी अवश्य दें ।

अर्श (बवासीर)

कालीफॉस 30x— मस्सों में घाव एवं हर समय खुजलाहट होने पर ।

कालीम्योर 30— मस्सों से गाढ़ा तथा काला रक्त निकलने पर ।

मैग्नेशियाफॉस 6x— मस्सों में तीव्र एवं असह्य वेदना होने पर । इसी

औषध के 2x का पानी में लोशन बनाकर उससे मस्सों को तर रखना भी अधिक लाभ करता है ।

फेरमफॉस 30x, **कैल्केरियाफ्लोर** 30x— रक्त में जलन, रक्त का चमकदार होना, अजीर्ण, पीठ के अन्तिम भाग में दर्द, सिर-दर्द आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमम्योर 30x— मूत्रनली तथा मस्सों में काँटे चुभने जैसा दर्द, गुदा में जलन चारों ओर मस्से, अजीर्ण तथा मल के कड़ा होने पर ।

साइलीशिया 30x— अण्डकोष अथवा गुदा में पीड़ा, मस्सों का भीतर न जाना, खुजलाहट आदि लक्षणों पर ।

हिचकी

मैग्नेशियाफॉस 6x— किसी भी कारण से आने वाली हिचकी में लाभ करती है । थोड़े समय के अन्तर से गरम पानी के साथ दें ।

नेट्रमम्योर 6x— यदि 'क्विनीन' का सेवन करने के बाद हिचकियाँ आने लगी हों तो यह औषध लाभ करती है ।

मितली (वमन)

नेट्रमफॉस 6x— जीभ पीली हो तथा वमन में खट्टा जमा हुआ पतला स्राव निकलता हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— जी अधिक मिचलाता हो, हरापन अथवा पित्त के कड़वे स्राव की वमन हो ।

कालीम्योर 6x— सफेद-भूरे कफ अथवा कालापन लिए रुधिर की वमन होने पर ।

कालीफॉस 6x— अपक्क दुर्गन्धयुक्त माद्दे की वमन तथा रात्रि के समय ठण्डा पानी पीने से वमन होने पर ।

उपान्त्र - प्रदाह एपेण्डिसाइटिस

मैग्नेशियाफॉस 6x— पाकाशय की दुर्बलता, पाकस्थली में शूल, अजीर्ण, भोजन करने के 3 घन्टे बाद मितली, वमन, जलन अथवा हिचकी आना, मीठा खाने की रुचि, पेट को दबाने अथवा सेंकने पर आराम का अनुभव होना आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमसल्फ 6x— पेट के दायीं ओर शूल, यकृत्-वृद्धि, पित्त-वमन, प्रातः काल पीलापन लिए काले दस्त, वायु अधिक निकलना, मुँह का स्वाद कड़वा,

छाती में जलन आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमफॉस 6x— पाकाशय की कोमलता, अजीर्ण, भोजन के दो घन्टे बाद दर्द, मुँह का स्वाद खट्टा, वमन आदि ।

कालीम्योर 6x— जीभ का स्वाद खट्टा, रंग भूरा, वमन, मितली के समय पेट में सीधी ओर दर्द, अफारा आदि लक्षणों पर ।

साइलीशिया 6x— रोग पुराना होने पर आँतों पर जलन, कड़ी गाँठ, आँतों में जख्म आदि लक्षणों पर ।

पाकस्थली पर सूजन गेरेस्टाइटिस

नेट्रमफॉस 6x— पाकाशय कोमल हो, अजीर्ण खाना खाने के दो घन्टे बाद दर्द, यकृत् का कड़ापन, मुँह का स्वाद खट्टा रहना, वमन में थोड़ा काला स्राव निकलता हो ।

कालीफॉस 6— पाकस्थली में निरन्तर दर्द, भोजन करने के कुछ आराम का अनुभव होना, खट्टी डकारें, दिल की कमजोरी, थोड़ी-थोड़ी देर बाद खाना-खाने की इच्छा, चित्त की परेशानी, बायीं ओर को वायु-गोले जैसा दर्द।

फेरमफॉस 6x— थोड़ा खाना खाने के बाद ही पेट में दर्द, जलन, अफारा, वमन, डकारें आना, वमन की खट्टी गन्ध, ठन्डा पानी पीने की इच्छा दूध, से घृणा ।

प्यास तृषा

फेरमफॉस 6x— प्यास की तीव्रता, व्याकुलता, कभी-कभी पित्त की वमन, विशेषकर सायंकाल में तृषा बढ़ जाती हो ।

नेट्रमफॉस 6x, **कालीफॉस** 6x— जब रोगी अत्यधिक ठण्डा पानी पीने की इच्छा बार-बार करता हो, उस समय इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम देना चाहिए ।

भूख की कमी

कालीफॉस 6x— जब किसी रोग के कारण पाचक-शक्ति मन्द पड़ गई हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— जब पेट में कीड़े हों, जीभ पीली हो, पाकाशय में शूल का दर्द हो ।

फेरमफॉस 6x— जब ज्वर के कारण भूख में कमी आई हो तथा दुर्बलता अधिक हो ।

कैल्केरियाफॉस 30x— जब अजीर्ण अथवा रक्त की कमी के कारण भूख कम लगती हो और भोजन के बाद वमन हो जाती हो ।

कालीफॉस 6x— कोमल स्वभाव वाले रोगियों के लिए ।

फेरमफॉस 6x— स्त्रियों को मासिक-धर्म के समय दर्द हो तथा निर्बलता पर ।

नेट्रमफॉस 6x— पेट में कृमि पड़ जाने के कारण बालकों के पेट-दर्द में, जबकि उन्हें खट्टी गन्ध के दस्त आते हों ।

मैग्नेशियाफॉस 6x— जब पेट को दबाने तथा सेंकने से कुछ देर को आराम मिलता हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— अफारे के साथ अजीर्ण, पित्त-वमन, अतिसार, मुँह का स्वाद कड़वा होना तथा पेड में कुचले जाने जैसा दर्द होने पर ।

कब्ज

कालीफॉस 6x— रोगी कोमल स्वभाव का हो, मल का रंग सफेद या काला तथा अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त होने पर ।

साइलीशिया 30x— गुल्म कड़ी हो, मल बाहर निकलकर फिर भीतर चला जाता हो, पसीना अधिक आये, गुर्दों में घाव, मवाद निकलने में सुई चुभने जैसा दर्द आदि लक्षणों पर यह औषध बच्चों के लिये अत्युत्तम है ।

कालीफॉस 6x— रोगी का दुर्बल होना, मल में कड़ापन तथा कभी-कभी रक्त-मिश्रित होना, सिर में दर्द आदि लक्षणों पर ।

कालीम्योर 6x— जीभ का रंग भूरा, चिकनाई वाली वस्तुओं के सेवन से कब्ज, यकृत् का ठीक प्रकार से कार्य न करना तथा हमेशा कब्ज रहने पर इस औषध को 8-8 ग्रेन की मात्रा में दें ।

नेट्रमम्योर 200—रोगी को बवासीर की बीमारी हो, पुराना अजीर्ण छाती में जलन, आँख तथा मुँह से पानी आना तथा आँतों की दुर्बलता पर इस औषध की एक मात्रा सुबह के समय देनी चाहिए ।

कालीम्योर 200x, **नेट्रमम्योर** 200x— ये दोनों औषधियाँ कब्ज को दूर करने में अत्युत्तम है ।

मन्दाग्नि (अजीर्ण)

मैग्नेशियाफॉस 6x— पेट में मरोड़, दर्द, कराहना, कभी-कभी हिचकी आना तथा रोगी का व्याकुल होना ।

नेट्रमफॉस 6x— मुँह का स्वाद खट्टा हो जाना, खट्टी वमन, पेट में कृमि पड़ने के कारण दर्द, भोजन के कारण पाकाशय में तीव्र वेदना, जीभ के पिछले भाग का रंग हरा-पीला होना तथा भूख में कमी ।

कैल्केरियाफॉस 6x— थोड़ा भोजन करने अथवा पानी पीने से पेट में दर्द, आँव मिले हुए हरे दस्त तथा अजीर्ण आदि लक्षणों पर, कोई हरा फल खाने के कारण हुआ हो तो उसके लिए भी यह औषध अत्युत्तम है ।

नेट्रमम्योर 6x— भूख कम लगना, भोजन में अरुचि, अजीर्ण, पित्त की वमन, भोजन करते ही अफारा हो जाना ।

कालीम्योर 6x— अजीर्ण, मितली, गले एवं सीने में भारीपन, जीभ का रंग भूरा होना, चर्बी की वस्तु खाने के कारण हुआ रोग ।

कालीसल्फ 6x— दुर्गन्धयुक्त सफेद दस्त, नाभि के चारों ओर दाग पुराना अतिसार, अजीर्ण पाकाशय में भारीपन ।

नेट्रमसल्फ 6x— मुँह का स्वाद कड़वा, पित्तातिसार, कड़ुए पित्त की वमन, पेट तथा सीने में जलन ।

पतले दस्त (अतिसार)

साइलीशिया 6x— टीका लगवाने के बाद आने वाले दस्त, पेट में कड़ापन या अफारा, माथे में खट्टा पसीना आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमसल्फ 6x— वर्षा ऋतु में पित्तातिसार, कालापन लिए हुए पीले दस्त, वृद्धों को पुराने अजीर्ण के कारण मुख्यतः प्रातःकाल दस्त आने पर ।

कालीसल्फ 6x— काले-पीले, पानी समान, थोड़ी दुर्गन्धयुक्त दस्त अथवा संग्रहणी पर ।

कैल्केरियासल्फ 6x— ऋतु परिवर्तन के कारण होने वाले दस्त, पाकस्थली के रोग अथवा आँतों के ज्वर में आनेइ वाले दस्त, मल के साथ कभी-कभी रक्त आने पर ।

कैल्केरियाफॉस 6x— पतले, दुर्गन्धयुक्त अधिक गरम दस्त अथवा हरापन लिए लसदार बिना पके अन्न के दस्त । विशेषकर बालकों के दाँत निकलते समय के दस्तों पर लाभकारी है ।

पेचिश (डिसेण्ट्री)

कैल्केरियाफॉस 6x, **मैनेशियाफॉस** 6x— मरोड़ सहित पतले दस्त, जो आँव एवं रक्त-मिश्रित हों ।

मैग्नेशियाफॉस 6x— यह पेचिश की मुख्य औषध है । इसे दस्तों के लिए दी जाने वाली प्रत्येक औषध के साथ पर्यायक्रम से देना चाहिए । पुराने रोगों में ऊँची शक्ति की औषध के साथ देनी चाहिए ।

कालीफॉस 6x— पेट में अफारा, रुधिर मिला श्वेत रङ्ग का मल नष्ट के साथ जाता हो, तब इसे मैग्नेशियाफॉस के साथ पर्यायक्रम से देना चाहिए।

कालीम्योर 6x, **मैग्नेशियाफॉस** 6x— दुर्गन्धयुक्त पीले रङ्ग के दस्त आँव तथा हर समय दर्द रहने पर ।

फेरमफॉस 6x, **मैग्नेशियाफॉस** 6x— लसदार तीव्र एवं मरोड़ के साथ मल निकलना, हर समय शौच जाने की इच्छा ।

मूत्रकृच्छ (सूजाक)

फेरमफॉस 12x, **कालीम्योर** 12x अथवा 12— मूत्र में जलन, इन्द्रिय में सूजन, सूराख में लाली, श्वेत स्राव निकलने तथा ज्वर आदि के लक्षणों में दोनों औषधियों को पर्यायक्रम (एक के बाद दूसरी) से दें।

फेरमफॉस 12x या 12, **नेट्रमफॉस** 12x अथवा 12— ज्वर, सूजन, मूत्र-त्याग के समय मृत्यु तुल्य कष्ट एवं खट्टी गन्धयुक्त स्राव के निकलने पर।

कालीसल्फ 30x— रोग के पुराने पड़ जाने तथा बढ़ जाने पर तथा पीला, हरा, पतला मवाद निकलने पर ।

नेट्रमम्योर 6x— इन्द्रिय के अग्र-भाग में घाव होने, दबाने पर दर्द का अनुभव होने तथा पानी के समान पीव निकलने पर ।

कैल्केरियाफॉस 30x— जब मवाद में थोड़ा रक्त भी मिश्रित हो तथा इसके सेवन से मवाद बन्द हो जाता है ।

नेट्रमसल्फ 30x— इन्द्रिय की जड़ में घाव होने और बिना दर्द के हरा-पीला स्राव निकलने पर ।

मूत्राधिक्य

कैल्केरियाफॉल 6x या 30— मूत्र की अधिकता, मूत्र का रङ्गीन होना तथा रोगी का वृद्ध होना ।

कैल्केरियाफ्लोर 6x या 6— रोगी का वृद्ध होना, मूत्राशय की निर्बलता एवं मूत्र का अधिक मात्रा में आना ।

नेट्रमफॉस 30x या 30— आमवात के कारण मूत्र का बार-बार आना उसका रङ्ग लाल होना ।

फेरमफॉस 12x या 12— मूत्रेन्द्रिय के भीतरी भाग की कमजोरी के कारण बार-बार मूत्र आना, मूत्राशय में जलन ।

साइलीशिया 200x— हर तीसरे दिन औषध की एक मात्रा देने से मूत्राधिक्य रोग में लाभ होता है ।

प्रमेह

कैल्केरियाफॉस 30x— हर समय स्त्री का ध्यान रहे, रात्रि में स्वप्नदोष के रूप में अथवा स्त्री ध्यान आते ही स्वतः वीर्य-स्खलित हो जाय ।

नेट्रमसल्फ 6x— रक्त की कमी, शारीरिक - दुर्बलता, उचित भोजन न मिलने के कारण यह रोग हो तथा वीर्य बूँद-बूँद करके निकलता हो ।

कालीफॉस 6x— सहवास की अधिक इच्छा हो, हस्तमैथुन आदि के कारण इन्द्रिय की नसें शिथिल हो गई हों आँखों के सामने अँधेरा छा जाता हो, रात्रि के समय स्वप्रदोष होता हो तथा दुर्बलता के लक्षण दिखाई देते हों ।

फेरमफॉस 30x— अण्डकोषों पर सूजन, हाथ-पावों में गर्मी तथा बिना इच्छा के वीर्यपात आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमफॉस 2x— वीर्य का पानी के समान पतला हो जाना, हर रात्रि को स्वप्रदोष होना स्त्री का ध्यान आते ही स्खलित हो जाना, स्खलित वीर्य में खट्टी सड़ी गन्ध, स्खलन के पश्चात् दुर्बलता एवं कँप-कँपी का अनुभव, सम्भोगेच्छा में कमी, मल में कीड़े निकलना आदि लक्षणों पर ।

मधुमेह (डायबिटीज)

नेट्रमसल्फ 30x— यह मधुमेह की मुख्य औषध हैं ।

नेट्रमम्योर 30x नेट्रमसल्फ 30x— इन दोनों औषधियों में से 'नेट्रमम्योर' की 1 मात्रा प्रातःकाल तथा 'नेट्रमसल्फ' की एक मात्रा सायंकाल प्रतिदिन देनी चाहिये ।

कालीम्योर 30x, नेट्रमसल्फ 30x—यदि अजीर्ण हो तो प्रातः कालीम्योर एवं सायं नेट्रमसल्फ देना चाहिये ।

नेट्रमम्योर 30x— प्यास की अधिकता, चर्बी एवं मांस धीरे-धीरे शुष्क होते जाने अर्थात् शरीर के दुर्बल होने पर ।

कैल्केरियाफॉस 30— जब रोगी क्षीण होकर सूखता जा रहा हो, भूख मारी गई हो, फेफड़ों में कष्ट हो, मूत्र अधिक लगता हो ।

गुर्दे में जलन (पित्त-पथरी)

फेरमफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— जलन, गुर्दे में दर्द, पेशाब के साथ पीले रंग का स्राव, बेचैनी आदि लक्षणों पर दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से दें ।

फेरमफॉस 3x, **मैग्नेशियाफॉस** 3x **कालीफॉस** 3x— जब रोगी को अत्यन्त बेचैनी हो, उस समय इन तीनों औषधियों को समभाग लेकर, खरल में घोंट लें तथा 5-5 ग्रेन की मात्रा में हर 15 मिनट बाद गरम पानी के साथ दें ।

कैल्केरियाफॉस 30x— जब गुर्दे अथवा पित्तकोष में पथरी का अनुभव हो तो इस औषध को दें । इसके सेवन करने के बाद फिर पथरी होने की आशङ्का नहीं रहती । रोग के दूर हो जाने के बाद भी कुछ समय तक इसका सेवन कराते रहना चाहिये ।

कालीम्योर 6x, **नेट्रमफॉस** 6x— पेशाब बन्द हो गया हो अथवा एक-एक बूँद आता हो, गुर्दे में जलन या पित्त-पथरी हो, तब ये औषधियाँ मिलाकर देनी चाहिए ।

फोते बढ़ना (हाइड्रोसील)

नेट्रमम्योर 12x— अण्डकोष सूज गये हों तथा मूत्र गँदला और चिपका हुआ आता हो ।

कैल्केरियाफ्लोर 6x— अण्डकोषों की नसें ढ़ीलीं पड़ गई हों, उनमें पानी भर गया हो, हिलने पर चिपकता हुआ पसीना पानी जैसा निकलता हो तथा मूत्र का रङ्ग पीला हो ।

कैल्केरियाफॉस 12x— अण्डकोषों में पानी भर गया हो, वे सूज गये हों तथा मूत्र का रंग लाल हो ।

कालीम्योर 12x, **फेरमफॉस** 12x— अण्डकोषों की नसें फूल गई हों तथा सूजन आई हो तो इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम (बारी-बारी) से देना चाहिए।

विशेष— इस रोग की औषध कैल्केरियाफॉस' के साथ अन्य लक्षणों के लिए उपयुक्त औषध मिलाकर देना लाभदायक है ।

नपुन्सकता

साइलीशिया 30x— यदि रोग का कारण पुराना उपदंश या सूजाक हो, मूत्र में लाल रेत अथवा वीर्य जाता हो, मैथुन इच्छा नष्ट या कम हो गई हो, अण्डकषों में खुजलाहट रहती हो तथा दुर्गन्धयुक्त श्वेद आता हो ।

कैल्केरियासल्फ 6x— हस्तमैथुन, प्रमेह अथवा सूजाक के कारण यह रोग हो, अण्डकोषों में पानी उतरता हो, गुर्दे अथवा मूत्राशय में पथरी हो आधी रात के बाद नींद नहीं आती हो, स्पर्श करने से बढ़ने वाला सिर-दर्द, हाथ-पावों का काँपना या धड़कना आदि लक्षणों पर ।

नेट्रमम्योर 30x— बहुमैथुन के कारण उत्पन्न नपुन्सकता, मैथुनेच्छा का कम या नष्ट हो जाना, प्रियतमा का ध्यान करने पर भी उत्तेजना का कम होना, परन्तु वीर्य का स्खलित हो जाना आदि लक्षणों पर ।

आँखें दुखना

फेरमफॉस 6x, **माग्नेशियाफॉस** 6x— आँखों में लाली, जलन, पीड़ा, अधिक मानसिक-कार्य अथवा रात्रि जारगरण के कारण दुखने वाली आँखों पर।

फेरम फॉस 6x, **कालीम्योर** 6x— रोग की प्रथमावस्था, लाली, दर्द, जलन, सूजन तथा सफेद कीचड़ निकलने पर इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से दें ।

नेट्रमम्योर 30x— आँखों से बूँद-बूँद पानी टपकना तथा दर्द के लक्षणों पर ।

नेट्रमफॉस 30x— आँखों से मलाई जैसी कीचड़ निकलना, आँखों का चिपक जाना, दृष्टि कमजोर होना ।

कैल्केरियाफॉस 30x— आँखों के ढ़ेलों में कड़ापन हो और आँख बन्द करने तथा दबाने से चैन पड़ता है ।

विशेष— फेरमफॉस 3x, कालीम्योर 3x— इन दोनों औषधियों को समभाग लेकर लोशन बना लें । इस लोशन की 2-2 बूँदें आँखों में डालने से लाभ होता है । दर्द की अधिकता में मैग्रेसियाफॉस 3x के लेशन से आँखों पलकों को सेंकने से बहुत आराम मिलता है ।

कोये काटना

फेरमफॉस 6x, **कालीफॉस** 6x— दोनों औषधियों को पर्याय-क्रम से खिलायें ।

कालीम्योर 6x— का मरहम बनाकर लगायें ।

मोतियाबिन्द

केल्केरियाफॉस 30x— आँखों में पानी उतर आने, धुंधला दिखाई देने चिनगारियाँ-सी उड़ती दिखाई देने आदि लक्षणों तथा मोतियाबन्द पर ।

कैल्केरियाफॉस 6x **कैल्केरियाफ्लोर** 6x— आँखों के अवयवों का ढीला हो जाना, चोट लगने जैसा दर्द तथा दीपक की रोशनी का सहन न हो पाना इन लक्षणों पर दोनों औषधियाँ पर्यायक्रम से देनी चाहिए ।

कालीम्योर 300, **कैल्केरियाफ्लोर** 30x— उक्त औषधियों से लाभ होने पर इन औषधियों का कुछ दिनों तक पर्यायक्रम से सेवन करायें ।

विशेष— जिस औषध को खिलाया जाय, उसी के क्रम 2x का मरहम बनाकर आँखों में लगाने से शीघ्र लाभ होता है ।

जाला, फूला

इस रोग में आँखों की पुतली पर सफेद धब्बा दिखाई देना लगता है । चेचक निकलने, आँखें दुखते समय गलत चिकित्सा होने आदि कारणों से यह रोग हो जाता है ।

इसके लिए निम्नलिखित औषध लाभप्रद हैं—

साइलीसिया 200x— इसे खिलायें तथा इसी औषध के क्रम 2x की मरहम बनाकर रोगी की आँखों में लगायें ।

नाखूना

फेरमफॉस 6x, **नेट्रमम्योर** 6x— इन औषधियों को पर्यायक्रम से खिलायें तथा फेरमफॉस 2x का लोशन बनाकर आँखों में डालें तथा मरहम बनाकर लगाते रहें ।

रोटे

फेरमफॉस 12x, **कालीम्योर** 12x— इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से खिलायें तथा इन दोनों औषधियों को 2x को लोशन बनाकर आँखों में डालें।

परवाल

फेरमफॉस 3x, **कालीम्योर** 3x— इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से खिलायें तथा कालीम्योर 2x का मरहम बनाकर लगायें ।

गुहेरी (अञ्जनहारी)

फेरमफॉस 6x— रोग की प्रारम्भिक अवस्था गुहेरी निकलने वाली हो तो इस औषध की एक मात्रा सेवन करते ही बैठ जाती है और बाद में नहीं निकलती ।

फेरमफॉस 6x, **कैल्केरियाफॉस** 6x— यदि गाँठ मालूम दे तो इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से खिलायें ।

साइलीशिया 6x— गुहेरी में मवाद पड़ना आरम्भ हो गया हो तो यह औषध दिन में 3-4 बार खिलायें । उच्च शक्ति का सिलशिया (200x) की केवल एक मात्रा प्रतिदिन सेवन करानी चाहिए ।

पीनस

मैग्नेशियाफॉस 30x— कान झनझनाहट तथा घ्राणशक्ति के कम या नष्ट हो जाने पर—

नेट्रमम्योर 30x— नाक के भीतर छोटी फुन्सी हो तथा सूँघने की शक्ति नष्ट हो गई हो ।

साइलीशिया 30x— यदि सूँघने की शक्ति कम या नष्ट हो और रोगी चिड़चिड़े स्वभाव का बन गया हो तो यह औषध घ्राणशक्ति को वापिस लौटा लाती है ।

नकसीर

फेरमफॉस 6x— तकसीर किसी भी कारण से क्यों न फूटी हो उसके लिए यह सर्वोतम औषध है ।

कालीफॉस 6x— यदि रोगी दुर्बल स्वभाव का वृद्ध हो तो यह औषध दें ।

कालीफॉस 6x, **फेरमफॉस** 6x— यदि रोगी का मर्ज पुराना हो या नाक से पतले रंग का रुधिर जाता हो तो इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से दें।

कालीम्योर 6x, **फेरमफॉस** 6x—रोगी दुर्बल, पतला तथा अधिक आयु का हो और रक्त का रंग कालापन लिये हो तो इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से दें ।

नजला

फेरमफॉस 6x, **कालीम्योर** 6x,— रोग की प्रारम्भिक अवस्था, नथुने जकड़े हों, ठन्डी वस्तु भारी प्रतीत हो अजीर्ण, जलन आदि लक्षणों पर इन्हें पर्यायक्रम से दें ।

कालीसल्फ 6x अथवा 6— गरम ऋतु में थोड़ा-सा चमकदार कफ अधिक निकले या अधिक कष्ट दे, तब यह औषध देनी चाहिए ।

कैल्केरियासल्फ 6x— जब एक नथुने से रक्त-मिश्रित श्लेष्मा जाता हो अथवा वह नीले गाढ़े रंग का हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— नाक में खुजली, छीकें पीलापन लिये श्लेष्मा तथा नाक रगड़ने के लक्षणों पर ।

सिलीशिया 30x— नाक के सिरे पर गये हों और खुजली हो ।

कालीम्योर 6x— नाक से अथवा आँख से पानी गिरता हो, लसदार नसकीन, तरल, खुजली उत्पन्न करने वाली वस्तु निकलती हो, छीकें आती हों।

मैग्नेशियाफॉस 6x— प्रतिश्याय कभी सूखा कभी तर हो जाय, श्लेष्मा कठिनाई से निकले, घ्राणशक्ति में कमी आ गई हो ।

कान का बहना और कान का दर्द

फेरमफॉस 6x— कान में लाली तथा सूजन हो और उसके कारण श्रवण-शक्ति में कमी आ गई हो ।

कालीफॉस 6x— कानों की सन्धियाँ दुर्बल हों, दुर्गन्धयुक्त सड़ा मवाद निकलता हो, विशेषकर बाँये कान में तीव्र वेदना हो ।

कालीसल्फ 6x— कान के भीतर सूजन, तीव्र दर्द, विशेषकर बाँये कान से पीला अथवा हरापन लिये पीव निकलता हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— वर्षाऋतु में कान में बिजली जैसा दर्द होने पर ।

साइलोशिया 6x— कान के चारों ओर फोड़ा और भीतर फुन्सी हो तथा गाढ़ा, पीला गन्धयुक्त मवाद निकलता हो ।

मैग्नेशियाफॉस 6x— सन्धियों में दुःखदायी तीव्र वेदना हो, जो गर्मी से कम, ठण्डक से बढ़ जाती हो तो इस औषध को खिलाना चाहिए । इसी औषध के क्रम 2x का लोशन बनाकर कान को सेकना चाहिए । दांये कान के दर्द में यह विशेष लाभदायक है ।

कालीम्योर 6x— श्रवण शक्ति में कमी, दर्द, श्वेत तथा भूरे रंग का पीव निकलता हो ।

कैल्केरियाफॉस 6x— आमवात के कारण कान में दर्द, खुजली चमकदार मवाद निकलना, बालकों को कण्ठमाला होने पर ।

टांसिल की सूजन

फेरमफॉस 6x, **कालीम्यो** 6x— कण्ठ में जलन, दर्द तथा गिल्टियों पर सूजन होने पर इन औषधियों को पर्याय-क्रम से दें ।

कैल्केरिबाफॉस 12x— सूजन, जलन आदि के अधिक बढ़ जाने पर ।

नेट्रमफॉस 6x— गिल्टियों की सूजन, नजले का पानी गिरना, रोग के पुराने हो जाने पर ।

कण्ठनली-प्रदाह

फेरमफॉस 6x तथा **कैल्केरियाफॉस** 6x— इन दोनों औषधियों को पर्यायक्रम से दें ।

मुख के छाले

फेरमफॉस 3x— यदि छालों का रङ्ग लाल हो तो यह औषध अधिक लाभ करती है ।

आवाज बैठ जाना

जोर से चिल्लाने, बोलने, सर्दी आदि कारणों से आवाज बैठ जाती है।

फेरमफॉस 6x— ज्वर, हरारत, मसूढ़ों में लाली, गले में घाव, दर्द, आवाज बैठ जाना आदि लक्षणों पर ।

कालीम्योर 6x— गले की गिल्टियों में सूजन, होठों के बाहर लाली एवं सूजन, मसूढ़ों से रक्त गिरना, मसूढ़ों पर सफेद दाग, मुँह के भीतर छोटे-छोटे दाने या घाव, मुँह से दुर्गन्ध आना, आवाज के बैठ जाने पर ।

मुख तथा होठों के रोग

कालीफॉस 6x— होठों के ऊपर पपड़ी जम जाने, घाव, दाँतों से पीला एवं पतला स्राव होने पर ।

कैल्केरियाफ्लोर 6x— जबड़ों तथा मसूढ़ों में सूजन, होठों का हिलना समूड़ों तथा श्लैष्मिक झिल्लियों में कीड़े, मुख के अवयवों में ढीलापन प्रतीत होना ।

कैल्केरियाफॉस 6x— होठों पर घाव तथा दाँतून या मंजन करते समय मसूढ़ों से रक्त निकलना । इसके अतिरिक्त नेट्रम्म्योर 6x, नेट्रमफॉस, कालीफॉस 6x— भी प्रयोग कर सकते हैं ।

दाँतों के रोग

कालीम्योर 6x— दाँतों के दर्द के कारण मसूढ़ों तथा मुँह पर सूजन होने पर ।

सिलीशिया 30x— दाँतों में अधिक गहराई पर दर्द, रात्रि के समय अधिक दर्द, मुख-मण्डल पर दर्द ।

नेट्रमसल्फ 6x— अजीर्ण, दाँत एवं मुख-मण्डल का दर्द दर्द के कारण पसीना तथा आँसू निकलना, शोक, दुःख अथवा भोजन के कारण दर्द में वृद्धि, दाँतों के खोखले हो जाने के कारण दर्द आदि पर ।

मैग्नेशियाफॉस 6— दाँतों में बिजली की चमक जैसी तीव्र वेदना, दबाने तथा गर्मी पहुँचाने से आराम का अनुभव और ठण्डा पानी कष्टदायक प्रतीत होता हो ।

कालीफॉस 6x— सन्धियों की दुर्बलता के कारण मुख-मण्डल में दर्द, मानसिक कार्य की अधिकता के कारण दाँतों में दर्द ।

कैल्केरिया-फ्लोर 12x— मुख-मण्डल पर अधिक सूजन तथा दर्द, दाँतों का ढ़ोला पड़ना, ऊपरी पर्त की चमक गायब हो जाना, दाँतों का शीघ्र सड़ना एवं टूटने लगना ।

कालीसल्फ 12x— मुख-मण्डल, दाँतों एवं सन्धियों में दर्द, दर्द का स्थिर रहना, खुली हवा में आराम का अनुभल होना ।

जिह्वा के रोग

साइलीशिया 6x— जीभ कड़ी हो, सूजन हो, एक जैसी प्रतीत न हो, सड़ा हुआ मवाद निकलता हो ।

फेरमफॉस 6x— जीभ का रंग लाल हो तथा जलन हो, यदि जीभ का रंग कालापन लिये हो और वह सूजी हो तो इसके साथ कालीम्योर 6x भी देनी चाहिए ।

नेट्रमफॉस 6x— जीभ की पिछली पर्त पर सुनहरे रंग का पीला मैल जमा हो, जीभ तर रहती हो, जीभ की नोंक पर छाले हों तथा स्वाद घुले साबुन सा हो ।

नेट्रमम्योर 6x— जीभ पर खुश्की, हरे रंग की लसदार लार बहती दिखाई दे, किसी वस्तु के यथार्थ स्वाद का अनुभव न हो ।

मैगनेशियाफॉस 6x— जीभ साफ परन्तु पीलापन लिए हो, वस्तुओं का स्वाद खट्टी रोगी जैसी प्रतीत होता हो ।

नेट्रमसल्फ 6x— स्वाद में तल्खी, जीभ की पर्त की जड़ पर भूरापन अथवा हरापन लिए मैल जमा हो, जीभ तर रहती हो, उसकी नोंक पर छाले हों, जिसमें डङ्क मारने जैसी जलन हो ।

कालीसल्फ 6x— जीभ पर पीली मैली झिल्ली हो, स्वाद का यथार्थ अनुभव न हो, ठन्डा पानी अच्छा लगे, कभी-कभी जीभ के किनारों पर सफेदी आ जाती हो ।

कैल्केरियासल्फ 6x— स्वाद खट्टा-कडुवा लगे, मुँह में साबुन-सा घुला हुआ प्रतीत हो, जलन के साथ सूजन हो अथवा पीव पड़ गया हो ।

कैल्केरियाफ्लोर 6x— जीभ लकड़ी के समान कड़ी हो गयी हो, फट गई हो, दर्द हो अथवा न हो ।

अत्यन्त उपयोगी चिकित्सा-साहित्य

घर बैठे वी० पी० द्वारा मँगाकर लाभ उठायें।

मूल्य 150/-

• वृहद् होम्योपैथिक-चिकित्सा :

(डॉ० राजेश दीक्षित)

यह पुस्तक 'होम्योपैथी' का समग्र दर्पण तो है ही, विद्वान लेखक ने इसे एक विशेष ढङ्ग से भी लिखा है। इसमें आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुषों के सभी रोगों की चिकित्सा का वर्णन इस ढङ्ग से किया है कि सामान्य शिक्षित व्यक्ति भी अपने परिवारी-जनों व परिचितों का उपचार आसानी से स्वयं कर सके। होम्योपैथी के छात्र-छात्राओं तथा होम्यो-चिकित्सकों के लिए भी यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा-ऐसी आशा है। बड़े आकार और लगभग 1200 पृष्ठों में पूर्ण इस विशद ग्रन्थ का मूल्य भी अत्यल्प ही रखा गया है।

होम्योपैथी में सही औषध चुनाव आवश्यक है और औषध-निर्णय के लिए रेपर्टरी की सहायता लेना अत्यावश्यक है। इस तथ्य से सभी चिकित्सक वन्धु परिचित हैं।

मूल्य : 65/-

• कम्पलीट बायोकैमी :

(डॉ० राजेश दीक्षित)

यह तथ्य सर्वविदित है कि बायोकैमी अत्यन्त सरल, सस्ती एवं निरापद चिकित्सा पद्धति है। बायोकैमी-पद्धति से चिकित्सा करने वालों को न तो किसी 'डिग्री-डिप्लोमा' की आवश्यकता होती है और न सरकारी मान्यता पाने की। इस विषय का यथेष्ट ज्ञान होने पर धड़ल्ले से चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है।

किन्तु--

बायोकैमी का सर्वाङ्गपूर्ण ज्ञान कराने वाले हिन्दी-ग्रन्थ का अब तक चिकित्सा-जगत में सर्वथा अभाव था। डॉ० दीक्षित के इस ग्रन्थ के प्रकाशन ने इस अभाव की पूर्ति करके यह ज्ञान सर्व-सुलभ कर दिया है। प्रत्येक घर में रहने योग्य अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

मूल्य 0/-

• कम्पलीट होमियो रेपर्टरी :

(डॉ० राजेश दीक्षित)

अब तक प्रकाशित सभी 'रेपर्टरी' हिन्दी ग्रन्थों में सर्वोत्तम। पूर्णत: वैज्ञानिक पद्धति से सम्पादित विवेचित अनुपम ग्रन्थ।

• होम्योपैथिक परिवार-चिकित्सा : मूल्य : 60/-

(डॉ० राजेश दीक्षित)

'होम्योपैथिक-चिकित्सा' पर सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में लिखित यह भी एक अनमोल ग्रन्थ-रत्न है। सभी होम्योपैथी-प्रेमियों, चिकित्सकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। विद्वान लेखक का दावा है कि होम्योपैथी के प्रकाण्ड-पण्डित के ज्ञान में भी यह ग्रन्थ कुछ नया जोड़ने में समर्थ हो सकेगा।

• होम्योपैथिक के चमत्कार : मूल्य : 0/-

(डॉ० राजेश दीक्षित)

यथानाम तथा गुण, कलेवर अपेक्षाकृत छोटी किन्तु विशेषता जैसी बड़े ग्रन्थ की।

• बायोकैमी के चमत्कार : मूल्य : 0/-

(डॉ० राजेश दीक्षित)

प्रस्तुत पुस्तक में केवल बायोकैमी की चमत्कारिक-चिकित्सा का वर्णन है। 'कम्पलीट बायोकैमी' का व्याख्यात्मक भाग इसमें नहीं जोड़ा गया है।

केवल बायोकैमी-औषधियों के चमत्कारी प्रभाव के विषय में विस्तार से जानने-समझने के इच्छुक सभी पाठकों के लिए परम उपयोगी और संग्रहणीय ग्रन्थ।

• मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान : मूल्य : 36/-

(डॉ० राजेश दीक्षित)

मानव शरीर के सभी अङ्ग-उपाङ्गों की क्रिया-विधि का सचित्र एवं सरलतम वर्णन अनमोल पुस्तक।

• सरल होम्योपैथिक मेटेरिया मेडिका : मूल्य :

(डॉ० रामगोपाल शर्मा)

पुस्तक क्या है-मानो होम्योपैथी के महासागर के चुने हुए रत्नों का दिव्य-संग्रह है। विद्वान लेखक ने होम्योपैथी की बहु-प्रचलित तथा सुगमता से उपलब्ध लगभग 300 औषधियों के गुण-धर्म तथा प्रभाव का सरल हिन्दी में सुस्पष्ट वर्णन किया है। जिस पाठक ने भी इस पुस्तक को पढ़ा, वही आत्म-विभोर होकर 'वाह-वाह' कर उठा। अनेक संस्करण प्रकाशित। लाखों पाठकों द्वारा प्रशंसित ग्रन्थ।

पुस्तकें मंगाने का पता ☎406633

भाषा भवन, हालन गंज, मथुरा-281001